

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)
'मुखरता सत्यवचननी विघातक छे'

अनुसन्धान

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य-विषयक
सम्पादन, संशोधन, माहिती वगैरेनी पत्रिका

६५

विज्ञापितपत्र-विशेषाङ्क - खण्ड-४

सम्पादक :
विजयशीलचन्द्रसूरि



श्रीहेमचन्द्राचार्य

कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अहमदाबाद
२०१४

अनुसन्धान ६५

आद्य सम्पादक : डॉ. हरिवल्लभ भायाणी

सम्पादक : विजयशीलचन्द्रसूरि

सम्पर्क : C/o. अतुल एच. कापडिया
A-9, जागृति प्लेट्स, पालडी
महावीर टावर पाछळ, अमदावाद-३८०००७
फोन : ०७९-२६५७४९८१
E-mail : s.samrat2005@gmail.com

प्रकाशक : कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम
जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि,
अहमदाबाद

प्राप्तिस्थान : (१) आ. श्रीविजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर
१२, भगतबाग, जैननगर, नवा शारदामन्दिर रोड,
आणंदजी कल्याणजी पेढीनी बाजुमां,
अमदावाद-३८०००७
फोन : ०७९-२६६२२४६५

(२) सरस्वती पुस्तक भण्डार
११२, हाथीखाना, रतनपोल,
अमदावाद-३८०००१
फोन : ०७९-२५३५६६९२

प्रति : ३००

मूल्य : ₹ 400-00

मुद्रक : क्रिश्ना ग्राफिक्स, किरिट हरजीभाई पटेल
९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद-३८००१३
(फोन: ०७९-२७४९४३९३)

विवेक

वधतुं जतुं ज्ञान, वधता जता तपनी जेम, क्यारेक चित्त पर बोजरूप बनी जाय छे. ए बोज, पछी बन्धन बनीने चित्तने बंधियार पण बनावी शके.

घणी वखत जोवा मळे के घणां शास्त्रो, ग्रन्थो के विद्यानी विधाओनो ज्ञाता 'ज्ञान-गुमाननी गांसडीओ' वेढारतो फरतो होय छे, अने 'हुं समर्थ ज्ञानी, माराथी चढियातुं के मारा सरीखुं कोई ज्ञानी नथी - न होई शके' एवा विद्याभिमान के शास्त्रदर्पमां राचतो रहे छे. तेना तेवा ज्ञानने कारणे तेनी वाहवाही तथा प्रशंसा करनारा पण घणाबधा होय छे, जेने लईने ते 'ज्ञानी' आत्मानो दर्प फाटीने धूमाडे जतो रहेतो जोवा पण मळे छे.

आवा लोको एवा तो बंधियार के आत्मरतिग्रस्त बनी बेसे छे के पछी तेमने पूर्वसूरिओनी पण क्षतिओ जोतां/काढतां आवडी जाय छे, बीजा कोईनी पण वात के विचारणाने मान्य/अमान्य करवानो तेमनी पासे वणलख्यो अधिकार आवी जतो होय छे, अने तेमनी भूल के खामी दर्शावानी हिम्मत कोई करी ज न शके तेवी तेमनी दृढ समज पण होय छे.

विवेकविहोणुं भणतर, बीजाने-बीजामां पण ज्ञान होई शके ते स्वीकारी शक्तुं नथी, अने पोतानी पण भूल होई/थई शके ते स्वीकारी शक्तुं नथी. आवा भणतर थकी चित्तनी शुद्धि थती होय तेवी आशा पण केम राखी शकाय ? जैन पद्धति प्रमाणे ज्ञाननां बे फळ गणाय : पुण्यनी वृद्धि अने चित्तनी शुद्धि. निर्विवेक भणतर/ज्ञान पुण्य बंधावी के वधारी आपे, पण शुद्धिनी वात तो लगभग वेगळी ज रही जाय एवुं बने.

*

'संशोधन' ए ज्ञाननी एक एवी विधा छे के जेना अभ्यासथी चित्त बोझिल अने बंधियार बनवाने बदले खुल्लुं अने विशाळ बनतुं जाय छे. चित्तशुद्धिनो अर्थ ज छे मननुं खुल्लापणुं अने आशयनी विशाळता.

संशोधन, शोधकने ज्ञानीमांथी विज्ञानी बनावे छे. विज्ञानीनुं मन हमेशां खुल्लुं होय; पोते शोध्युं, जाण्युं, स्वीकार्युं ते ज आखरी सत्य एवुं बंधियार मन विज्ञानीनुं न होय, तेने पालवे पण नहि; ते तो क्यांयथी पण नवो-सारो विचार के संशोधन आवे तेनी प्रतीक्षामां होय, तेनो स्वीकार करवा द्वारा पोतानी खामीने -

जो होय तो - सुधारवाने तत्पर होय. 'कोई मारी भूल काढी ज न शके' आवुं मिथ्याभिमान तेने कदापि न पालवे.

संशोधकने कदी पण पोतानी मान्यता प्रतिपादित के पुरवार करवानी नथी होती. तेने तो तथ्योनुं संशोधन-उद्घाटन करवानुं होय छे, अने पछी जगत् समक्ष तेने प्रस्तुत करवानुं होय छे. पोतानी प्रस्तुति बाद, कोई जो तेमां क्षति जुए अने तेनी सामे रजू करे, तो ते सहुथी वधु राजी थतो होय छे, अने वास्तविक लागती क्षतिनो स्वीकार पण करतो होय छे. केमके तेनो अभिगम तथ्यपरक होय छे, मान्यतापरक नहि. ते मुक्त, तथ्यपरक, विचारनो आशक होय छे, बंधियार मत-ममतनो नहि.

आपणे अहीं शास्त्र-संशोधननी वात पण करवी जोईए. शास्त्रना अभ्यासी अने संशोधकने शास्त्रनां, एटले के पूर्वसूरिओनां वचनो, प्रतिपादनो, मतो, विधानो, शब्दो माटे आग्रह होय - होई शके, परन्तु पोते विचारेली के स्वीकारेली बाबतो माटे तेने आग्रह न होय; तेवो आग्रह राखवो तेने पालवे पण नहि. तेवो आग्रह-मताग्रह जो तेने होय तो तेने सत्याग्रही शोधक के अभ्यासी गणी न शकाय.

पोतानां विधान, प्रतिपादन के मत माटेनो तेनो आग्रह तेने कदाग्रही बनावी शके, अभिनिवेश भणी धकेली शके; अभिनिवेशने कारणे ते बीजाने-बीजाना मतने वगर विचार्ये ज मिथ्या/अयोग्य गणतो थाय. संशोधन के सत्यशोधनना क्षेत्रमां आ वात एक खतरनाक अने हानिकर दोष बनी रहे.

साचो गवेषक या शोधक मध्यस्थ होय; ज्यांथी पण तत्त्व के तथ्य मळे तेनो अर्थी-ग्राहक होय; तेनुं चित्त समतोल होय, पण 'स्व'मां तेमज 'स्व'नी स्वीकृत धारणामां बद्ध न होय.

आवा शोधक अथवा अभ्यासी ज तत्त्वज्ञ अने शास्त्रज्ञ गणाय. बाकी पठित-मूर्खोने तोटो नथी. आवा शोधक ज चित्तशुद्धि भणी डग भरता होय छे, बाकी पुण्य, प्रशंसा, परिवारना व्यामोहमां फसाईने चित्तने बंधियार बनावीने जीवनारा ज ज्यां ने त्यां भटकाता होय छे.

आपणे साचा संशोधक बनवुं जोईए. ते न बनाय तोय मिथ्याभिमानी, स्वमताग्रही अने बंधियार मनवाळा न बनी जवाय तेनी काळजी तो करीए ज. अस्तु.

- शी.

अनुक्रमणिका

पत्र क्र.		पृष्ठंक
१-३.	विजयदेवसूरिजी पर लखायेल पत्रो	
	१. उपा० विनयविजयजीनो पत्र (सं. १७०५)	१
	२. उदयविजयजीनो	५
	३. माणिक्यचन्द्रजीनो (सं. १६७८)	८
४.	विजयानन्दसूरिजी पर दर्शनविजयजीनो	१२
५.	विजयप्रभसूरिजी पर प्रेषित बीजापुरसङ्घ वती कनकविजयजीनो गुरुविज्ञप्तिस्वाध्याय (सं. १७३२)	१७
६.	विजयदयासूरिजी पर सोझितसङ्घ वती पं. रूपविजयजीनो (सं. १७९०)	२२
७-१२.	विजयधर्मसूरिजी पर लखायेल पत्रो	
	७. सुरतसङ्घ वती सुजाणविजयजीनो (सं. १८२३)	२९
	८. मेवाडसङ्घ वती सत्यसागरजीनो (सं. १८३०)	३३
	९. सादडीसङ्घ वती पं. मोहनविजयजीनो	५२
	१०. मोहनविजयजी 'लटकाळा'नो	५९
	११. हरिविजयजीनो	७०
	१२. सादडीसङ्घ वती पं. जीवनसागरना पत्रनी नोंध	७९
१३-१६.	विजयजिनेन्द्रसूरिजी पर लखायेल पत्रो	
	१३. प्रेमविजयजीनो (सं. १८४५)	८२
	१४. जोधपुरसङ्घ वती पं. मनरूपविजयजीनो (सं. १८७१)	८६
	१५. सोझतना सङ्घनो (सं. १८७६)	१०६
	१६. मेडताना सङ्घनो (सं. १८८१)	१२२
१७-२०.	विजयदेवेन्द्रसूरिजी पर लखायेल पत्रो	
	१७. सुरत सङ्घनो (सं. १८८९)	१४९
	१८. जोधपुरसङ्घ वती पं. सिद्धविजयजीनो (सं. १८९६)	१७८
	१९. नागोरसङ्घ वती पं. रूपेन्द्रसागरजीनो (सं. १९०७)	१९०
	२०. जोधपुरसङ्घ वती रत्नविजयजीनो (सं. १९१६)	२०८

२१.	विजयमहेन्द्रसूरिजीने सीणोरसङ्घ वती हिम्मतविजयजीनो (सं. १८६३)	२३५
२२-२३.	दानरत्नसूरिजी पर लखायेल पत्रो	
	२२. सुरतसङ्घ वती कनकरत्नजीनो (सं. १७९२)	२४८
	२३. उपा. उदयरत्नजीनो (सं. १७९२)	२५६
२४.	मेडतासङ्घनो देवगुप्तसूरिजीने पत्र (सं. १९०७)	२६४
२५.	खम्भातसङ्घ वती खुस्यालमुनिअे अक्षयचन्द्रसूरिजी पर लखेल विनतीभास	२६७
२६.	लक्ष्मीचन्द्रसूरिजी पर अजमेर सङ्घनो (सं. १८८७)	२७०
२७.	कल्याणसागरसूरिजी पर नोरंगाबाद सङ्घनो (सं. १७९०)	२७४
२८.	लक्ष्मीसागरसूरिजी पर सुरत सङ्घनो (सं. १७९९)	२८६
२९.	धनपुरसङ्घ वती पं. रामविजयजीनो विजयराजेन्द्रसूरिजी पर पत्र (सं. १८६१)	२९६
३०.	पं. रत्नविजयजी पर पत्र (सं. १८४९)	३०४
३१.	गणि नयनसुखजी पर पत्र	३०७
३२.	साध्वी पूनमश्रीजी पर पत्र	३११
३३.	बालुचरसङ्घनो भगवतीजी सूत्रवांचननी अनुमोदनानो पत्र (सं. १९१९)	३१६
३४-३५.	कंकोतरीस्वरूप विज्ञप्तिपत्रो	
	३४. तारङ्गा-नन्दीश्वरद्वीपनी प्रतिष्ठानी (सं. १८८०)	३१९
	३५. साध्वी माणिकेश्रीजी पर वखतचंद खुसालचंदना शत्रुञ्जययात्रा- सङ्घनी (सं. १८८३)	३२०

श्रुतभक्ति

आ अङ्कना प्रकाशनमां श्रीमाटुंगा जैन श्वे. मू. पू. सङ्घ
- वासुपूज्यस्वामी जैन देरासर, किंग्स सर्कल, माटुंगा, मुंबई अे
पोताना ज्ञानखातामांथी सम्पूर्ण आर्थिक सहयोग आपेल छे.
श्रीसङ्घनी श्रुतभक्तिनी हार्दिक अनुमोदना.

विज्ञप्तिपत्र-विशेषाङ्क - ४ मां समावायेला पत्रोत्री परिचयात्मक भूमिका

आशरे बे वर्ष अगाऊ एक सङ्कल्प थयो के विज्ञप्तिपत्रोनी अङ्क करवो छे. ते वखते एम हतुं के बे-एक भागमां पत्रो समाई जशे. परन्तु जेम जेम काम थतुं गयुं, तेम तेम पत्रो पण वधु ने वधु प्राप्त थता गया. एटले बेने बदले ४ भागमां पत्रोनुं संकलन करी शकायुं. प्रथम बे भाग (अङ्क ६०-६१)मां संस्कृत पत्रो प्रगट थया छे. त्रीजा भागमां (अङ्क ६४) संस्कृत + गुर्जर पत्रोनी समावेश थयो छे. अने हवे प्रगट थता आ चोथा भागमां मात्र गुर्जर भाषाना पत्रोनुं संकलन थयुं छे. 'गुर्जर'नो अर्थ 'मारु-गुर्जर' करवानो छे. आ अङ्कमां समावायेला ३५ जेटला पत्रोनी अछडतो परिचय आ प्रमाणे छे :

(१)

प्रथम पत्र प्रख्यात महोपाध्याय श्रीविनयविजयजीए गच्छनायक श्रीविजय-देवसूरिने लखेलो, नानोशो पत्र छे. सं.प्रा. भाषाओमां विद्वत्तासभर ग्रन्थोनी रचना करनार तेमज इन्दुदूत जेवा खण्डकाव्यात्मक पत्रो लखनार कवि, आम एकदम लोकभोग्य भाषामां काव्यमय पत्र लखे ते पण एक नावीन्य छे. वळी, सम्भवतः आ पत्रनी बे पानांनी प्रति पण तेमना स्वहस्ताक्षरमां लखायेल जणाय छे.

खम्भातमां अनेक चैत्यो परापूर्वथी हतां, छे. ते पैकी सुखसागर पार्श्वनाथ, कंसारी पार्श्वनाथ, जीराउला पार्श्वनाथ अने चिन्तामणि पार्श्वनाथ - एम चार तीर्थ-चैत्योनी नामोल्लेख कविए कर्यो छे, परन्तु, हालमां त्यांना तीर्थपति मनाता स्तम्भन पार्श्वनाथनुं नाम सुद्धां नथी, ते ध्यानार्ह छे.

गुरुनुं गुण-वर्णन करतां कविए करेला कल्पना-विहारनी एक झलक जुओ : कवि गुरुना प्रतापने आम वर्णवे छे -

“मीणनी जेम कारमा-कृत्रिम फटाटोप-देखाव धरीने जे अवतर्या छे ते, तमारा प्रतापरूपी सूर्यना तापे गळी जई नष्ट थवाना छे” (१९).

कडी २४मां ‘अम्ह चरण तुम्हारा त्राण रे’ एम पद छे तेनो अन्वय ‘तुम्हारा चरण अम्ह त्राण’ ए प्रमाणे करवानो छे. ‘संवत सत्तर पंचोत्तरे’ (क.

२७)नो अर्थ १७७५ नहि, पण १७०५ करवो उचित छे.

(२)

आ पत्र पण घणो नानो पत्र छे. पण तेनी प्रासादिक काव्य-रचाने कारणे ते एक मधुर रचनारूप पत्र बन्यो छे. पण्डित कमलविजयजीना शिष्य पं. उदयविजय नामना कविए महाराष्ट्रना अहमदनगरथी श्रीपुर (शिरपुर) बिराजता गच्छपतिने आ पत्र लख्यो छे. १७मी कडीमां ‘उदयविजय आसीस’ एवो शब्द जोवाथी ‘उदयविजयनी आशीषथी लखायेल होई आ पत्र तेमना शिष्ये लख्यो छे’ एम मानवा मन ललचाय. तो १४मी कडीमां ‘अहमदानगर मोझार’ एवा प्रयोगथी ‘अहमदावाद’नी कल्पना पण थई शके. परन्तु वास्तवमां तेम नथी. आ पत्र उदयविजये ज लख्यो छे, अने ‘अहमदावाद’ नहि, पण ‘अहमदनगर’ थी लखेल छे, ते झीणवटथी तपासतां स्पष्ट थाय छे.

कविनी काव्य-चमत्कृति पण हृदयङ्गम छे. कडी ७-११ मां गुरु-गुणनुं जीभ वडे वर्णन के कागळमां लेखन करवानुं अशक्य होवानुं वर्णन कविए केटली मीठी शैलीथी आयुं छे ! “तमारा गुण बहु मोटा होय छे; तेनी सामे दि’ (दिवसो) साव नाना; एमांय रात तो अंधाराने कारणे गणाय ज नहि; वळी एवडा मोटा गुण लखवा माटे मोटा कागळ जोईए, पण अहीं तो ते पण साव सांकडा पडे छे ! गुण लखवा तो लखवा शी रीते ?” (७). “कागळ धरती जेवडो मोटो होय, स्याहीनो दरियो भर्यो होय, रात-दिवस सतत तमारा गुण लख्ये ज जउं (८); तेमां वळी इन्द्र जेटलुं मोटुं मारुं आयुष्य होय, कलमरूपे स्वर्गनो दिव्य दण्ड होय, अने सूर्य आठे प्रहर आथम्या वगर अजवाळां रेलावतो रहे, तो कांईक पत्तो लागे ! (१०).”

कविनो आ कल्पनाविस्तार केवो सोहामणो छे !

(३)

मात्र ‘दूहा’ छन्दमां लखवामां आवेलो आ पत्र माणिक्यचन्द्र नामना कवि-साधुए गच्छपति विजयदेवसूरि उपर लखेल छे. सं. १६७८मां लखायेल आ पत्र क्यांथी लखायो तथा क्यां मोकलायो, ते विषे आखा पत्रमां कोई उल्लेख नथी मळतो. वाचनदोषने कारणे ‘माणिकसीस’ एम पण वंचायुं छे, अने तेथी

આ પત્ર ‘માણિક્યવિજયના શિષ્ય’ દ્વારા લખાયાનું પળ મનાયું છે. પરન્તુ પ્રતિમાં ‘**માણિકસસિ**’ એવા અક્ષરો સુસ્પષ્ટ જોવા મળે છે, એટલે એનો અર્થ ‘માણિક્યચન્દ્ર’ જ થઈ શકે.

કવિની ગુરુ માટેની ભાવનાની કક્ષા ઝૂંચી છે. કેટલાક દૂહામાં કાવ્ય-ચમત્કૃતિ સુપેરે જોવા મળે છે. કેટલાક સમસ્યા-દૂહા પળ છે, સમસ્યા દ્વારા જ ગુરુનું વર્ણન છે; દા.ત. દૂહો ૧૨, ૨૧ इत्यादि. ગુરુનાં અંગોનું વર્ણન, ગુરુના મિલન માટેનો તલસાટ, પોતાના એકપક્ષા સ્નેહના સન્દર્ભે ગુરુને ગર્ભિત ઉપાલમ્બ, પોતાનાં પાપકર્મની ગુહ્ય વાતો ગુરુને જણાવવા માટેની ઉતાવળ, ભવોભવ આ ગુરુ જ મળે તેવી પ્રાર્થનાપૂર્વક ગુરુને ‘ઈશ’ ગણાવવા સુધીની ભાવુકતા – આ બધા ભાવોને આ દૂહાત્મક પત્રમાં ખૂબ મનભાવન રીતે કવિએ વર્ણવી બતાવ્યા છે, અને એ દૃષ્ટિએ પત્ર માણવા જેવો છે. છેલ્લે પૂરવણીરૂપ બે દૂહામાં તો કવિ, આપણાં હૈયાંને પળ ધોંજવી મૂકે તેવું કથે છે : “હે સજ્જન ! (હે ગુરુવર!) તમારામાં ગમે એટલા ગુણ ભલે હોય, પળ આ એક અવગુણ બહુ ખરાબ છે : તમે માણસના મનમાં તમારા માટેનો સ્નેહ લગાડી દઈને પછી (તેને આમ વેગળો કરીને) વગર હથિયારે તેને મારી નાખો છો !” અર્થાત્, તમે એવી માયા લગાડી છે કે હવે તમારા વગર રહેવું-જીવવું, મારા જેવા માટે બહુ કઠિન થઈ પડે છે !

(૪)

આ પત્રના લેખક કવિ દર્શનવિજયજી છે. ‘આણસૂરગચ્છ’ નામની, તપગચ્છની શાખાના પ્રવર્તક વિજયાનન્દસૂરિ ઉપર તેમણે લખેલ આ પત્ર છે. તેમાં વિજયસેનસૂરિ, તેમના પટ્ટધર વિજયતિલકસૂરિ અને તેમની પાટે આણંદસૂરિ એમ ત્રણ કવિએ નિર્દેશ્યો છે (ઢાલ ૩, કડી ૧-૨).

નગરનું, ગુરુનું વર્ણન કાવ્યમય છતાં ચીલાચાલુ છે. ઐતિહાસિક વાતોનો સંભાર એમાં નથી. એક ઠેકાણે કર્તાએ ગચ્છપતિને ‘હીર’ની વાણીને અજવાળનારા ગણાવ્યા છે (અજૂઆલિ હીરની વાણિ). ગચ્છપતિના પિતા સાહ શ્રીવંત, અને વંશ પ્રાગવંશ (પોરવાડ) હોવાનું પળ આમાં નોંધાયું છે. માતાનું તથા વતનના ગામનું નામ નથી નોંધાયું. આ પત્ર ચૈત્રમાસમાં લખાયો છે, અને ગુરુને ‘સૂરત’ પધારવાની વિનંતિના લેખરૂપ છે; પર્યુષણ, ક્ષમાપના સમ્બન્ધિત લેખ નથી, તે ધ્યાનપાત્ર છે. પત્ર ૧૮મા શતકનો ગણાય.

(૫)

આ પત્ર નાનો છતાં બહુ મજાનો છે. ‘ચન્દ્રાડલા’ નામે પ્રખ્યાત છન્દનો વિનયોગ કવિએ ગેય ગીતરૂપે-ઢાલરૂપે કર્યો છે, તે એક નાવીન્યપૂર્ણ કાવ્યપ્રકાર જણાય છે. પ્રત્યેક કડીની ચોથી પંક્તિનું આવર્તન પાંચમી પંક્તિરૂપે થાય – એ ચન્દ્રાવલાની એક લાક્ષણિકતા હોય છે. એક મધ્યકાલીન ઉદાહરણ અહીં જોઈએ :

“કેનો’ક બાપ હતો એક કાણો, તેની ફૂટલ આંખ
તેનો દીકરો થયો દેખતો, તેને કહે તું **ફોડી નાખ**
તેને કહે ફોડી નાખ તું આંખ, અને તારા બાપાનો ચીલો રાખ
કહે ‘ગોવિંદરામ’ હરિનું નામ વખાણો, કેનો’ક બાપ હતો એક કાણો’.

હવે પ્રસ્તુત પત્રમાં પ્રયુક્ત ‘ચન્દ્રાડલાની દેશી’ની એક કડી જુઓ :

“પાટભગત છડ્ડે ઇહાં તણો રે, સકલ સંઘ નિસિદીસ રે,
દરસણ દેડે પૂરડે રે, **પ્રેમડું તાસ જગીસ,**
પ્રેમડું તાસ જગીસ વધારો, મહિર કરી મુનિરાજ પધારો,
સેવક જનનડું કાંડે વિસારો, હાથિ ગ્રહીનડું પારિ ઉતારો જી” (૨)

જો કે ‘ચન્દ્રાવલા’ની બીજી લાક્ષણિકતા, પ્રથમ પંક્તિનું આવર્તન અન્તિમ પંક્તિરૂપે થાય એ, આ દેશીમાં નિભાવવામાં નથી આવી, એ પળ લક્ષ્યમાં લેવું ઘટે. કદાચ એટલે જ, આને શુદ્ધ પળે ‘ચન્દ્રાડલા’ ન કહીને ‘ચન્દ્રાડલાની દેશી’ તરીકે ઓળખાવી હશે.

પત્ર ફક્ત ૨૫ જ કડીનો છે, છતાં તેના ગાનમય છન્દપ્રયોગને કારણે બહુ રસાળ બન્યો છે. કવિની વર્ણનક્ષમતા પળ દાદ આપવી પડે તેવી છે.

ગચ્છપતિ વિજયપ્રભસૂરિ દક્ષિણદેશની વિહારયાત્રાએ ગયા છે. ત્યાં કરહેડા(?), કલિકુળ, અન્તરીક્ષ – આ બધાં પાર્શ્વનાથ-તીર્થોને તથા માણેકસ્વામી (કુલપાક) તીર્થને તેમણે જુહાર્યા છે – (૨૨-૨૩), તે વર્ણવતાં કવિ એક જ વાત કહે છે કે હવે જલદી સાહપુર-બીજાપુર બાજુ પધારો ! આમાં ગુરુ-ગુણનું વર્ણન તો બાલક જેવા ભાવથી ઉભરાતું થયું જ છે, સાથે કાકલૂદી પળ છે, અને તેમાં મરાઠી શબ્દપ્રયોગ પળ કવિ કરે છે : “સી **અમ્હચી** તકસીર ?” – અમે શો અપરાધ કર્યો ? (૬)

‘करहेडा’ तो राजस्थानमा आवेलुं तीर्थ छे ! कदाच गुरु राजस्थान बाजुथी दक्षिणमा आव्या होय, ए सन्दर्भमा कवि ए नाम उल्लेख्युं होय ! ए ज रीते ‘कलिकुण्ड’ ए पार्श्वनाथनुं तीर्थ हतुं, अने लोकवायका प्रमाणे ते दक्षिण भारतमां केरल प्रदेशमां (घणा भागे कालिकट) होवानुं मनाय छे. त्यां सुधी गच्छपति गया होय तेवुं आ उल्लेख परथी मानी शकाय. अन्तरीक्ष तो आकोला पासे शिरपुरमांनुं प्राचीन तीर्थ. तो कुलपाक ते आन्ध्र प्रदेशनुं पुरातन जैन तीर्थ. गुरुनी विहारयात्रानो व्याप केटलो विस्तरेलो हशे ते आनाथी समजी शकाय छे.

आ पत्रनी हाथपोथीमां त्रण पानां छे. दरेक पत्रनी बन्ने बाजुए रिक्त लिपिमां सुन्दर अक्षर-लेखन लेखक द्वारा थयुं छे. ए अक्षरो आम वंचाय छे : “श्राविका लाडकुंअरिपठनकृते” दरेक पृष्ठमां बे-बे अने त्रीजा पत्रना प्रथम पृष्ठमां ३ (पठन) अक्षरो छे. पत्र कर्ताना हस्ताक्षरनो ज जणाय छे. बीजापुरना संघ तरफथी विनंतिरूपे आ पत्र लखायेल छे. वीजापुर ते हालना कर्णाटकनुं बीजापुर.

(६)

आ पत्रना लेखक कवि रूपविजयजी नीवडेल कवि-साधु होवानुं प्रमाण आ पत्र थकी सांपडे छे. देशी ढाळो, तेमां पण ‘अमृतध्वनि’ प्रकारनी छन्दोलालित्य धरावती ढाळ प्रयोजीने तेमणे पोतानुं काव्यचातुर्य पुरवार करी आप्युं छे. प्रारम्भनां सं.प्रा. काव्यो तथा दूहा महदंशे सर्वसाधारण प्रकारनी रचना छे. जोके तेमां पण कविना रचेला नवा दूहा छे खरा. “हे सखी” शब्दने ध्रुवपद बनावीने रचायेली पहेली ढाळ केटली बधी रसाळ छे तेनो अंदाज तो तेने तेना देशी लयमां गावामां आवे त्यारे ज मळे !

गुरु दयासूरि, तेमना गुरु क्षमासूरि; पिता अमरा(शाह), माता अनोपदे, गोत्र सुराणा; आटलो परिचय आमां मळे छे. वतननो निर्देश नथी. गुरुने सूरिपद मंगलपुर (मांगरोळ)मां मळ्युं होवानुं ढाळ २, क. ६मां नोंधायुं छे.

सोझित-सोझत (राजस्थान)थी, सूरत बिराजता गुरुने लखायेल आ पत्रनो हेतु, सोझत पधारवानी विनंतिनो छे. ‘स्वाध्याय’रूप बीजी ढाळ पूरी थतां ज ‘अमृतध्वनि’नी ढाळ आरंभाय छे. बे दूहा बेवडाता होई एकवार काढी नाखेल

छे. ‘अमृतध्वनि’ वांचता ‘त्रिभङ्गी’ याद आवे; एक रीते अे त्रिभङ्गीना गोत्रनो छन्द छे एम कही शकाय.

पत्रना गद्यांशमां एक ऐतिहासिक हकीकत ए मळे छे के सोझतमां तपगच्छना रूपविजय चोमासुं हता त्यारे, त्यां खरतरगच्छना पण कोईक साधु हशे. पर्युषण बाद चैत्यपरिपाटी (बधां जिनमन्दिरोनी परिक्रमा) काढवानी वेळाए, पहेली कोनी नीकळे ते मुद्दे बेउ गच्छेमां मोटो विवाद थयो हशे, तो वात राजदरबारे गई. रूपविजयजी आदिए दीवान पर पत्र पाठव्यो के पहेली तपगच्छनी ज होय. राजा सुधी वात जतां तेणे पहेलां मौखिक अने पछी लेखित आज्ञा करी के तपगच्छनी ज पहेली काढवी. ते प्रमाणे ज थयुं.

आ प्रसंगथी सोझतनो संघ पाटनो (गुरुनो-गुरुगादीनो) भक्त छे तेम पुरवार करीने श्रीपूज्यजीने सोझत पधारवानी विनंति करवामां आवी छे.

बन्ने स्थळे विद्यमान मुनिगणनां नामो नोंधपात्र छे. गुरु सूरतमां नाणावट-वडाचौटे बिराजमान हशे तेवो संकेत, पत्रलेखक, पत्रना छेडे, जगवल्लभ (पार्श्वनाथ)नां दर्शन करतां याद करवानी विनंति करे छे ते परथी मळी शके छे. ‘जगवल्लभ’नुं देरासर प्राचीन छे, अने आजे पण नाणावटमां विद्यमान छे.

(७)

आ नानकडो विज्ञप्तिपत्र काव्यचमत्कृतिनी दृष्टिए सामान्य गणाय तेवो पत्र छे. आमां विशेष कोई नोंधपात्र वातो पण नथी. मारवाडना सेवांणचि-सिवांची तरीके जाणीता परगणाना बाल्होतरा गामे विराजता गुरु पर सूरतथी लखायेलो आ पत्र छे.

(८)

आपणे जेने ‘मेडता’ तरीके जाणीए छीए, ते ‘मेदिनीपुर’ना नामे ओळखातुं हतुं, तेवी माहिती, आ पत्र थकी आपणने सांपडे छे. आ पत्रना केटलाक अंशो अन्य पत्रोमां पण लखायेलो जोवा मळे छे, ते परथी, आवा वर्णनात्मक काव्य-खण्डो सर्वसाधारण जणस हशे, अने तेनो उपयोग कोई पण करी शकतुं हशे, एम जणाई आवे छे.

शत्रुञ्जय अने गिरनार तीर्थनी स्तवना धरावती ढाळो, आ पत्रनी विशेषता

छे. तेमां पण 'सारसी' छन्दमां करेलुं गिरनारनुं वर्णन, कोई कुशल चारण-कविए रचेला छन्दनुं भान करावे छे. आ प्रकारनी रचना सामान्यतः चारण कविने वधु सुलभ गणाय. वळी, आ छन्दनी छेल्ली कडीमां प्रयुक्त 'भणें भोज' ए प्रयोग बहु सूचक गणवो पडे तेवो छे. पत्रकर्ता तो 'सत्यसागर' छे, छांतां 'भणें भोज' केम ? स्पष्टतः स्वीकारवुं पडे के आ छन्द कवि भोजनी रचना छे, ने ते पत्रलेखके उपयोगमां लीधी छे. 'भोज' नाम सम्भवतः चारण कविनुं होवुं जोईए. अलबत्त, आ एक अटकळमात्र छे. बाकी छन्दमां जे रीते नेमिनाथनुं तथा तेमनी समक्ष थतां पूजा-नृत्यादिनुं वर्णन छे, ते जोतां 'भोज' पद 'भोजविजय' के 'भोजसागर' नाम धरावता जैनमुनि-कविनुं सूचक पण होई शके. अने 'भोजसागर' नामे ग्रन्थकार मुनि १८मा शतकमां थया तो छे ज. अस्तु.

राधनपुरना वर्णनमां दूहा ६मां 'राज्य करे राजा तिहां' एम पद छे. अहीं 'नवाब' के 'सूबो' एवो शब्द न प्रयोजतां 'राजा' शब्द प्रयोज्यो छे, अने तेने रामचन्द्रना अवतार जेवो गणाव्यो छे. 'वंशविहारी' ए विशेष नाम होय तो तो राजा हिन्दू होवानुं स्पष्ट छे. पण जो 'रामचन्द्रना वंशमां विहरनारो' एवो अर्थ तारवीए तो, ते विशेष नाम नथी बनतुं; जोके ते हिन्दू होवानो संकेत तो तेनाथी पण सांपडे छे. आ, छठ्ठा दूहा परथी उपसती छाप छे. आठमो दूहो वांचतां द्विधा सरजाय छे. तेमां 'गाजीखान' एवा नामना मीरनो स्पष्ट उल्लेख छे, अने तेने सुलतान मान आपे छे तेवो पण निर्देश छे. राधनपुरमां मुस्लिम शासको हता ते इतिहासप्रसिद्ध छे. समाधान एम थाय के कविसमय प्रमाणे जे पण शासक/राजा होय ते रामनो ज वंशज गणाय; एटले शासक मुस्लिम होवा छांतां ते राजा राम जेवो होवानुं, हिन्दू रूढि प्रमाणे, कवि वर्णवे तो तेनो इन्कार न थई शके. एटले त्यां गाजीखान नवाब होय तो ते बनवाजोग छे.

गुरुनुं वर्णन विस्तारथी थयुं छे. ते ढाळो के तेनी कडीओ अन्यान्य पत्रोमां जरूर मळी आवे. केमके आवां वर्णनो ते सर्वसाधारण सम्पदा होय छे, पण अहीं, ते प्रसंगमां, भुजङ्गी छन्दमां अने चारणी लढणमां जे छन्द रचायो छे, ते एक विलक्षण रचना जणाय छे, रसप्रद छे ए. तो तेनी पछी तरतमां सं. अष्टकनी विविध छन्दोमय रचना पण बहु मजानी छे.

मारवाडना राजा विजयसिंघना वर्णनमां तेने 'हिन्दुपतपादशाह' (दूहा ९)

वर्णव्यो छे. ते पछीनो 'छप्पय' पुनः चारणी शैलीनो जोवा मळे छे.

(९)

आ पत्र 'सादडी' - संघना विज्ञप्तिपत्रस्वरूप छे, अने पं. मोहनविजये तेनी काव्यरचना करी छे. आ मोहनविजय, 'लटकाळ' मोहनविजय करतां जुदा - पूर्वकालीन जणाय छे. प्रारम्भनां विशेषणो तथा दूहा/पद्यो सर्वसामान्य छे. विशेषणो राख्यां नथी. सादडी-वर्णननी ढाळमां - सादडी ते गोडवाडनुं प्रख्यात शहेर; अहीं चिन्तामणि, शामळा, अमीझरा एम त्रण पार्श्वनाथनां चैत्यो उपरांत डाबी तरफ गोडी पार्श्व० नी देरी, नजीकमां राणकपुर तीर्थ होवानुं वृत्तान्तनिवेदन - ऐतिहासिक विगतो पूरी पाडे छे.

'राणकपुर' ए ऐतिहासिक अने वास्तविक नाम छे. राणाजीए वसावेलुं पुर ते राणकपुर. वर्तमानमां तेने भारत सरकारे 'रणकपुर' करी मूक्युं छे. पोस्ट-खाताए प्रगट करेली आ स्थापत्यनी टपालटिकिट पर पण 'रणकपुर' ज छापवामां आव्युं छे. साइन बोर्डो पर पण घणीवार आवुं ज जोवा मळे छे. आनुं कारण अंग्रेजी भाषानी अणसमज छे. अंग्रेजी मां RANAKPUR एम लखाय. तेनुं हिन्दीमां रूपान्तर करनारा कारकूनो के अधिकारीओ तेने आम वांचे - रणकपुर. केमके जो RA नुं 'रा' करीए तो NA नुं पण 'णा' केम न करवुं? आथी तेमणे 'रा' ने बदले 'र' करी मूक्युं. विश्वभरमां आवा पुरातन, ऐतिहासिक, कलाधामनुं नाम बगाडवानुं श्रेय, आ रीते, भारत सरकारने फाळे जाय छे. अस्तु.

गुरुने सादडी पधारवानी विनंति घणी भावनापूर्वक करवामां आवी छे. तेमां, महावीरजी तीर्थ (मूछाळ महावीर), राणकपुर (आदिनाथ), वरकाणा (पार्श्वनाथ), नडूलाई (नेमनाथ), नाडूल (पद्मप्रभु)—आ पांच क्षेत्ररूप पंचतीर्थीनी यात्रानो लाभ लेवा माटे पण आ तरफ पधारो तेवुं निवेदन पण इतिहासनी केटलीक विगतो आपनारुं बन्युं छे. मारवाडने मरुस्थली कहेवाय छे, पण अहीं संघ गुरुने कहे छे के अमारो हरियाळो - सोहामणो देश मूकीने तमे 'मरुस्थली' (मुरस्थली)मां केम मोही पड्या छे? एम जणाय छे के भीनमाल तथा सादडी बन्ने मारवाडनां क्षेत्रो होवा छांतां, सादडीनी तुलनामां भीनमाल वधु शुष्क प्रदेश, ते समयमां हशे. अथवा भावनाना पूरमां तणातो माणस आवां निवेदन अवश्य करी शके छे.

गुरुनो परिचय छेल्ली ढाळमां आम मळे छे : रूपनगर वतन, प्रेमाशाह पिता, पाटमदे माता, ओश(वाल) वंश, गुरु विजयदयासूरि.

(१०-११)

पण्डित मोहनविजयजी जैन जगतमां 'लटकाळा' तरीके जाणीता छे. भगवान प्रत्येनो तेमनो भक्तिभाव, तेमनी काव्य-रचनाओमां, उपालम्भ-ओलंभा रूपे नीतरतो होय छे. ए ओळंभो ए ज तेमनां लटकां, अने एवां लटकां तेओ करे तेथी ते लटकाळा ! तेओ हमेशां भगवानने ओळंभो-ठपको आपता रहेता. ठपकानो सूर कांईक आवो हतो : "तमे ने हुं, साथे रमता, साथे रहेता, साथे भमता, बधुं साथे ज चालतुं; ते पण थोडाक दहाडा पूरतुं नहि, जन्मजन्मान्तरो सुधी. आम आपणे कायमना लंगोटिया गोठिया हता. एमां एकाएक शुं थयुं के तमने तक मळी गई ने तमे मने पाछळ छोडीने आगळ नीकळी गया, ने काळांतरे भगवान थई गया ! ने हुं तो ज्यां नो त्यां ज पडेलो रह्यो ! साहेब, तमारो जूनो भाइबंध तमने याद न आवे ते तो समज्या, पण तेनी तमने दया पण न आवे ? आवी तमारी स्वार्थी प्रभुता ?"

आवा प्रभुप्रेमी कविए 'चंदराजाना रास' जेवी मातबर कृतिओ आपी छे. तेमनो आ पत्र पण, काव्यमय पत्रोमां जराक नवीन भात पाडनारो पत्र छे. उदयपुरना वर्णनमां 'वापी वप्र विहार बहू' एम 'व' थी प्रारम्भाता पदार्थोनी नामावली, कोई रास-कृतिनो टुकडो होवानी छाप ऊपसावी जाय छे. तो आचार्यना-गुरुना वर्णनमां गुरुना १०८ गुणोनुं वर्णन त्रण वार ३६-३६ गुणो गणावीने करवामां आव्युं छे. १०८नुं आवुं संयोजन कविनी प्रतिभानुं सूचक छे. जोके आ १०८ गुण वर्णवती ढाळनी अन्तिम कडीमां आवता नामाचरण मुजब, ए ढाळना रचयिता पं. कनकविजयशिष्य हरिविजय छे तेम समजाय छे. आनो अर्थ ए के कवि पोतानी (पत्र-)रचनामां पोताना स्नेही मित्र-कविनी रचेल ढाळ सामेल करे छे, ते पण एक विस्मयजनक बीना छे.

'सारसी' छन्दनो प्रयोग आ पत्रमां पण छे, जे नोंधपात्र छे. भाषा-छन्दशास्त्रोमां आ छन्दनुं बंधारण तपासवुं पडे. आम तो तेनुं स्वरूप 'हरिगीत'ने मळतुं जणाय छे. गुरु-वर्णन माटे अन्यकृत रचना लीधा छतां कविने ते अपूरतुं

जणायुं होय के गमे तेम, पण १ थी ३६ गुणोनुं परम्परागत रीतनुं वर्णन तेमणे २१ कडीनी ढाळमां कर्युं तो खरुं ज.

पत्र सोरठना मंगलपुर-मांगरोळ (मंगलउर-मांगलउर-मांगलो-मांगरोळ)थी लखेलो छे, तेनुं सूचन 'अडयल्ल'नी प्रथम कडीमां थयुं छे. नगरवर्णन सामान्य. चौथी कडीथी समुद्रकांठानुं क्षेत्र होवानो ख्याल मळे. पछीनी ढाळमां 'नवलखो भेटवाजी' अने 'बीजा मुनिसुव्रतनो उच्छरंग' एम नोंध छे ते त्यांना बे जिनालयो परत्वे छे. मांगरोळमां आम तो 'नवपल्लव' पार्श्वनाथ छे, पण कविना चित्तमां 'दीव'ना 'नवलखा'ना संस्कार जागृत हशे तेथी आम लखी बेठा हशे.

११मो पत्र उपरोक्त मुनि के पं. हरिविजये लखेलो छे. ते पण मांगरोळथी ज लख्यो छे. पूरो सम्भव छे के १०-११ बन्ने पत्रोना रचयिताओ मांगरोळमां साथे ज होय, बेउए अलग पत्रो लख्या होय. बेमांथी एके कवि वर्ष तो नोंधता ज नथी !

आ पत्रनो प्रारम्भ अशुद्ध सं. काव्योथी थयो छे. १ थी १०८ गुणवर्णननो अंश, उचित रीते ज, अहीं अपायो नथी. सोरठ देशनी हरियाळीनुं वर्णन मनने गमी जाय तेवुं छे.

(१२)

आ पत्र, आ अड्कमां ज प्रगट थता अन्य पत्रने महदंशे मळतो होवानुं जणावीने जे तफावतवाळो अंश छे तेनी वाचना तैयार करी अत्रे आपवानुं काम पत्र-सम्पादकोए ज कर्युं छे, एटले ते विषे कांई लखवानुं रहेतुं नथी.

अचलगढनां चार धातुबिम्बोनुं वजन १४४४ मण होवानी दन्तकथा/परम्परा घणी पुराणी छे, तेनो पुरावो आ पत्रनी एक चौपाईमां मळे छे. वळी ते सोनानां होवानी कथा पण प्रचलित छे, परन्तु 'ते मध्य बिंब सकल सप्तधात' एवा आमां थयेला उल्लेखथी, ते सप्त-धातुमय छे, सोनानां नथी, ते वात पण प्रमाणित थाय छे.

(१३)

आ पत्र बहु नानो छे, परन्तु लेखकनी हृदयाभिव्यक्ति तेमां जे थई छे

ते हृदयङ्गम लागवाथी आ सङ्ग्रहमां तेनो समावेश करवामां आव्यो छे. पत्रनी भाषा पद्यांशमां हिन्दीप्रधान अने गद्यांशमां गुजरातीप्रधान छे. मारवाडीनी छंट तो होय ज.

चोथा सवैयामां माणिभद्रवीर, चक्रेश्वरी, पद्मावती, अम्बिका तथा अन्य विविध देव-देवीओनी गुरुने सहाय मळे छे तेवी वात ध्यानपात्र छे. यति-श्रीपूज्यनी परम्परामां देवसाधनानुं प्राधान्य के प्राबल्य हतुं ते वात तो जाणीती छे ज; ते आवा उल्लेखो द्वारा पुरवार पण थाय छे.

गद्य भागमां शब्दे शब्दे गुरु प्रत्येनो, लेखक-कविनो आन्तरिक लगाव व्यक्त थतो रह्यो छे. तेओ गुरुने मालवा पधारवानी विनवणी करे छे, पण ते करतां करतां ज तेमने ख्याल आवे छे के आ शक्य नथी, तो तेओ ते स्थितिने पोतानां कर्मनो उदय माने छे, अने लखे छे के “आर्य देशमां उत्पन्न थनार माणस जो अनार्य देशे जईने वस्यो होय तो तेने तेम प्रभुजीनां दर्शन मळतां नथी, तेम मारा माटे पण आपनां दर्शन दुर्लभ बन्यां छे.”

आ विनवणीना प्रसंगमां तेमणे माळवाना ‘श्री मोक्षी पार्श्वनाथ’नो उल्लेख कर्यो छे. ते हालना प्रचलित नाम ‘मक्षी-मगसी पार्श्वनाथ’ अंगेनो छे. ‘मोक्षी’नुं भ्रष्ट रूप ‘मकशी-मक्षी’ थई जवुं केटलुं विचित्र दीसे !

(१४)

१९मा शतकमां लखायेल आ पत्रनां प्रारम्भिक पद्योनी सं. भाषा रसप्रद छे. सं. भाषा पर पूरतुं प्रभुत्व न होय छतां परम्परा प्रमाणे आरम्भ सं. पद्योथी ज थवो घटे एवी समज ने आग्रह धरावता आ कविनी सं. रचनामां छन्दनो मेळ अक्षरमेळने आधीन नहि, गानने आधीन बने छे. तेथी ते छन्द अक्षरमेळ अने मात्रामेळनुं सम्मिश्रण बनी जतुं होय छे. तेनी भाषामां पण गुजराती-मारवाडी शब्दो आपोआप संस्कारित थईने संस्कृतत्व मेळवी ले छे. विद्वानोने आमां रमूज पडे. अशुद्धप्राय बधां पद्योमां सुधारी न शकाय तेवी क्षतिओ संस्कृतत्व पामी गई छे.

पद्य ४मां ‘श्रवणसुणितं’मां ‘सुणितं’ प्रयोग जुओ ! सुणवुं, सुण्युं, ए क्रियापद राजस्थानी बोलीनुं, ते अहीं ‘सुणितं’रूपे संस्कृतत्व पाम्युं छे. तो ते ज पद्यमां त्रीजी पंक्तिमां अक्षरोनो कोई मेळ नथी, लघु-गुरुनो पण नहि; छतां

ते ‘हरिणी छन्द’ना लयमां गाई तो शकाशे. टूंकमां, सं. पद्योनी शब्दार्थ करवा जनारो जराक अटवाय तो ना नहि.

भाषाना छन्दो चारणी लढणमां ब्रजमिश्रित हिन्दीमां छे, जे प्रभावोत्पादक लागे छे. मालवदेशमां अयवंती (अवन्ती) ने मगसी (मक्षी) बे मुख्य तीर्थ होवानुं सूचवीने त्यांना ते समयना शासक मराठा राजवी ‘दोलतराव’ नो नामोल्लेख, ‘मरहट्टे मोटो मरद’ एवी प्रशस्ति साथे कवि करे छे. पद्मावती छन्दनी चोथी कडीमां ‘रतलाम’नुं नाम जडे छे. आ कवितोमां तो मालव-रतलामनी प्रशंसा छे, साथे रतलाममां पर्वतसिंह नामे क्षत्रिय राजा होवानो ने ते वैष्णव होवानो पण उल्लेख थयो छे. तेने हिंगळाज ने मम्माई (मम्मादेवी)नुं वरदान होवानुं पण ७मी कडीमां सूचवायुं छे. त्यां शान्तिनाथ-मन्दिर होवानो निर्देश पछीना दूहामां छे. पछी भुजङ्गी छन्दमां गुरुवर्णन थयुं छे. तेमां ‘असीच्यार गच्छतणी पातसाही’ – अहीं ‘असीच्यार’ पदनो अर्थ ८० + ४ = ८४ एम थतां, गुरु ८४ गच्छना राजा होवानुं कवि वर्णवे छे.

ते देशनी निन्दा पण कवि करे छे. प्रथम दूहामां ज ‘अब वर्णन हांसी करुं’ तथा ‘हितकरनै हांसी करुं’ एम कहीने कवि मांडणी करे छे. तमे मालवदेशमां भले मोह्या हो, पण त्यां तो रोगचाळा घणा होय छे, त्यांना लोक कामणगारा-कामण करनारा छे, ने वळी ओछा वेष पहेरनारी त्यांनी नारी तो बूरी होय छे ! त्यांना लोक ‘गुणहीना अतिछीछरा’, त्यांनी बोली ‘ओछी’ अने ‘लोक (मनना) नाना’; खाणीपीणीनो स्वाद ‘फीको’; त्यां ‘प्रीति’ जेवुं तत्त्व नहि; लोको क्रोधी ने अभिमानी, इत्यादि.

पण आटली निन्दा पछी कवि तरत वात वाळी ले छे : आ बधा ‘ओगण (अवगुण)’ने बाजु पर राखवामां आवे, तो आ देशमां मक्षी ने अवन्ती पार्श्वनाथ बिराजे छे, ते आ देशनो मोटो गुण गणाय. पछी कवि, गुरुने मरुधर देशमां पधारवानी विनंति करे छे : ‘आवौ मरुधर देश’. ढाळनी छेल्ली कडीमां कवि-परिचय आम मळे छे : भक्तिविजयनो शिष्य, कवि मनरूप आम अरज करे छे. आ ढाळमां मारवाडी बोलीनी प्रचुरता जोवा मळे छे, तो हवेनी ढाळमां गुजरातीनुं प्राधान्य जोई शकाय तेम छे.

आ पछी क्रमशः १-३६ गुणवर्णन, सर्वसामान्य पद्यो, गद्य, सं.पद्य, गद्य

- आम चाले छे. सं. पद्य ४मां 'जीवनाख्यं नमाम्यहं' ए पदथी जिनेन्द्रसूरिनुं पूर्वनाम 'जीवन' होवानुं सूचवाय छे. पछी शरु थाय छे मरुधरनुं वर्णन. 'अणनम राठोड' ए मारवाडनी प्रशस्ति छे तेम वर्णवतां कवि जोधाणा-जोधपुर, मानसिंह राजाना उल्लेखपूर्वक तेनुं वर्णन करे छे. त्रोटक छन्दमां थतुं राज-वर्णन उत्तेजक लागे छे. जोधपुरना वर्णनमां जुदां जुदां क्षत्रिय-गोत्रोनां नामो रसप्रद छे. वणिक-गोत्रो, विप्र, महेता, कायथ-कायस्थ, दोढीदार वगैरेनी नोंध पण थई छे. सुरगुरुतुल्य मन्त्री, पुरोहित, व्यास, सैयद, पठाण, मोगल - बधां पण अहीं नोंधायां छे. नाजर, चारण, भट्ट (भाट) पण छे. वडी-मोटी तोप त्यां हती ते पण नोंधवानुं कवि चूकता नथी. चामुण्डा, विष्णु, ज्वालामुखी, हनुमन्त, भीम - एवां विविध देवस्थानोनो, तो पद्मसर, राणीसर, गुलाबसागर, फतेसागर, गंगेलाव, फूलेलाव जेवां जलाशयोनो पण उल्लेख थयो छे. फरी गंगाश्याम, बिहारी-कुंजधाम, जलन्धरनाथ तथा जिननां देरांनी तथा अन्य विविध देवस्थानोनी नोंध आपी छे. 'मनारै अरु महजीत' ए पदमां मस्जीद-मिनारानी नोंध लेवानुं पण कवि चूक्या नथी. जोधपुरमां आ बधुं ज हतुं. आ वर्णनथी सांस्कृतिक-सामाजिक अध्ययनने पात्र सामग्रीनी एक सुस्पष्ट नोंध आपणने मळी रहे छे, जे ऐतिहासिक पण छे.

कडी २६-२७मां तपागच्छ, खरतरगच्छ, पासचंदगच्छ, लूंकागच्छ - आ बधा गच्छेनी पोषालो विषे नोंध छे. क. २९मां आसन, मठ, फकीरोना तकिया - बधां विषे वात करतां, तकियामां फकीरो अल्लानुं नाम ले छे, ते पण जणाव्युं छे. पछीनी कडीओमां केटलांक वणिक-गोत्रोनां नाम आवे, तेमां 'मुहता वडा मर्द ही मर्द, सही करे अरियणकुं सरद' ए पंक्तिओ 'मुहता'नी मर्दानगीनी साख पूरनारी छे. कायत्थ माटे 'दोत-कलम ही कान धरते' एवं लख्युं छे. तो मुसलमान मक्के भेटे छे ने 'जाकू सच्च जन ही जान' एम जणावे छे. कदाच मक्का जई आव्या पछी ते साचुं ज बोलता - ते विषे संकेत संभवे ?

३६मी कडीमां नगर-वर्णन थया पछी बहारनुं वर्णन शरु थाय छे : वखतसागर वगैरे सरोवरो, बाग, त्यां काळा-गोरा वीरनुं स्थानक होवानुं सूचवता कवि, ४१ मी कडीमां पार्श्वनाथना उत्तुङ्ग प्रासादनी नोंध ले छे. राजाराम शेट द्वारा निर्मित उपाश्रयनी पण जिकर करी छे. पछी विविध सरोवरोनी यादी छे.

४८मी कडीमां १८७१ मा वर्षे आ गजल रच्यानी नोंध छे.

गच्छपतिने मारवाड पधारवानी विनंति ए आ पत्रनो मुख्य उद्देश छे. विनंति करतां मारवाडनी विशेषताओना वर्णनमां राण(क)पुर, फलोधी, कापरडा, पाली, सोझित - आ बधां क्षेत्रो - तीर्थोनो उल्लेख थयो छे. गुरु पोते सोझितमां जन्मेला होवानुं याद अपावी तेमनी - वाघरेचा गोत्र, माता गुमानदे, पिता हरचंद, ओशवाळ वंश - ए विगतो पण जणावी दीधी छे.

गद्य भागमां विनंति लखतां लखतां जोधपुरनो संघ पं. मनरूपविजयजीनी प्रशंसा करे छे ते अंश ध्यानाई छे. पत्र त्रुटित छे. सचित्र छे. भाषा मुख्यत्वे राजस्थानी छे. ऐतिहासिक विगतोनी दृष्टि पत्र महत्त्वनो गणाय तेवो छे.

(१५)

विजयजिनेन्द्रसूरि तपगच्छना मोटा प्रभावक श्रीपूज्य गच्छपति हशे तेम तेमना पर लखायेला तेमज उपलब्ध थता अनेक विज्ञप्तिपत्रो जोतां लागे छे. आ पत्र पण तेमना पर ज लखायेलो छे. सं. १८७६मां ते मांगरोल चोमासुं हता त्यारे सोझतना संघे आ पत्र लख्यो छे. सोझतने 'सोझाली' एवा नामे अहीं ओळखावायुं छे.

मांगरोलमां 'मीयां मान' शासक, सोमजी दीवान, आनन्दराम कारभारी, फोजदार मीयां छे. आठमा (चन्द्रप्रभु), वीशमा (मुनिसुव्रत) तथा पार्श्वनाथ - एम ३ देरासर त्यां छे. शेट नानजी, धरमशी, कपुर मोदी अने श्राविका वालुबाई एम ४ नामो पण जोवा मळे छे.

सवैया एकत्रीसा छन्दो द्वारा गुरुवर्णन थयुं छे. तेनी भाषा चारणी हिन्दी छे, अन्य ढाळोमां मारुगुर्जर भाषा छे. आ भाषा आ पत्रोमां सार्वत्रिक होय छे. पध्दडी छन्दमां मारवाडनुं अने सोझतनुं वर्णन व्रज-हिन्दीमां छे. विगतोनुं साम्य पूर्व पत्र जेवुं ज; बन्नेनी विगतो सरखावाय तो मजानो अभ्यास सांपडे. ११ उपाश्रय, ३ पोषाळ, तेमां तपगच्छनो उपाश्रय बहु भव्य. 'देवसूर' (क.४४) शब्दनो उल्लेख ऐतिहासिक गणाय. महदंशे अन्य (पूर्व) पत्रनी वातो/वर्णननुं पुनरावर्तन थया करे छे. आ पत्र पण सचित्र छे.

(१६)

સં. ૧૮૮૧માં મેડતાથી લખાયેલો આ પત્ર પળ મારુગૂર્જર ભાષામાં અને પદ્યાત્મક છે. પાટણ પર 'હામા ગાયકવાડ'નું રાજ હોવાનો ઉલ્લેખ મહત્વનો છે. પાટણનું તેમજ મેડતાનું વિસ્તૃત વર્ણન કરતાં ત્યાંનાં અનેક સ્થાનો, દેવસ્થાનો, બજારો, જ્ઞાતિઓનું વર્ણન કવિએ આપ્યું છે. ઉપાશ્રયવર્ણન એ આ પત્રનો વિશેષ છે. ઉપાશ્રયના બાંધકામ વિષે, તેમાં યક્ષ માણિભદ્રના સ્થાન વિષેની, મોતીદામ છન્દમાં થયેલી નોંધ ખાસ ધ્યાનપાત્ર છે.

મેડતા-ઉપાશ્રયમાં પળ માણિભદ્રના સ્થાનની વાત, ૧૦૮ ગુરુગુણ, રાજા માનસિંહ રાઠોડ, મેડતામાં ૧૧ જિનાલયો, વિવિધ દેવસ્થાનકો, 'હીર' ગુરુનાં પગલાંની દેરી, આ બધું વર્ણન ખૂબ રોચક તથા વિગતપ્રચુર છે. અગાડુના પત્રો જેવું જ લંબાણ વર્ણન ધરાવતો પત્ર - એમ કહી શકાય. આ પત્રો ભાષા અને ઇતિહાસની રીતે ખૂબ રસપ્રદ છે એમ ફરીથી કહેવાનું મન થાય.

(૧૭)

આ પત્ર સં. ૧૮૮૧માં મુમ્બઈ બન્દરે બિરાજતા ગચ્છપતિ વિજયદેવેન્દ્રસૂરિ ઉપર સૂરતના સંઘે લખેલ ક્ષમાપના-પત્ર છે. તીર્થકરોનાં તથા માણિભદ્ર યક્ષનાં સ્મરણ-મઙ્ગલ પછી ૧૦૧ ગુરુ-ગુણગાન પાંચ ઢાલોમાં થયું છે. મોતીચંદ (મોતીશા)ના પુત્ર ધીમચંદને કવિ 'નગરશેઠ' તરીકે ઓળખાવે છે, જે તેમના પ્રભાવનું સૂચક છે. ચીન દેશનો માલ અહીં ખૂબ આવતો હોવાથી અહીંનું ધન-રોકડ નાણું ત્યાં ખૂબ વહે છે તેવો ઉલ્લેખ મહત્વનો ગણાય. 'કુલાબા (કોલાબા)'માં શ્રાવકોની વસ્તી હોવાનું પળ આમાં નોંધાયું છે.

અમીચંદ સાકરચંદના પુત્ર મોતીશા ઓસવાલે સં. ૧૮૭૪માં શત્રુઙ્ગયનો સંઘ કાઢ્યો, ૧૮૮૫માં મોતીશા-ટૂંકમાં આદીશ્વરની પ્રતિષ્ઠા કરી, તે ઇતિહાસ પળ આમાં છે. 'બોએખલા' (બોંયખલા (ખલાની ભૂમિ) - બુંડેખલા - Byculla - બાયખલા)માં મોતીશાની વાડી, તેમાં તેમણે ઋષભદેવ બેસાડેલા છે તે, તથા ત્યાં દાદાસાહેબનાં પગલાં પળ છે - આ બધી વિગતો આમાં છે, તે જોતાં સ્પષ્ટ થાય છે કે બાયખલાનું સ્થાન શેઠની વાડી હતી, તેમાં તેમણે પોતે દેરાસરાદિનું નિર્માણ કરેલું. પળ તે વાડી દેવસમર્પિત-દેવદ્રવ્યની જગ્યા હોવાનો કોઈ જ સંકેત કે સૂચન આમાં થયાં નથી.

કલ્યાણજી કાનજીના પુત્ર બાલાભાઈ ઉર્ફે દીપચંદે ૧૮૮૭માં શત્રુઙ્ગયનો સંઘ કાઢ્યો, કપુરચંદ બોઘાના પુત્ર ફૂલચંદે 'ઘોઘા'માં પાર્શ્વનાથનું દેરાસર બનાવ્યું, યદુરગચ્છના મારુ હીરાચંદે ચિન્તામણિ ચૈત્ય (પાયધુની) કરાવ્યું, આ બધી વિગતો તથા અન્ય શ્રાવકોનાં નામો આમાં મળે છે. આ શ્રાવકોએ ગુરુને મુમ્બઈ તેડાવ્યા હોવાનું સમજાય છે.

(નોંધ : મહુવાના જીવિતસ્વામી ભગવાનના મન્દિરનો જીર્ણોદ્ધાર તાજેતરનાં વર્ષોમાં થયો ત્યારે જીવિતસ્વામીની પલાંઠીમાં ચોતરફ ચોડેલ પતરાં ઉઘાડતાં નીકળેલી એક પટ્ટીમાં કપુરચંદ બોઘાના નામનો તથા સંવતનો ઉલ્લેખ, ઘોઘાના નામપૂર્વક વાંચવા મળ્યો હતો. તે પટ્ટી તે વખતે હાજર ગૃહસ્થે ક્યાંક વગે કરી હોય તેમ લાગે છે.)

નવમી ઢાલ, ક. ૧માં ગુરુ દેવેન્દ્રસૂરિનો પરિચય છે : વતન પાલડી, માતા રૂપા. (પિતાનો ઉલ્લેખ નથી). મુમ્બઈમાં મધ્યમાં પાર્શ્વનાથ (ગોડીજી?)નું જિનાલય, આણસૂરગચ્છે આદીશ્વર, સાગરગચ્છે શાન્તિનાથ, મૂઠ કોટ (ફોર્ટ)માં પળ શાન્તિનાથ - આટલાં દેરાં તે વખતે ત્યાં હતાં, એમ આમાંથી જાણી શકાય છે.

આ પત્ર / પત્રોમાં મણિભદ્રજીનો ઉલ્લેખ બહુ ભક્તિથી થતો હોય છે. એક ઢાલમાં નોંધાયા પ્રમાણે, આઠમે-ચૌદશે તેમની સેવા કરતાં ઘણો લાભ થાય છે. મેવાસ(મહીવાસ)માં મગરવાડા ક્ષેત્રમાં માણિભદ્રને નમવા ગચ્છપતિ પળ જાય છે.

મુમ્બઈ પછી કવિ સૂરતનું વર્ણન કરતી ગજલ લખે છે. તાપી નદી, ૧૨ દરવાજા, તોપો, અંગ્રેજ રાજકર્તા 'લબીષ્ટીત્' (ખ્રષ્ટ રૂપ છે), આડેસર (અરદેશર) કોટવાલ, કિલ્લેદાર માલેસિંહ, નસરુદ્દીન નવાબ, ઇત્યાદિ નામો ઐતિહાસિક સામગ્રીરૂપ છે. મુસ્લિમો પછી પારસીઓના વર્ણનમાં, તે લોકો 'આગ'ને દેવ માને, 'તાપી'ને માતા ગણી નમે તે વિગત પળ મજાની છે. મુગલીસરા, ચીનીયાનું, ગુજરીહાટ, ગોપીપુરા વગેરે સ્થાનોની નોંધ આમાં થઈ છે. ગોપીપુરામાં જવેરી ઓસવાલ, ભળશાલી આદિનો નિવાસ છે, તપાગચ્છનો ઉપાશ્રય અને તેમાં પત્રલેખક (પ્રેમવિજય) ચોમાસું છે, તે વાતો પળ કવિએ વળી લીધી છે. એ વિસ્તારમાં ધર્મનાથ, સૂરજમળ્ડન, ગોડીજી, શઙ્કેશ્વર - એમ ૪૫ દેરાં છે, આ શહેરમાં ૮૪ ગચ્છો હતા, ઉપાશ્રયમાં હાથી પર આરૂઢ મણિભદ્રની સ્થાપના છે, આવી વિવિધ

माहिती कवि आपे छे.

आ पछी अश्वनीकुमार, बाला हनुमानथी मांडीने विविध धर्मनां देवस्थानको-
दरगाहोनी विगतो नोंधवामां आवी छे. गद्यभागमां गुरुनां घणां बिरुदो, विविध
ज्ञातिओगत श्रावको-श्राविकाओनां नामो आपेल छे, जे इतिहासनी रसप्रद सामग्री
बनी रहे तेम छे.

सूरत पधारवानी विनंति करतां कवि मुम्बईनी निन्दा पण मजेदार करे
छे : कुंकण देशनी मुम्बई नगरीना लोको निर्मोही छे, तेमने तमारा पर भाव नथी,
छतां त्यां तमो शुं मोही पड्या छे ? वळी, त्यां मांकड, चांचड, मगतरां, मच्छरोनो
भारी प्रकोप छे. एवा क्षेत्रमां न रहेवाय, अहीं पधारो !

छेछे विनंतिनी ढाळमां गुरुनो परिचय पुनः आपतां तेमनां माता रूपा,
पिता अमीचंद एम नोंध आपी छे. पत्रने छेडे श्रावकोना हस्ताक्षरो छे, ते अंश
अहीं छापेल नथी. आ पत्र पण सचित्र छे.

(१८)

आ पत्र पण जोधाणा-जोधपुरथी लखायो छे, सचित्र छे, देवेन्द्रसूरि
उपरनो छे. लखनार भिन्न, वर्ष भिन्न, तेथी एक ज स्थानेथी भिन्न भिन्न पत्रो
लखायेला जोवा मळे छे. दरेकमां थतुं जोधपुरनुं वर्णन महदंशे समान होय, पण
पत्र मोकलाय ते क्षेत्र बदलातुं होवाथी तेनुं वर्णन नवुं होय. आ पत्र वीसलनगर
(वीसनगर) मोकलायो छे.

प्रथम 'छप्पय'मां ज गुजरात देशने काबल (काबुल), बलख (बल्ख),
खंधार (कन्दहार-गान्धार) जेवा देशोने जीती जाणे तेवा बुद्धिमान लोकोना देश
तरीके गणाव्यो छे.

वीसलपुरमां 'खान' नामे कोई शासकनुं राज छे. मन्त्री इच्छाचंद, हाकेम
दीनदयाल, पण्डित भाऊ फणोस, शेट मंछ मगन तथा अन्य, महेता रामजी -
आ बधा राज्यना पदाधिकारीओ जणाय छे. विविध दरवाजा, देरां, पोळो, वाव;
देरासरोमां कल्याण पार्श्वनाथ तथा आदीश्वरनुं त्रिशिखरी मन्दिर, कंसारापोळमां बे
मन्दिर, मोलवाडामां एक मन्दिर, खजुरी महोल्लामां एक उपाश्रय - ज्यां गुरु
बिराज्या छे ते, मोलवाडामां एक संवेगी उपाश्रय, वेदवाडीमां धर्मशाला - आ

बधुं त्यां होवानुं कवि जणावे छे, जे इतिहासनी रीते महत्त्वपूर्ण छे.

(१९)

नागोरथी पालणपुर लखायेलो आ पत्र मुख्यत्वे मारवाडीमां छे, पण
तेमांना त्रिभङ्गी छन्द तथा केटलांक कवित्तोमां व्रज के चारणी भाषानी छंट
खास्सी छे. आमां पण शत्रुञ्जय अने गिरनार द्वारा गुजरातनी ओळख आपी छे,
उपरांत शङ्खेश्वरनो उल्लेख पण गुजरातनी विशेषतालेखे थयो छे. पालणपुरमां
नवाबी राज छे, कारभारी मोती महेता नामे छे, ते नगरवर्णनना आरम्भे ज
नोंधायुं छे.

गुरु देवेन्द्रसूरिनो परिचय अहीं पण अपायो छे : सेत्रोवा गाम, ओसवाळ
वंश, चोपडा गोत्र, अमीचंद-सरूपदेना पुत्र, जिनेन्द्रसूरिना पट्टधर.

२१ श्लोको सं.ना छे. ते वांचतां थाय के कविए आना करतां भाषामां
ज पद्यरचना करी होत तो वधु मजा आवत. नागोरना वर्णनमां राठोडोनुं राज्य,
७ पोळवाळो गढ, अनेक सरोवरो, पीर अने विविध देवोनां स्थानको, जिनालयो,
बे दिगम्बर देरां, तपगच्छना ५, पासचंदगच्छना २, खरतरोना ३, लोंकाना ४
उपाश्रयो, राजमार्ग पर पांच पोषालो - आ बधी ऐतिहासिक विगतो आ पत्रमां
प्राप्त थाय छे. आ पण सचित्र पत्र छे.

(२०)

सं. १९१६मां जोधपुरथी लखायेल आ पत्र पण कवित्वनी दृष्टिए
विलक्षण/विशिष्ट छे. आना छन्दो, कवित्तो, ढाळो, तेनी चारणी अने मारवाडी
भाषा - बधुं अध्ययनयोग्य छे.

देवेन्द्रसूरिने मणिभद्र यक्ष साक्षात् होवानो उल्लेख -

“तपगच्छसानिध तत्परा देविंदने परतक्ष
वर दीधो तिणे हर्षसुं माणिभद्र वड यक्ष”

आ पंक्तिओ द्वारा थयो छे, जे बहु अगत्यनो छे. त्रिभङ्गीमां थयेल
अमदावादना वर्णनमां - दरियाशाहपीर (दरियापुर), शेट मगनभाईनो बाग
(वाडी), हठीसिंहनी वाडी; ते वाडीना बगीचानां विविध वृक्षोनुं वर्णन केटलुं
रसाळ छे ! भद्रनो दरवाजो, भद्रकाळी मन्दिर, त्रिपोळ-त्रण दरवाजा आदिनो

उल्लेख कवि चूक्या विना करे छे. १०मा छन्दमा 'वीर विवेकं, रूपके टेकं' ए वाक्य 'वीरना उपाश्रय' तथा 'रूप विजयना डहेलाना उपाश्रय' परत्वे होय तेम लागे छे. तेनी सामे ज अष्टापद जिनालय छे ! ११मा छन्दमा हरकुंवर शेठाणीए करावेल ऋषभदेव प्रासाद-तेनी प्रतिष्ठा देवेन्द्रसूरिए करी तेवो उल्लेख छे ते हालना मूलेवा पार्श्वनाथ जिनालय माटेनो जणाय छे. झवेरी महोल ते झवेरीवाड; नागोरी सराय - जेमां गच्छपति हाल - ते वखते चोमासुं रह्या छे ते. शेठ मगनभाई, वाडीभाई, जीवाभाई, ठाकरशी, माणेकचंद, उमाभाई, पानाचंद, गोकळशी - बधा ते समयना अग्रणी श्रावको जणाय छे. मरुधरनुं अने जोधपुरनुं वर्णन लगभग अन्य पत्रो जेवुं ज छे.

(२१)

तपगच्छना 'सौभाग्यलक्ष्मी' तरीके जाणीता विजयलक्ष्मीसूरि, तेमना पट्टधर देवेन्द्रसूरिनी पाटे गच्छपति श्रीपूज्य महेन्द्रसूरि आव्या छे. सं. १८६३मां तेओ 'साणंद' चोमासुं हशे, तेमना पर सीणोरथी लखायेल आ पत्र छे. सीणोरने 'सेनापुर' नामे कवि ओळखावे छे. हाल ते सिनोर-शिनोरना नामे जाणीतुं छे.

नगरवर्णनमां 'गजल' लखवानी आ पत्रलेखकोनी प्रथा रही होवानुं जणाय छे. ते हिन्दीमां लखाय, प्रत्येक पंक्तिने छेडे 'क्' (बंकाक्, डंकाक्) अनिवार्य, एम लागे. आवुं होय तो ज 'गजल' बनती हशे.

साणंदमां मीठालाल देसाई कारभारी छे, तो शिवलाल व्यवहारीनुं भारे मान छे. साणंदनुं विस्तृत वर्णन त्यांना महोल्ला-पोळ-फळियानी तेमज विविध ज्ञाति/धर्मना लोकोनी विगतो पूरी पाडे छे. विविध देवस्थानोनी पण स्पष्ट माहिती आपे छे. जोके आ प्रकारनुं माहितीप्रचुर वर्णन लगभग तमाम पत्रोमां जोवा मळे छे, जे बहु रसप्रद होय छे. कोई अभ्यासी आ मुद्दाने अभ्यासोनी विषय बनावी काम करे तो सरस संशोधन थाय. साणंद जेवुं ज वर्णन सिणोरनुं पण छे, पण ते ढाळबंधमां अने गुजराती भाषामां छे.

(२२)

आ पत्र तपगच्छनी 'रत्न' शाखाना गच्छनायक दानरत्नसूरि पर लखायेलो छे. लखनार साधु कनकरत्ननी काव्यक्षमता मध्यम के सामान्य कक्षानी जणाय.

सं. पद्यो तदन अशुद्ध-अपूर्ण. १५-१६-१७ दूहाओमां पुण्यथी प्राप्त थतां पांच रत्नोनी वात छे, ते बधां स्पष्ट समजातां नथी. राजिस मकुयाणा' ते कोई राजकर्ता व्यक्तित्वं नाम हशे ? मकुयाणा-मकवाणा - एम हशे ? दूहा ११मां 'वढीहार' देशनी वात कवि कया आशयथी करे छे ते समजमां आवतुं नथी. सूरत के राजनगरने वढियार साथे कशी लेवादेवा तो नथी. कविए प्रयोजेला शब्दो पण अस्पष्ट होय छे : जथाखि (जथा रवि?), झीणाणंद, उल्लाद (आह्लाद?), पितृप्रशन, राजिस, अने अन्य पण घणा, जेनो अर्थ पामवो विकट छे. ब्रह्मचर्यव्रतने कवि 'भ्रमव्रत' तरीके ओळखावे, त्यारे वाचकने भ्रम न थाय तो ज नवाई !

गद्य विभागमां केटलीक प्रासङ्गिक विगतो मळे छे : पर्युषणमां कोणे कयुं तप कयुं, धनव्यय द्वारा कयो लाभ कोणे लीधो; ते वर्षे पोताना गच्छमां १ श्राविकाए मासक्षमण कयुं अने समग्र शहेरमां ३२ मासक्षमण तथा ५८ सोळभक्त थयां, इत्यादि माहिती रसप्रद छे.

ए वर्षे वरसाद घणो पडेलो ने पोताना उपाश्रयमां थांभलानी कुंभी डूबी जाय तेवुं पाणी आव्युं तेवो उल्लेख पण छे. तो ते उपाश्रयनी अगाशीमां खोड आवतां तेनुं समारकाम करवानी आर्थिक ताकात न होवानुं निवेदन केटलुं करुण लागे !

साधु-शिष्यनी वृद्धि अंगे चालती चर्चा-विचारणाना सन्दर्भे कोई एक भाईने अंगे नोंधेली वात प्रमाणे, "ए भाई पं. हेमरत्नो शिष्य थवानो होवा छतां तमे (गच्छपति) तेने 'उत्तरभेद करीने' लो ते योग्य छे" - आ मतलबनुं लखाण, ते गच्छनी आन्तरिक स्थिति परत्वे प्रकाश पाथरी जाय छे.

एक पं. नयरत्न नामे मुनिए उचित व्यवहार न जाळव्या विषे फरियाद पण पत्रमां छे. ते साधुनो क्रोध तीव्र हशे अने लांबा समयथी ते यथावत् हशे, तेथी तेना क्रोधने अनन्तानुबन्धिया क्रोधलेखे लेखके वर्णव्यो छे, ने ते साधुने शिखामण आपवा गच्छपतिने टकोर्या छे.

'मीयें पण मासखमण ३ थया छि' आ वाक्यमां मीया एटले मीयागाम. ते उपरांत खेडा, धोलका, साणंद वगेरे क्षेत्रोनी पण उल्लेख थयो छे.

पछीथी कांई राजकारणनी अने लडाईनी पण चर्चा करी छे.

(२३)

कवि उदयरत्न ए मध्यकालना एक श्रेष्ठ गुर्जर साधु-कवि छे. तेमनी रचनाओ भक्तिभावथी छलकाती, पदलालित्य तथा अलङ्कार आदिथी समृद्ध अने प्रसादमधुर होय छे. तेओ पण 'रत्न' शाखाना अग्रणी साधु, उपाध्याय छे. तेमणे तेमना गच्छपति दानरत्नसूरि उपर लखेल आ पत्र पूर्णतः ब्रजनी छांट धरावती हिन्दी पद्यात्मक छे.

मध्यकालीन काव्यरचनानी जे चमत्कृतिओ होय ते अहीं प्रत्येक कडीमां प्रगट थाय छे. वर्णसगाई, सागर-नागर-आगर-रतनागर - एम आदिप्रास, आम उत्तरोत्तर रचनानी जमावट थती आवे छे. नवमो दूहो ३६ गुणोनुं सूचन करे छे : प्रतिरूप आदि १४, १० यतिधर्म, १२ भावना - एम ३६ गुण. - अे वांचतां विजयलक्ष्मीसूरिकृत पूजानी नीचेनी कडी याद आवे :

“पडिरूवादिक चौद गुणधारी, क्षान्ति प्रमुख दश धर्म,
बार भावना-भावित निज आतम, ए छत्रीश गुणवर्म.”

खरेखर तो दरेक दूहानो अर्थ लखीए अने तेमांनी काव्य-चमत्कृति खोलीए, तो ज साचो आस्वाद पामी शकाय. एक १८मो दूहो ज जुओ : “तपागच्छ ते समुद्र, गच्छपति तेमां भरती लावनार चन्द्र-सरीखा; ए आपणने बमणी दोलत ज आपे !”

आ पछीना सवैया-त्रेवीसा तथा एकत्रीशाना छन्दो तो कोई नीवडेल चारणकविनी ने तेनी छन्द-रचनाओनी भ्रान्ति करावे तेवा छे. उदयरत्नकृत 'जोगमायानो छन्द' तो 'अनुसन्धान'मां अगाऊ प्रकाशित छे ज. अनेक जैन कविओए आवी ब्रजभाषा-मढेली हिन्दी छन्द-रचनाओ करी छे, अने मध्यकाळने कविताथी छलकावी दीधो छे.

आमां ४ तो चित्र-बन्ध-काव्यो छे : स्वस्तिकबन्ध, कमलबन्ध, अष्टारचक्रबन्ध अने शरावसम्पुटबन्ध. कर्ताना स्वहस्तना आ पत्रमां चारे बन्धकाव्योना चित्राकारो पण आलेखेला जोवा मळे छे. अेमां अष्टारचक्रवाळा छन्दमां दरेक पादना आद्य अक्षरोनी गुंथणीथी गुरुनुं नाम पण रचाय छे. पछीना दूहाओमां

पत्रप्राप्तिनी वात तथा वृत्तान्तनिवेदन छे, परन्तु दूहा एटला बधा स्पष्ट-सुग्रथित छे के कविनुं सर्जक चित्त अत्यन्त सुघड होवानी छाप पड्या विना नथी रहेती.

गद्यात्मक निवेदनमां 'वृद्ध साजन', 'लघु साजन' - एवा शब्दो छे तेनो भाव एवो जणाय छे के आखो संघ/समाज जमे ते वृद्ध साजन, अने मर्यादित वर्ग जमे ते लघु साजन. प्रभावना-ल्हाणी-तपस्यादिनी वर्णन उपरांत, पादरी, पादशाहपुर, उमेटा - आ बधां गामोमां वर्तता साधुओ तथा त्यांनी वातो विषे विगतो छे. अन्तिम ५ दूहामां, कविना चित्तनी, गुरुनां दर्शननी आतुरता-उत्कण्ठानुं रोचक बयान वांचतां आपणुं हैयुं पण प्लावित थई जतुं अनुभवाय छे.

आ पत्रने उत्तम/श्रेष्ठ पत्र गणवो जोईए. आनन्द ए वातनो छे के उदय-रत्न जेवा आपणा मान्य-प्रिय कविनी एक नवतर रचना आपणने सांपडी रही छे. (हस्ताक्षरोनां दर्शन प्रथम मुखपृष्ठ पर थाय छे.)

(२४)

कवलागच्छ ए उपकेशगच्छनुं नाम छे, अथवा तेनी शाखा छे. आ गच्छमां आचार्य थाय तेनुं नाम 'देवगुप्तसूरि' ज रखातुं, अने ते प्रथा २०मा शतकमां पण चालु होवानुं जाणवा मळे छे, आ पत्रथी. आचार्य 'ककुदाचार्यसन्तानीय' गणाता. गच्छपति होवाथी ते 'चतुरसीती गच्छाधिराज'नुं बिरुद पण धरावता. पत्र नानो छे. छातां तेमां बे-एक कल्पनाओ मजानी छे. जोईए :

दूहो २ - “माबाप मात्र जन्म आपे, तमे (गुरुए) तो चोपगामांथी बेपगो कर्यो ! - बाळक भांखोडियाभेर चाले ते चोपगो गणाय; के पछी परणे ते पण चारपगो ज; तेवाने साधु बनावी तमे द्विपद-बेपगो बनव्यो !”

दूहो ४ - “करै कीट तै भृंग” कीडो (ईयळ) भृङ्ग-भ्रमर बनी मुक्त विहरे तेम, कीडा जेवा मने गुरुए 'गुरु' जेवो बनावी दीधो !”

(२५)

साव नानो पत्र, पण तेनी प्रस्तुतिने कारणे विलक्षण बनी रहे छे. शिष्य अने संघ गुरुने केवा लाड अने अधिकारथी टकोर करे छे ! जोवा जेवुं छे :

“तमे शाह सहसमल अने संपूरदेना दीकरा; मालवाना वतनी; त्यां उज्जैनी अने शाहजिहांपुर तरफ ज विचरो ! पोतानां वतननो मोह न छोडो !

अमे अहीं पधारवानी वात/विनंति करीए छीए, पण ते वात मन पर तमे लेतां ज नथी ! अमने गुरुमुखे प्रभु वीरनी वाणी सांभळवानो उत्कट भाव छे, पण तमारा बगर ते कोण संभळवे ? एटले अमारे तो वाणीनो विरह ! ते पण तमारा लीधे ! आ दुःख क्षणे क्षणे कनडे छे. हवे तो एटलुं ज कहीए छीए के तमारे अमारी जरूर छे के नहि - ते नक्की करजो. जो अमारो खप होय तो वहेलासर आ तरफ - खंभनयर-खंभात पधारो !”

भावनानी आवी उत्कटता साथे आटली बळकट अभिव्यक्ति अन्यत्र भाग्ये ज जोवा मळी छे, अने ते दृष्टिए आ पत्र महत्त्वनो जणाय छे. वळी, विवेक पण केवो ! १३मी कडीमां ‘लघु भारी असमंजस’ - अर्थात् अविनयथी प्रेराईने ओछुं के वधु पडतुं जे असमंजस वेण लख्युं, ते खमजो ! अमारे तो साचा स्वजन तमे-गुरु ज छे; बीजा कोने अमे कहीए ? - आ विवेक हृदयस्पर्शी बने छे.

पत्रलेखक खुशाल मुनि छे. गुरुनी पाट परम्परानो निर्देश तेमणे मजानो कर्यो छे :

“समर-राय-विमल-जया-विजै-विनैचंद पटोधारी रे,
श्रीअखयचंदसूरीसरु, धरमतणा दातारी रे”

अर्थात् - समरचन्द्रसूरि-रायचन्द्रसूरि-विमलचन्द्रसूरि-जयचन्द्रसूरि-
विजयचन्द्रसूरि-विनयचन्द्रसूरि- तेमना पट्टधर अक्षयचन्द्रसूरि.

वांचन अने समजणी भूलने कारणे ‘समरराय-पिता, विमलजया-माता,
विजयविनयचन्द्रसूरि-गुरु’ - आम पण थई शके. पण ते बराबर नहि. पत्रना छेडे के क्यांय वर्षनो उल्लेख नथी.

(२६)

लोंकागच्छ-सम्बन्धित आ पत्र व्रजमिश्रित हिन्दीमां छे; अजमेरथी बीकानेर लखायो होई मारवाडीनी छंट होय ते सहज गणाय. कुण्डलिया छन्दमां दूहा-छन्दनो समन्वय, तेमां दूहानी चोथी पंक्ति ज कुण्डलियानी प्रथम पंक्तिरूपे आर्वातित थाय छे. दूहा, कवित्त, कुण्डलिया - बधा छन्दो गुरुवर्णन-परक ज छे.

(२७)

आ पत्र सचित्र होय तेवी सम्भावना छे, अने जो होय तो तेनां चित्रो शीघ्र

प्रकाशित थवां घटे. केमके तेमां महाराष्ट्री चित्रशैलीनी छाप हशे, जे दुर्लभ गणाय. पत्रमां रिक्तलिपिनां सुशोभनो तेमज बन्ने तरफ फूलवेलनी भात (Border) पण रमणीय लागे छे.

आ पत्र महाराष्ट्रना नवरङ्गाबादथी लखायो छे. तपगच्छनी एक शाखा सागरगच्छ. तेना गच्छपति लक्ष्मीसागरसूरिना शिष्य कल्याणसागरसूरि उपर, नवरङ्गाबाद संघना नामे जयसौभाग्य उपाध्याये लखेलो आ विनतिपत्र छे. आमां, अन्य पत्रोमां होय तेवां अमुक पद्योने बाद करतां, आखी पत्र-रचना नवतर, अन्य तमाम पत्रो करतां वधु ताजी गणी शकीए तेवी छे. अमदावाद-गौर्जरदेशमां रहेला आचार्यने नवरङ्गाबाद पधारवानी विनति आ पत्र द्वारा थई छे.

आमां एक ज ढाळमां गुंथी लेवायेलां श्रावक-नामोमां ‘धामी’ तथा ‘नीमा ज्ञाति’ना उल्लेख नोंधपात्र छे. नामो स्पष्टतया श्रावको गुजराती होवानुं सूचवे छे. ‘शेषपुरा’ना शाह ‘नाहना’, ‘सोझितरा’ना ‘अमाइदास भूलाभाई’ आ नामोथी ते धारणा दृढ बने छे.

त्यांना देरासरमां (के देरासरोमां) ऋषभदेव, शान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ बिराजमान हशे तेम पण एक उल्लेखथी समजाय छे. नवरङ्गाबादमां पधारेला मुनिगणनां तेमज गुरु साथे वर्तता मुनिगणनां नामो ऐतिहासिक रीते उपयुक्त गणाय.

दरेक पखवाडियानी पाखी-चौदशने दिवसे पौषध-उपवास विपुल संख्यामां थतां हशे, तेनां पारणां विविध गृहस्थो तरफथी कराववामां आवतां होय, तेवी विगत रसप्रद छे. पर्युषणना जमणवारोने अंगे पण तेवी ज विगत छे.

‘कर्णपुरा’ त्यांनुं परं होवानुं लागे छे. त्यां पार्श्वनाथ-जिनालय छे. पछीथी गोडीजी पार्श्वनाथनो निर्देश पण छे, ते क्यांना होय तेनी स्पष्टता नथी थती. अन्तभागे मराठी भाषामां पार्श्वनाथनुं लघु स्तवन पण रसप्रद रचना छे, तेमां पार्श्वनाथने ‘पासूबाबा’ तरीके ओळखावेल छे.

पत्र अपूर्ण नथी; पूर्ण ज छे. छेल्ले ‘ताम्बूल’ना वर्णननो श्लोक, पत्रलेखक कल्पनाशील कवि होवानुं सूचवी जाय छे.

(२८)

आ पत्र एकंदरे अन्य पत्रो समान छे. आमां भाषा-काव्यो बहु ओछां अने सामान्य छे, सं. पद्यो ५३ छे, अने विस्तृत गद्यांश छे. पद्यो अशुद्ध खरां, पण कर्तानी विद्वत्ता तेमां डोकाय छे. एक बे पद्यो नो आस्वाद लईए : पद्य २४मां कवि कहे छे के “जैन मत अनुसार, ‘छाया (पडछायो)’ ए भावात्मक अर्थात् पौद्गलिक पदार्थ छे, अने ते साचुं पण लागे छे. एटला माटे के पार्श्वनाथनी छाया थकी आच्छादित मनुष्यो दुःख-दुर्गतिये पामता नथी होता.” (आवुं तो ज बने के जो ‘छाया’ पदार्थ होय). पद्य ४१मां वळी कवि आकाशनी वात करे छे : “आकाश माटे ‘शून्य’ एवी संज्ञा प्रयोजाय छे, (अने ते तेनो दोष छे), तेनो आ दोष, अे नगरना श्रेष्ठीओनी ऊंची गगनचुम्बी हवेलीओ थकी आपोआप टळी जाय छे. अर्थात् ए हवेलीओ आकाशमां छवाई जईने तेनी शून्यताने भूसी नाखे छे” आम, नवीन कवि-कल्पनोनां छांटणां आ पद्योमां जोवा मळे छे. आ पत्र पण सचित्र छे, अने तेमां रिक्तलिपिमां ‘भट्टारक लक्ष्मीसागरसूरी’ एवा अक्षरो आलेखाया छे.

(२९)

पेसकपुर ते मारवाडनुं पेसुआ गाम. कुबेरधनहेतपुर ते बीकानेर न होई शके. धनपुर (धनारी?) नामे कोई गाम होय तो बने. आम तो आ पत्र सामान्य कक्षानो गणाय. सं. १८६१मां तपगच्छना हर्षरत्नसूरिशिष्य राजेन्द्रसूरिने लखायेलो पत्र छे. नगरनुं वर्णन ‘गजल-चाल’मां थयुं छे. विशेष कशी विगत जोवा मळी नथी.

(३०)

आ पत्र मालवणथी लखायो छे. मालवण पाटण पासे छे, सुरेन्द्रनगर विस्तारमां पण एक मालवण छे. आ पत्रनिर्दिष्ट मालवण ते पाटण पासेनुं होय तेवी सम्भावना वधु. पत्र रत्नविजय पर छे. लखनार व्यक्ति तेमना प्रति गाढ स्नेह धरावता होय तेवो भाव पत्रमां डोकाय छे. लेखक पोताना पत्रने ‘प्रेमपत्र’ (८) गणावे छे, ते आ ज वातनुं द्योतक छे. पत्रारम्भे ‘परमेष्ठि’नुं स्मरणमङ्गल थयुं छे. कडी ७मां चन्द्रप्रभु (मालवण)नो उल्लेख छे.

लेखक मूलतः अजैन अने कदाच दशनामी सम्प्रदायना साधुना कुळना हशे तेवुं अनुमान, दूहा क्र. ५ जोतां थाय. ए दूहामां कर्ता पोताने ‘गोरखकुळ’ना वर्णवे छे. पोते अणघड छे पण ‘शम्भुप्याला’ (भाग ?)ना सेवनथी साते धातु खीली उठे छे; आ विधान उपरनुं अनुमान प्रेरे तेवुं छे.

कवि ‘बारोट’ होय तो ते वधु सम्भवित छे. केमके पत्र जेना पर लखे छे ते वडील होवा छांतां तेने ‘तुं’काराथी उल्लेखे छे : “चिरंजीवी रहो तुं सदा” (६). आवुं जन्मजात बारोट ज लखी शके.

कडी १३मां नित्यानन्द, फत्ते, जयसिंह वगेरे, तथा क. १५मां चतुर, राम-आ बधां विशेष नामो होय तेम जणाय छे.

१४मी कडीमांनी वातो पर लक्ष्य आपतां एम थाय के पत्रलेखक ‘मुनि’ नहि होय; गृहस्थ व्यक्ति हशे. समग्रपणे पत्रनुं अवलोकन करतां आ छाप ज उपसे छे.

“नयणा आडा डुंगरा, मन आडुं नहि कोय” — आ एक स्नेही हृदयमांथी उगेली स्वाभाविक स्नेहोक्ति छे. “तमे एटला दूर छे के तमने दैहिक रीते मळवामां आडा घणा पहाडो (अवरोधो) नडे, पण ‘मन’थी तमने जोवा-संभारवामां तो आवुं कशुं ज नडे तेम नथी. (तमारा जेवा) सज्जन जननो मेळवडो (मने) मळयो, ते पुण्य विना न मळे !”

क. १७मां प्रयुक्त ‘बीमणो’ शब्द ‘बमणा-द्विगुणित’ अर्थमां छे. ‘भाईजीथी अंतरभाव थयो छे’- ए वाक्यनो मर्म पकडवो कठिन छे. ‘भाईजी’ शब्द रत्नविजय माटे हशे के अन्य कोई माटे ? घणा भागे अन्य कोई माटे होवो जोईए. ‘अंतरभाव’ एटले ‘अंतरनो भाव’ पण थाय, अने अंतर-आंतर-दूरता पण समजाय. २०मी कडीमां कदाच आनुं कारण आपवामां आवे छे : ‘दांणा पांणीको जोर हैं’ ‘दाणापाणी’ एटले ‘अंजळपाणी’ के ‘लेणादेणी’.

आखा पत्रना तात्पर्य विषे सुज्ञ जनो प्रकाश पाडे तेवी अपेक्षा.

(३१)

‘रामचरितमानस’नी भाषा तथा शैलीमां, दूहा-चौपाईओमां बद्ध, आ नानकडो पत्र तेनी भाषा तथा कल्पनोने कारणे एक मजानी कृति बनी गयो छे.

आ पत्र खरतरगच्छ के लोंकागच्छ साथे सम्बन्ध धरावतो होवाथी अटकळ थाय छे. नयनसुख, रामदास, हंसराज स्वामी, तेमना गुरुलेखे कल्याणमल्ल - आवां नामो आ गच्छोमां होवानुं संभवे छे.

गङ्गा अने सतलुज - बे नदी ते शहेरनी नजीकमां वहे छे तेवो उल्लेख जोतां त्रिकुटनगर ज पंजाबनुं कोई शहेर के गाम होय तेवुं अनुमान थाय छे. गुरुने चन्द्रनी तथा सूर्यनी उपमा आपवा द्वारा तेमनुं वर्णन करवामां कविए कृपणता नथी दाखवी.

(३२)

आ एक नवी ज भातनो पत्र छे. एक मारवाडी श्राविकाए एक साध्वी गुरुणी उपर लखेल आ पत्र छे. पत्र पालीताणाथी लखायो छे. लिखितंग लखनार पोतानुं नाम नथी लखतां, पण पोतानो निर्देश आ प्रमाणे करे छे : **“पालीताणासु लिखतु हेमचंदारा दादीजी नथमलजीरा भुजीका”** अर्थात् **“हेमचंदनी दादी अने नथमलजीनी भोजाई”**ना खामणां. पत्र साध्वीजी पूनमश्रीजी उपर लखायो छे. ते कया क्षेत्रमां विराजतां हशे तेनो निर्देश नथी. मङ्गलमां १. चिन्तामणि पार्श्वनाथनुं स्मरण छे, ते जसकोरनी धर्मशालाना देरासरना भगवान हशे तेम मानी शकाय; २. ते पछी आदिनाथजीनुं तथा साथे १४५२ वजीर (गणधर)नुं स्मरण छे, ते शत्रुञ्जय परना दादा आदिनाथ तथा १४५२ गणधरपगलांनुं स्मरण लागे छे. चोथा दूहामां कांईक विगत होवानुं लागे, पण स्पष्टता नथी थती. ‘नगर अतहि रत्न’ एटले शुं ? श्रेष्ठ रत्न जेवुं नगर ? के रत्नपुर ? (रतनपुर?). ‘सुखेज’ पद कोई नाम हशे ? ‘सरदारसिंह’ तो प्रगटपणे राजानुं नाम छे. एक अनुमान थाय के आ दूहामां सूचवाता क्षेत्रमां साध्वीजी बिराजतां होवां जोईए.

५-१५ क्र. ना दूहाओमां १-२७ गुणोनुं वर्णन छे. ‘साध्वी’ साधुपदमां गणाय, ने ते पदना २७ गुण तेमनामां पण संभवे. ते पछी गद्य विशेषणो आवे छे. पछी पुनः दूहा शरु थाय छे. तेमां दूहा ३मां ‘तज’ छे त्यां ‘भज’ होय तो वधु उचित लागे छे. ‘समान विशेष’ ते ‘सामान्य अने विशेष’ बे पदार्थोने उल्लेख छे. जिनआगममां ते बेने, वैशेषिकोनी जेम, परस्पर-निरपेक्ष-स्वतन्त्र पदार्थ नहि, पण परस्परसापेक्ष अने द्रव्यादिना धर्मरूपे स्वीकारवामां आव्या छे, तेनुं अहीं सूचन थयुं जणाय छे. ४मां नव तत्त्वनी वात, ५मां स्व-पर-व्यवसायी

ज्ञान ते सम्यग्ज्ञान तेमज १ थी ९ तत्त्व(?) भेदनी वात करी छे. ६मां निजगुण-परगुणना सन्दर्भमां स्वभाव-परभावनी वात छे. आ रीते दरेक दूहामां गम्भीर तत्त्वज्ञाननी वातो गुंथी लीधी छे, अने ते तत्त्वनुं ज्ञान गुरुनी सेवा करनार जीव गुरुयोगे मेळवी शके (२२) तेम पण कहुं छे. आ दूहा वांचतां लखनार श्राविकाना श्रुतबोध तथा रचनाशक्ति माटे भारे बहुमान जागे छे. जो के केटलांक वाक्यो समजातां नथी, शुं कहेवा मागे छे ते स्पष्टता नथी थती.

१७मा दूहाथी वळी १-२७ गुणोनुं वर्णन शरु थाय छे, जे परम्परागत रीतनुं छे. छेवटना गद्यांशमां साध्वीओनां नाम छे, अने क्षमापना निवेदन छे. पत्र तात्त्विक दृष्टिए महत्त्वपूर्ण छे.

(३३)

आ पत्र विज्ञप्तिपत्र करतां आनन्दना अने अनुमोदनाना समाचार आपतो पत्र होवानुं वधु संभवित जणाय छे. कया नगरे कोना उपर लख्यो छे ते विगत नथी, पण सातमा दूहामां **“तत्र श्री.... नगरे”** एम छे तेथी आ एक खरडो के ड्राफ्ट हशे, जेनी नकलोमां जे ते गामनुं नाम उमेरी मोकलवानो हशे.

बाबुसाहेब धनपतसिंहजी ते जेमणे कलकत्तामां आगमोनुं प्रकाशन कर्तुं ते, बाबुना देरावाळा. १४मा दूहामां आवता प्रतापसिंह ते प्रचलित शत्रुञ्जयनुं स्तवन ‘सिद्धाचलगिरि, भेट्या रे, धन्य भाग्य अमारां’ - एमां आवती पंक्ति **‘प्रभुजीके चरण प्रताप के संघमें’**, तेमांनो ‘प्रताप’ शब्द - ते ज होय तेम लागे छे. रतनविजय कया गच्छ-संघाडाना ? तेमना गुरु कोण ? ते स्पष्ट नथी थतुं. उपर उल्लिखित स्तवनमां आवतुं नाम ‘खीमारतन’ साथे एमनो सम्बन्ध होय तो शक्य छे. पण प्रतापसिंहनी सुशील पत्नीनी भावनाथी तेमणे बालुचरमां भगवतीसूत्रनुं वांचन कर्तुं हशे, तेनी वधामणी आपवा माटे लखायेलो आ पत्र छे. प्रथम पद्यमां ज ‘प्रणमी तज अहमेव’ एवुं पद छे. तेनो मतलब छे- **“प्रणाम कर अने ‘अहमेव - हुं ज’ एवा अहंकारनो त्याग कर.”** आ रीते वात मांडनार कविनी अध्यात्ममस्ती अहीं व्यक्त थाय छे. सं. १९१९मां आ प्रसंग बन्यो छे, पत्र लखायो छे.

(३४-३५)

आ बे पत्रो कंकोतरी के आमन्त्रण पत्रो छे. पहेलो पत्र तारङ्गातीर्थे निर्माण

पामेल नन्दीश्वरद्वीपना (बावन) जिनालयमां चौमुखजीनी प्रतिष्ठा-प्रसंगे पधारवानो आमन्त्रण पत्र छे. तारङ्गागढ, वडनगर, गढवाडा, सीपोर - बधां गामोनां महाजानोए संयुक्त रीते ते पाठवेल छे. इतिहासनी एक नक्कर विगत आमां उपलब्ध थाय छे के ते वखते तारङ्गातीर्थनो प्रबन्ध आ बधां महाजानो संयुक्तपणे करतां हतां. कोनी अने क्यां प्रतिष्ठा ? एवो प्रश्न अस्थाने लागे छे. आ पत्रिका ते समग्र मन्दिरनी प्रतिष्ठा माटेनो पत्र होवानुं मानवुं जोईए. सं. १८८०ना मागशरनो पत्र छे, अने महा शुद ५नी प्रतिष्ठा छे.

बीजी कंकोतरी अमदावादना नगरशेठ वखतचंद खुशालचंद तरफथी लखवामां आवी छे. आमां १८८३ना वर्षे अमदावादथी शत्रुञ्जयना संघनुं आमन्त्रण छे. विलक्षणता ए छे के पो.व.९नुं मुहूर्त छे, अने महा सुद २नुं प्रयाण जणाव्युं छे.

कार्तक (१८८३) थी कार्तक (१८८४) - एम एक वर्षनुं 'मुंडकुं' एटले पालीताणाना काठी-गोहिल दरबारो तरफथी रखोपाना बदलामां लेवातो माथादीठ यात्रावेरो, नगरशेठे (सहु यात्रिक जनो माटेनो) चूकवी दीधो छे; तेमज भावनगर, तळाजा, घोघा - आ क्षेत्रोमां पण, त्यां-त्यांना राजशासन द्वारा, संघ/यात्रिको आवे तो जे कोई कर वसूलातो होय, ते बधो पण, १२ मास पूरतो, तेमणे चूकवी दीधो छे. तेथी यात्रा माटे तथा संघ साथे पधारनारे ते सम्बन्धी कोई चिन्ता राखवी नहि, तेवुं सूचन पण आ पत्रमां थयुं छे, जे ऐतिहासिक विगतलेखे महत्त्वपूर्ण छे.

उपरांत, शेठे डुंगर उपर बंधावेल नवा देरासर (उजम फोईनी टूंक हशे ?)नी फा.शु. ४ना गुरुवारे प्रतिष्ठा थनार छे ते विगत पण आमां नोंधाई छे. (आ कंकोतरीनुं चित्र अङ्कना चोथा मुखपृष्ठ पर आपवामां आव्युं छे.)

ऐतिहासिक मूल्य धरावती आवी कंकोतरीओ आपणने मळे अने ते आ विज्ञप्तिपत्रो साथे प्रगट थाय छे, ते पण एक उपलब्धि ज गणाय.

पूरक नोंध

१. आ पत्रोमां गच्छ, गच्छपति जेवा शब्दो वारंवार आवे छे. ते अंगे अनभिज्ञ जनो माटे थोडीक स्पष्टता : जैन धर्म-संघमां मुनिओनी प्रधानता होय छे. मुनिओना समूहने 'गण' के 'गच्छ' तरीके ओळखाय छे. ते गच्छना वडील-सर्वोच्च आचार्य 'गच्छपति' के 'गच्छनायक' तरीके ओळखाय.

आवा गच्छे विविध-घणा होय छे. क्यारेक ८४ गच्छ हता. जुदा जुदा हेतुसर साधुसमूहो विभक्त थईने अन्यान्य गच्छना नामे जाणीता थाय. कोईक व्यक्ति, स्थळ, घटना, ज्ञाति - आवा विभिन्न पदार्थोनां नामे गच्छे स्थपाता होय छे. एकेक गच्छमां पण पेटाजूथो होय, जे 'संघाडा' के 'समुदाय' तरीके ओळखाय.

२. विज्ञप्तिपत्रोना आ चोथा अङ्क/विभागमां ३५ पत्रो प्रगट थाय छे. आ तमाम पत्रो (तथा केटलाक प्रगट नहि थता-नहि करेला पत्रो पण), जे ते भण्डारो-सङ्ग्रहोमांथी शोधी काढवानुं, प्राप्त करवानुं, तेमनी प्रतिलिपि करवानुं, यथामति सम्पादन करवानुं - आ बधां ज कार्य अमारा उत्साही तथा अध्ययनशील बे भाई - मुनि सुयशचन्द्रविजयजी तथा मुनि सुजसचन्द्र-विजयजीए कर्युं छे. तेमना विद्वान् गुरु आ. श्रीविजयसोमचन्द्रसूरिजीनी प्रेरणा तथा अनुमति आ कार्यमां तेमने माटे आशीर्वादरूप बनेल छे. ए रीते, आ समग्र अङ्कनुं सम्पादन-श्रेय ते बे मुनिराजोने फाळे जाय छे.
३. ते बन्ने मुनिओए जे जे स्थानेथी सामग्री प्राप्त करी छे तेनी नोंध आ प्रमाणे छे : (१) क्रमाङ्क १, २, ६, ७, १४, १५, १६, २२, २६, २९, ३२ = श्रीकैलाससागरसूरि जैन ज्ञानमन्दिर, कोबा; (२) क्र. ४, ५, ८, ९, १३, २३, २७, ३४, ३५ = ला. द. भा. सं. विद्यामन्दिर, अमदावाद, ह.पं. जितुभाई; (३) क्र. १८, १९, २१ = आर्य जम्बूस्वामी जैन मुक्ताबाई ज्ञानमन्दिर, डभोई; (४) क्र. १०, ११ = श्रीरत्नाकरविजयजी ज्ञानमन्दिर, महुवा; (५) क्र. ३०, ३३ = श्रीनेमिबिज्ञान-कस्तूरसूरि ज्ञानमन्दिर, सूरत; (६) क्र. ३१ = श्रीहेमचन्द्राचार्य जैन ज्ञानमन्दिर, पाटण; (७) क्र. २० = श्रीभीलडियाजी जैन ज्ञानमन्दिर, ह. आ. श्रीमुनिचन्द्रसूरिजी; (८) क्र. १७ = श्री केसरबाई जैन ज्ञानमन्दिर, पाटण, ह. मुनिश्रीधुरन्धरविजयजी; (९) क्र. २५ = शेठ डोसाभाई अभेचंद जैन ज्ञानभण्डार, भावनगर, ह. आ. श्रीनिर्मलचन्द्रसूरिजी; (१०) क्र. ३ = वीरबाई जैन पाठशाला, पालीताणा, ह. उपा. श्रीभुवनचन्द्रजी; (११) क्र. २४ = भो.जे. विद्याभवन, अमदावाद, ह.श्री रामजीभाई सावलिया; (१२) क्र. १२, २८मां प्राप्तिस्थाननी नोंध नथी; आ तमाम ज्ञानभण्डारो-ग्रन्थालयोनी, तेना संचालको-ट्रस्टीगण-व्यवस्थापकोनी तथा आ सामग्री मेळववामां सहायकर्ताओ - तमामनो ते बेउ

मुनिवरो हृदयपूर्वक आभार प्रदर्शित करे छे.

४. पत्र क्र. १२, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २४, २६, २७, २८ आटला पत्रो प्रायः सचित्र छे. आ बधां चित्रोनुं एक सुन्दर प्रकाशन थवुं जोईए. अमारा माटे तो जे ते पत्रोना लखाण पूरती जेरोक्स ज उपलब्ध छे, चित्रोवाळा भाग नहि. परन्तु कोई रसिके आवुं काम पण करवा जेवुं खरुं.
५. आ अङ्कगत पत्रोनुं सम्पादन ए एक आकरी कसोटी तथा महेनत मागी लेतुं काम हतुं. छेल्ला केटलाक महिना आ पत्रोना वांचन, सम्मार्जन, सम्पादन; पछी प्रूफवाचन, नोंधोनुं लेखन - आ बधांमां वह्या छे. सामान्य के सहेलुं मानी लीधेलुं काम करवा बेठा त्यारे केटलुं श्रमसाध्य छे ते समजायुं.
आमां घणो परिश्रम तथा समयव्यय मुनि त्रैलोक्यमण्डनविजयजीए कर्या छे, अने तेमनी हैयाउकलतने कारणे आ पत्रोना क्रम गोठववाथी लईने अनेक बाबतो सरळ बनी गई छे. तेमने अभिनन्दन आपवां ज पडे.
६. छेछे एक महत्त्वनी वात : सम्पादननी अमारी क्षमता/आवडत मर्यादित छे. भाषाज्ञाननी सज्जता नहिवत् गणाय. छन्दबोध पण सीमित. अने आवां सम्पादन माटे चारणी-डिगळी कोष, राजस्थानी कोष, गुजराती अने हिन्दी कोष - एम विविध कोषोनी, तथा अनेक सन्दर्भग्रन्थो-इतिहासग्रन्थो इत्यादिनी मदद लेवी अनिवार्यपणे जरूरी बने. अमारी अनेकविध मर्यादाओने कारणे अमे आवुं कशुं ज कर्युं नथी. आ अमारी कबूलात छे, बचाव नहि. आ साधनोनी मदद लेवामां आवी होत, तो पदच्छेद, शब्दनी चोक्कस ओळख, तेना अर्थनुं निर्धारण, छन्दोनी ओळख तथा तेना बंधारणनुं प्रतिपादन, इतिहासना सन्दर्भो तथा पात्रोना परिचय तथा कालानुक्रम - आ बधां विषे वधु चोकसाईपूर्वक काम थई शक्युं होत.

अस्तु. तो पण आ काम करवामां एक अनेरो आनन्द आव्यो छे. 'अनुसन्धान'ना मिषे, ४ अङ्कोमां, विज्ञप्तिपत्रोनुं एक मातबर संकलन थई शक्युं, ते एक घटना लागे छे. एवुं नथी के हजु आवा पत्रो नहि होय, पण आ प्रकाशन ते अप्रगट के भण्डारोमां दटाईने पडेल्ला पत्रो माटे उद्दीपक - प्रेरक बनशे तो आ प्रयत्न लेखे लागशे.

- शी.

विज्ञप्तिपत्र-विशेषाङ्क ४, अङ्क ६५मां

प्रगट थता तमाम विज्ञप्तिपत्रोना

सम्पादको

मुनि सुयशचन्द्रविजयजी

मुनि सुजसचन्द्रविजयजी

(१)

खम्भातथी श्रीविजयविजयजी उपाध्यायतो राजनगरस्थ-श्रीविजयदेवसूरिजीने पत्र

उपा० विनयविजयजीनी रचनाशैलीथी प्रायः बधा विद्वानो परिचित हशे ज. तेमनी रचना अर्थनी दृष्टिए गम्भीर होय, छतां गेयतानी दृष्टिए एटली ज सरळ. पछी ते 'शान्तसुधारस' जेवा संस्कृत ग्रन्थो होय के श्रीपाळरास जेवी गुर्जर कृतिओ. प्रस्तुत कृति उपा० विनयविजयजी महाराजनी पत्रसंज्ञक रचना छे. विजयदेवसूरिजीने खम्भात चातुर्मासनी विनन्ती करवा साथे क्षेत्रसम्बन्धि माहितीनो चितार आपता शरुआतनां ७ पद्योमां कवि खम्भात चातुर्मास बिराजमान होई चातुर्मासमां थयेली आराधनानुं वर्णन करे छे. त्यार पछीना ८मा पद्यमां मेघने मन जेम नाना-मोटा सर्वे सरखा होय तेम आपने पण मन होवुं घटे एम कही पूज्यश्रीने मीठो उपालम्भ आप्यो छे. शास्त्रमां चातुर्मासयोग्य भूमीना जघन्य १ मध्यम २ उत्कृष्ट ३ एम ३ भेद पाड्या छे. तेमां १३ गुण वाळी भूमी उत्कृष्ट होइ मुनिभगवन्तोने चातुर्मास माटे वधु योग्य कहेवाय. अमदावादमां विहार दुष्कर, गोचरी आघी, इत्यादि घणी प्रतिकूळता थशे. खम्भातनुं क्षेत्र तेरे गुणथी युक्त छे. तेथी अमदावादथीय चढियातुं छे एम कही चातुर्मास पधारवा विनन्ती करे छे. खम्भात पधारता विविध तीर्थोनी वन्दना तो थशे ज, साथे जेसिंगजी (विजयसेनसूरिजी) गुरुना स्तूपनी य वन्दना थशे एवुं मीठुं प्रलोभन पण मूके छे. अथी य विशेष 'आपने ज्यां पदप्रदान करायुं ते स्थान आपनाथी केम विसरी शकाय ?' एम कही मीठी लागणीओ द्वारा सूरिजीने चातुर्मासार्थे तैयार करवा प्रयत्न करे छे.

छेछां पद्योमां आपना पधारवाथी श्रीसंघमां शासनप्रभावनानां कयां कयां कार्यो थशे तेनो कविए मार्मिक अहेवाल आप्यो छे. सम्पूर्ण कृति खरेखर सुन्दर छे. काव्यमां नोंधायेल जिनेश्वर प्रभुना तीर्थोनी तेमज गुरुस्तूपनो उल्लेख ऐतिहासिक दृष्टिए घणो महत्त्वनो छे.

*

श्रीलेखः

स्वस्तिश्री प्रणमुं सदा रे, पास जिणेसर पाय,
लेख लिखुं गुरुरायनिं, पामी तुहम पसाय
सुगुरुजी ! पधारो रे, खंभनयरनो आज सोभाग वधारो रे
विनती ए महाराज के मनि अवधारो रे ॥१॥ सुगुरुजी [आंकणी]
खंभनयरथी वीनवई रे, संघ धरी मनि रंग,
खेम-कुशल वर्तई इहां, तुम नामइ उछरंग २ सुगुरुजी !....
इहां वखाण प्रभावना रे, नंदिमहोत्सव सार,
उपधानादिक तप होई, बार व्रतउच्चार ३ सुगुरुजी !...
सत्तरभेद जिनमंदिरइं रे, पूजा सबल मंडाण,
भावइ पावन भावना, श्रावक सब विधिजाण ४ सुगुरुजी !...
परव पजूसण पणि हवां रे, विविध महोत्सवधाम,
साहमीभगति प्रभावना, प्रमुख हवां शुभ काम ५ सुगुरुजी !...
चतुर ! चतुरविध संघनी रे, नति अवधारो नित्त,
श्रीआचारजप्रमुखनिं, कहियो कोमल चित्त ६ सुगुरुजी !...
उत्कंठा अह्मनिं घणी रे, देखण तुम देदार,
वेगि पूज पाउधारीइं, करवा अहम उपगार ७ सुगुरुजी !...

ढाल ॥ राग-केदारो ॥

देस-विदेसिं इणी परिं रे, कीध विहार अनेक,
देइ उपदेस अबूझनिं रे, कीधा सबल विवेक. ८
सुगुरुजी ! वेगि पधारो आंहि, थंभतीरथपुर मांहि सुगुरुजी...[आंकणी]
हवइ अहमनिं वंदाववा रे, म करो पूज्य विलंब,
जलधरनिं मनि वरसतां जी, सरखा अंब-कदंब ९ सुगुरुजी....
राजनगरि किम संचीइ रे, जिहां दुष्कर विवहार,
मुनिवर अलगी गोचरी रे, कादम-कीट अपार १० सुगुरुजी....

तेर गुण **त्रंवावती** रे, खेत्र तणां छइ जेह,
 तेणइ कारणि इहां आववुं रे, चोमासइ धरि नेह १२ सुगुरुजी....
 जिनमंदिर जिहां दुकडां रे, परिसरभूमि पवित्र,
 अति अलगी नहीं गोचरी रे, भगत लोक मुनिमुत्रि १३ सुगुरुजी....
श्रीसुखसागरपासजी रे, जिहां **कंसारीपास**,
 जगतारण **जीराउलो** रे, **चिंतामणि** सुखवास १४ सुगुरुजी....
 इत्यादिक तीरथ घणां रे, **श्रूभ** [सो]ही **जैसिंग**,
 मंदिर अर्नि उपासिरा रे, सुरघर जिम अति चंग १५ सुगुरुजी....
 ते किम मनथी मुकीइ रे, थंभ ती[र]थ गुण थाट
 जिहां गुरु **हीरपटोधरइजी** [रे], दीधो तुहमर्नि पाट १६ सुगुरुजी....
 इहां होसइं बहु लोर्कनि रे, बोधिबीज आरोप,
 तुहम आवइ अरिहंतनइं रे, शासन चढसइ ओप १७ सुगुरुजी....
 पिसनघूक घू-घू करी रे, कलह उपाये कोप,
 ते तुहम दिनकर ऊगमता रे, क्यांहि थासइ अलोप १८ सुगुरुजी....
 मीणतणी परि कारिमा रे, अवतरणा आटोप,
 तुहम प्रतापरवि-तापथी रे, गलतो लहसइ लोप १९ सुगुरुजी....
 लाभ घणा तुहमर्नि ह(हो)सइ जी, विवहारी वडचित्त,
 सातइं खेत्रइं वावरी जी, सफल करेसइं वित्त २० सुगुरुजी....

ढाल ॥ राग - धन्यासी ॥

घणुं घणुं लिखिइं किर्युं, तुहमे सहजइ सघलुं जाणो रे,
 खंभनयरना संघनी ए, वीनंती करो प्रमाण रे २१
 जय **जैसिंगपटोधरू**, **श्रीविजयदेवसूरिरायो** रे,
 सुर नर राणा राजीआ, जस प्रेमइ प्रणमइ पाय रे २२ जय जैसिंग....
 इणि क(का)लि तुहम समो को नहीं, ते तो जग सहू जाणइं रे,
 कर्मइं नडीआ बापडा, पणि मतीआ निज मत ताणइ रे २३ जय जैसिंग....

निसि-दिन सूतां-जागतां, अहम चरण तुहमांरा त्राण रे,
 खिण-खिण तुहम गुण गाइइं, तुहम नामइं कोर्डि कल्याणो रे २४
 जय जैसिंग....
 ज(जे)य वलता सुख-संयम तणां, पूज मोकलयो अहम लेख जी(रे),
 सेवकर्नि संभारयो, जिम होइ हर्ष विशेष रे २५ जय जैसिंग....
 संवत सत्तरपंचोत्तरे (१७०५), एतो धनतेरसिं सुविशेष रे,
कीर्त्तिविजय वाचक शिष्ये, लिखिओ **विनये** विधि लेख रे २७(२६)
 जय जैसिंग....

॥ इति श्रीलेख सम्पूर्णम् ॥

* * *

(२)

श्रीपुराण-श्रीविजयदेवसूरीजीने उद्देशीने

अहमदानगराथी उदयविजयजीनो पत्र

श्रीपुरनगरमां बिराजमान श्रीविजयदेवसूरीश्वरजीने उद्देशीने लखाएल प्रस्तुत पत्रमां उदयविजयजीए पूज्यश्रीने अहमदानगर पधारवा माटे विनंती करी छे. श्रीपुरनगर माटे अन्य कशो उल्लेख काव्यमां मळतो नथी.

काव्य नानुं छे. शरुआतना पद्यमां क्षेम-कुशलना समाचार आपी कविए पछीनां पद्योमां गुरुभगवन्तने मळवा माटेनी उत्कण्ठा दर्शावतां ३ सुन्दर पद्यो मूक्यां छे. त्यार पछीना पद्यथी गुरुना गुणवैभवना लेखननी अशक्ति दर्शावतां ५ कल्पनात्मक पद्यो छे. काव्यना अन्ते मळती पत्रलेखनना समयनी नोंध तेमज कविना गुवांदिना नामनी नोंध विशेष उल्लेखनीय छे.

*

॥ ८० ॥ पण्डित श्रीकमलविजयगणिगुरुभ्यो नमः ॥

॥ राग : सारिंग मल्हार ॥

स्वस्तिश्री जिनपय नमि, श्रीपुर नगर सुथान, पुज्यजी,
लखितं सेवक विनती, तुम्ह चरणे मुज ध्यान, पुज्यजी. १

एक वार वेग पधारवो, दीजइ सेवक मान, पुज्यजी,
तुझ सम अवर कोइ नहीं, धन धन ताहरो ज्ञान, पुज्यजी. २
एक वार..... [आंकणी]

कुशल-खेम वरतइ इहां, ते तुम्ह नांम प्रसाद, पुज्यजी,
तुम्ह कुशलां नित पाहिए, अम्हनइं हर्ष उल्हाद, पुज्यजी. ३
एक वार.....

कागल केता हुं लखुं, केता कहुं मुखवयण, पुज्यजी,
श्रीगु[रु]नइ मिलवा भणी, वेगा देज्यो सयण, पुज्यजी. ४
एक वार.....

तुम्ह चरणे मुझ मन वस्युं, ज्युं ऐरावण इंद, पुज्यजी,
जिम मन हंस सरोवरें, ज्युं रे चकोरा चंद, पुज्यजी. ५

एक वार.....

जिम समरइ सति(ती) पति, हस्ति समरइ वंझ, पुज्यजी,
मधुकर समरइ मालती, तिम हुं समरू तुझ, पुज्यजी. ६

एक वार.....

गुण मोटा दि नानडा, रात अंधारि होइ, पुज्यजी,
कागल ते हुआं सांकडा, किम लखतां मन होइ, पुज्यजी. ७

एक वार.....

मही समांन कागल करूं, मसी भरूं समुद्र अपार, पुज्यजी,
अहोनि स तुम्ह गुण हुं लखुं, तो हि न आवइ पार, पुज्यजी. ८

एक वार.....

मुझ मुख एक जीभडी, गुण तो कोडा-कोडि, पुज्यजी,
तो किम किंकर लिखि सक(के), मोटि एह ज खोडि, पुज्यजी. ९

एक वार.....

आऊखुं करी इंद्रनो, लेखण स्वर्गह दंड, पुज्यजी,
आठ पहर रवि उगमइ, [तो] गुण लखइ अखंड, पुज्यजी. १०

एक वार.....

श्रीगुरुना गुण अति घणां, केता कहुं विस्तार, पुज्यजी,
अक्षर तो बावन अछइ, गुणे न आवइ पार, पुज्यजी. ११

एक वार.....

धन जे(ते) देस मनोहरू, धन जे(ते) गाम रसाल, पुज्यजी,
धन जे(ते) श्राविक श्राविका, जे वंदइ तरकाल, पुज्यजी. १२

एक वार.....

थोडइ लख्ये घणुं प्रीछ्यो, मुझ जीवन तुम्ह पास, पुज्यजी,
जो निज सेवक लेखवो, आवि पुरो आस, पुज्यजी. १३

एक वार.....

ए दिसि वेग पधारवो, अहमदानगर मझार, पुज्यजी,
श्रीसंघ जोए वाटडी, ज्युं सारिग घनधार, पुज्यजी. १४

एक वार.....

चतुर्विध संघनी वंदना, घडीअ-घडीनी जाण, पुज्यजी,
संघनइ अति उमाहलो, सुणवा श्रीगुरुवाण, पुज्यजी. १५

एक वार.....

आसो वदि दीपमालिका, इति मंगल गुरुवार, पुज्यजी,
लेख लख्यो अति सुंदरूं, हुओ जय-जयकार, पुज्यजी. १६

एक वार.....

विबुधा मांहिं सीरोमणी, कमलविजय गुरु सीस, पुज्यजी,
ऊदयो आणंद अतिघणो, उदयविजय आसीस, पुज्यजी. १७

एक वार.....

पूज्याराध्य नभोमणी, श्रीगछपति चरणांन, पुज्यजी,
सेवक लेख पठाइओ, श्रीपुरनगर सुथान, पुज्यजी. १८

एक वार.....

॥ इति श्रीविजयदेवसूरीश्वरलेखं समाप्तमेतत् ॥ श्रीअहमदानगरे ॥
कल्याणमस्तु ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभं भवतु ॥श्रीः॥

* * *

(३)

कवि माणिक्यचद्धजीतो विजयदेवसूरिते पत्र

कवि माणिक्यचद्धजीते प्रस्तुत कृतिनी रचना करी छे. जेवा भावो कृतिमां गुंथाया छे ते परथी कवि विजयदेवसूरि पर विशेष आदर धरावता हशे एवं चोक्कस विचारी शकाय. कृतिना शरुआतनां पद्योमां विविध उपमाओ द्वारा गुरुभगवन्तोना गुणोनुं वर्णन करी कवि पोतानी गुरुमिलन अंगेनी उत्कण्ठा वर्णवे छे. कृतिमांनां केटलांक पद्योना भावो अन्य विज्ञप्तिपत्रमां मळता श्लोकोनी समान ज छे. प्रतमां केटलीक जग्याए प्रतिलेखन अशुद्ध थयेलुं जणाय छे तेथी २-३ पाठो समजी शकाया नथी. तो बीजी २-३ जग्याए पाठमां सुधारो पण करवो पड्यो छे.

*

॥ ८० ॥ स्वस्ति सदा तुझनइ हयो, श्रीविजयदेवमुर्णिद,
महिमा महियलमां घणो, तुं सबसूरिसूरिंद. १
परम हितदायक सदा, लायक नायक खास,
हीतकर प्रितिपात्र तुं, सब गुंण-कलानिवास. २
मनमोहन आनंद तुं, मनवल्लभ विश्राम,
मुझ मनमंदिर तुं वस्यो, तुं मुझ आतमरांम. ३
सकलसयणशिरोमणी, सकल गुंणलंकृतगात,
कुमतांधकारनभौमणी, अखिलोपमा रही ख्यात. ४
सो य देस-नगर ज भलुं, जिहां गुरु करय विहार,
धन्य ते नर-नारी सही, गुरुवाणी सुणे सार. ५
श्रीगुरुवदन सोहामणुं, पेखइं परम आणंद,
पुण्य-पवित्र जन जे होय, तस नर नयणाणंद. ६
पुनिमनिशिनो चंदलो, मुखउपम सो तास
अमृतसम जस बोलडां, सुणता होय उल्हास. ७
अहनिसि मुखकज जोयवा, मुझ मन हरख अपार,
जोतां तृपति ज नवि होइ, ते जाणे किरतार. ८

नयनां निरमल ताहरां, अमी भर्या अभिराम,
 स्याम-सुंदर भमुहडी बनी, देखि सुखनो ठाम. ९
 नयनइं सारिंग जीतीयां, तीखां अतिहिं विसाल,
 रांती रेखा रूयडी, ति लहइ लच्छी रसाल. १०
 नारीमाहिं नर वसे, नर भीतरि पणि नारि,
 नर धोलो नारी सामली, अनोपम ए अवधारि. [आंख]११
 शुकचंचुसम नासिका, अधर ते विद्रुमकंद,
 श्रवण ते मदनहींडोलडा, दंत जिस्या मचकुंद. १२
 ग्रीवा शंख सम सूंदरु, उन्नत हृदय उदार,
 उदर प्याम अति राजतु, कटि पंचानन सार. १३
 नाभि सुधारसकूपिका, दीसइ गंभीर चंग,
 जंघा कदलीथंभ जिम, पायपोयण ससरंग. १४
 नख उन्न[त] अति राजता, रक्तवर्ण अभिराम,
 श्रीगुरु तुझ अंग ज सही, लख्यण केरं धाम. १५
 गजगति चालि सुहामणी, तेणिं मोहया नरवृंद,
 जेणइं देसइं तु विचरतो, तिहां वलिं नो हइं दंद. १६
 मेरुनी परिं धीर तुं, उदधि परिं गंभीर,
 तेजवंत दिनकर परिं, चंपकवरण सरीर. १७
 मुझ मन माला खिनु तुमह, जपत रहत दिन-रयण,
 श्रीगुरु तुह मुख दरसकुं, तपता हइ दो नयण. १८
 श्रीगुरुप्रेम ज चित्त चद्दयो, जिउं हर सिर चढी गंग,
 उतर नाहीं जनमलौ, जो कोट करइ अइ धंग. १९
 श्रीगुरुमूरत जु सूरतिकी, मइं ठइ कमल उर आनि,
 पूजुं चंदन चित्तकइं, सो जपुं नाम गुण ध्यान. २०
 श्रीगुरु गुण तुमाहरा, संभारुं सो वार,
 मन जाणइ तन टलवलइ, नेत्र न खंडइ धार. २१
 महिमंडल मइं जोईउ, जोई ते नरवर कोडि,
 जेणइं श्रीगुरु तू वीसरे, ते नहीं जगतिमां जोडि. २२

जो मसि होइ सायरु, कागल होय आगास,
 लेखण वणराइ होवइ, तो गुण लखुं उल्हासि. २३
 श्रीगुरु किमहिइं न वीसरइ, देस-विदेस गयाइं,
 जिम जिम श्रीगुरुसांभरइ, तितुं तितुं नयण भराइं. २४
 डुंगर भोंइं छइ अति घणी, नदी-नीझरण असंख,
 किम आवी गुरु तुझ मिलुं, जो देवे न दीधी पंख. २५
 हंस वसे मानससरे, मुंकी सकल आराम,
 तिम मन माहरइ तुं वस्यो, मुंकी अवर सुठाम. २६
 रही न सकुं गुरु तुम विना, घडी घडी जपुं तुम नाम,
 अहनिसि मुझ चित तुं वसो, अवर न गमे मुझ नाम. २७
 सारसडां तुं पांखडी, एक वार मोहि देय,
 श्रीगुरुनइ करुं वंदना, वलती पाछी लेय. २८
 जलसुत तो जलमां वसे, दधिसुत वसे आगास,
 श्रीपतिवाहन-वाहनो, सो य तुमाहरे पारि(स). २९
 एक पख्यका नेहला, जेसो दीप-पतंग,
 ओ कछु जीओ न आणहीं, ओन होमइं सब अंग. ३०
 जीह कोडि मुझ मुखि हवइ, आउखुं इंद्र समान,
 तो गुण श्रीगुरु तणा, हुं करुं नित गुणगान. ३१
 पातग बहुलां मइं कीयां, कुणस्थुं करुं मनवात,
 नयणे स्वामी तुं मिलइ, ते वात करुं दिन-राति. ३२
 दूर थकी अम्ह वंदना, धरज्यो हैडामाहिं,
 मनजा माहिं(मणि) मुझ कोइ नहीं, जे आवइ तुम्ह ताहिं. ३३
 लेख लख्यो रलियामणो, मनह तणे उच्छाय,
 एणिं परिं वलि जे नेहलो, तस वंछित सुख थाय. ३४
 चंदा चतुरसिरोमणि, सुणि तुं माहरी वाणि,
 श्रीगुरुहार्थि जइ करी, आपे लेख सुजाण. ३५
 वलतो लेख संदेसडो, देजो श्रीगुरुराज,
 नित प्रति माहरी वंदना, करयो एतलुं काज. ३६

लेख-संदे[श] तुं लावजे, देईस सोवनजीह,
 फुनि मनवंछित जे हुस्यइ, आपीस नित नित दीह. ३७
 संवत सोलअठोत्तरो (१६७८), प्रथ[म] आसाढ रविवार,
 एणिं वरसे लेख नीपनो, हरख धरी निरधार. ३८
 भवि भवि सेवा ताहरी, हुं वंछुं जगदीस,
 थोडे घणुं तुम जायणो, तुं छे माहरो ईस. ३९
 काम-काज कहीवयो, श्रीगुरु मननिं खंति,
 लेख लिखित वांची करी, धरयो मुझ परि चिंति. ४०
 कवि माणिकससि रीझवा, लिखिओ कागल एह,
 अधिकुं ओछुं जे लख्युं, खमज्यो साहिब तेह. ४१

इति लेखः सम्पूर्णः ॥

सज्जन तुझमां गुण घणां, अवगुण एक अपार,
 नेह लगाडी माणसां, मारइ विणु हथीआर. १
 सज्जन मोती झुमखु, मन परवाली वेल,
 काआ(या) सरीखो दोरडो, कंठ करेवा हार. २ ॥छा॥

पंडितसिरोमणी पंडितश्रीश्रीश्रीश्रीसंघविजयगणि तत्शिष्य मुनिक्षेम-
 विजय लिखितं सुश्राविका हीरबाई पठनार्थ ॥छा॥ शुभं भवतु कल्य(ल्या)ण
 मसतु(स्तु) संवत् १६९२ वरषे(वर्षे) मागसर शु(सु)दि ९ भरूअचबंदरे लिखितं ।

* * *

(४)

खम्भात बिराजमान श्रीविजयानन्दसूरिजीने सूरत श्रीसङ्घ वती श्रीदर्शनविजयजीनो पत्र

सूरतना श्रीसङ्घ द्वारा चातुर्मास पधारवा माटे विनंतीरूपे, प्रस्तुत पत्र, त्रम्बावती(खम्भात)मां बिराजमान श्रीविजयानन्दसूरिजीने उद्देशीने लखायो छे. शरुआतनां पद्योमां पार्श्वनाथप्रभु तथा मा सरस्वतीने नमस्कार करी कविए खम्भातनुं संक्षेपमां वर्णन कर्तुं छे, अने सूरिजीने वन्दनानी उत्कण्ठा वर्णवी छे. बीजी ढाळमां सूरतनगरनी वर्णना करतां अमे शा कारणथी तमोने अहीं पधारवा विनंती करीए छीए ए कारणो दर्शाव्यां छे. त्यार पछीनी ढाळमां गुरुदर्शनोत्कण्ठानां पद्यो तेमज गुरुभगवन्तनी उपमानां पद्यो सुन्दर छे. चोथी ढाळमां गुरुउपदेशनुं अने पांचमी ढाळमां गुरुस्मरणनुं फळ कविए आलेख्युं छे. छेल्ली ढाळमां सूरिजीनी साथे बिराजमान वाचक कीर्तिविजय, उपाध्याय देवविजय आदि पण्डित तथा मुनिपरिवारने सङ्घनी वन्दना लख्या बाद छेले स्वनामोल्लेख साथे कवि दर्शनविजयजीए पत्र पूर्ण कर्यो छे.

*

दूहा

प्रगतप्रभावी त्रिभुवर्नि, त्रिभुवनजन सुखकार,
 प्रणमुं प्रीतिं पासजिण, वंछितफलदातार. १

भगवती भारती मनि धरी, पामी तास पसाय,
 लेख लखुं गुरुराजनइ, सुणंतां सुख उपाय. २

विजयाणंदसूरि(री)सरू, साचि मोहनवेलि,
 जयविजय कवियण भणइ, दीठइ हो रंगरेलि. ३

ढाल ॥ राग - सामेरी ॥

स्वस्तीयश्री जिनराजना, प्रासाद अतिहिं उत्तंग,
 राजंति जाणुं जन्मजलनिधि-तरणप्रवहण चंग,
 गुणवंत संत महंत मोटा, इभ्य अधिक उदार,
 अति विबुधजनौघ सुंदर, धनद समो अवतार हो १

गच्छपति सूरति देसि पधारीयए, विजयानंदसूरिंद हो,
गच्छपति संघ वीनती अवधारीयए, तुहमे आवो चोमासिऊ हुलासि हो
गच्छपति सेवक सोह वधारीयए, प्रभु आवि अधिक उच्छय हो

गच्छपति सूरति देसि पधारीयए [आंचली]

चोरासी चहुटां उलि उपेइ, चारु चोक विसाल,
कल्याणकारी घरि घरि, गुरुगीत रंगरसाल,
प्रभुपायपंकजरेणुकाधर, सार सुरभित सार,
एम विविध शोभा सुंदरु, **त्रंबावती** नयरी उदार हो २

गच्छपति आणइं देसि पधारी[यए]

तिहां सूरिगुण छत्रीस पूरण, गौतमाभवतार,
तपगच्छ अति उद्योतकारक, सिद्धिसुखदातार,
बहु साधु सुविहित विहितवच्छल, सत्थबुद्धिविशाल,
उपदेस समरस सरस कोमल, एतो सुणता अतिहिं रसाल हो ३
उपदेस मीठो निसुणी भविका, बोधि निर्मल थाय,
ते आवी तुहम गुण उचरइ, सुणी हईउं हरख भराय,
वंदवा उतकंठा घणी, मनि ऊपजइ अहम सामि,
उमाहलो तुझ दरिसको, मित आनंद ताहरइ नामि हो ४
श्रीपूज्यचरणसरोरुहे, ए वीनतीमय लेख,
सहु परिवारा वांचयो, मनि धरी रेखइं रेख,
जे सुणत भवियण जीवनइं, संतोष होइ अलेख,
मनि गहगही संधि लिख्यो ए सुरतिथी सुविशेष ५

ढाल ॥ राग - काफ़ी ॥

सूरति नयर वखाणीय रे लाल, जिहां गुरु करसि विहार मेरे साहिब,
वाचक-बुध-मुनि परवर्या रे लाल, संघनइ जयजयकार मेरे साहिब. १
मारगि कोइनो भय नही रे लाल, जिहां मुनि सुखविहार मेरे साहिब,
वन वाडी रलीआंमणां रे लाल, गढ मढ जैनविहार मेरे साहिब. २
षट दरसणना दरसणी रे लाल, सुलहां लहइ अन्न-पान मेरे साहिब,
धरमी जन आदर लहइ [रे लाल], मुनिजननइ बहुमान मेरे साहिब. ३

पूजा श्रीजिनराजनी रे लाल, दान सीअल तप भाव मेरे साहिब,
धर्मि धन जन वावरइ रे लाल, एहवो सहज सभाव मेरे साहिब. ४
इत्यादिक गुण आगरू रे लाल, **सूरतथी** संघ सार मेरे साहिब,
विनती लखइ गुरुराजनइं रे लाल, **दर्शन** आनंदकार मेरे साहिब. ५

दूहा

के हुं वीरनइं [पाटी मोहियो], **विजयसेनको** नाम,
श्री**विजयतिलकसूरि** परि जयो, राखिउं चउ षंधि नाम. १
[साध]सिरोमनि वंदीअे, **विजयतिलकसूरिंद**,
श्री**विजयानंदसूरि(री)सरू**, समस्त संघ मनि आणंद. २

ढाल ॥ राग - केदारो ॥

तुम्ह गुण मोहया उपासका रे, जूइ प्रभूनी वाट,
को कहइ गुरु आवता रे, तस देउं सोवनपाट. १
सूरीसि(स)र आवो **सूरति** देसि, तुम सेवा साची करेसि,
बहु पुण्यभंडार भरेसि, सूरीसर...
सपनान्तरि पणि तुम गुणा रे, रंगि रमइ अम पासि,
तो ते उत्तम संगति रे, दीइ सहु साबासि. २ सूरीसर.....
जे चित आपणसिउं धरइ रे, कीजइ तेहसिउं नेह,
अहम मन तुहम गुणसिउं रमइ रे, रखे वीसारो तेह. ३ सूरीसर.....
देस-नगरि प्रभु विचरतां रे, मिलस्यइ भगत अनेक,
अहम मनि गुरु प्रभु तुहमे वस्या रे, अवर न को सविवेक. ४ सूरीसर....
साहिब गहलो गरबीउ रे, देखत निज कल्लोल,
गुणगंभीर प्रभु अहम तणो रे, देसना अमीअ तोल. ५ सूरीसर.....
चंदो कां लाजइ नही रे, उगतो धरी अभिमांन,
प्रभुमुख-चंद्र सोहामणो रे, निकलं[क] निरुपम वान. ६ सूरीसर.....
परवादी मृग बापडा रे, तुं तो पंचायणि सीह,
तुझ आगलि ते न थोभीआ रे, गया देसंतरि लीह. ७ सूरीसर.....
गरव कस्यो गिरिराजनो रे, कंष्यो जिनअंगूठि,
ते जिनशासनभारथी रे, अचल अकंप जस मुंठि. ८ सूरीसर.....

ढाल ॥ राग - मल्हार ॥

परम गुरु परम मुनिसिरु, श्रीविजयाणंदसूरिंद रे,
चित्त धरयो संघवीनती, बहु आनंद-पूरि रे. १ सूरति देसि पधारीय
रंगि गुरुराज पधारीय, कृपा करीय चोमासि रे,
ओछव अधिक अधिका होस्यइ, गास्यइ गोरडी रास रे. २
तुम वयणा प्रभु अमीय सम, टालइ कुमतविकार रे,
तेह भविनइं संभलावतां, होसइ बहु-तप-उपगार रे. ३
तुम दरिसण देखत सुखं, जिम चंद चकोर रे,
सज्जननइं सज्जन मिलइ, [जिम] घनाघन मोर रे. ४
प्रभुजी जे भूमि पाय ठवइ, तिहां अफलां फलंति रे,
महीअलि महिमा अति घणो, आवी इष्ट मिलंति रे. ५

ढाल ॥ राग - केदारो ॥

बहु ज्ञान पूरण परवरिओ, बहु मुनिवरि गुरुराज,
वैराग्य शम दम सुंदरुं, सोहइ सोहइ रे सूरि सिरताज. १
परमगुरु आवो सूरति देसि, अहम वाहलो रे तुम उपदेस,
ति[णि] टाल्यो रे सयल क्लेश, दीपाव्यो रे वीरनो वेस
परमगुरु..... [आंचली]

सिद्धांत शुद्ध परूपतइं, अजूआलि हीरनी वांणि,
धिन्न धिन्न जेणइ प्रणमीओ, शुभ भाविं रे तुं गुणखांणि. २
निज भगत भगतिं संभारतां, नवि होइवुं नीराग,
पर भगतनइं उपगारीओ, प्रतिबोधी रे दिइ सिवमाग. ३
जिम विगल सरगि न पांमीया, तिम त्रिजगि नही तुझ दोष,
अवगुणी ते अपमानीआ, गया दूरी पामीआ रोष. ४
प्रागवंश तिं प्रगटावीओ, धिन साहश्रीवंतपूत्र,
श्रीविजयतिलकसूरिपटि जयुं, तिं राख्युं रे तपगच्छसूत्र. ५

ढाल ॥ राग - मेवाडो धन्यासी ॥

उदय अधिक प्रभु जगमां ताहरो, एम बोलइ सहु लोक,
तुहम गुणि मोहियां बहु भवि प्राणीया धरम करि बहु थोक. १

तुहम गुण सुणंतां जाइ जे घडी, ते वेला जगि धिन्न,
जेणइं मनि तुहम गुण प्रभु संभारीय, धिन्न ते प्राणी मन्न. २
धिन्न नगर ते पुर पाटण भलुं, जिहां गुरु करइ रे विहार,
पुहुवी नवपल्लव होइ घणुं, तिहां तिहां संपद सार. ३
जनम सफल प्रभु जगि ते जीवनो, सफलो तस अवतार,
जेणइं मन शुद्धि तुं प्रभु वंदीओ, तस सिवसुखदातार. ४
पूरण तुहम गुणि अहम मन मोहिउं, कांन सुणत संतोस,
अति अलजो प्रभु नयणे देखवा, पूज्य पधारी तोसि. ५

ढाल ॥ राग - धन्यासी ॥

श्रीविजयाणंदसूरीसि(स)रू, तुम गुण अनंत अपार रे,
रसना कोडिं सुरगुरु भाखइ, तोहइ न पामइ पार रे. १
श्रीविजयाणंदसूरीसिरु...

कालां कथन कहीइ वीनती, बालक परि गुरुराज रे,
माता-पिता परि ते अवधारी, सारू सेवककाज रे. २
वाचक कीर्त्तिविजयगुरु पासइ, देवविजय उवज्जाय रे,
पंडित-मुनिपरिवार सहनइ, प्रणमति संघ उच्छाय रे. ३
परम भगत श्रीपूज्य तणो ए, तुंम ध्यांनइ बहू गाजइ रे,
साचो सेवक निज मनि जाणी, प्रभु दर्शननइं निवाजइ रे. ४
कृपावंत प्रभु [कृपा] करीनइं, संघ वीनती अवधारो रे,
संघ मनोरथ सफल होइज्यो, सूरति नयर पधारो रे. ५
चैत्र धवल तेरसि गुरुवारि, लिखीओ लेख उदार रे,
दर्शनविजय कहइ भवियण भणतां, सुणतां जयजयकार रे. ६

॥ इति वीनतीमयलेखः सम्पूर्णः ॥छा॥ श्री ॥

॥ शु ॥ भं ॥ ॥ भ ॥ ॥ व ॥ ॥ तु ॥ ॥छा॥

॥ श्रीरस्तु ॥:॥

* * *

(५)

श्रीकन्नकविजयजीलिखित श्रीविजयप्रभसूरि पत्र प्रेषित
श्रीबीजापुरसंघकावित-श्रीगुरुविज्ञप्तिरूपस्वाध्यायः

दक्षिणदेशना बीजापुर-साहपुर गामना श्रीसङ्घमां चातुर्मास पधारवा माटेनी विनन्तीरूप प्रस्तुत पत्र विजयप्रभसूरिजीने उद्देशीने लखायो छे. ओसवंशना साह शिवगणना पुत्र तेमज माता भाणीना लाडीला गच्छपति श्रीविजयप्रभसूरि माटेनो कविनो विशेष राग काव्यमां अवतरित थयो छे. गुरुदर्शननी झंखना पण प्रभु-मिलनना तलसाट जेवी ज आतुरतावाळी होय छे तेनो प्रस्तुत कृति उत्तम नमूने छे. चंद्राउलानी देशीमां रचायेल, अलङ्कारो-प्रासो-शब्दवैविध्यथी सभर कृति कर्ताना कवित्वने उद्योतित करे छे.

कर्ता वृद्धिविजयजीना शिष्य छे. कर्ताना ज हाथे सं. १७३२ माघ सु. १०ना साहपुर गाममां ज लखायेल 'रत्नाकरपञ्चविंशतिस्तव-भावार्थ' नामनी एक बीजी पण कृति मळे छे.

*

ए ६०॥ पंडित श्रीवृद्धिविजयगणिरुग्भ्यो नमः ॥

॥ देशी चंद्राउलानी ॥

विजयप्रभ वाल्हेसरू रे, परघल आंणी प्रेम,
साहपुर केरा संघनी रे, **बीजापुर**ना संघनी रे, वीनती मांनो एम,
वीनती मांनो एम अम्हारी, गोदि बिछाइ करुं बलिहारी,
साहिब सूरति लागइ प्यारी, जन-मनडानी मोहनगारीजी. १
वाल्हेसरजी रे, संघ करइ अरदास ते अवधारीइ रे,
दक्षिणदेसि उल्लासि पूज्य पधारिइ रे [ए आंकणी]
पाटभगत छइ इहां तणो रे, सकल संघ निसिदीस,
दरसण देइ पूरीइ रे, प्रेमइं तास जगीस,

प्रेमइं तास जगीस वधारो, महिर करी मुनिराज पधारो,
सेवक जननइं कांइ विसारो, हाथि ग्रहीनइं पारि उतारो जी. २
वाल्हेसरजी रे.....

पूज्य पसायइं इहां अछइ रे, सुखिया श्रावक लोक,
श्रीगुरुचरणनी चाकरी रे, चाहइं जिम रवि कोक,
चाहइं जिम रवि कोक सनेहइं, मोरइं जिम मन बांध्युं मेहइं,
तिम अम्ह मनि तुं जिहां जिउ देहइं, प्रेमइं पूज्य पधारो गेहइं जी. ३
वीरपाट अजुआलवा रे, तुं अवतरिओ वीर,
अम्ह मन कनकनी मुद्रडी रे, तुं लाखीणो हीर,
तुं लाखीणो हीर हियानो, तुं प्रभुजी जीवन जीयानो,
मधुकर जिम नित कमलइं रसिओ, तिम अम्ह मनडइं तुं वाल्हा वासिओ. ४
साह-**सिवगण**कुल-सरवरइं रे, तुं अवतरिओ हंस,
अवनीतलिइं अवतरी रे, दीपाव्यो **ओसवंस**,
दीपाव्यो ओसवंस तइं सामी, गिरूआ गच्छपति गजगतिगामी,
तुम्ह पयसेवा पुण्यइं पामी, अम्ह मनडाना अंतरजामी जी. ५
श्रीगुरुजी कहो एतली रे, सी अम्हची तकसीर,
आज लर्गिं जे अम्ह तणी रे, वीनती मांनो न वीर,
वीनती मानो न वीरपटोधर, धरमसनेहइं धरमधुरंधर,
हरखइं कहिइ जोडी हाथ, दरसण दीजइ वहिलुं नाथजी. ६
सेवकसेवा निरखीइ रे, परखीइ प्रीति सुजांण,
वहिला आवी वालहा रे, श्रीजिणसासणभाण,
श्रीजिणसासणभाण तुं दीसइ, तुम्ह मुख देखइ हियडलुं हींसइ,
इक तुम्ह आणा वाहिइ सीसइं, ए अवधारज्यो विसवावीसइं जी. ७
सहज सनेही सह तणा रे, सह जगजनना मित्त,
भाणीसुत भगवन सुणो रे, तुम्हस्युं लागुं चित्त,
तुम्हस्युं लागुं चित्त अम्हारं, मुख देखाडो वेगि तुम्हारं,
आवी वयण सुणावो सारुं, तन-मनडानुं ठारणहारुं जी. ८

सुणो वीरसासनधणी रे, गिरुआ निरुपम नाणी,
 अम्ह सांभलवा आसिकी रे, गुणखांणी तुम्ह वाणी,
 गुणखांणी तुम्ह वाणी मीठी, सांभलतां नहीं कहिइं अनीठी,
 अमृतथी पणि अधिकी दीठी, जे करइ शिवरमणीस्युं वसीठी जी. ९
 अहनिसि अम्ह हियडइ वसइ रे, इक तुं आतमराम,
 सास-उसासमां सांभरइ रे, सहस वार तुम्ह नाम,
 सहस वार तुम्ह नाम जपीजइ, करुणानिधि करुणा हिवइं कीजइ,
 दिल खोलीनइ दरसण दीजइ, लाहो मनगमतो जिम लीजइ जी. १०
 हठिया कहिइं नवि हुइं रे, जे गिरुआ गुणवंत,
 आशा सहनी पूरवइं रे, जिम जलधर वरसंत,
 जिम जलधर वरसंत निरंतर, न करइं कोई साथइं अंतर,
 तिम जगमां उपगारी पुरुषा, कहिइ सहइ साथइं सरिखा जी. ११
 कागलमां लिखतां थकां रे, लागइ कारिमी वात,
 पणि तु अम्ह हियडइ वस्यो रे, वेधी साते धात,
 वेधी साते धात रे तनमां, वसिओ वीर ज्युं गोयम मनमां,
 ते जाणीनइ तपगछईस, करज्यो अम्हांरी सफल जगीस जी. १२
 तुं तन धन मन गुणनिलो रे, तुं अम्ह जीवित प्राण,
 एहमां जो मिथ्या हुइ रे, तो तुझ चरणनी आंण,
 तो तुझ चरणनी आंण रे भाखी, कै वली केवली कहिइ साखी,
 तुझ पय छोडी अवरकुं पाखी, नमवानी नित आखडी आखी जी. १३
 इम इकतारी जे धरइ रे, तेह तणी अरदास,
 ऊवेख्यइ स्युं पामस्यो रे, साहिबजी स्याबास,
 साहिबजी स्याबास वदीजइ, सेवक जननइं दरसण दीजइ,
 जिम तुम्ह वयण सुधारस पीजइ, चरणकमलनी सेवा कीजइ जी. १४
 निसिभर सूतां नींदरमां रे, जिम तुम दरसण दीसइ,
 तिणि परि परतखि जागतां रे, जब दरसण पामीसइ,
 जब दरसण पामीसइ वीसइ-विसवा ते दिन सफल गणीसइ,
 ते दिन कहिजे जोसी जगीसइं, लाख दान लहइ ते बगसीसइं जी. १५

पंथी परि-परि पूछीइ रे, आवता ए दिसि केरा,
 श्रीगुरुजी आवणतणा रे, कहि संदेसा भलेरा,
 कहि संदेसा भलेरा रे भाई, तेहनइं दीजइ कोडि वधाई,
 धाई माणिक मोती वधाई, सोवनरसना तास घडाई जी. १६
 चातक जिम जलधर दिसइं रे, प्रेमइं परि परि जोय,
 पंथ निहालइ तुम्ह तणो रे, तिणिपरि श्रावकलोय,
 तिणि परि श्रावकलोय दवाजइ, गोखइं जोषइं वाजतइ वाजइ,
 छयल छबीली छाजइं छाजइं, आवत गुरुदेखण काजइं जी. १७
 कागलमांहि केतलुं रे, लिखिइ आतमराम!,
 अक्षरि अक्षरि जाणयो रे, कोडि-कोडि परणाम,
 कोडि-कोडि परणाम अम्हारा, तुम्ह चरणे अवधारयो प्यारा,
 गिरुआ गुरुजी गुणभंडारा, वीरतखत दीपावणहारा जी. १८
 तुम्ह दरसण देखण तणी रे, अधिक उमेदनी वात,
 नव-नव परि नवि लेखमां रे, लिखतां आवइ धात,
 लिखतां आवइ धात^१-सुता जो, पुहवीपट कागल करी ताजो,
 खीरसमुदरस भरि-भरि खडिआ, करइ सवि तरुअर लेखणि जडिआ जी. १९
 पूज्य पधार्यइ पुण्यनो रे, थास्यइ लाभ अपार,
 ईति भीति भावठि जास्यइ रे, वरतस्यइ जय-जयकार,
 वरतस्यइ जय-जयकार जगतमां, सेवक आवस्यइ सहइ भगतिमां,
 वीर समोसयै राजगृहइं जिम, चउथो आरो थास्यइ इहां तिम जी. २०
 विजयदेवसूरिंदनी रे, पूरव तिथि संभारो,
 साहिपुरइं पधारिनइं रे, शांतिजिणंद जुहारो,
 शांतिजिणंद जुहारो हेजइं, कोटिकलानिधि चढतइ तेजइं,
 सहसफणो-मनमोहनपास, वीर आदीसर पूरइ आसजी. २१
 परतखि परता पूरता रे, करहेडो कलिकुंड,
 भाणीनंदन भेटीइ रे, पासप्रभू परचंड,

१. धातानी सुता - सरस्वती ।

पास प्रभू परचंड प्रतापइं, अंतरीख जिन आपो आपइं,
सेव्यो संपति सघली आपइं, जगि जसवाद हुइ जस जापइ जी. २२

ताजुं तीरथ त्रिण जगि रे, मोटुं माणिकसामि,
नव-निधि घरि नित संपजइ रे, जपतइ जेहनइ नामि,
जपतइ जेहनइ नामि निवाजइ, दिन दिन दीपतइ अधिक दवाजइ,
भेटीइ भगवन ने भगवंत, अलवइं अलवेसर अरिहंत जी. २३

वार वार स्युं वालहा रे, वीनवइ कर जोडि,
तुम्हथी छानो छइ नहीं रे, अम्ह तुम्ह वंदन कोड,
अम्ह तुम्ह वंदन कोड सुजाण, ते जांणी जिणसासणभाण,
वीर परंपर वड मंडाण, पूज्यजी वीनती करज्यो प्रमाण जी. २४

वीजापुरना संघनी रे, वीनती मांणी हेव,
महिर करी मनमां घणी रे, दीजइ चरणनी सेव,
दीजइ चरणनी सेव खास, गिरुआ गुरुजी गुणआवास,
पंडित वृद्धिविजयनो दास, कनकविजय मन उल्लास जी. २५

॥श्रीः॥ इति श्रीवीजापुरसङ्घकारित-श्रीगुरुविज्ञप्तिरूपः स्वाध्यायः सम्पूर्णः ।

॥ संवत् १७३२ वर्षे ॥

* * *

(६)

सूत्रतत्त्व-श्रीविजयदयासूरिजीने उद्देशीने सोझितथी रूपविजयजीनो (श्रीसङ्घनो) पत्र

प्रस्तुत पत्र सोझित सङ्घमां बिराजमान कवि रूपविजयजीए दयासूरिजीने उद्देशीने सूरत नगरे पाठव्यो छे. कोईक कारणोसर पत्रनो आगळनो भाग के जेमां मङ्गलाचरण, सूरिजी जे नगरमां बिराजमान छे ते सूरतनगरनुं वर्णन, गुरुभगवन्तनुं वर्णन, पत्र ज्यांथी मोकलायो छे त्यांनुं वर्णन अने श्रीसंघनी विनन्तीवाळो भाग खण्डित थई गयो छे. संस्कृत ३ पद्योथी (खण्डित) पत्रनी शरुआत थाय छे. शरुआतनी ढाळमां गुरुभगवन्तना मिलननी उत्कण्ठानुं, गुरुगुणवैभवनुं, सखीने उद्देशीने गुरुभगवन्तो पधार्या ते रजुआतनुं वर्णन सुन्दर छे. पछीनी ढाळमां विजयदयासूरिजीना गोत्र, माता-पितानुं नाम, आचार्यपदप्रदान-स्थळ वगरे ऐतिहासिक माहितीओ छे. छेल्ली ढाळ अमृतध्वनि प्रकारनी काव्यरचना छे. पदरचना गेयतामां जेटली सुन्दर छे तेटली ज समजवामां क्लिष्ट छे. पत्रान्ते श्रीसङ्घमां रूपविजयजीना चातुर्मासनी आराधनानी नोंध, चैत्यपरिपाटीनी चर्चावाळी विगत तेमज पूज्यश्री साथे बिराजमान भगवन्तोनी त्यां रहेला पूज्योने वन्दनानी विगत छे.

*

हरखावजोजी । श्री१०८ श्रीपुजजी.....
तन करावजोजी । श्रीपुजजी
-न दिन अधिक परतापना
-र लिखीनै संघनै हरख उपजाववो
श्रीपरमपूज्यजीना सर्व, गुण किणही नर-नारीइं,
लिखित ए..... ज ओपमाइं, पार प्रतै न पामइं ॥१॥
असितगिरिसम(मं) स्यात् कज्जला(लं) सिन्धुपात्रे०॥१॥
[याव]द्वीचीतरङ्गान् वहती(ति) सुरनदी जाहनवी पुण्यतोया,
यावद्(दा)काशमार्गे स्त(त)पति दिनकरो भास्करो लोकपालः ।

यावत् सूर्येन्द्रनीलस्फु(फ)टिकमणिमहं(यं) वर्तते मेरुशृङ्गं
 तावत् त्वं पुत्रपौत्रस्वजनपरिवृतौ(तो) जीवि(व) जैनप्रसादात् ॥२॥
 सूरयो भूरयस्सन्ति०॥३॥
 दोय नारी अति सांमली०॥४॥
 श्रीगुरुगुणसमुद्र जिम, तरी न सकुं तेणि,
 अवगुण हेक न संपजइ, रही विलिवुं जेणि ॥५॥
 आडा डुंगर अति घणा, नदि नाहला असंख,
 मन जाणइं उडी मिलुं, पणि देवे न दीधी पंख ॥७॥
 गुरुजी केरा गुण घणां, कहत न आवइ पार,
 अक्षर तो बावन अछइ, तेणइ वर्णव्या न जाय ॥८॥
 कागद चीरी तो लिखुं, जो कछु अंतर होय,
 हम तुम जीउरा एक हइं, देखनके तन दोय ॥९॥
 मिस काली गुण उजला, लेखणिनि रती होय,
 कागल जांणी सांकडा, गुण न लिख्यो कोय ॥१०॥
 गोयम-सोहम्म-जंबू-पभवो०॥११॥
 अज्ज कयत्थो जम्मो०॥१२॥
 गिरौ कलापी गगने च मेघा, लक्षान्तरे(?) भानुं(नु) जले च पद्मम् ।
 विलक्ष्य(?) सोमो कुमुदोत्पलानां, यो यस्य चित्ते न कदाचिदूरे ॥१३॥
 यथा स्मरनि(ति) गौः वत्सं०॥१४॥

दूहा : दीठा गुरु दोलति हूवै, प्रह उगतै सूर,
 दयासूर पय प्रणमतां, पाप हूइ चकचूर. १
 गोरंगी गावै गुणै, नारी चढतै नूर,
 जाचकजन जय उचरइं, वाजै वाजित्र तूर. २
 इम अनेकविधि नित हूवै, दयासूर दरबार,
 राय राणा ओछव करै, आवै लोक हजार. ३
 कामधेनुं सुरतरु समा, सूरिसिरोमणि जाण,
 कहइं रूप कुंमणा नही, राजरिद्धि मंडाण. ४
 वर्तमान सहगुरु सही, नमतां नव निधि होय,
 गुणनो पार न पामीइं, कोड जीभ कहे कोय. ५

चालो हे सखी ! चालो सैत्रुंजगिरि भेटीइं - ए देशी ।
 संदेस हे सखी ! संदेस साथ कहाय,
 पंथी हे सखी ! पंथी मुझ वातडी,
 गछपति हे सखी ! गछपतिनै कहै जाय,
 श्रीसंघ हे सखी ! श्रीसंघ जोवै वाटडी. १
 मननी हे सखी ! मननी पूरो कोड,
 वीनति हे सखी ! वीनति ए अवधारीइं,
 तुम सम हे सखी ! तुम समवड नही जोड,
 हरखै हे सखी ! हरखै पूज पधारीइं. २
 आव्यां हे सखी ! आव्यां अधिक उल्हास,
 सनमुख हे सखी ! सनमुख सामे लोक रै,
 जगगुरु हे सखी ! जगगुरु पूरण(इ) आस,
 ओछव हे सखी ! ओछव बहु सूरत बंदिरै. ३
 पूरण हे सखी ! पूरण कलस लै हाथ,
 पैहरण हे सखी ! पैहरण पाटंबर गोरडी,
 गावै हे सखी ! गावै मिलिकर साथ,
 मीठै हे सखी ! मीठै स्वर जिम मोरडी. ४
 सदगुरु हे सखी ! सदगुरु विजैदयासूर,
 वाणी हे सखी ! वाणी अमृत उचरै,
 श्रीसंघ हे सखी ! श्रीसंघ आय हजूर,
 वंदन हे सखी ! वंदन कीधा बहु परै. ५
 खरच्या हे सखी ! खरच्या हे संघ दाम,
 श्रीफल हे सखी ! श्रीफल कीधी प्रभावना,
 गुणकर हे सखी ! गुणकर गोतमस्वाम,
 पूगी हे सखी ! पूगी सवि मनकामना. ६
 पांम्या हे सखी ! पांम्या पुण्यै पूर,
 दिनकर हे सखी ! दिनकर समवड दीपता,
 गिरुवा हे सखी ! गिरुवा गुणभरपूर,
 वादे हे सखी ! वादे पंडित जीपता. ७
 अविचल हे सखी ! अविचल दुलुगि राज,
 लीजै हे सखी ! लीजै सहगुरु भामणा,

सफलो हे सखी ! सफलो दिन मुझ आज,
हूआ हे सखी ! हूआ रंगवधामणा. ८
तपगछ हे सखी ! तपगछपति-सिणगार,
सुरतरु हे सखी ! सुरतरु सूरशिरोमणी,
नित प्रति हे सखी ! नित प्रति जयजयकार
आसिस हे सखी ! आसिस **रूपविजै** भणी. ९

॥ इति स्वाध्यायः ॥

साहिब तपगछराजा - ए देशी ॥
चरणकमल सदगुरु प्रणमीजै, हेजै हरख धरीजै हो,
साहिब अरज सुणीजै,
सदगुरु चित्तमै धरीजे, विनति सफल गिणीजै,
सेवक दरसण दीजै. १ सहियां सहगुरु भेटो....
मरुधरदेशनै पूज वंदाओ, श्रीसंघ इधक उमाहो ओ,
साहिब तपगछनायक,
दरसण दोलतिदायक, सकल गुणे करी लायक,
वांणी अमृतवायक. २ सहियां सहगुरु सेवो....
विजयदयासूरि सुगुरु विराजइं, गुरु गछनायक छजइं हो,
साहिब सुगुरु विख्याता,
सुख-संपत्ति-सुखदाता, दरसण लहियै जी शाता,
सहुनै सहज सुहाता. ३ सहियां सहगुरु सेवो....
गोत्र **सुराणा** कुल जयवंतो, सकल गुणै गुणवंतो हो,
साहिब **अमराकुल** आया,
जननी **अनोपदे** जाया, गोरी मंगल गाया,
हरख धरी हुलराया, दिन दिन तेज सवाया. ४
सहियां सहगुरु सेवो....
सोझीतनो श्रीसंघ सुहावै, पटभगतो भलै भावे हो,
सुणीयै सहगुरुवांणी,
ए वीनति चित्त आंणी, साची एह सहिनांणी,
दीजै समकित जांणी. ५ सहियां सहगुरु सेवो....
षट जीवोना थे हीतकारी, **विजैक्षिमासूरि**पदधारी हो,
सुगुरु ओछव कीधो,

मंगलपुर पद दीधो, संघै मिली जस लीधो,
जाचक लख धन दीधो. ६ सहियां सहगुरु सेवो....
सदगुरु केरी मांनुं ओलुजी आवै, धन ते दरसण पावै हो,
साहिब तपगछराया,
पुण्यै परतिख पाया, नर नारी सुखदाया,
दीठां दोलित थाया. ७ साहिब सहगुरु सेवो...
धन ते **गुज्जरदेश** वखाणुं, **सूरति बंदिर** तिहां जाणु हो,
सहगुरु चोमास राजै,
एहवा सहगुरु छजै, वांणी अमृत गाजै,
वाजा सुजसा रा वाजै. ८ साहिब सहगुरु सेवो....
सोझितनै संघै वीनति दाखी, भावभगति कर भाखी हो,
साहिब संघसवाई,
वीनति एह पठाई, लिखमी लाभ वधाई,
रूपविजय सुखदाई. ९ साहिब सहगुरु सेवो
॥ इति स्वाध्यायः ॥

अमृतध्वनिः ॥

तपगछपति नायक तिलक, दिल दोलति दरीयाव,
दयासूरि वंदै दुनी, भाव इधक धरि भाव,
तो धरि भाव, इधक उमाव, राणा राव, सब जन आव,
ऊलट भाव, प्रणमित पाव, पातिक जाव, भविजल नाव,
धरि मन ध्याव, अंग उच्छाव, उक्त उमाव, द्यो अंबाव,
अमृत स्राव, वर द्यो माव, मन-वच भाव, रूप सभाव,
गुण जस गाव, तेज प्रभाव. १

तपगछपति नायकतिलक०

तो गहगट्ट, वंदै थट्ट, राजस वट्ट, जस घणषट्ट,
कहै जस भट्ट, चिहुं दिसि थट्ट, भो जगभट्ट, पूरण थट्ट,
पुण्य प्रगट्ट, प्रगट्ट पुण्य प्रगट्टयो प्रगट्ट, पायो पाट प्रगट्ट,
दयासूरि दीठां दरिस, सदा हुवै गहगट्ट. २
पद पायो तपगछ प्रगट्ट, इधकै पुन्यअंकूर,
दयासूर सूरिदजी, लब्धे गुणभरपूर,

तो भरपूर, गुणै सनूर, चढतै नूर, वाजै तूर,
ससिअर सूर, तेजै पूर, मनमथ चूर, सील सनूर,
कांमीत पूर, दालिद दूर, कीजै चूर, पुन्य अंकूर,
लछी लूर, घृत-गुल चूर, वंछित पूर, कर्म करूर,
देखत दूर, सदा सनूर, गुण भरपूर, रूप सनूर,
कहत हजूर, एम जरूर, सुख भरपूर, पुन्य पडूर. ३

पद पायो तपगछ प्रगट०

तो नव निद्ध, रिद्ध समृद्ध, दिन दिन वृद्ध, पावत रिद्ध,
कामित सिद्ध, बहू दत्त दीद्ध, सुकृत कीद्ध, जस घण लीद्ध,
रूप प्रसिद्ध, कहै जस कीद्ध, वंछीत दीद्ध, प्रणमित सिद्ध, पुन्य प्रसिद्ध,
पद पायो तपगछ प्रगट, पुन्य इधक परसिद्ध,
दयासूर दीठा दरिस, सदा हूवै नव निद्ध. ४

॥ इति सूरीस्वरगुणवर्णनम् ॥

अपरं च श्रीपरमपूज्यजीना सर्व गुण किणही नर नारीयइं लिखित पडवज ओपमाइं पार न पामइं । सुरगुरु असुरगुरु द्विजिहव फणामणी उभय सहस्र प्रमाणइं तदपि तोहि सरस्वती ब्रह्मपुत्री अनंत उत्सर्पि(णी) ओसर्पिणी जाव काल गुरुवर्णन करइं तोहि गुरुगुणकथने कुण समर्थ, नायमर्थ समर्थ ।

अम हईदूँ दाडिमकली, भरीयउ तुम्ह गुणेण,
अवगुण एक न संभरे, वीसारीजइ जेण. १

अठै श्रीपूज्यजीना मेल्या चोमासै पुन्यांस रूपविजैजी आया, सो अठै गछी-परगछीमै मेंमा घणी हुइ - पजूसणापर्व निर्विघ्नपणै प्रवर्त्या छै. अठाई ८ थई पासखमण ५ थया छै. बेला ३०१ थया छै. अठम ५०३ थया. पांच उपवास ३२ थया छै. पूजा १७ भेदी विशेषै थई. देहरै-उपाश्रयै विशेषै उन्नत हुईजी. अठे वखाणे भगवतीसूत्र सज्ञाय पन्नवणा नित्यै वखाण श्रावक श्राविका आवे छै. धर्मचरचा आछी चालै छै. तिणसुं श्रीतपगच्छ रो घणो भलो दीसै छै. बीजुं समाचार एक प्रीछयो जे अठे खरतर भट्टारकनो श्रीपूज अठै रह्यो सो केहवा लागो जे अम्हे चैत्रप्रवाड पैहली काढस्यां ति वारै अठासुं आदमी १ जोधपुर मेल्यो. पुन्यास रूपविजैजी, पं. राजविजैजी कागद दिवांनां ऊपरै लिख्यो अनै श्रीमाहाराजनै पिण समाचार लिख्या अने श्रीसंघ पिण समाचार लिख्या. तदा श्रीमुख श्रीमहाराज

फुरमायो जे सदा तपगछ रो विवहार जादा छै तिण वास्तै चैत्रप्रवाड तो पैहली श्रीतपगछ री नीकलसी. सो श्रीमहाराज हजूरसुं परवानां लिखाय मेल्या जे पैहली तपगछ री चैत्रप्रवाड काढज्यो. सो पैहली चैत्रप्रवाड आपणी च्यारूं ही नीकली. श्रीतपगछ रो सारै ही घणुं भलो दीठोजी. अठा रा श्रीसंघसमस्त री वीनती छैजी श्रीपूजजी चोमासै अठै पधारजोजी. अठै सिंघवी, भंडारी, मोहणंत, मुहता, साहुकार सहु कोई श्रीपूजजीना दरसण रा अभिलाषी छै. श्रीपूजजीनै वांदवा री उत्कंठा घणी रहे छै. तिण वासतै श्रीसंघ री वीनति सफली करजोजी. तिहां श्रीपरमपूज्यजी सपरिवार-सिंघाडादिक पंडितप्रधानं पं. श्रीवल्लभकुशल ग०, पं० श्रीरूपविजय ग०, पं० श्रीजैनेंद्रसागर ग०, पं० श्रीचैनकुशल ग०, पं० श्रीरामविजय गणिनइं अम्हारी त्रिकालवंदना श्रीश्रीजीयै अवधारवीजी. इहां श्रीभगवनजीना आदेशी पुन्यास श्रीरूपविजय ग०, पं० जसवंतविजय ग० पं० राजविजय ग०, पं० मोहनविजय ग०, पं० तिलकविजय ग०, चेला सहु परिवार ठाणुं १९नी वंदना प्रतिदिन २ वार १०८ अवधार्योजी. श्रीपूज्यजीना परम पट्टभक्त, सेवक, हुकमी छैजी. बीजुं चरणकमल घोअणवेलाइं श्रीसंघ सकलनइं संभारवाजी. श्रीजिनराज माहाराज श्रीपार्श्वनाथ जगवल्लभजी यात्रायइं संभारवाजी. धन्य ते श्रावक श्राविका राऊ रावल ईभ्य सेठ माडंबी कोडंबी गाहापति नित्य प्रति वांदइ. धन्य ते धरित्री, धन्य पवित्र रजरेणुका पाययुगल स्पर्श धन्य ते सूरतिबंदिर जिहां श्रीजी अमृतरिं तिरस्कार करी श्रुत प्रतइं सांभलइ ते धन्य. श्रीपूज्यजी मन वचन काय घडी एक वीसरता नथी. श्रीपूज्यजीनी अभिधान-नाममाला अहर्निशि श्रीरविउदय उदये पक्ष्ये मासे वरसे जीविताद्यंताई वीसरवा नथी.

तंतुपट्टवेमादिवत सह संवत तिथि ३६०. बारसणहं मासाणं तिणिशय-सठिरायं-दीयाणं पंचणहं माहपव्वीणं राईदिवसी चऊदिशि, ३ चोम्मासा, शयी-आलयः ऊन्हालो अर पंचम वरसालओ भाद्रपद सित चऊथि श्रीकालिकाचार्य... इच्छामि खमासमणो... मुख आगलइं तथा पूठइं पाछलिं श्रीसदगुरु सत्यगुरु परम-गुरु गच्छगुरु पइं असमंजस अविनय अज्ञानता सापराधपणइं लघु दीर्घाक्षर ह्रस्व दीर्घ प्लुत व्यंजन काहनामात्र अशुद्ध लिखित दोषनो मिच्छामि दुक्कडं.

सं. १७९० काती सुदि १५ दिने इति मंगलमालिका शुभं भवतु ॥

* * *

(७)

सूरतथी सुजाणविजयजीनो

बालोतरास्थ-श्रीविजयधर्मसूरिजीने विनन्तीपत्र

तपा. विजयधर्मसूरीश्वरजी पर लखायेल सर्व पत्रोमां प्रस्तुत पत्र प्रायः सौथी नानो पत्र हशे. कवि रामविजयजीना शिष्य कवि सुजाणविजयजीए सं. १८२३मां सुरतथी वाल्होतरा (बालोतरा) चातुर्मासनी विनन्ती करवा आ पत्र पाठव्यो छे.

प्रथम ढाळनी शरुआतनां पद्योमां माता सरस्वतीने याद करी कविअे सूर्यमण्डण पार्श्वनाथ, धर्मनाथ, गोडी पार्श्वनाथ तेमज शङ्खेश्वर पार्श्वनाथ प्रभुने वन्दना कर्या बाद विजयधर्मसूरीश्वरजीने सुरतमां पधारवा विनन्ती करी छे. ते ज ढाळमां सूरिजीना सामान्य गुणोनुं वर्णन कर्युं छे, साथे सुरतमां गुरुभगवन्तने शा कारणथी पधराववा (बोलाववा) छे ते प्रयोजन जणाव्युं छे. ढाळना अन्त्य भागमां तेमज बीजी ढाळना आगलनां पद्योमां गुरुना सुरतमां पधारता शा-शा कार्यो थशे तेनी कविए सुन्दर शब्दोमां नोंध आपी छे. त्यार पछीनां पद्योमां फरी सामान्य गुणवर्णन करी खामणापूर्वक पत्र पूर्ण कर्यो छे. जो के खामणाना लेखवाळो थोडो भाग खण्डित थई गयो छे. तेमां कदाच सङ्घना होदेदारो-श्रावक-श्राविकानां नामो इत्यादि होय तेवुं बने.

*

अथ दूहा :

सरसति मुझ सुपसाय करि, आपो वचनविलास,
श्रीविजयधर्मसूरीसना, गुण गाउं ऊल्लास. १
गुरुदरीओ भरीओ गुणें, वर छत्रीस प्रधानं,
मुझ मति सारी आपज्यो, वर्णव करूं ग्यांन. २
श्रीसूर्यमंडनपासजी, श्रीधर्मनाथ-गौडीपास,
श्रीसंखेश्वरपासजी, प्रभू पूरो मननी आस. ३
श्रीवीरपाटपटोधरू, श्रीगौतम गणधार,
श्रीसोहमपाटपरंपरा, श्रीविजयधर्मसूरि पटधार. ४

ते गुरुनो वर्णन करूं, करूं वीनती सझाय,
ऋद्धि-वृद्धि सुख संपजे, श्रीगुरुनें महिमाय. ५

॥ थे तो सिंहलद्विपमें जाज्यो, सिंहलद्विपरा मोती मगायो रे,
वाल्ला राजि-दीवाणी(जी) ढोला ॥ ए देशी ॥

शारद मात देज्यो मति सारी, अम्हे थुंणस्युं तपगणधारी रे,
म्हारा श्रीपूज्यजी सूरति पधारो, सूरतिना देव जूहारो रे, म्हारा..... १
श्री संघनी वीनती अवधारो रे म्हारा..... [आंकणी]
श्रीविजयधर्मसूरीश्वर राजें, चौरासी गछ सिरताजें रे, म्हारा...
वर छत्रीस गुणें करीय बिराजें, दिन-दिन गुण अधिक दीवाजें रे, म्हारा.....२
वसुंधरा पावन करवा सारू, पधारो गौतम गणधारू रे, म्हारा...
अम्हे निश-दिन जोउं रे पंथ, आवो मुनिपति निर्ग्रथ रे, म्हारा..... ३
लेई शास्त्र सकलना तंत, धर्मध्यान धरो एकांत रे, म्हारा...
देश-पुर-पाटण सर्वें तुम सरिखा, कृपा करो गुरु अमृतवरषा रे, म्हारा.....४
गुरु सकलजंतुहितकारी, वीनति सेवक चीत धारी रे, म्हारा...
सेवकसानधिकारी सुविचारी, गुरुमूरति मोहनगारी रे, म्हारा..... ५
सेवकनें उवेखो छे स्यानें, आवो गुरु सुधानिधि वाने रे म्हारा...
सूरतिनो संघ थयो एकतांनें, गुरुवंदने नें गुणग्याने रे, म्हारा..... ६
चकोर थयां छें सेवकना रे नयणां, जीव जंपें ते गुणलयलीणां रे, म्हारा...
गुरुमुखचंद जोवानें सयणां, हिउं उल्लसैं अमृतवयणां रे, म्हारा..... ७
पारदर्नि परि ईहां जिनमत भारिं, पसर्यो छे बहु परिवारिं रे, म्हारा...
आवी करो गुरु तुम्हे ए कला रे, उपदेश-ज्ञान देई सारिं रे, म्हारा..... ८
गुरु-रयणायर संपूरण पूरें, कुमति तृणांनें करो दूरिं रे, म्हारा...
लीलाल्लोल-ग्यांनकल्लोल सनूरें, मीथ्याभेद करो चकचूरिं रे, म्हारा..... ९
पन्नग-पाखंडी जीके नवि रहेस्यें, श्रीपूज्यजी जिहां संचरस्ये रे, म्हारा...
विलंब कांई करो महामुनीश, पूज्य आवो चढतें जगीस रे, म्हारा..... १०
गजमदभंजण ने मृगराज, तारागणमांहि शसि सिरताज रे, म्हारा...
तमतस्कर नसाडें दिनराज, तिम अधर्म नासैं गुरुकाज रे, म्हारा..... ११
स्वामी तुम्हे देश घणा प्रभु जोया, पिण मारूआडि देशमें मोह्या रे, म्हारा...
तुम्हे सेवांणचिदेश जई सोह्या, नगर बाल्होतरा श्रावक पडिबोह्या रे, म्हारा...१२

कृपा-सुदृष्टि सेवकोपरि राखो, गुरु आवी उपदेश दाखो रे, म्हारा...
 सूरति आवी ज्ञानरस चाखो, वीनती करुं त्रिकरण साखो रे, म्हारा..... १३
सूरति सहेंर छे अति वारू, जोतां दीसैं छें दीदारू रे, म्हारा.....
 बंदिर शुभ शोभा धारू, सुकृत-पुण्य तणुं भंडारू रे, म्हारा..... १४
 श्रीविजयदयासूरीश्वरपटधारी, श्रीविजयधर्मसूरि सुखकारी रे, म्हारा...
 वीनती करी सेवके मनोहारी, महेंरबानी राखो मुझ सारी रे, म्हारा..... १५
 गुरु प्रतपो क्रोड वरिस, रवि-इंदु-धुअ लर्गि ईस रे, म्हारा....
 इम पभणें **रांमविजयनो** शीस, **सुजांणनी** पूरो जगीस रे, म्हारा..... १६

॥ढाल॥ टूंक अने टोडा विचें रे, मेंदी तणा दोय रूख रे मेंदी रंग लाग्यो ०ए देशी ॥

श्रीसूर्यमंडन पासजी, श्रीधर्मनाथ पूरे आस गिरूआ गछपति [आंकणी]
 श्रीगोडीप्रभु पासजी, श्रीसंखेश्वर करे दुखनास गिरूआ १...
 मोहनगारी मूर्ति, दीठडें पातिक जाय गिरूआ....
 गुरु आवो देव जूहारवा, सेवक जन सुख थाय गिरूआ... २
 वांणी अमृतश्रावणी, निसुणी मन हरखंत गिरूआ.....
 तुम्हे सूरीश्वरसेहरू, प्रगटें धर्म अत्यंत गिरूआ..... ३
 तुम आव्यें उद्योत थस्यें, वधस्ये पुन्यभंडार गिरूआ....
 ए **सूरतिना** संघनी, वीनतडी अवधार गिरूआ..... ४
 सूरतबंदिर पधारयो, अवश्य अवस्यें गुरुराय गिरूआ...
 रांमविजय सुपसायथी, **सुजांणविजय** गुण गाय गिरूआ..... ५

अथ कलस : इम सकल सुखकर दूरित-दुखहर, प्रगट्यो पुण्यदीवाकरू,
 जसवाद आखें देश-प्रदेश भाखें, सुयश दिशो दस मनोहरू,
 श्रीविजयदयासूरीश्वरपटधारी, श्रीविजयधर्मसूरीश्वरू,
 भविक-भावक ग्यानप्रभावक, तपगछमंडण सुरगुरू,
 श्रीसूर्यमंडणपासपसाइं, संथुण्यो श्रीविजयधर्म अलवेसरू,
 श्रीसूरतिसंघनी वीनती, श्रीगुरु मांनीइं कृपा करू,
 संवत अढारसैं त्रेवीसैं (१८२३), रही सूरति चउमास ए,
 रांमविजय सुपसायें गायो, **सुजाणविजय** सुविलास ए १

॥ इति गुरूस्वाध्याय ॥

ऐं ॥ छप्पइ ॥ तुं **तपगच्छपति** धन्य अन्य कुण तुम्ह सम कहीइं,
 चोरासी गणमांहि ईस को अवर न लहीइं,
 क्षमा-दया-गुणपात्र जात्र तुमची सहु चाहें,
 महिअल अधिक प्रताप पसर्यो चिहुं दिस माहें,
 अवीचल धु-तारा लगइं तुं प्रतपें तपगछधणी,
 सकल समीहित पूरवा सेवकजननें सुरमणि ॥

अपरं च श्रीपूज्यजीने श्रीसुरतिनो संघ रात्रि-देवसी-पा[खी-चाउमासी] संवछरी
 प्रमुख पांचें पडिक्कमणें करी उब्भु.....

* * *

(८)

राधनपुरग्रन्थ-श्रीविजयधर्मसूरिजीने मेदनीपुरथी सत्यसागरजीनो पत्र

प्रस्तुत विज्ञप्तिपत्र विजयधर्मसूरिजी उपर लखायेल अन्य विज्ञप्तिपत्रो करतां थोडो मोटो अने सौथी सुन्दर विज्ञप्तिपत्र छे. विज्ञप्तिपत्रमां आलेखातां तत्कालीन वर्णनो तेमज ऐतिहासिक बाबतोने अहीं विशेषे समावाई छे. कवि काव्यरसना जाणकार होई कृतिने विविध छन्दो, अलङ्कारोथी रसप्रचुर बनाववामां पण सफळ थया छे. शरुआतनां पद्योमां इष्ट परमात्माने नमस्कार करी सौ प्रथम गुर्जर देशनुं वर्णन, पछीनी ढाळोमां अनुक्रमे गुजरातमां थता व्यापारनुं, देशनी प्रजानुं, गुजरातना तेमांय जैन प्रजाना मुख्य तीर्थ शत्रुंजय तथा गिरनारनुं, विजयधर्मसूरि ज्यां बिराजमान छे ते राधनपुर नगरनुं, त्यांना सुलतान गाजीमखाननुं, गुरुभगवन्तना गुणोनुं, कवि पोते बिराजमान छे ते मरुधर देशना मेदनीपुर नगरनुं तेमज त्यांना महाराज विजयसिंहनुं इत्यादि वर्णनो कवि सुन्दर रीते वर्णवे छे. कविनी वर्णनशक्ति खरेखर दाद मागे तेवी छे. अन्त्य ढाळोमां चातुर्मासनी आराधनानुं वर्णन तेमज श्रीसङ्घनी गुरुभगवन्तनी पधरामणीनी आतुरतानुं वर्णन अद्भुत छे. एकंदरे सम्पूर्ण कृति विद्वद्भोग्य छे.

*

गच्छपतिने लेख लिख्यानी विधि:

स्वस्तिश्री सुखसंपदा-दायक देव दयाल,
सुखदाई समरूं सदा, ऋषभजिणंद कृपाल १
सेत्रुंजगिरिनो साहिबो, नाभिनंदन सुखकंद,
शिवमारगदायक मुदा, प्रणमुं प्रथम जिणंद २
स्वस्तिश्री जिन सोलमो, मनवंछितदातार,
शांतिजिनेश्वर नित नमुं, पंचम चक्री सार ३
मेघरथराजा-भवे, सरणे राख्यो जीव,
जीवदयागुण-कारणे, प्रणमुं तास सदीव ४
स्वस्तिश्री यादवतिलक, राजिमति-भरतार,
सांमलवरण सोहांमणो, शिवादेविमात-मल्हार ५

श्रीगिरेंनारिं गिरें थयां, दिक्षा ज्ञान निरवांण,
धर्मचक्री प्रणमुं सदा, नेमिसर जिनभांण ६
स्वस्तिश्रीरमणितिलक, केवलकमलाकंत,
शिवसुंदरिनो साहिबो, विघन कोडि हरंत ७
वामारांणिकुंखिसर-राजहंस जिनचंद,
अश्वसेनअंगज सदा, वंदु पासजिणंद ८
स्वस्ति[श्री] शासनधणि, वर्धमान भगवंत,
केवलज्ञानदिवाकरु, अतिसयवंत महंत ९
सिद्धारथकुलकेसरि, त्रिसलादेविनंद,
सिंहलंछन पय सोहतो, वांदु वि(वी)र जिणंद. १०
श्रीऋषभजिनेश्वर शांतिजिन, श्रीनेमि(मी)श्वर पास,
वर्धमान जिनवर चरण, प्रणमुं मन उल्लास. ११

ढाल - प्रथम ॥ श्रीआदिश्वर वीनवुं रे - ए देशी ॥

सकल देस देसां शिरे रे [लाल], गुर्जरदेस समृद्ध सुखकारी रे,
धण कण कंचन पुरीयो [रे] लाल, अमरपुरी ज्युं प्रसिद्ध सुखकारी रे. १
गुर्जर देस सोहांमणो रे लोल
जंबुद्वीपना भरतमां रे लाल, सोहें घणुं श्रीकार सुखकारी रे,
अवर देस अनुचर सदा रे लाल, गुर्जरदेस सिरदार सुखकारी रे.
गुर्जर देस सोहांमणो रे लाल २
सुरसरिता जिम सोहति रे लाल, नदीयां निरमल नीर सुखकारी रे,
तीर तरंग विहंगसु रे लाल, सितल जिहां समीर हित(सुख)कारी रे. ३
पग पग पाणि पंथमें रे [लाल], वड जिम मोटा वृक्ष सुखकारी रे,
सितल जल छाया सदा रे लाल, पंथी पांमें सुख सुखकारी रे. ४
सालि तणा खेत संपजें रे [लाल], नीका३ भरीया नीर सुखकारी रे,
पाका आंबा तोडता रे लाल, केल करे बहु कीर४ सुखकारी रे. ५
गिरिवर कंचनगिरि जसा रे [लाल], उन्नत सिखर आकास सुखकारी रे,
निझरणां नदियां वहे रे लाल, षट ऋतु बारें मास सुखकारी रे. ६

आगर सोहे अति भला रे [लाल], साते धातु सुरंग सुखकारी रे,
 वस्तु विशेष जिहां घणा रे लाल, परिघल पांच रंग सुखकारी रे. ७
 आंबा राईण आंबलि रे [लाल], करणा केलि खजूर सुखकारी रे,
 बहु फल फूलें सोभता रे लाल, तरवर तरल सनुर सुखकारी रे. ८
 सरवर भरीया सुंदरुं रे [लाल], पंखि करता केलि सुखकारी रे,
 कमलसुगंधा उपरें रे लाल, षटपद करता केलि सुखकारी रे. ९
 वन उपवन आरामना रे [लाल], पग पग न लहुं पार सुखकारी रे,
 अढार भार वनस्पति रे लाल, फूल्या सम सहकार सुखकारी रे. १०
 रतनागर पासें वसैं रे [लाल], रतनजिहांज अनेक सुखकारी रे,
 परदेशी परखंडना रे लाल, आवें व्यापारी अनेक सुखकारी रे. ११
 गाम नगर पुर अति घणा रे [लाल], पग पग प्रबल निवास सुखकारी रे,
 कोट प्रसाद घर मालियां रे लाल, अति सुंदर आवास सुखकारी रे. १२
 मेह जिहां वरसैं घणा रे [लाल], निरमल वहे बहु नीर सुखकारी रे,
 वनस्पति फुलें घणी रे लाल, सुरभि झरे बहु खीर सुखकारी रे. १३
 रतनाकरथी जिहां कणें रे [लाल], साहूकारोने संग सुखकारी रे,
 रतन प्रवाल मोति दंतना रे लाल, प्रवहण आवे जुग सुखकारी रे. १४
 सुंदररूप सोहांमणा रे [लाल], सुरपतिने अनुहार सुखकारी रे,
 चतुराईयें गुण आगला रे लाल, मानव जिहां मनुहार सुखकारी रे. १५
 चंदवदन मृगलोचनी रे [लाल], हरिलंकी गजचालि सुखकारी रे,
 अपछरनें अनुहारडें रे [लाल], मीठाबोलि नारि सुखकारी रे. १६

दोहा : इम अनेक गुण सोहतो, मोटो गुर्जरदेस,
 कहियैं जिहां लहियै नही, दुरभिष डमर प्रवेश. १७

काव्य : यत्राऽनेकोच्चदुर्गाचलविमलसरित्सुन्दरारामवापी-
 कूपोत्तुङ्गागराम्भःसरसजलरुहाकीर्णसङ्कीर्णभूमौ ।
 राजन्ते सन्निवेशा विपुलतरलसद्भाम्यधर्मप्रवेशाः,
 सोऽयं सौराष्ट्रदेशः जगति विजयतां सर्वदेशावतंसः ॥१८॥

दोहा : इम अनेक गुण सोहतो, दुजो सोरठ देस,
 दोय तिरथ जिहां सोभता, सिद्धक्षेत्र सुविसेस. १९
 सिद्धाचल गिरिसेहरो, मोक्षप्रासाद सोपांन,
 इणि वाटें वहता तिके, पुहता पुर निरवाण. २०
 आदि न काइं इण गिरि तणी, तिम वली नावें अंत,
 सदा काल ए सासतो, जिनवर इम वदंत. २१
 ए गिरि सिद्धीसिला जिसो, सिद्धवहुनो गेह,
 नयणें परतिख निरखतां, गिरिपति अधिको एह. २२
 अमरापति सहु आविया, भरतादिक सवि राय,
 ऋषभादिक सब जिनवरा, सेवित कीय थिर ठाय. २३
 धन धन ए देशांतिलक, धन जे इहां वसंत,
 श्रीशेत्रुंजगिरि नित प्रतें, नीय नयणे निरखंत. २४
 चिंतामणि जिम दोहिलो, पांमीजे कृतपुन्य,
 तिम दरिसण ए गिरि तणो, जे पांमैं ते धन्य. २५

ढाल - बी[जी] । नींदरडि वेरण होई रहि - ए देशी ॥

ईशानेंद्रने आगलें, शेत्रुंजगिरि हो महिमा कहें सार कें,
 श्रीमुख सांभलि दाखव्यो, पुंडरिकगणि हो नामें गणधार कें. १
 भविजन वंदो गिरिपति, ए प्रणिम्या हो पातिक सहु जाय कें,
 ए नामें नव निधि मलें, ए दरिसणि हो बहु फलदाय कें. २
 दूर थकी ए देखतां, भव भवना हो दुख जायै दूर कें,
 फरसतां भवफेरो टलें, सुख पामें हो वली ते भरपूर कें. ३
 कर्म खपावी पांमीया, सिद्ध हूआ हो वले होस्यें कोडि कें,
 ए गिरि कांकर-कांकरे, ते प्रणमुं हो हुं बे करजोडि कें. ४
 सरवर निझरे ते कुंडनो, जे फरसैं हो गिरिवरनो निर कें,
 परभव दुखजलनिधि तरें, पोहचावें हो सिवपुरनें तीर कें. ५
 धन जे नर-नारि सदा, गिरि भेटें हो त्रिकरण करि सुध कें,
 नरक निगोदगति नवि फरें, वली पामें हों निरमल शुभ बुद्धि कें. ६

एकमनां थई गुण ग्रहैं, भावना भावें हो भावें एकांत कें,
 ते नवि फरसें संसारमें, जनम जरा हो नावें थायें अंत कें. ७
 धन मेरुवरजी तरुवरा, श्रीसीधवड हो रायणवड ठांम कें,
 दोहग सहू दूरें टलें, लीजंता हो वली जेहनुं नाम कें. ८
 धन शुक्र नें पारेवडां, जे सेवे हो गिरिपतिनो संग कें,
 ऋषभजिणेसर संत ते, जे देखें हो मन धरि उछरंग कें. ९
 वली मोर नाग सरिखा पशु, मन धरता हो गिरनो ध्यान कें,
 अशुभ करम दुरें करी, सुख पाम्या हो बहु देवविमांन कें. १०
 इम वनचर नरवर मुनिवरा, जे करसें हो गिरवरनो जाप कें,
 सेदेवी(?) सिवपद लहि, टाल्या सहू हो करमना संताप कें. ११
 सिद्ध अनंता इहां थया, थास्यें वलि हो जांगो सिद्ध अनंत कें,
 ए तीरथ सदा सास्वतो, इम भाखें हो श्रीमुख भगवंत कें. १२
 इणि गिरि प्रथम जिणेसरु, पूरव शुभ हो नवाणुं वार कें,
 समवसरणनी रचना करि, मुनिगणि(ण)नें हो सहूनें परिवार कें. १३
 जिनवर सहू समोसर्या, नेमिश्चर हो जिन विना त्रेविस कें,
 ते हुं श्रीशेत्रुंजगिरि, प्रणमुं सदा हो त्रिकरण निसदीस कें. १४

काव्य : चिन्तारत्नमिदं समीहितविधौ पोतो भवाम्भोनिधौ,
 दावककर्मवनौघदाहविषये पीयूषपूरो महान् ।
 दुखातङ्कनिराकृताभयहतौ दुगै(गौ) निधि[:] स्वागतो,
 श्रीसिद्धाचलतीर्थ एष नियतं भूमौ चिरं राजते. १

दूहा : श्रीसिद्धाचल सारिखा, जिहां तिरथ सुप्रसिद्ध,
 इत्यादिक गुणे जाणज्यो, सोरठ देस समृद्ध. २
 वली तिरथ जिहांकिण वडो, गिरि मोटो गिरिनार,
 सुखकारी सोहामणो, भेटें सहू नर नारि. ३
 दीक्षा ग्यांन समोसरण, जिहां किधां जिन नेम,
 पंचमगति साधी प्रभु, प्रमदाथी तजि प्रेम. ४

हरिबंधव यादवतिलक, करण भवोदधिपार,
 नेमि आव्या गिरि उपरें, वरदत्त मुनिपरिवार. ५
 धन्य जिके जगजीवडा, जे नियनयणे नित्त,
 दरिसन फरसन गिरि तणो, करें सदा शुभ चित्त. ६
 सुर नर किन्नर मुनिवरा, जपतां गिरिवरजाप,
 स्वदेहिं शिवपद लहि, टाल्या कर्मना ताप. ७

ढाल ॥ मिसरीनी ॥

श्रीगिरिनार सोहामणो, सिखर उन्नत असमांन,
 चिहुं दिसि नीझरणां झरे हो साजन, निरमल नीर प्रधान. १
 रैवतगिरि जांगो तुमे, सेत्रुंजगिरिनो शृंग,
 प्रह उठी नित प्रणमीयें हो भविका, आंणि भाव असंग. २
 वरदत्तादिक मुनिवरा, अणसण करिय उदार,
 सिवगति साधि सिध थयां हो साजन, तिण ए तीरथ सार. ३
 राजुल राणि भव तणो, टालि दुखवियोग,
 नेमीश्चरथी इहां मलि हो भाविका, लें दीक्षा शुभ योग. ४
 गजपदकुंडें गहकता, जे नर करे अंग शुद्ध,
 ते भवभ्रमण निवारिनें हो साजन, साधे शिवपद शुद्ध. ५
 सहसावन सोहामणुं, लाखावन ति[म] मल्हार,
 चंपक केतक मालति हो साजन, सोहें अति सहकार. ६
 पातिक जाय पाजें चढ्यां, गिर फरस्यां गहगाट,
 देवल नयणे देखता हो साजन, अलगो जाय उचाट. ७
 सांमलवरण सोहामणि, मूरति मोहनवेलि,
 नयणे दीठा नेमजी हो भविका, साची सिवसुखरेल. ८
 केसर-चंदन घसि भलो, मृगमदनो करि घोल,
 पवित्र थई जे पूजसें हो जिनजी, कर ग्रही रतनकचोल. ९
 धुप अनोपम आरति, करें सदा सुखसंग,
 नाटिक नव नव रंगसु हो भविका, वाजत ताल मृदंग. १०

जिण दरिसण दुरिगत टलें, पग पग वंछित पुर,
भाव धरि भेटें जिके हो प्रभुजी, सदा उगमते सुर. ११
राजिमतिइं प्रतिबोधियो, रहनेमि अणगार,
पीयुं पहिला मुगति गइ हो भाविका, ए तिरथमहिमा सार. १२
तिण ए तीरथ सास्वतो, बीजो न कोई एहनी जोडि,
गिरनारगिरनो मंडणो हो जिनजी, श्रीनेमि नमुं कर जोडि. १३

काव्य : यस्योत्सङ्गमुपागता जिनमताचारेण पञ्चप्रति-

माराध्योत्तमभावभावित(?) स(ह)दा प्राप्ता ह्यनेके शिवम् ।
भव्या[:] संश्रुत(सृति)सागरान्त मिल(?) जन्तुप्रतारी(?) यतः,
नाव(वा) सोऽयमिलातले विजयते तीर्थाधिपो रैवतः ॥१॥

॥ अथ छंद सारसी ॥

उत्तंग चंग उभंग अनवड, शृंग तुंग सुरंग ए,
ओनाड झाड पहाड असमर, झमर^{१२} झंगर^{१३} झंग ए,
नद नाल खाल अचाल नदीयां, वहें विम्मर वार ए,
सिरदार सार अपार सरभर, गिरां सिरि गीरनार ए. १
उडियाण थांभें रह्या आभें, शिखर दह दिसि सेहरा,
झड मंडि झिरमिर वहें जाझा महल लग्गे मेहरा,
तरु सबल परिमल महर्कि तरवर, सफल फल सहकार ए,
सिरदार सार..... २
हुंकार हनमंत रीछ हाकां, वाघ गुंजे विम्मरे,
डहकंत डमरू वीर डाकां, डींगडाइण डम्मरे,
कुहकंत कोईल कुरर केकी, गहक भमर गुंजार ए,
सिरदार सार..... ३
दिसि एक दिणयर तेज दीपें, अवर तरुग्रह अंबरं,
महि एक डंडे, मेह माता, पवन वज्जे बहुपरं,
तप तपें तापस एकतालि, ध्यान धरि) इक धार ए,
सिरदार सार..... ४

मचकुंद केतक अमल महकें, जाई जयण जासूल ए,
कित अंब जंब कदंब करणा, फबे(ले) घण फल-फूल ए,
सब ऋतु सुहाइ हेक सरसी, दिल हरे दीदार ए,
सिरदार सार..... ५
गढ बुरज गिरदी मंडी गोखां, देवदेवल दीपता,
झलकंति सोवन सिखर जालि, ज्योति रवि शशि जीपता,
जिणभुवन पडिगह थंभ जालिम, अँन नलिनआकार [ए],
सिरदार सार..... ६
घणणाट सघला घंट धणके, झणण झलकें झल्लरी,
द्विगगि दौ दौ दमामगहकें, भेरी भुंगल झल्लरी,
तत्त तत्त थेई थेई नृत ततक्षिण भविक भाव अपार ए,
सिरदार सार..... ७
घनसार केसर अगर घोलें, नवे अंग चरचें नरा,
गुणगीत भावन शुद्ध भावे, पूजि जिनवर बहु परा,
मन शुद्ध सघला पाप मेटे हूआ सिवहुंसीयार ए,
सिरदार सार..... ८
गिरिनार गिरिवर सिखर गाजी, नेमि जिनवर भवि नमो,
ब्रह्मचारि राजुलवर वदीतो तेवो प्रभु बावीसमो
भणें भोज यादववंसभुसण, सदा भवि सुखकार ए,
सिरदार सार..... ९

दूहा सेतुंजो गिरिनारगिरि, मोटा तिरथ दोय,
ते कारण देशांसिरे, जिनमतमांहि जोइ. १
दुजो पिण इण देशमां, वरण अढारह वंघ,
द्वारामति इण नांम धुर, ओपें अतिहि अनंघ. २
देस देसना जातरूं, आवें मन उल्लास,
जात्रा करिने करें भव सफल, करतां लीलविलास. ३
हिवें ते देशे पुर घणां, पिण सहु जनत-परसिद्ध,
राधणपुर शुभ ठांम है, नांमं हुवै नव निद्ध. ४

चोरासि चहुटा जिहां, बेंठा साहुकार,
 नव नवविध बहु वस्तुस्युं, साच करें व्यापार. ५
 राज्य करें राजा तिहां, रामचंद्र अवतार,
 वंशविहारी दीपतो, तेजें जिम दिनकार. ६
 तेह तणा तप तेजस्युं, अरियण नाठां जाय,
 जिम सार्दुला सिंहस्युं, गेंवरघट्टा पलाय. ७
 मीर अमीर महाबलि, दायम गाजीखांन
 नित नित वधतो जेहनें, मांन दीये सुलतांन. ८

॥ ढाल ॥

जी हो तेह नगर शुभ स्थानिके लाला, सकल गुणे परधानं,
 जी हो चारित्रपात्रचुडामणि लाला, पंडितमांहि परधानं,
 चतुर नर भेटो श्रीगुरुभांण १
 जी हो सासनपति श्रीवीरजी लाला, श्रीसुधरमां रे स्वांमि,
 जी हो जंबुस्वामि प्रभवादिका लाला, अनोपमगुणअभिरांम २
 जी हो तेहनें पाटपरंपरा लाला, अंबरभासन सूर,
 जी हो श्रीश्रीविजयधरमसूरिंदजी लाला, नायक चढते नूर ३
 जी हो सुंदर सुरत सोहति लाला, दीठा आवे दाय,
 जी हो भविजन-नयन-चकोरडां लाला, दिलरंजन निसिराय ४
 जी हो चतुर नमो गुरुचंद्रमां लाला, दिनदिन चढते नुर,
 जी हो सोल कलाइं सोहतो लाला, उदयो पुण्यअंकुर ५
 जी हो कुमतितिमर दुरें हरें लाला, पूरें मननी आस,
 जी हो तारा जिम अन्यतीरथी लाला, अधिकउ तास उल्लास ६
 जी हो जिनसासन दरियो उल्लसैं लाला, सुमतिरयण सुखकार,
 जी हो हरखित श्राविक श्राविका लाला, कुमद अने कासार ७
 जी हो अमृतपूर झरें देसना लाला, संयमओषध सूध,
 जी हो आनंदित दिसि दिसि थई लाला, कुमतिवियोगणी दुख ८
 जी हो नित्य उदय ए जाणियै लाला, राहु तणें वसि नांहि,
 जी हो जलधर पण नही ओलवें लाला, कलंक नहिं इणमांहि ९

जी हो सीतल मन साताकरूं लाला, उज(ज्ज)ल विमल अभंग,
 जी हो गुरुमुख ससिहर ओपमा लाला, राजें अविहड रंग १०
 जी हो चंदवदन गुरुजी तणो लाला, दीठो अति सुखकार,
 जी हो वंछितपुरण जगजयो लाला, सुंदर अति सुखकार ११
 जी हो गुण अनंत गुरुजी तणा लाला, मुख कही न सके रे कोय,
 जी हो आप मुखे जो भारति लाला, जो कहें तो धन होय १२
 जी हो श्रीविजयदयासूरिंदनें लाला, पटधारी सुप्रसिद्ध,
 जी हो श्रीविजयधर्मसूरिंश्वरू रे लाला, नमतां हुवें नव निधि(द्ध)

दूहा

एक असंजम परिहर्यो, दुविध धरम उपदेस,
 त्रण्य तत्त्वपरसंगथी, जीता कषाय कलेस. १
 पंच महाव्रत पालता, षट काया आधार,
 भय सातें जिण भंजीया, चुर्या मद अठ मार. २
 नव वाडि शुद्ध नित प्रतें, पाले सिल सरीर,
 दसविह धर्म यतितणो, पालें थई महाधीर. ३
 अंग इग्यारें जिणें भण्या, बालपणें सुविसेष,
 बार उपांग जिणें उपदिश्या, काठिया जित्या अशेष. ४
 चउदह विद्या चुंपस्युं, भण्या सिद्धिगुणभेव,
 सोल कला संपूर्ण मुख, सत्तरह पुजां सदैव. ५
 अष्टदस सिलांगरथ, अंगें लहिइं आज,
 टालें दोष काउसग्गना, वीसठांण तपहिं समाज. ६
 गुण इंकवीस श्रावक तणा, उपदेशक निसदीस,
 परीसह टालें परा, सुगडांगमध्ये त्रेवीस. ७

॥ ढाल ॥ ईडर आंबा आंबलि रे ॥

दशा-कल्प-व्यवहारना रे, छविस भेद उदार,
 सत्तावीस गुण साधना रे, अठावीस आचार. १

चतुरनर भेटो श्रीगुरुभांण.....

पापश्रुतपरिसंगने रे, निवारे गणधार,
 त्रीस महा मोहना रे, थांनिक वारे विचार. २

सिद्ध एकत्रीस गुण दाखवें रे, योगसंग्रह बत्रीस,
आशातना गुरुनी कहि रे, ते वरजो निसदीस. ३
अतिसय सहू जिणंदना रे, वांणिगुण पांत्रीस,
छत्रीस गुण सूरीसना रे, धारिक विसवावीस. ४
इत्यादिक गुण छें घणा रे, कहेंतां नावें पार,
सुरगुरु पण नवि वर्णवे रे, जेहनी बुद्धि अपार. ५
रूप घणो अति सुंदरू रे, गुण बहुला एक जीह,
सेव घणी कर दोय मुझने रे, किम पुरीजे ईह. ६

काव्य देवाधिपो वा भुजगाधिपो वा, नराधिपो वा यदिहैह यस्याम् ।
संदर्शनं ते गुणकीर्तनं ते, सर्वेऽञ्जलिः ते तदहं विदध्याम् ॥१॥

॥ ढाल ॥ [ईडर आंबा आंबलि रे] तेहज ॥

सूरज सहसकरणें करी रे, पूरे दह दिसि आस,
एकण कर तुं पूरवें रे, सहस जणांनी आस. ७ चतुरनर.....

श्लोक भानुः करसहस्रेण, दशाशामात्रपूरकः ।
एकस्तव करो राजन्!, सहस्राशाप्रपूरकः ॥१॥

॥ ढाल ॥

आणा नव नव खंडमें रे, प्रतपें तेज अपार,
सूरीश्वर तपगच्छपति रे, **विजयधर्मगणधार**. ८ चतुरनर.....
सुंदर रूप सोहामणो रे, बहुतर कलाभंडार,
गुण छत्रीसे गाजता रे, श्रीविजयधर्मगणधार. ९
गिरुओ चोरासि गछमां रे, जिनसासनसिणगार,
पटधारी प्रतपो सदा रे, श्रीविजयधर्मगणधार. १०

दूहा तुं रयणायर गुणभर्यो, लहिरे ज्ञान लियंत,
पार न को पावें नहिं, अतिसय धीर अनंत. १
ज्ञानादिक मोटा रयण, अंतरगति भासंत,
च्यारं दिसि चारित्रजल, पसर्यो पूरण पंत. २
इणि जगमां अति दीपतो, जीपतो कोड दिणंद,
श्रीश्री**विजेंधर्म**सूरिंदनें, सेवें मुनिजनवृंद. ३

श्रीतपगछनो साहिबो, दीपें जाणें दिणंद,
मात **पाटमदे** कुखें अवतर्यो, **साह प्रेमा** कुलचंद. ४
जे सेवे कर जोडिनें, दिन दिन आलस छोडि,
ते मनवंछित फल लहें, मद मछर सवि छो(मो)डि. ५
धन श्रावक धन श्राविका, जे पडिलाभे धरि भाव,
निज मंदिर पावन करें, पधरावें गुरुपाव. ६
श्रीगछनायक गुणनिधि, गुणग्राहक गुणवंत,
भविक जीव प्रतिबोधता, साचो तुं समवंत. ७

॥ लाछलदे मातमल्हार - ए देशी ॥

बालपणें सुविचार, लि(ली)धो संयमभार,
आज हो छांडि रे नवि मांडि माया मोहनी जी. १

ओसवंस उद्धार, कीधो जिणे सुखकार,
आज हो टालि रे वलि पालि जिनवर आगन्या जी २

साह प्रेमा कुलसिह, एकलमल्ल अबिह,
आज हो **मात पाटमदे** कुखें अवतर्या जी. ३

संयम पालें सधीर, न दीयें केहनें पीड,
आज हो राजें रे विराजें पाटें वीरनें जी. ४

चारित्र लेई सुचंग, अविहड पाले अभंग,
आज हो मनरंगे चंगे मारग चालता जी. ५

धरे न ममता काय, जीवदया सुखदाय,
आज हो आरार्धे सार्धे मारग मोक्षनो जी. ६

क्रोध मानं मद माय, राखे मनमें छ काय,
आज हो वारी रे अविकारी गुरुगौतम समो जी. ७

बुधें अभयकुमार, शीले थुलभद्र सार,
आज हो जस कयवन्नानें जीपतो जी. ८

श्रीतपगछपति नांम, जपें मन राखि ठांम,
आज हो नर नारि चाह्यां सुख वरें जी. ९

श्रीविजयदयासूरिंद, पटधारी तेजे दिणंद,
आज हो श्रीश्रीविजेधरमसूरिश्वररूजी. १०
पंडितमांहि प्रधान, रतनसागर अभिधान,
आज हो रे सुख पायो सिशु सत्यसागरेजी. ११
जिहां लगि मेरु गिरिंद, जिहां लगें चंद-दिणंद,
आज हो प्रतिपो रे तिहां लगि तपगछसाहिबो जी. १२

॥ छंद - भुजंगी ॥

सदाचार आचार सारा सराहें,
अनेकोपमा अंगमें रंग आहै,
चोरासी गछाराव दीसे सचावो,
रिधुराज राजें तपागछरावो. १
महायोगविद्या हणी मोहमाया,
कसे छठ अठमादिकें कष्ट काया,
दमें पांच इंद्री कीयो काम दुरें,
च्यारे क्रोधादिना चक्कचुरे. २
सझें सील सन्नाह सामंत सूरो,
पुणां पित्त-माताने पख पूरो
धरे धीर धानं धोरीधिकायै,
चुगे चातुरी तीर चूमें चलावे. २(३)
खिमा खग साहें खत्रीवद् खेले,
अरी कर्मकंधादि आठें उखेलें
दया खग उपरि चहें दैत दांणं,
सवाडें प्रवाडें लीया धम्मसाणं ३(४)
आधारें (आराधे) दयाध्रम आचार ओपें,
लगी लीह मर्याद कदें न लोपें,
मोदे वाद कुमति तणा मांन मोडें,
गुडें जैन आचार गौतम जोडे. ४(५)
भलके भलो तेज भालें सुभाणं,
त्रिजें मुख चंदो इसो तुड्डिताणं

गिरा भारति आप ओतार गावें,
सुधा जेहवी वांण बोलें सुभावें. ५(६)
इला रूप जीतें सहुओ अनंगो,
गुणे गात उजास गंगा सुरंगो,
महिपत्ति मोटा तिकें आंण मांनं,
करें छत्ति उभा थका हेक कांनं ६(७)
सोहें पाटवीसूरि तेजें सवाई,
रिधू दयासूरिंद पाटें रजाई,
श्रीविजयधर्मसूरिंद सूरि(री)सराजा,
तपे चंदसूरां तपागछराजा ७(८)

अथाष्टकः

श्रीशारदां शुभरदां वरदां कवीनां,
नत्वा समस्तविबुधार्चितपादपद्माम् ।
स्तोष्ये तपागणपतिं गरिमासमेतं,
श्रीश्रीयुतं विजयधर्मप्रभुं मुनीन्द्रम् ॥१॥
तव यतिपते ! वक्त्रा [ब्जं तं] विलोक्य सदोदयं,
प्रमदपटलं भव्य क्रीड चकोरगणोऽनिशम्(?) ।
रुचिरकिरणव्रातोपेतं दधाति ततः स्फुटं,
विबुधनिकरोद्यत्तारालीविराजितमद्भुतम् ॥२॥
एकाकिनि(नी) यज्जगति भ्रमन्त(न्ती), त्वत्कीर्तिकन्या दधते न भीतिम् ।
प्रीति(ती)यते श्रीतपगच्छनेत-नाम्नैव भीरुत्वमतोऽङ्गनानाम् ॥३॥
त्वदन्यसूरीश्वरकीर्तिकन्या-पाणिग्रहार्थं भुवनत्रयेऽपि ।
यशःकुमारस्तव बम्भ्रमीति, तथाऽपि नाप्नोति खपुष्पवत् ताम् ॥४॥
त्वत्कीर्तिकन्यां सकलाङ्गिमन्यां, मन्यामहे धन्यतमां तदेनाम् ।
नैवाऽपवादो न च भीतिरस्याः, स्वैरं भ्रमन्त्या अपि यज्जगत्याम् ॥५॥
तव मुनिपते पायं पायं यशोमृतमद्भुतं,
सुरयुवतयो गायं गायं गुणान् गणनातिगान् ।
त्रिदशसरिति स्नायं स्नायं सुधोज्ज्वलवारिणि,
सुखमतितां भेजुनैजं जनुः सफलं पुनः ॥६॥

सुवचनकलापूर्णं तूर्णं तवाऽऽस्यसुधाकरं,
 नृपतिवनिता दर्शं दर्शं यथा मुदमादधुः ।
 इतरशशिनि लक्ष्मोपेते न नैव तथा पुन-
 श्रतुरमनसा(सां) रीतिर्ये(यो)षोत्तमतमकाङ्क्षिणाम् ॥७॥
 स्वामिन्! नित्यं भविकमनुजा ये तवाऽऽराधयन्ति,
 पादाम्भोजद्वितयमनघं भक्तिपूर्वं त्रिसन्ध्यम् ।
 तेषां गेहे विमलकमला नित्यवासं विधत्ते,
 जायन्ते च प्रकृतिसुभगाः पुत्रपौत्राः सरूपाः ॥८॥
 इत्थं सर्वगुणाकरा गणधरा सेवाभृत(तः)रसं(शं)करा,
 श्रीमच्छ्रीविजयादिधर्ममुनिपाः सर्वत्र लब्धादराः ।
 गुर्वाराधनतत्परेण मनसा सत्याब्धिना संस्तुता,
 नम्रीभूतसमौलिनाऽचि(ति?)विनयेनाऽत्यन्तसौख्याप्तये ॥९॥
 चिरं जीव चिरं नन्द, चिरं पालय सद्ब्रतम् ।
 शत शिष्य-प्रशिष्येण, गणे कोटिम्भरो भव ॥१०॥

अथ गद्य :

सकलातिशयसुन्दरश्रीऋषभादि-वर्धमानान्तिमतीर्थङ्करपट्टागतपदवीयः
 पदवीपदपीठालङ्कारान्, सुमतिगुपति(सि)सहितव्रतसंहितसमाराधितशुधा(द्धा)चारान्,
 सर्वविद्याविनोदविनोदितानेकविवेकजनसंभारान्, अनेकजनाधिराजसंसेवितपादार-
 विन्दान्, श्रीतपागच्छस्वच्छगगनभासनदिवाकरान्, सकल-सकल-भट्टारकपुरन्दर-
 भट्टारक-श्रीश्री१०८ श्रीश्रीविजयधर्मसूरीश्वरचरणान् चरणकमलान्

॥ अथ मरुधरदेसवर्णनः ॥

दूहा), सकल गुणे सिरदार,
 सयल देस-देशां सिरे, **मरुधरमंडल** सार. १
 मोटा मोटां जिहां कणे, सहिर वडा सोहंत,
 इंद्रपुरि जिम सोभतो, वर्ण च्यार विलसंत. २
 जिहां अनेक धन धानसुं, पुरित सुखिया लोक,
 घर घर मंगल नित घणां, उत्तमसि(शी)ल अशोक. ३

जैन धर्म जिहां जागतो, मोटो मुरतवंत,
 आज इणं पंचम अरे, दिनयर ज्युं दीपंत. ४
 ईति भीति लाभें नहीं, न पडें दुरित दुकाल,
 दुख दोहग व्यापें नहीं, जिहां नहीं कोई जंजाल. ५
 तिण देशें देशाधिपति, अमलि(ली) मांण अभंग,
 अनमीऔ नाडांगंजणो, जीपण मोटा जंग. ६
 सूरवीर क्षित्रिसिरें, ख्याग त्याग निकलंक,
 सुप्रताप मोजां समुद्र, न्यायवंत निशंक. ७
 श्री**विजयसिंह** राजा वडो, मरुधरपति महारांण,
 षटदरसण प्रतिपालकर, सूरवीर सूविहांण. ८
 पिसुणां पाथो रण प्रबल, पति हिंदुपतिंसिंह,
 महाराज हरिरूप महि, वखतबलि **विजयसिंह**. ९

छप्पय अधिपति तुहिज एक खागझड दुसमण खंडे,
 वरसे मेह वरीसमेह जिम धारा मंडे,
 त्रिपुर असुरकंध तोड सुरां सुख कीध सवायो,
 धरा प्रगटि धूय धर्म कलु इक रांम कहायो
 वखतेस सुतन वडिम वखत छलरख्यण छत्रपति,
 कर जोडि जास सेवा करे, मोटा मोटा महिपति. १

दूहा नगर तिहां लाभे घणा, एक एकथी सार,
 सहु नयरसिरसेहरो, **मेदनीपुर** श्रीकार. १

॥ ढाल - रसियानी ॥

अलकापुरवर आवि अवतर्यो, धरणीतल घनसार रे रसिया,
 निरूपण(म) नयर गुणें सोहामणो, गढ मढ पोलि प्रकार रे रसिया,
 मरुधरमंडल दीपे हो **मेडतो**,
 अवर नगर अनुचर इणि आगलिं, सोभा न पामें हो तेह रे रसिया...
 जिनवरभुवन जिहां सोहांमणा, उंचा अधिक उत्तंग रे रसिया,
 सोवनकलस सिखर सोभा करूं, धज पताका सुरंग रे रसिया. २

सत्तरभेद पूजा रचें सदा, भावना भावे अतिसार रे रसिया,
 समकिति सहू श्रावक श्राविका, जिनगुणमुख जयकार रे रसिया. ३
 वसे सदा वडा व्यापारीया, साहपति साह समांन रे रसिया,
 दानें मानें करी वलि आगला, संपदा धनद समांन रे रसिया. ४
 वरण चियारे जिहां किण विलसता, पवन छत्रीस परसिद्ध रे रसिया,
 चहुटा चोरसि जिहां परगडा, निगम प्रवेश नव निद्ध रे रसिया. ५
 गोखे गोखें रे जालि मालियां, परवतप्राय परसाद रे रसिया,
 सुखिया लोक जिहां सहू को वसें, विलसता रिद्धि सवाद रे रसिया. ६
 वाडि ने उपवन वनखंडनी, चिहुं दिसि सबजी सुचंग रे रसिया,
 विच विचमांहे नगर विराजतो, मेरु जिम मोहन रंग रे रसिया. ७
 देवकुमर जिसा जिहां दीपता, मानवना तिहां थाट रे रसिया,
 ओपें अपछरनें अनुहारडे, नारिय निरुपम घाट रे रसिया. ८
 वरते जिहां जिनवरनी आगन्या, पालता धरम दयाल रे रसिया,
 साध साधवी श्रावक श्राविका, जीवदयाप्रतिपाल रे रसिया. ९
 उंचा मंदिर सोहे मालिया, राजभुवन मनरंग रे रसिया,
 सोवनगिरवर जिम सोहांमणो, उजलवरण उत्तंग रे रसिया. १०
 रतनागर जिम दीसे रूअडो, चिहुं दिसि सरवर सार रे रसिया,
 नितनित भरीया रहें जिहां नीरस्युं, सोहता अति श्रीकार रे रसिया. ११
 सुगुरु सुदेव अनें सुधरमनो, रागी छें नर नारि रे रसिया,
 श्रावक नित प्रति जिहां किण साधता, धरमना च्यार प्रकार रे रसिया. १२
 इम अनेक गुणे करी सोभतो, मेदनीपुर सुभ थांन रे रसिया,
 श्रीश्रीपूज्यतणें सुवचनथी, धरें महाधरमनइ ध्यांन रे रसिया. १३

दूहा सरव गुणें करी सोभतो, मोहतो जनमनरंग,
 मरुधरमंडन दीपतो, मेडतो नगर सुचंग. १
 संघ समस्त तिहां थकी, लेख लिख्यो श्रीकार,
 त्रिविध त्रिविध करि वंदना, अवधारो गणधार. २
 श्रीश्रीपूज्यप्रसादथी, छें इहां परम विलास,
 श्रीजीना निराबाधना, देज्यो पत्र उल्लास. ३

धर्मध्यांन इहां किण घणां, नित नित नवले नेह,
 ओछव महोछव अभिनवा, कहेंतां नावें छेह. ४
 छठ अठम दशम पनर, मासखमण तप तेम,
 थयां अनेक इहां किणें, नित नवला धरमनेम. ५
 पर्व पजुसण पारणा, साहमीवछल सार,
 आडंबर अधिका थया, परघल बहु परिवार. ६
 निराबाध सुख तप तणां, श्रीजि(जी)ना सुखकार,
 समाचार श्रीसिधनें, देज्यो चित्त धरि प्यार. ७
 संघ समस्त कर जोडिनें, इम करें अरदास,
 पधारो श्रीपूज्यजी, चतुर तुमे चोमास. ८

॥ ढाल ॥

पूजजी पधारो हो मरुधर देसमां, श्रीविजेंधर्मसूरिंद गछाधिप,
 संघ निहालें हो तुमची वाटडी, मोर समागम ई(इं)द गछाधिप. १
 दुरलभ दरसण तुमचो जगतमां, जिम चिंतामणिरत्न पटोधर,
 सुलभ सदा जेहनें उदयें थयो, पूरव पुन्य प्रयत्न पटोधर. २
 भमर तणें चित्त जिम जलरुह वसें, चंद उदय ज्युं चकोर पटोधर,
 सतिय मनें भरतार अहनिसि वसें, जिम सुरभि वछनी ओर पटोधर. ३
 गज जिम समरे नित रेवा नदी, कोईल जिम सहकार पटोधर,
 तिम सहू संघ दरसण श्रीपूजनो, करवा चाहें सुखकार पटोधर. ४
 अमने चाह सदा तुमची रहें, थे छो बेंपरवाह पटोधर,
 पिण तुमनें कहो कुण कहि सकें, ए नही अनुप स्वभाव पटोधर. ५
 देस नगर घणा तिण परिसरें, एक दीटे बीजो वीसराय पटोधर,
 मोहनगारा लोक माया अति केलवी, राखे तुम विलंबाय पटोधर. ६
 रागविलुधा हो सहू नर गुण स्तवें, दिन दिन चढतें भाव पटोधर,
 धरमसनेह राखो जिण रीतस्युं, पालि अविहड भाव पटोधर. ७
 दरिसण तुमचो हो प्रभुजी देखवां, अम मन अधिक उछह पटोधर,
 नयण उमाह्यो तुम मुख जोयवा, चित धरें तिम चाह पटोधर. ८

तुम दरसण विरहें प्रभु अम भणी, अतिहि अणुरमा थाय, पटोधर,
 दरिसण विण अमची दिन रातडि, अतिहि अलुणि रे जाय पटोधर. ९
 जिण दिन गळपति मुरति पेखस्यां, सुणिस्यां तुम्ह मुखवांणि पटोधर,
 चरणकमल दोइ कर जोडिनें, फरस्यां ते सफल विहांण पटोधर. १०
 अमची वीनती ए अवधारिनें, पावन किजे हो देस पटोधर,
 धरम तणो बहु लाहो लीजीयें, कीजीयें कृपा विशेष पटोधर. ११
 पुज पधांर्या हो धरम होस्ये घणा, वली होस्ये धरमनो लाभ पटोधर,
 कुमति-मिथ्यात्व सहु दुरें हस्ये, वधस्ये जिममतआभ पटोधर. १२
 श्रीविजयदयासूरिंदना पाटवी, श्रीविजयधरम गणधार पटोधर,
 पावन कीजे हो पूज पधारिनें, एह वीनति अवधारि पटोधर. १३
 संवत अढारसें त्रीसा (१८३०) वरसनो, मृगसिर सुदि सुखकार पटोधर,
 द्वीतिया दिवसे हो गायो गळपति, सयल संघ सुखकार पटोधर. १४
 पंडितसकलशिरोमणि दीपता, श्रीरत्नसागर गुरुराय पटोधर,
 तास पसायै गायो गळपति, सत्यसागर सुखदाय पटोधर. १५

॥ इति श्रीविज्ञप्तिकास्वाध्यायसम्पूर्णतामगात् ॥

इति श्रेयःश्रेणि(ण)यः संवत १८४१ वर्षे कार्तिक सुदि १४ वार बुधे पं.
 माणिकनाथेन लिखितं ॥ गौधावि मध्ये गळपतिनें लेख लिखानि विधिः ॥

* * *

(९)

श्रीनमाल बिराजमान विजयधर्मसूरिजीने सादडीथी मोहनविजयजीनो पत्र

प्रस्तुत पत्र विजयधर्मसूरिजीने उद्देशीने सादडीथी मोहनविजयजीए लख्यो छे. शरुआतनो मङ्गलाचरण, ग्रामादिकनी वर्णना व. वाळो भाग खण्डित थई गयो होई कृतिनी शरुआत गुरुगुणवर्णनथी ज थाय छे. केटलांक पद्यो गुरुभगवन्तने विषे स्नेहना, केटलांक गूढार्थवाळां, तो केटलांक वर्णनात्मक रजू करी सादडीनगरनुं, त्यांना श्रावक-श्राविकानुं, अन्य तीर्थोनुं वर्णन कविए सुन्दर शब्दोमां कर्युं छे. मूडीआ लिपिमां श्रीसङ्घना श्रावकोना नामोल्लेख साथे पू. मोहनविजयजीना चातुर्मासनी, तेमां थयेल आराधनानी सविगत नोंध गद्यमां आलेखाई छे. पत्रान्ते फरी वार श्रीपूज्यजीने चातुर्मास पधारता तीर्थोनी स्पर्शनानी तेमज धर्मआराधनानी जाणपूर्वक कवि विनन्ती करे छे.

शब्दार्थ

- | | |
|--------------------|------------------------|
| १. पोयण = माछली | ४. छैल = रसिक |
| २. चावी = सुंदर | ५. झाल = काननुं घरेणुं |
| ३. चांदुआ = चंदरवा | ६. पयाल = प्यालो |

*

किं बहुना ? यतः -

असति(सित)गिरिसम(मं) स्यात् ॥१॥

दूहा : गयणांगण कागल करूं... १
 अम हीयडुं दाडिमकुली... २

श्लोक : यथा केकी स्मरेन् मेघं... १
 किहां कोयल किहां अंबवन... २
 गिरुआ सहजे गुण करें... ३
 हीयडा ते किम वीसरे, जिम सहगुरु सुविचार,
 दिन दिन प्रतें ते संभरें, जिम कोयल सहकार. ४

गूढा : दो नारी अति सांमली... ५
काती धुर फागुण विचै... ६
मठमांहिं तापस वसैं... ७

दूहा : जलमांहिं पोयणं वसें... १
तुम्ह दरिसण अम्हे अलजया, जिम सीतानें रांम,
भट्टारकजी मांनज्यो, नितुं जपीइं तुम्ह नांम. २
वांन वाधे जिम धर्मनुं, दया पालता सार,
तिम सदगुरु आराधता, सफल करे अवतार. ३

काव्य : हंसाः स्मरन्ति सततं मनसा यथैव० ॥१॥

दूहा : घणुं घणुं लिखीइं किस्युं, लिखता नावें पार,
किम गणीइं आकाशना, तारामंडल सार. १
धर्म थकी सुखसंपदा, धर्म थकी नव निद्ध,
धर्म थकी वली पांमीइं, सकल मनोरथसिद्धि. २
त्रिण वर्ग जगमें कह्या, धर्म अर्थ नें काम,
आदि वर्ग तुम नांममें, नांम जिस्यो परिणाम. ३

गाहा : चित्तं तुह पासत्थं, तुह गुणसुणिण सवणसंतोषो ।
जीहा नामगहणे, एगा दिठि(ट्टी) तडप्फडइ ॥१॥
अहो ! ते निज्जिओ कोहो... ॥२॥
घणुं घणुं लिखीयें किसुं, लिखता नावें छेह,
वलतो लेख ज पाठवो, जिम घणो वाधें नेह. ३
संघ सहू विनती करें, अवधारो अरदास,
वहिला पूज्य पधारज्यो, सादडी सहैर चोमास. ४ इति ॥

श्रीतपगछमांहिं दिनकरणसमान, भव्यजीवआसाविश्राम, जिम देवतामांहे इंद्र,
तारामांहे चंद्र, गिरमांहिं मेर, वाजित्रमां भेर, सूत्रमांहिं श्रीकल्पसूत्र, मंत्रमांहिं
श्रीनवकारमंत्र, सुखमांहिं संतोष, पर्वमांहिं पजूसणपर्व, हस्तिमांहे ऐरावण, रत्नमांहिं
चिंतामणिरत्न, तिम गछमांहिं तपागछ ते मांहिं सूरीश्वर गुण सुशोभित छे ।
श्रीश्रीपूज्यजीना गुण एक मुखें किम कहवाइं, जो सरस्वती प्रसन्न थाई तो ही
तुम गुण वर्णव्या न जाइ । परमपुरुष, परमगुरु, परमबांधव, श्रीमत्तपागछाधिराज

सकलभट्टारकपरंपरापुरंदरभट्टारक श्रीश्रीश्रीश्री १०८ श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीविजयधर्म-
सूरीश्वरजी सपरिवारचरणान्, चरणकमलान् ते श्रीसादडीनगरथी ।
सादडीसहरवर्णनं-

॥ ढाल - यत्तिनी ॥

सादडी नगरमें जे पुण्यपूरा, धर्मधुरंधर श्रावक सूर, **गोडवाड**में नगरी चावी^३, अमरपुरी कैं वादै आवी. १
जिनधर्म तणा ए रागी, श्रावक समकितमें सोभागी,
श्रद्धावंत सुणे उपदेश, मिथ्यामति तणो नहिं लेश. २
उंचा मंदिर सोहै आवासा, गोख जालीइं बहु परकासा,
चांदुआ^३ बांध्या अति खासा, दीपावे ते सघली आसा. ३
घर घर मंदिर तोरणमाला, अति सुंदर झाकझमाला,
गुणरंगीली ते गावें बाला, मही मयणभड करतो चाला. ४
चतुरा चालें चमकंती, गुरुवंदन हेज धरंती,
धरमरागस्युं मनमें भीनी, पापव्याप मति दूरें कीनी. ५
धर्मधुरंधर अति वाचाला, श्रावक सोभें घणुं सुकुमाला,
दिइं दांन नित दीनदयाला, देव-गुरु उपरि भाव विसाला. ६
श्रावक सघला समकितधारी, जस दोलति दीपें सारी,
सुंदर शोभें [जै]नविहारी, पासमूरति त्रिण सुखकारी. ७
चिंतामणि सामला पास, **अमीझरा** त्रीजा सुविलास,
देव त्रिणें शोभे दीदारु, त्रयरत्न तणा दातारु. ८
डावें पासे सुंदर देहरी, गाजै **गोडीनी** मूरति गैहरी,
राणकपुर तीरथ ताजा, तिहां वाजै छत्रीस वाजा. ९
छैल^४ चोगाला सुंदर सारा, कांमदेव तणें अवतार,
दिन ऊगंते देहरे आवे, सुगुरु वांदे ते पिण भावै. १०
नारी पहिरें नवरंगा चीर, चरणाचोली मस्तक हीर,
कंने एहवी झबुकें सुंदर झालि^५, भांति विराजें गोरे गालि. ११
एहवी माननी जे मतवाली, देंवदरिसणनें ते चाली,
सीलसुरंगी सोहें बाला, भरि मोती सोवनथाला. १२

हाथ चंगेरी फूलह केरी, भमतीमाहें देती फेरी,
गुंहली बनावी मांगे वास, टाले कर्मतणो ते पास. १३
संघ रंगीलो सादडी केरो, धर्म तणो जिहां ताण्यो डेरो,
नित्य करणी एहवी जाणो, चीरंजीवो तपगछराणो. १४
समुद्र तणी परिं वांणी छाजें, नाभीमंडलमध्य गुहरी गाजै,
सादडीई पाउधारो मुनिराया, नर-नारी तुहम प्रणमें पाया. १५
ते श्री सादडी सहैरथी, आग्याकारी दास,
हुकमी सेवक पूजना, रजरेणुसंकाश. १६

ते श्रीसादडी थकी समस्त संघ... जनरी वंदण १०८ आवधारजीजी ।
श्रीजीने आदेसै पनीआसै... वजैजी सोमासै आव्या तणसु संग गणो राजीबंद
थओ सेइजी । *अप्रमत्र संगरी अरज सै श्रीरंणपुरजीरी जातरा पधारी अंरी
हुकमयइजी । श्रीसंगनै दैवा जातरा अद करवाजी । वलमेन कागद प्रसादी
करावसीइजी...

अत्र संघने सुखशाता छैजी । श्रीश्रीभट्टारकजीने प्रसादे अत्रना संघने
सुख-शाता छैजी । श्रीभट्टारकजीना सुखशाताना, निराबाधपणाना सुखलेख
मोकली संघनै हर्ष ऊपजाववोजी । अत्रनो संघ श्रीभट्टारकजीनें घडी १ मात्र
वीसरता नथीजी । अत्रना संघ ऊपरें कृपा करीने आदेशें पंन्यासजी
श्रीमोहनविजयजी पधार्या तिणथी संघ घणुं रजाबंद हुओ छे राज । श्रीपंन्यासजी
सज्जायै पन्नवणा सूत्र, वखाणें श्रीभगवतीसूत्र वंचाय छै । श्रावक-श्राविका
नित्य वखांणे आवें छै । छट्ट-अट्टम-दसम-दुवालस इत्यादि तप घणो हुओ
छै । पूजा-प्रभावना-अंगीरचना श्रीपर्यूषणपर्व महामहोत्सव घणै आडंबरपणै
प्रवर्त्या छै । श्रीजैनधर्मनी विशेष उन्नति हुई छै । श्रीपर्यूषणारी विगत :
अठाईनो पारणो साहजी श्रीकैसवदासजी कृपारांमजीरें घरें थयो छें राज ।
वडाकल्पनो पंडीया श्रीखेमाजी पेमाजीरे घरें थयो छें राज । वडाकल्पनो
पारणो प्रीयमेलक थयो छें राज । संवच्छरीनो पारणो साहजी श्रीदोलाजी, सा०
रूघनाथजी, सा० मेंयाचंदजीरें घरें थयो छें राज । मरडीया श्रीओदैभांणजी
हीराजी श्रीरांणपुरजी यात्रा लेंगा छै राज । इम धर्मकरणी विशेषें हुई छै राज ।

* 'अपरं अत्र' एम वांचवुं ।

अत्रना संघनी विनती सज्जाय लिख्यतें -

करमपरीक्षाकरण कुमर चलयों रे - ए देशी ॥
पंथीडा संदेशो रे जई मांहरा पूजने रे, दाखीजें वात वणाय,
पंथडै पंथीडा वहजें ऊतावलो रे, वार म लाजें कांय. १
पंथीडा संदेशो रे जई मांहरा पूजने रे.... [आंकणी]
सकलदेशां सिरमोड ते देशडो रे, लघु मरुदेश कहवाय,
तिणमां नगर अनेक पिछनीये रे, पिण सादडी सहैर सवाय. २
ठांम ते ठांम सजलस्थानक भला रे, वाडी वनखंड जोय,
पग पग तीरथ वर जिनवर तणा रे, पेख्यां मन हरखित होय. ३
केहवा तीरथ जेहवा दाखवुं रे, सांभलज्यो चित लाय,
विरासिर महावीर ते वीर छैं रे, प्रथम ए यात्र थाय. ४
राणकपुर रिसहेंसर गुणनि(नी)लो रे, तारणतरणजिहाज,
वरकाणें पास ते आस पूरें सदा रे, साहिब गरिब निवाज. ५
श्रीनडूलाई नेमिजिनेश्वरूं रे, यादववंश[शि]रमोड,
बालब्रह्मचारी शिरशेहरो रे, वंदू बे कर जोडि. ६
नाडूलमंडण दूरितखंडणो रे, श्रीपदमप्रभु महाराय,
पंचई तीर्थ पंचम गतिना रे, दायक वंदीयै आय. ७
पूर्वें पूजजी चोमासुं जिहां कर्युं रे, तिणें एतलुं कहवाय,
वंदन उतकंठा नरनारिने रे, केहवी कहिय न जाय. ८
मीठी वांणी गुरु तणी सांभली रे, भर भरि श्रवणपयाल^६,
पीवे प्रांणी आंणी हीयडै रे, हुआ होस्यैं निहाल. ९
गछपति आयां धरमतणो हुसी रे, लाभ अनंत महंत,
सूरि छत्रीस गुणें करी सोभता रे, संयम वधू करकंत. १०
गौतम सम गिरुआ गुण तुम्ह अछों रे, शीले थूलिभद्र जेम,
विद्याई करीने वयरकुमार छों रे, पेख्यां ऊपजै प्रेम. ११
रसना एक ज गुण तें अनेक छै रे, वर्णवुं केहा वखांण,
सकल गण गछपति सिर लाडलो रे, लायक ऊगो भांण. १२

देश **मेवात** विख्यात वखांणीइ रे, भलभला सहस उदार,
रूपनगर है गुणनिधि आगला रे, सुगुरु जनम श्रीकार. १३
 मात **पाटमदे** कूखें अवतर्या रे, भविजननै हितकार,
 वंश **उपकेश** विसेशें सोभतो रे, साह प्रेमा कुलसिणगार. १४
 श्रीविजयदयासूरीश्वरपाटवी रे, श्रीविजयधर्मसूरीस,
 विबुध **जीवनो मोहन** ईम कहे रे, गुरु प्रतपो कोडि वरिस. १४

॥ इति श्रीसञ्जाय ॥

कोयलो परबत धुंधलो रे - ए देशी ॥

ब्रह्मसुता वरदायनी रे लो, प्रणमुं ताहरा पाय रे सूरीश्वर,
 वचनविलास ते आपज्यो रे लो, महिम करी मो माय रे सूरीश्वर. १
 श्रीविजयधर्मसूरीश्वरू रे लो, सयल सूरिनो राय रे सूरीश्वर,
 रूपै रतिपति सारिखो रे लो, भवियणनें मन भाय रे सूरीश्वर.

श्रीविजयधर्म..... २

तपगच्छतखतैं भानु थकी रे लो, श्रुत करी तेज सवाय रे सूरीश्वर,
 अज्ञानतम अलगो कीयो रे लो, जनमनपंकज विकसाय रे सूरीश्वर. ३
 सुधा समांणी वांणीइ रे लो, द्यो देशना सुखदाय रे सूरीश्वर,
 दुरगतिदुख दूरै करै रे लो, जे सांभलें चित्तलाय रे सूरीश्वर. ४
 मनमोहन पूज्य माहरां रे लो, थाहरा दरसनपै वारी जाय रे सूरीश्वर,
 नर नारी निरखें नेहसुं रे लो, तस घरि नव-निधि थाय रे सूरीश्वर. ५
 विचरो सारी वसुंधरा रे लो, तो अम दिश विचरोनें आय रे सूरीश्वर,
 पग पग जिनयात्रा करे रे लो, पेख्यां पातिक पु(प)लाय रे सूरीश्वर. ६
 सकल देश सोहांमणो रे लो, ठांम ठांम तरुनि(नी) छांय रे सूरीश्वर,
 मीठा मेवा नीपजै रे लो, देखी देव रह्या लोभाय रे सूरीश्वर. ७
 एहवो देश उवेखनें रे लो, स्युं मोह्या **मुरस्थली** जाय रे सूरीश्वर,
 खारो पाणी खराखरी रे लो, पीवो ते न पीवाय रे सूरीश्वर. ८
 धन धन ते नर-नारीओ रे लो, जे सेवै सद्गुरुपाय रे सूरीश्वर,
 अमे अलेखें सरजीया रे लो, श्रीजीनो दर्शन थाय रे सूरीश्वर. ९

राधां कान रोहिणी चंद्रमा रे लो, चकवा रयणविहाय रे सूरीश्वर,
 चातुक चाहै जलधरुं रे लो, जनकसुता रांमराय रे सूरीश्वर. १०
 तिम अमें चाहा तुंमने रे लो, अहर्निश ध्यान लगाय रे सूरीश्वर,
 जोसी जोतिक पूजवा रे लो, इक आवै इक जाय रे सूरीश्वर. ११
 कोई कहै पूज्य आवता रे लो, द्युं तस लाख पसाय रे सूरीश्वर,
 मानुं उपगार मोटको रे लो, कोई दीयै श्रीजी बताय रे सूरीश्वर. १२
 मास सुचि मैं पधारसी रे लो, एहवो निश्रै न्याय रे सूरीश्वर,
सादडी केरा संघनी रे लो, मानो वीनती महाराय रे सूरीश्वर. १३
 श्रीसाहप्रेमा **कुलचंदलो** रे लो, **ओशवंश** कुल कहवाय रे सूरीश्वर,
रूपनगर पूज्य जनमीआ रे लो, प्रसिद्ध **पाटमदे** माय रे सूरीश्वर. १४
 श्रीविजयदयासूरिपाटवी रे लो, श्रीविजयधर्मसूरिराय रे सूरीश्वर,
 कोडि दिवाली चिरंजीवज्यो रे लो, **मोहनविजय** गुणगाय रे सूरीश्वर. १५

॥ इति श्रीसञ्जाय ॥

तत्रत्य श्रीगणेशरुचिजी, पं० श्रीऋद्धिविजयजी, पं० श्रीप्रमोद-
विजयजी, पं० श्रीहेतुसागरजी, पं० श्रीहेमविजयजी, पं० श्रीविनीतविजयजी,
 पं० श्रीजसविजयजी, पं० श्रीसौभाग्यविजयजी, श्रीजि(जी)ना परिवारनें वंदना
 १०८ वार केहवीजी । अत्रत्य पं० **मोहनविजय**, पं० **चतुरविजय**, पं०
जसवंतविजय, पं० **कस्तूरविजय**, पं० **विनीतविजय**, पं० **लब्धिविजय**,
 पं० **प्रतापविजय**, पं० **युक्तिविजय**, पं० **मनोहरविजय**, चेला रांमसिंघ
 प्रमुख ठाणुं ११ वंदना १०८ वार अवधारज्योजी । वलमांन सुखलेख लिखवाजी ।
 सेवक सरिखो कामकार्य प्रसाद करवोजी । देवयात्रा करो तिहां सेवकने
 संभारवाजी । इति श्रेयश्रेणयः शुभं भवतु । कल्याणमस्तु ॥ श्रेयः ॥

* * *

(१०)

उदयपुरस्थ-श्रीविजयधर्मसूरिजीने मंगलपुरथी मोहनविजयजीनो पत्र

'लटकाळा' ए उपनामथी प्रसिद्ध एवा कवि मोहनविजयजी भक्तिप्रधान श्रेष्ठ कवि छे. एमनां काव्योनुं पदलालित्य घणुं ज सुन्दर होय छे. प्रस्तुत रचना ए ज कविनी एक श्रेष्ठ रचना छे. शरुआतनां ९ संस्कृत पद्यो सिवायनी सम्पूर्ण रचना गुर्जरभाषामां छे. मङ्गलाचरणरूपे पंच जिनेश्वरने नमस्कार करी कविए मेवाडदेशना उदयपुरनुं वर्णन सौ प्रथम प्रारम्भ्युं छे. पछीनां पद्योमां गुरुभगवन्तना ३६ गुणोनुं वर्णन जुदी जुदी ३ रीते करी कुल १०८ प्रकारे सूरिजीना गुणवैभवने दाखव्यो छे. हवे पछीनां पद्योमां सूरिजीनुं राजा तरीकेनुं स्वरूप कविए काव्यमां अद्भुत रीते रज्जु कर्युं छे. अन्य पत्रोनी माफक संक्षिप्तमां ३६ गुणोनुं वर्णन करवानी कला त्यार पछीनी ढाळमां देखाय छे. खरुं जोता सम्पूर्ण पत्रमां वर्णननी जे सजीवनता छे ते अडयल्ल छन्दमां रचायेल मङ्गलपुरवर्णनमां छे. पत्रनी पूर्णाहुति पूर्वे पूज्यश्रीने मङ्गलपुरमां पधारवानी विनंती करतां पद्यो, तेमज चातुर्मास पधारतां श्रीसंघमां शी आराधना थशे ते नोंधनां पद्यो पण सुन्दर छे. पत्रान्ते कविए आपेली विजयधर्मसूरिना माता, पिता तथा वंशनी तेमज पोताना गुरुजीना नामनी नोंध ध्यान योग्य छे.

शब्दकोश

- | | |
|-------------------------|--------------------------|
| १. पापपहार = पापना पहाड | ७. प्रभें = प्रभाथी |
| २. विलात = विलय पामे | ८. खेंटो = तलवार |
| ३. मुखवार = मुख रूपी जल | ९. कोकबाण = कामदेवना बाण |
| ४. जत-तत = ज्यां त्यां | १०. वाणक = वाठवा वाळा(?) |
| ५. वेसरवाहिनी = बळदगाडी | ११. वट्ट = वात |
| ६. कटकी = सैन्य | १२. गोलाबालि = तोपनी नाळ |

*

स्वस्ति श्रियामाश्रयणीयमीश!, यमाश्रिता भव्यजना भवन्ति ।
उदी(दि)त्वरानन्दसमृद्धिभाजः, सुरासुराणामपि माननीयः ॥१॥

स्वस्तिश्रियं यच्छति यत्पदाब्ज-रजोऽपि लगनं प्रणतस्य मौलौ ।
अहो! महोदारधियस्तदेव, दुर्दैवमालिन्यमपाकरोति ॥२॥
स्वस्तिश्रिया यस्य पदाब्जयुगमं, निरन्तरं वासधिया सु(सि)षेवे ।
रजोभृतं कण्टककोटीपृष्ठ(ष्ठं), न लौकिकं पद्ममियं तु मेने ॥३॥
स्वस्तिश्रियाऽऽद्यस्य जिनस्य यस्य, सौभाग्यमत्यद्भुतभाग्यभूमी(मि) ।
पादाम्बुजं यस्य सदा भजन्ते, मरालबाला इव भूमीपालाः ॥४॥
स्वस्तिश्रीमदमन्दमन्दि(न्द)रगिरिशृङ्गाग्रजाग्रतमः,
श्रेणिभूतपयोदसोदरशिरःसंसर्गिकेशोच्चयः ।
पूषा तप्तसुवर्णवर्णकिरणः श्रीनाभिभूपात्मजः,
पौलोमीदयितः प्रवर्हविबुधानन्दाय कन्दायते ॥५॥
स्वस्तिश्रीसहितं जिनं नमत तं श्रीविश्वसेनात्मजं,
कारुण्यैकनिधिं जगत्त्रयहितं(त)व्यापारबद्धोद्यमम् ।
यो राजे वरराजसौम्यनिलयः सारङ्गलक्ष्मोचितं,
चित्रं तत्र तथाऽपि नाथ! नियतेर्दोषादयः श्रूयते ॥६॥
स्वस्तिश्रीविलसत्कटाक्षघटनास्ता(ः) पान्तु राजीमती(तीं),
गाढोत्कण्ठितलोचनाञ्जलचलद्भ्रूभङ्गसंसर्गजाः ।
श्रीमन्नेमिजिनेशितुस्त्रिभुवनानन्दे विवाहोत्सवे,
पौलोमीशधृतातपत्रधवलज्योतिर्भरोद्भासिताः ॥७॥
स्वस्तिश्रीकलितं महोदयकलाकेलीनिवासं महा-
मोहापोहपरायणं मम मनोऽभीष्टार्थदं संस्तुमः ।
श्रीशङ्खेश्वरभूषणं भगवतामग्रेसरं वासव-
श्रेणीवेणिमिलत्प्रसूनपटलीमाध्वीकधौतक्रमम् ॥८॥
ऐन्द्रप्रश्नशतोत्तरप्रणयिनो यस्मादभूच्छाब्दिकं,
तन्त्रं यन्नयजैर्मतैः पुनरभूत् सर्वोऽपि तर्कक्रमः ।
विद्यास्थानपदं वदन्ति विबुधा यद्दृष्टिवादागमं,
तं वन्दे जगतामधीश्वरमहं श्रीवर्धमानं जिनम् ॥९॥

दूहा : स्वस्तिश्री सुभमंजरी, सोभाफल सिरदार,
सुनिजर वर छाया सघन, समरी सुगुरुसहकार. १

राजे रूप छती रति, सती सरस्वती मात,
सुप्रसन्न सन्मुख होत ही, पापपहार विलात^२. २
आदिनाथ अरिहंत नमी, नमी नित शांति जिणंद,
नेमी पास वर्धमानं नमी, दूरि करो दुख-दंद. ३
सकल देसमां शोभतो, धन्य मेवाडह देस,
जंगमतीरथ गुरु जिहां, पटधर कीध प्रवेश. ४
पावन जिनमंदिर बहू, पावन भक्ति अपार,
पावन गछपतीपायरज, पावन गुरुमुखवार^३. ५
जा मे जत तत^४ देखीइ, दया-दानअधिकार,
ता थे जिनपदकी युगति, वरनु बुद्धि अनुसार. ६
एहिज जंबूद्वीपमें, क्षेत्र भरत सुविशाल,
तामें देस शिरोमणि, मेवाड देश झमाल. ७

॥ अथ नगरवर्णनम् ॥

दूहा ॥ वापी वप्र विहार बहू, वनीता वर्ण अढार,
वसे घणा वाचाल नर, वन-वाडि विस्तार. ८
वैद्य विप्र वादी घणा, वाग्मि विद्यावंत,
वेश्या वेसरवाहिनी^५, वाजी वारण-तंत. ९
वाचंयम वारू परें, विविध विनीत विनेय,
वणिक विवेकविशारदा, विभव विशेष अमेय. १०
गढ मढ मंदिर मालीया, सोहे शुभ आवास,
सप्तभूमि उंचा जिहां, निरखित हुइं उल्लास. ११
जिनमंदिर जिहां झलहलें, रणके घंटनिनाद,
दीपें सुंदर कोरणी, भांजे भय-उनमाद. १२
सत्तरभेद पूजा रचें, जिहां श्रावक अतिशुद्ध,
जिनवरपद प्रणमें सदा, टाले मार्ग विरुद्ध. १३
श्रीपूज्यजी विचरें जिहां, करे भूपीठ पवित्र,
धर्म देखाडे भविकनें, दानादिक सुविचित्र. १४

भूभामिनि-सिर-तिलकसम, सकलनगर-शिणगार,
श्रीमती श्रीउदयापुरे, स्वर्गपुरी अनुकार. १५
इम श्रीउदयापुरी तणां, केता करूं वखांण,
गछपति चोमासुं जिहां रह्या, तेषें सुंदर सुभ थांन. १६

॥ अथ श्रीमद्गुरुगच्छाधिराज-गुणगणवर्णनम् ॥

हवें गुण गाउं गुरु तणां, सुणयो सहू सावधान,
पट्टपरंपर परगडो, ठांम ठांम जस मांन. १
पूज्याराध्यतमोत्तमह, परमपूज्य गुणवंत,
चारीत्रपात्रचूडामणी, साधुसिरोमणि संत. २
कुमतिविध्वंसनदिनकरं, सकलकलासम्पूर्ण,
विद्वज्जनमुंकुटामणी, सरस्वतिकण्ठाभर्ण. ३
देशी ॥

सुगुरु वंदो चित्त चोखे, विधिसहित त्रिण्य काल रे,
सुगुरुना गुणग्राम करते, होवे मंगलमाल रे. ४ सुगुरु.....
पंच महाव्रत शुद्ध पाले, टाले च्यार कषाय रे,
पंचविध आचार पालें, जेहथी सुख थाय रे. ५ सुगुरु.....
वाडि नवविध शीयल केरी, जालवें गुणधाम रे,
पंच इंद्री समाधि राखें, चित्त आंणी ठाम रे. ६ सुगुरु.....
अष्ट प्रवचन तणी जननी, तेहस्यूं अति रंग रे,
एह गुण छत्रीस पूरा, सूरीना अति चंग रे. ७ सुगुरु.....
अपर गुण छत्रीस रूडा, कहूं सुणज्यो संत रे,
सुगुरुना गुणग्राम करते, होए लाभ अनंत रे. ८ सुगुरु.....
प्रतिरूप आदे चौद पूरा, गुण कहा अभिराम रे,
भावना नित्य बार भावें, सिद्धिसुखनें कांम रे. ९ सुगुरु.....
दस प्रकारे साधुमारग, आदरे सुविसाल रे,
एह गुण छत्रीस सुंदर, सूरीना सुप्रकास रे. १० सुगुरु.....
वली कहूं गुण सूरी केरा, मनोहर छत्रीस रे,
जेह अहनिस चित्त धरे ते, होए सयल जगीस रे. ११ सुगुरु.....

छक्कायनी नित दया पालें, टालें तिम भय सात रे,
 अष्ट मदनें दूर त्यजीनें, करे धरमनी वात रे. १२ सुगुरु.....
 तप तपे नित बार भेदे, त्यजे गारव तीन रे,
 एह गुण छत्रीस मानित, रहे मुनी लयलीन रे. १३ सुगुरु.....
 ए छत्रीसी तीन मिलतें, अष्टोत्तरशत थाय रे,
 गुण घणा छें सूरी केरा, केता मुख केहेवाय रे. १४ सुगुरु.....
 एह गुणनी माल सुंदर, धरे गुरु गछनाथ रे,
 श्रीविजयधर्मसूरीस सोहें, सुद्धमारगसाथ रे. १५ सुगुरु.....
 दुषमकाले देवतरु सम, गुणे गौतमस्वामि रे,
 श्रीविजयधर्मसूरीस प्रणमो, प्रह समे सिरनाम रे. १६ सुगुरु.....
 प्रतपयो तपगछनायक, वरस कोडाकोडि रे,
 विबुध कनकनो चरणसेवक, कहे हरी करजोडि रे. १७ सुगुरु.....

॥ पुनः गुरुवर्णने नमः ॥

तपागच्छतिलक प्रभो, जित सकल समाज,
 विजयधर्मसूरि वंदतें, दिन दिन अति सुखसाज. १

छंद - सारसी ॥

सुखसाज काज अनुप ओपें भूपति पदवी तुम तणी,
 सामंत सम मुनिमंडली तुम सेव सारे अति घणी ।
 समता सहेली प्रथम परणी अवर संयमस्त्री भणी,
 जयो जयो श्रीविजेधर्मसूरी धन्य तुं तपगछ धणी. १
 सुभ शिष्य शाखा सुत सवाई उपाई ईजत घणी,
 मिथ्यात्व अरीदल मारवा तुमे करी कटकी ते भणी;
 गजराज विनय विवेक धार्या पाखर्या स्मरण भणी,
 जयो जयो श्रीविजेधर्मसूरी धन्य तुं तपगछ धणी. २
 मुनिपंथ दसविध अश्व ओपें कोपता अरिदल प्रतें,
 शीलांगरथ रण-धणण दीपें जीपता सुररथ प्रभे;
 गुण साधु सत्तावीस पायक फोज माहे अग्रणी,
 जयो जयो श्रीविजेधर्मसूरी धन्य तुं तपगछ धणी. ३

सुभ ध्यान गोलानालि काउसग्ग दया खेडों दीपतो,
 कोकबाणं वाणकं बाण त्रिपदी भावस्यू करी जीपतो;
 अतितीक्षा असी कर खिमा दीपें जापतो अरिदल अणी,
 जयो जयो श्रीविजेधर्मसूरी धन्य तुं तपगछ धणी. ४
 मिथ्यात्व अविरति दोय अरियण त्रास पाम्या तुम थकी,
 तस सैन्य पिण मद मोह विषया वेगली गई भय छकी;
 नीसांण सुजस प्रसिद्ध वागा जगतमें जीत्या भणी,
 जयो जयो श्रीविजेधर्मसूरी धन्य तुं तपगछ धणी. ५
 जिन वीर पाटें धीर साचो हीरगुरु सम सोहए,
 अती रूप सुंदर मुनीपुरंदर देखी भविमन मोहए;
 ससि परे निर्मल सुजस ताहरो कीरति पसरी अति घणी,
 जयो जयो श्रीविजेधर्मसूरी धन्य तुं तपगछ धणी. ६
 धन पुन्यरूप अखूट कीधो जिनाज्ञा भण्डारमां,
 बहु लील पांमी थया स्वामी जैनसासन सारमां,
 परजा चतुर्विध संघ परगट्ट ऋद्धिथी ओपे घणी,
 जयो जयो श्रीविजेधर्मसूरी धन्य तुं तपगछ धणी. ७

अथ षट्त्रीस गुरुगुणनी स्वाध्याय ।

सुमति सदा दिलमे धरो ए... ॥

साचा सहगुरु सेवीइ, चतुर पणे चित लाय रंगीले,
 तपगच्छपति तखत बिराजतां, श्रीविजयधर्मसूरिराय रंगीले. १
 साचा सह.....

एक असंजम परिहरी, पाले संयम सार रंगीले,
 विविध धर्म लाभे भलो, करे अधर्मपरिहार रंगीले. २
 त्रिप्य तत्त्व सूधां धरै, त्रिकरण शुद्ध आचार रंगीले,
 विकथा च्यारे वर्जीनें, धर्मकथा कहे च्यार रंगीले. ३
 पंच प्रमादने परिहरी, पालें पंच आचार रंगीले,
 छक्कायने उगारतो, पाले व्रत निरधार रंगीले. ४

जाणे सात पीडे घणा, छंडि ते भय सात रंगीले,
 आठें मद अलगा करी, पालें प्रवचन मात रंगीले. ५
 नवविध ब्रह्मव्रत धरे, छांडे नवें निदांन रंगीले,
 दस उपघात अणादरे, दस यतिधर्मस्युं तांन रंगीले. ६
 पडिमा उपासकनी कहे, अवगत अंग इग्यार रंगीले,
 बार उपांगने अभ्यसी, पाले प्रतिमा बार रंगीले. ७
 छंडि तेरे काठीया, तेरे किरियाठांण रंगीले,
 भूतग्राम चौदे लहे, चौद विद्यागुणजांण रंगीले. ८
 पन्नर परमाधामीनें, प्ररूपे पापप्रयांण रंगीले,
 सोल कला ससिमुख भलुं, गाथा षोडस जांण रंगीले. ९
 सत्तर असंयम वज्जीनें, धारे संयमभेद रंगीले,
 अढार अब्रह्म त्यागीनें, शीलांगरथस्युं उमेद रंगीले. १०
 अध्ययन ज्ञाता अंगना, उपदिसे ओगणीस रंगीले,
 जीवदया रूडी परें, पाले विसवावीस रंगीले. ११
 एकवीस भेद मिथ्यात्वना, छांडे सकल एकवीस रंगीले,
 मेरुपणे धारीमपणें, सहे परीसह बावीस रंगीले. १२
 अंग उपांग त्रेवीस ए, सूत्र अरथना जांण रंगीले,
 चोवीसें जिनवर तणी, धरें मनसुद्धे आंण रंगीले. १३
 भावे पंचवीस भावना, पांचे व्रतनी सार रंगीले,
 जांणे छव्वीस उद्देसणा, दसा-कल्प-व्यवहार रंगीले. १४
 गुण गीरूआ अणगारना, धारे सत्तावीस रंगीले,
 लबधि अठ्ठावीस अभिनवी, सोहे जस निसदीस रंगीले. १५
 ओगणत्रीस अलगा करें, पापश्रुतपरसंग रंगीले,
 भांजे त्रीस प्रकारनो, मोहनी स्थानिक रंग रंगीले. १६
 एकत्रीस गुण सिद्धना, परकासें परगट्ट रंगीले,
 शुभ बत्रीस भेद धरे, योगसंग्रहनी वट्ट^{१९} रंगीले. १७

तेत्रीसे आशातना, टाले गुरुनी जेह रंगीले,
 चोत्रीसे अतिशय भला, जिनवरना कहे नेह रंगीले. १८
 पांत्रीस वाणीना गुण भला, सोहे जस मुखे सार रंगीले,
 छत्रीस छत्रीसी सूरिना, गुणगिरुओ गणधार. १९
 लब्धिपात्र कलिकालमें, गुरु गौतमअवतार रंगीले,
 विद्या-व्रत विशेषथी, जाणे वयरकुमार रंगीले. २०
 इत्यादिक गुरु गुण घणां, कहेतां न आवे पार,
 पंडित रूपविजय तणो, कहे मोहन सुखकार. २१

दूहा : भूपतिमे चक्री भलो, सुरवरमांहे इंद्र,
 महीधरमांहे मेरुजी, ग्रहगणमांहे चंद्र. १
 तरुअर मांहे कल्पतरु, सेव्यो छे सुखपूर,
 गच्छ चोरासी मांहि तिम, तपगच्छ पुण्यपडूर. २
 नायक ते तपगच्छनो, श्रीविजयधर्म गणधार,
 विजयदयासूरिपद, प्रगट्यो पुण्यअंवार. ३

॥ छंद-अडयल्ल ॥

मंगलपुर सुंदरह सुखकारह, वर्णवुं लेस थकी सुविचारह,
 सोरठ देस अनोपम राजें, पत्तन नयर तिहां सुभ छाजे. १
 दूर्ग विसम विसमी वली खाइ, षड कोठा तिहां सबल सजाई,
 गोलानालि^{२२} गुहिर ध्वनि गाजे, देखीने अरीयणदल भाजे. २
 वन उपवन वाडी अति सोहे, देखी सयण तणां मन मोहे,
 सहकारादिक भार अढार, वनसपति फल फूल उदार. ३
 रयणायर जलपूरथी गाजे, मच्छादिक जलचर तिहां छाजे,
 तटसोभा दीसे अतिसारह, निरखी हरखें सहू नर नारह. ४
 व्यापारी करे तिहां व्यापारह, न्याये करी चलवे व्यवहारह,
 चोहटानी सोभा तिहां राजे, हट्टश्रेणी वली अधिक विराजें. ५
 सेठ-नाणावटी-दोसी दीपें, धनें करी धनवंतने जीवें,
 लोहकार-सूतार-सोनारह, सुखीया निवसें वर्ण अढारह. ६

जयवंता जिनवरप्रासादह, सुरमंदिरथी मांडे वादह,
 श्रीजिनवरबिंब जयकारह, भावथकी पूजे नर-नारह. ७
 पोढी पुण्यतणी पोसाल, चंद्रोदयसोभित सुविसालह,
 वाचंयम व्रतधर व्रत पालें, तप जपथी आतम अजुआले. ८
 राज्य करे **असुरसारह**, न्याय-नीत चाले व्यवहारह,
 वयरी चोरनें दूरें टालें, भुजबले करी परजा पाले. ९
 श्रावक लोक वसें सुखकारी, दाता भोक्ताने धनधारी,
 पोषे पात्र सदा मनरंगे, अभयदान अनुकंपा संगे. १०
 सामायक पोषध पचखाणह, धारी निसुणें सदगुरुवाणह,
 सुहगुरुनी नित सेवा सारें, जिनवरनी आणा चित धारे. ११
 सुरतरु सम श्रावक दीइ दानह, श्राविका वली कामदुघा समानह,
 भाव विसेषें साधु संतोषें, दान सुपात्रे दीइ चित चोखे. १२
 गुरुदर्शनउत्सक गुणवंता, जिनमारगना सूधा भगता,
 संघ सकल मिली लिखें लेख, श्रीगुरु चित्तमां धरयो विवेक. १३

इत्यादि फलाणा गामथी सदा सेवक, दासानुदास, पायरजरेणुसमान,
 आज्ञाकारी सेठ फलाणा....

॥ अथ गुरुविनती भास ॥

मुझ दीजे हो राज्यसदन भणी सीखडी जी - ए देशी ॥

भले भावे हो राजि नमी धुरे सरसती जी
 वली प्रणमी निज गुरुपाय पुण्यवंता जी,
 करु वीनती हो राजि अनोपम एकमनें जी
 सुणो गछपति निज चित लाय गुणवंता जी. १
 पूज्य आवो हो राजि ए **मंगलपुरे** जी
 एनो सुंदर छे सुभ ठाम पुण्यवंता जी,
 जिनयात्रा दो राज्य होस्ये वली अतिघणी जी
 ए तो नाम तिस्यो परमाण गुणवंता जी. २ पूज्य...
मंगलपुर हो राजि अछे रलीयामणुं जी
 केतां कीजे तास वखाण पुण्यवंता जी,

श्रावकजन हो राजि धर्मी सुखीया सहू जी
 करे पोसहने पचक्खाण गुणवंता जी. ३ पूज्य...
 इहां आव्ये हो राजि लाभ थास्यें घणो जी
 पूजा पडिक्कमणा पचक्खाण पुण्यवंता जी,
 साहमीवच्छल हो राजि वली परभावना जी
 वली माल तथा उपधान गुणवंता जी. ४ पूज्य...
 जिनजीनी यात्रा हो राजि होस्ये वली अति भली जी
 घणो वधस्ये धरमनो रंग पुण्यवंता जी,
 त्रेवीसमो हो राजि **नवलखो** भेटवा जी
 बीजा **मुनी(नि)सुव्रतनो** उच्छरंग गुणवंता जी. ५ पूज्य....
 बीजी पिण हो राजि मूरति छे घणी जी
 आवी भेटो महाराज पुण्यवंता जी,
 दरीसण दीठो हो राजि मनडु उल्लसे जी,
 साचुं मानो गरीबनिवाज गुणवंता जी. ६ पूज्य.....
 उन्नति भली हो राजि होस्यें जिनधर्मनी जी,
 तिम वधस्ये धरमस्यूं नेह पुण्यवंता जी,
 श्रीसंघन[इ] हो राजि होस्ये अतिघणो जी,
 मानो विनती ए ससनेह गुणवंता जी. ७ पूज्य.....
 अम मनमे हो राजि दरिसणने अलजे बहू जी
 तुम्ह वांछानु एक चित्त गुणवंता जी,
 धन्य ते दिन हो राजि देखा जे गुरु तणो जी,
 मुखपंकज पुण्यपवित्र पुण्यवंता जी. ८ पूज्य.....
 गुरु गछपति हो राजि आवो देव जुहारवा जी
 तारवा जन उत्तम वृंद गुणवंता जी,
 श्रीसंघना हो राजि के वान वधारवा जी
 पाउधारो **तपगछदिणंद** पुण्यवंता जी. ९ पूज्य.....
साह प्रेमा हो राजि कुले दीपक जयो जी
पाटिमदे मात मल्हार गुणवंता जी,

ओसवंसे हो राजि अनुपम ओपतो जी
 महिमानिधि गणशिणगार पुण्यवंता जी. १० पूज्य.....
 श्रीविजय हो राजि दयासूरिपाटि पटोधरूं जी
 श्रीविजयधर्मसूरीस गुणवंता जी,
 एह विनती हो राजि मनमे अवधारिने जी
 पूरो मननी संघ जगीस पुण्यवंता जी. ११ पूज्य.....
 घणु फिरी हो राजि वीनवइ किस्यूं जी,
 तुमे जाण छे चतुर सुजाण गुणवंता जी,
 पंडित रूपनो हो राजि मोहन इम कहे जी,
 करज्यो वीनती प्रमाण पुण्यवंता जी. १२ पूज्य.....

॥ इति विज्ञप्तिभासः ॥

* * *

(११)

उदयपुरस्थित-विजयधर्मसूरीजी पत्र मंगलपुरथी हरिविजयजीनो पत्र

घणा विज्ञप्तिपत्रोमां मळता 'स्वस्ति श्रीसदनं'ना श्लोक पछी अन्य ३ पद्यो वडे कवि प्रस्तुत विज्ञप्तिपत्रनुं मङ्गलाचरण करे छे. उदयपुरमां बिराजमान श्रीविजयधर्मसूरीजीने उद्देशीने मंगलपुरीथी प्रस्तुत पत्र लखायो छे. शरुआतना पद्योमां उदयपुरनी बाह्य समृद्धिनुं वर्णन करीने कविए सिद्धाचलतीर्थनी सुन्दर स्तवना करी छे. पत्र सोरठ (मंगलापुरी - हालनुं नाम मांगरोळ) देशमांथी लखायो होइ हवे पछीनां पद्योमां कविए सोरठ देशनो तादृश चितार ढाळ्यो छे. एक-एक पद्य कविनी काव्यशक्ति माटे मान उपजावे तेवुं छे. गुरु-भगवन्तनी सरखामणी दरिया साथे करतां पद्योनी तयार पछीनी ढाळ खरेखर अद्भुत छे. दरियानी एक-एक विशेषतानुं अहीं गुरुभगवन्तना पक्षे सुन्दर आलेखन थयुं छे. कवि पोते चातुर्मास मंगलापुरीमां बिराजमान हता तेथी त्यां चातुर्मासमां केवी केवी आराधना थइ तेनुं वर्णन करी पूज्यश्रीने चातुर्मास पधारवा विनंती करे छे. साथे आपना अहीं पधारवाथी श्रीसंघमां कई कई आराधना थशे तेनो संक्षिप्त अहेवाल पण कविए आप्यो छे. कृतिना अन्ते पोतानुं अने पोताना गुरुना नामोल्लेख साथे पत्रनुं कविए समापन कर्नुं छे.

*

स्वस्तिश्रीसदनं निरस्तमदनं कल्याणसम्पादनं,
 विश्वानन्दनिदाननन्दनवनं सिद्धयध्वनि साधनम् ।
 वाचाचन्दनन्दनं सुरदनं वामासतीनन्दनं,
 वन्दे विघ्ननिषूदनं नुतसुरश्रेणीसदावन्दनम् ॥१॥
 स्वस्तिश्रीकमलाकरं शिवकरं गाम्भीर्यरत्नाकरं,
 श्रेयःपद्मदिवाकरं सुहृदयं ज्योत्स्नाप्रियोषाकर(रम्) ।
 कामध्वंसनशङ्करं कजकरं विश्वैकरक्षाकरं,
 पार्श्वं सौख्यकरं सदा हितकरं ध्यायाम्यहं शङ्करम् ॥२॥

स्वस्तिश्रीभुवनं विशालवदनं विस्वा(श्वा)वनीपावनं,
दीनानामवनं विमुक्तसवनं लक्ष्मीलताजीवनम् ।
सतुष्य भवनं(?) मलाभिधुवनं विज्ञानवल्लीवनं,
पापाब्दे(ब्धेः) पवनं तमोनिधुवनं वीर(रं) स्तुवे जीवनम् ॥३॥
स्वस्तिश्री(श्रीः) श्रयति स्म यं जिनपति(र्ति) गौरी च गौ(गो)पीपति(र्ति),
लक्ष्मीर्लक्ष्मीपति(र्ति)पम? रतीपती(र्ति) श्रीतेव सम्भाप(ष)ते ।
रात्रे विद्युपति तमा(मी) द्विजपति(र्ति) प्रेम्णा शची स्वःपति(र्ति)
श्रीवीराधिपति(र्ति) नतावनिवर्ति ॥४॥

स्वस्तिश्री आदिजिनं प्रणम्य, स्वस्तिश्रीशान्तिजिनं प्रणम्य, स्वस्ति
श्रीनेमिजिनं प्रणम्य, स्वस्तिश्रीपार्श्वजिनं प्रणम्य, स्वस्तिश्रीवीरजिनं प्रणम्य,
सकलदेस-नगरसिरोमणि, नर-समुद्र-वापी-कूप-तडागादि-वाडी-वनखंड-
आरामसंशोभिते श्रीजिनशासन-जिनप्रासादशिखर-कलस-ध्वजमनोहरश्रेणिसंशोभिते
उपाश्रय-सार्धर्मिकजनसहिते धर्मीजनके सम्यक्त्वनित्योत्सवसंयुक्तन्यायप्रवीण
नरपति-नगरउत्तम श्रीपूज्यचरणकमलन्यासरेणुपवित्रिते श्रीउदयपुरनगर सुभस्थाने
पूज्याराध्योत्तमोत्तम परमपूज्य अरचनीआन् श्रीपूज्य चारित्रपात्रचूडामणी
सकलसूरिशिरोमणी कुमतांधकारनभोमणी विद्वज्जनमुगुटामणी । एकसो १०८
गुण लिखवा...

दूहा : इम अनेक गुण सोभता, सोरठ देस सिरदार,
जिहां दोय तीरथ भलां, महीमानो नही पार. १
सिद्धाचलगिरिसेहरो, मोक्षप्रासादसोपान,
इण वाटे वहेता जिके, पोहता पुर निरवाण. २
आदि न काई ए गिरितणी, तिम वली नावे अंत,
सदाकाल ए सास्वतो, जिनवर एम कहंत. ३
ए गिरि सिद्धसिला जिस्यो, सिद्धिवहूनो गेह,
नयणे परतिख पेखतां, अधिको गिरिपति एह. ४
अमरपति सहू आवीया, भरतादिक सवि राय,
श्रीऋषभादिक सहू जिनवरा, सेवित कीय थिर ठाय. ५

धन धन ए देशांतिलक, धन जन इहां वसंत,
श्रीशेत्रुंजगिरि नित्य प्रतें, निज नयणे निरखंत. ६
चिंतामणि जिम दोहिलो, पामीजे कृतपुण्य,
तिम दरिसण ए गिरि तणो, जे पामे ते धन्य. ७

ढाल - नायकानी ॥

सकल देसदेसां सिरे रे लाल, सोरठदेस समृद्ध सुभकारी रे,
धण कण कंचने पूरीयो रे लाल, ज्यु सुरपुर सुप्रसिद्ध सुभकारी रे. १
सोरठदेस सोहामणो रे लोल, देखंता दुःख जाय सुभकारी रे,
नर नारी निरुपम सहू रे लोल, वसे सदा सुखमाय सुभकारी रे. २
सुरसरिता जिम सोहती रे लाल, नदीयां निरमल नीर सुभकारी रे,
नीरतरंग विहंगसा रे लाल, सीतल सदाई समीर सुभकारी रे. ३
पगि पगि पाणी पंधमा रे लाल, वड जेहवा मोटा वृक्ष सुभकारी रे,
सीतल जल छया सदा रे लाल, पंधी पामे सुख सुभकारी रे. ४
सालि तणां क्षेत्र संपजे रे लाल, नीकां भरीया नीर सुभकारी रे,
पाकां आंबा तोडता रे लाल, केल करंतां कीर सुभकारी रे. ५
गिरिवर कंचनगिरि जिस्या रे लाल, उन्नत शिखर आकार सुभकारी रे
नीझरणा नदीया वहे रे लाल, षट रितु बारह मास सुभकारी रे. ६
आंबा रायण आंबलि रे लाल, करणां केलि खजूर सुभकारी रे,
बहु फल फूले सोभता रे लाल, तरुवर तरल सनूर सुभकारी रे. ७
वन उपवन आरामना रे लाल, पग पग न लहू पार सुभकारी रे,
अढार भार वनस्पति रे लाल, फूल्यां सम सहकार सुभकारी रे. ८
सरवर भरीया सुंदरु रे लाल, पंखी करता केल सुभकारी रे,
कमल सुगंधा ऊपरे लाल, षटपद करता गेल सुखकारी रे. ९
आगर सोहे अति भला रे लाल, साते धातु सुरंग सुभकारी रे,
वस्तु विशेष जिहां घणा रे लाल, परीघल पांचे रंग सुभकारी रे. १०

रतनागर पासे वसे रे लाल, रतनजिहाज अनेक सुभकारी रे,
 परदेसी परखंडना रे लाल, व्यापारी सुविशेष सुभकारी रे. ११
 गाम नगर पुर अति घणां रे लाल, पगि पगि प्रबल निवास सुभकारी रे,
 कोट प्रासाद घरि मालीया रे लाल, अति सुंदर आवास सुभकारी रे. १२
 मेघ जिहां वरसें घणो रे लाल, निरमल वहे बहु नीर सुभकारी रे,
 वनसपती फूलें घणी रे लाल, सुरभि झरे बहु खीर सुभकारी रे. १३
 रतनागरथी जिहां कणे रे लाल, साहूकारनें संग सुभकारी रे,
 रतन प्रवालादी तणा रे लाल, प्रवहण आवे यंग सुभकारी रे. १४
 सुंदर रूप सोहामणो रे लाल, सुरपतिनें अनुहार सुभकारी रे,
 चतुराई गुण आगला रे लाल, मानव जिहां मनुहार सुभकारी रे. १५
 चंदवदन मृगलोचनी रे लाल, हरिलंकी गजचाल सुभकारी रे,
 अपछरनें अनुहारडे रे लाल, मीठा बोली बाल सुभकारी रे. १६
 इम अनेक गुणे सोहतो रे लाल, सुंदर सोरठदेस सुभकारी रे,
 कहीइ जिहां लहीये नही रे लाल, दुर्भिक्ष डमर-प्रवेश सुभकारी रे.

दूहो : शेत्रुंजय गिरनारगिरि, मोटा तीरथ दोय,
 तिण कारण देसां सिरे, जिनमत मांहे जोय. १

ढाल ॥

जीहो गुरुं दरीया गुणे करी लाला, समवड जाणो संत,
 जीहो तेह तणी विधि वर्णवुं लाला, सुणज्यो भवि तजी भ्रांत. १
 चतुरनर ! सेवो श्रीगुरुचंद.....

जीहो उपसमनीर समावता लाला, चातुर चारितनाव,
 जीहो पंच महाव्रतरयण ए लाला, गंभीर धीर स्वभाव. २
 जीहो विद्याइं विविध अगाध लाला, वाणीकल्लोल विलसंत,
 जीहो महवमोजां उछले लाला, विविध किरिया वरषंत. ३
 जीहो चउदह विद्या चूपसुं लाला, चौदह रयणनी जात,
 जीहो साधु धरम अंगे धरे लाला, मरजादा विख्यात. ४

जीहो क्रोधादिक उद्धत सदा लाला, विरूआ च्यार कषाय,
 जीहो पाठीन पीठ-नक्र-चक्र ए लाला, जलचर रहे मुरझाय. ५
 जीहो उपसमरतिपति अंतरे लाला, ओपें अंतरद्वीप,
 जीहो सरवमती आवी मिले लाला, नदीयां नीर समीप. ६
 जीहो जलनिधि ज्युं जलस्युं भर्यो लाला, गाजें गुहिर गंभीर,
 जीहो तिम उपदेस गुरु आपता लाला, सुंदर सब्द सधीर. ७
 जीहो सागरमांहें सोहे सदा लाला, जंघ शबल जिहांज,
 जीहो गुरुमां ज्ञान विराजतो लाला, तारे सकल समाज. ८
 जीहो वडवागनि कर्दम कह्या लाला, सागर मांहें शेष,
 जीहो गुरुमांहें ए दीसे नही लाला, तिणे करी जाणो विशेष. ९
 जीहो धन्य श्रावक धन्य श्राविका लाला, पडिलाभे सूरिराय,
 जीहो निज मंदिर पावन करें लाला, पधरावे गुरुपाय. १०
 जीहो विजयदयासूरिंदनो लाला पट्टप्रभावक सूर,
 जीहो तपगच्छपति नित नित तपो लाला, श्रीविजयधर्मसूरि. ११
 चतुरनर ! सेवो श्रीगुरुचंद.....

अथाष्टकम् ॥

श्रीमद्गच्छाधिभत्रु(तुः) चरणमधुपतां ये श्रयन्तीह भव्या-
 स्त्यक्त्वा कार्यान्तराणि प्रतिदिवसमहो ! श्रद्धया पूरिताङ्गाः ।
 तेषां गेहं कदाचित् त्यजति न कमला चञ्चलत्वं विहाय,
 सत्सङ्गान्नो जनानां भवति न कथं सद्गुणानां प्रवृत्तिः ॥१॥
 सकलया कलया कलित[ः] प्रभुः, प्रभुतया विदितो विदितागमः ।
 गमनयार्थविचारणतत्पर[ः], परमनिर्वृत्तिनिर्वृतयेऽस्तु नः ॥२॥
 कामं ददाति भविनां नु विलोकितो य,
 आकर्षितः क्षिपति दुर्गतिदुःखजालम् ।
 संसेवितो वितनुते श्रियमाश्रितानां,
 सोऽयं शुभानि विदधातु विभुय(र्य)तीनाम् ॥३॥

शच्या युष्मद्यशोभिर्निबिडधवलितां वृत्रहाऽऽलोक्य वेणीं,
 त्रैलोक्याखण्डभाण्डोदरविवरगतं वस्तुजातं स्पृशद्भिः ।
 भ्रान्ते स्वान्ते प्रपेदे त्रिसमयविदहो निर्जरत्वे जरेति,
 चित्रं गच्छाधिराजाऽमितविततगुणाम्भोनिधे! ध्येयनामा ॥४॥
 स्वामी(मि)न्! त्वदीयं किल नाम धाम, श्रियामनन्तं प्रभुताश्रि(श्र)यं यत् ।
 तत् किं वदन्ते परितं स्मृतं नः सुखं सुतेऽल्पीकृतकल्पवृक्षः ॥५॥
 श्रीसूरिसम्राट्! भवदीयतेजसा, पराभवं पूर्वमलं प्रलम्भितः ।
 धैर्य(र्यं) त्व(न्व)वष्टभ्य कथं कथञ्चन, ब्रध्नः पुनस्तद् विजयार्थमुद्यतः ॥६॥
 प्रतिप्रभातं शकुनं विलोकितुं, शोचिशकाला(लाकां) किल पद्मपुस्तके ।
 चिक्षेप यस्मात् सहसा ज(ऽञ्ज)नासितः, प्रागेव भृङ्गो निरयाय भङ्गदः ॥७॥
 प्रभो ! शशाङ्कोपमितं त्वदीयं, सदृशनं सौम्यगुणं विलोक्यः(क्य) ।
 प्रसीदतो मे बत दृक्चकोरा-वभि(भी)ष्टमासाद्य समश्च मोदते ॥८॥

॥ इत्यष्टकम् ॥

दूहा : तुं रयणायर गुणभर्यो, लहेरां तान लहंत,
 पार कोई पावे नही, अतिसय धीर अनंत. १
 ज्ञानादिक मोटा रयण, अंतरगति भासंत,
 च्यारु दिस चारित्रजल, पसर्यो पूरण पंत. २
 भविककमल प्रतिबोधवा, सूरजकिरण समांन,
 जिनशासन अंबर तिलक, तुं मोटो सुविहांण. ३
 इम अनेक गुण उपतो, उदयपुर सुखदाय,
 थिर चर जंतु तणे सदा, दीठा आवे दाय. ४
 तेह नगर सुभ थानके, सकलगुणौघप्रधान,
 चारित्रपात्र-चूडामणी, पंडितमांहे प्रधान. ५
 शासनपति श्रीवीरजिन, श्रीश्रीसुधर्मास्वामि,
 श्रीजंबूस्वामिप्रमुख, प्रभवादिक अभिराम. ६
 तेहने पाटपरंपरा, अंबरभासन सूर,
 श्रीविजयधर्मसूरिंदजी, नायक चडते नूर. ७

गिरुआ सहजे गुण करें, कंत म कारण जांण,
 श्रीविजयधर्मसूरि सेवतां, दिन दिन वाधे वांन. ८

कुलमंडण, कुलदीपक, कुलउद्योतकारक, कलिकालकल्पद्रुम, भविक-
 जीवआस्थाविश्राम, गुणगच्छमेढीसमांन, पंडितप्रधान, तपगछमाहे दिनकरसमान,
 देवमाहे इंद्र, तारामाहे चंद्र, पर्वतमां मेरु, वाजित्रमां भेरू, सूत्रमाहे कल्पसूत्र,
 मंत्रमा नवकारमंत्र, सुखमां संतोष, पर्वमां पजूसणपर्व, हस्तिमां एरावण, रतनमां
 चिंतामणरत्न, तिम गच्छमा तपगच्छ, तेहमाहे सूरीश्वर गुणे करी संसोभित

दूहा : संघ समस्त ईहां थकी, लखे लेख श्रीकार,
 त्रिविध त्रिविध करे वंदना, अवधारो गणधार. १
 सकल संघनी वंदना, अवधारो अरदास,
 पूज्य तणा परसादथी, छें ईहां परम विलास. २
 धर्मध्यांन ईहां किण घणा, नित नित नवले नेह,
 ओछव मोच्छव अभिनवा, कहेतां नावे छेह. ३
 छठ अठम पन्नर वली, मासखमण तप तेम,
 थया अनेक ईहां किणें, नित अधिका धर्म नेम. ४
 परव पजूसण पारणां, साहमीवच्छल सार,
 आडंबर अधिका थयां, परघल अनेक प्रकार. ५
 पोसा पडिक्कमणा तणो, नित नित अधिके भेव,
 दयाधर्म दिन दिन धरे, धर्मध्यान नितमेव. ६
 निराबाध सुख तप तणां, साहमीवच्छल सार,
 आडंबर श्रीसंघनें, देज्यो धरी अतिप्यार. ७
 जिम ईहां संघ समस्तनें, ऊपजे अधिक आनंद,
 पूज्य तणा परसादथी, नित नित हुवें सुखकंद. ८

परम पूज्य, परम पुरुष परमगुरु, परमपवित्र, श्रीतपागच्छाधिराज,
 श्रीसकलभट्टारकपुरंदरभट्टारक श्रीश्रीश्रीश्रीश्री १०८.....

अथ गुणवीनतीनी भास लिखी छे ॥

वीनती अवधारो हो, पाउधारो श्रीमंगलापुरी श्रीसंघ करे अरदास,
 श्रीविजयदयासूरिंदना हो, पटधार वीनती अम तणी,
 चतुर आवो चोमास १ वीनती.....

मंगलपुर अति दीपे हो, अलकापुर जीपें सेहेजथी,
 केता कीजे तास वखाण,
 श्रावक जिनधरमी हो, दुखविरमी निवसें ईहां सदा,
 करता व्रत पच्चवखाण २ वीनती.....

पोसह पडिकमणा बहू करता हो, गुण धरता श्रावक श्राविका,
 जोवे तुमची वाट,
 गछपतिजी तुमे आवो हो, बहू ल्यावो मुनिपरिकर भलो,
 जिम ईहां होए गहगाट ३ वीनती.....

पोसह पडिकमणां बहू होस्ये हो, दुख खोसें भवि तुम्ह वंदतां,
 वली साहमीवच्छल सार,
 वीसथानिक विध उपधाना हो, मालारोपण भला,
 वरतस्यें जयजयकार ४ वीनती.....

पूजा प्रभावना थास्ये हो, गुण अभ्यासे हो जिनमत उन्नत घणां,
 तुम्ह आवो चतुर सुजांण,
 स्यूं गछपति तुमे मोह्या हो, गुणगेहा हो मरुधरदेसमां,
 पावन करो अत्र सुजांण ५ वीनती.....

तुम्हे गछपति छे गिरुया हो, गुणभरीया सहूने सारिखा,
 ज्यूं आसाढी जलधार,
 तिम तुमें ईहां आवो हो, वंदावो मंगलपुरना संघनें,
 महेर करी गणधार ६ वीनती.....

पंच माहाव्रत तुम छाजे हो, गुण गाजे हो महिअल चिहुं दिसें,
 श्रीविजयधर्मसूरिंद,
 अमृतध्वनि तुम्ह वाणी हो, भवि जाणी निसुणे हेंजसू(सुं)
 अंग उपांग अमा(मं)द ७ वीनती.....

नय निक्षेपा भाखो हो, सूरि दाखो दोयविध धर्मनें,
 पुनः कारण-कार्यना भेद,
 षट् सप्तभंगी हो, अति चंगी तुम्ह देसन सुणी
 भविजन हृदय उमेद ८ वीनती.....

समकितगुणदाता हो, जगविख्याता वेहेला पधारज्यो,
 खजमंत करस्युं कर जोड,
 चातुक मन जिम मेहा हो, गुरुधर्मसनेहा अमने अछो,
 वंछित पूरज्यो कोडी(ड) ९ वीनती.....

घणुं घणुं वीनवतां [हो], अंतरयामी दीसें कारिमुं,
 गिरुआ श्रीगणधार,
 बुध कनक पसाये हो, गुण गाया गिरुआ साहिब तणा,
 हरीइं लहयो जयकार १० वीनती.....

॥ इति गुरुभास संपूर्णम् ॥

* * *

(१२)

सादडीथी श्रीसङ्घतो भिन्नमाल विजयधर्मसूरिजीने मोकलायेल विज्ञप्तिपत्र

प्रस्तुत पत्र सादडीथी श्रीसङ्घे भिन्नमाल विजयधर्मसूरिजीने उद्देशीने पाठव्यो छे । जोके कृति जोतां सम्पूर्ण पत्र आगळ सम्पादित थयेल विजय-जिनेन्द्रसूरिजीना पत्रने मळतो छे । पत्र मोकलनार सङ्घनुं नाम, पत्र मोकलायेल स्थाननुं अने त्या बिराजमान गुरुभगवन्तनुं तेमज तेमना माता-पिता विगेरेनुं वर्णन बाद करता पत्र वर्ण हुबहू आगळना पत्रनी नकल छे ।* अहीं सम्पूर्ण पत्रनुं सम्पादन न करता विशेष नोंधो/पद्यो आप्यां छे ।

	पूर्वपत्रनी विगत	प्रस्तुतपत्रनी विगत
- पत्र क्यांथी लखायो?	विजैवानगरथी	लघुमारवाडना सादडीथी
- क्यां लखायो ?	राधनपुर	भिन्नमाल
- कोना उपर ?	विजयजिनेन्द्रसूरिने (विजयधर्मसूरिशिष्य)	विजयधर्मसूरिने (विजयदयासूरिशिष्य)
- माता	गुमानदे	पाटमदे
- पिता	हरचंद	प्रेमा
- वंश	ओसवाल	ओसवाल
- पत्रस्थ तीर्थो	शत्रुंजय, वरकाणो	अर्बुद, राणकपुर

अन्य महत्त्वपूर्ण नोंध :

१. प्रस्तुत पत्रमां तीर्थमाहात्म्य वर्णवता आबुनुं वर्णन होइ अन्य ३ पद्यो मळे

* आ जे पत्र अंगेनी वात छे ते पत्र अनु. ६४, पृ. १९४-२०९ पर प्रकाशित छे. ते पत्र विजयधर्मसूरिजीना पट्टधर विजयजिनेन्द्रसूरिजीने उद्देशीने लखायो छे, तेथी अत्रे प्रकाशित विजयधर्मसूरिजी परनो पत्र तेनाथी जूनो होय अने मूळभूत पत्र होय तेमज पूर्वे प्रकाशित पत्र आनी नकल रूप होय, न के आ पत्र ते नवा पत्रनी नकल होय ते सहज समजाय तेम छे. परन्तु सम्पादक मुनियुगले जे रीते नोंध मोकली ते ज प्रमाणे छापवानुं उचित धार्युं छे. - शी.

छे ते नीचे मुजब -

- A देशवर्णन ढाळ - चोपाई
प्रथम विमलमंत्रीनो सार, आदिस्वर प्रासाद उदार,
सुंदर उन्नत अधिको सुणो, अविचल आबू मध्य ए थुण्यौ ॥५॥
- B देशवर्णन, ढाळ - चोपाई
ति[म] वली मांड्यो नेमिप्रसाद, मंदिर गीरसुं करतो वाद,
पोरवाड तेजपाल वस्तुपाल, करापित जिनभुवन विसाल ॥७॥
- C देशवर्णन, ढाळ - चोपाई
अचलगढ जिनभुवन विख्यात, ते मध्य बिंब सकल सप्तधात,
मण चवदेसै चमालीस मान, चौमुख च्यारे प्रतिम समांन ॥९॥

२. ढाल - २ 'रंग रो रे.....' देशीमां पद्य ११मुं अधिक मळे छे ।

श्रीविजेन्द्रयासूरिदोनो, पट्टधारी सुप्रसिद्ध रे,
श्री विजैधर्मसूरीश्वर, नमतां होइं नवनिद्ध रे. ११

३. वीनती स्वाध्याय ॥ देशी रसीयानी ॥ पद्य ५मुं

'कीजिइ कीरीया विशेष'नी जग्याए 'चित धरे तिम चाह' आवो पाठान्तर
मळे छे ।

विज्ञप्ति सज्झाय

वीनतडी अवधारो हो, पउधारो लघु मरुधरदेशमें, चतुर तुमें चोमास,
श्रीविजेन्द्रयासूरीसा हो, मुनीइसा संघ समस्तनी, अवधारो अरदास. १
वीनतडी.....

पहिली प्रीत लगाई हो, स्युं जाई रह्या परदेशमें, माया रे मनथी मुंक,
जलोधरसुं मोह्या हो, स्युं सोह्या करुणासागर, स्यो पडियो अम चूक. २
शीलें थूलीभद्र सरिखा हो, विद्याइं वयरकुमार ज्युं, गोयमनो अवतार,
वांणी अमीय समांणी हो, हित आंणी प्रांणी सांभली, बूझ्या केई नर-नार. ३
सरसतीकंठे मोहो हो, मन मोहि मदन तणी परे, रूप वन्यौ वसूदेव,
भल भला रांणा राया हो, गुरु हेते वांदवा, चाह करे नितमेव. ४

तुम दरिसननें तरसे हो, घणु हरसें हीयडो माहरो, मोरांने जिम मेह,
 गज जिम समरे रेवा हो, नितमेवा सिता रांमने, पंथीडा मनगेह. ५
 एहवी रीत तुमारी हो, इक्तारी धारां छो, थारे तो नव लाख,
 तो पिण मनडे अमने हो, घणु तुमनें अहोनि स संभरे, त्यांरी सुपनां देसी साख. ६
 वहिली वलण करेज्यो हो, वली दिजो दरसण दासनें, मया करी मुनीराय,
 सादडीसेहर पधारो हो, अवधारो वीनती म्हांहरी, रार्जिद गळपतिराय. ७
 आवी देव जुहारो हो, पउधारो श्रीपूज्यजी, रांणकपुर रसहेस,
 तु तपगछरी गादी हो, जग वादी सघलाई जीतीया, मुनीवर तणा महेस. ८
 श्रीविजेदयासूरी-पाटे हो, मुनीथाटे प्रतपीजो सदा, श्रीविजेधर्मसूरीस,
 जीवणसागर ग्यांने हो, गुरु-ध्यांनें तपगछरायसुं, अहोनि स दै आसीस. ९

॥ इति विज्ञप्ति सज्जाय ॥

५ अत्रथी सदा सेवग पं० जीवणसागर ग०, पं० मनोहरसागर ग०, पं०
 हिम्मतसागर ग०, पं० नित्यसागर ग०, पं० चतुरसागर ग०, पं० योग्यसागर
 ग०, पं० रांमसागर ग०, कर्पूरसागर ग०, भावर्षि चेला फत्तेचंद, तेजसी,
 जगरूप, देवीचंद प्रमुख ठाणा १७नी वंदणा १००८ वार अवधारवीजी । तत्रत्य
 सपरिवार साधुने वंदणा वंचावसीजी ।

* * *

(१३)

सूत्रत नगरे विजयजिनेन्द्रसूरिजीने थांदलाथी प्रेमविजयजीनो पत्र

प्रस्तुत पत्र थान्दला नगरथी प्रेमविजयजीए सूरतनगरे विजयजिनेन्द्रसूरिजीने
 उद्देशीने लख्यो छे. पोते शा कारणथी पत्रिका(पत्र) लखी छे ते प्रयोजन बतावी
 कविए गद्यप्रवाहमां पूज्यश्रीना अनेक गुणोनुं वर्णन कर्तुं छे. साथे पद्यमां पण
 सवैया प्रकारमां ४ पद्यो रची पूज्यश्री प्रत्येनी पोतानी भक्ति प्रगट करी छे.
 पूज्यश्रीना दर्शननी झंखना अने पूज्यश्री प्रत्येनी समर्पितता त्यारबादना गद्य
 पत्रविभागमां जणाई आवे छे. कृतिमां घणा शब्दो मारवाडी भाषाना छे.
 केटलाक अरबी-फारसी भाषाना छे जे तत्कालीन बोलीना व्यवहारने बतावे छे.

शब्दार्थ

- | | |
|--------------------------|-----------------------------------|
| १. स्रव = सर्व | ५. जदवा-तदवा = जेमतेम |
| २. ग्रसाय = ग्रसित थाय | ६. दुजणी = ? |
| ३. तकसीर = भूल (?) | ७. फुरमास = फरमास = (आज्ञा) इच्छा |
| ४. वावला = वेवलो = गांडो | |

*

सकलभट्टारकपुरंदरभट्टारकजी श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री १००८ श्रीविजयजैनेन्द्रसूरीश्वरजी
 चर्णा(रणा)न् चर्णकमलचर्णाबुजेभ्यो नमः ॥

॥ श्री २४ ॥

श्रीमज्जिनो जयतीतराम् ॥ श्री श्रेयोऽस्तु ॥

स्वस्ति श्रीजिनमानम्य, पञ्चकल्याणनायकः(कम्) ।

लिखामि पत्रिका(कां) रम्यां, सत्समाचारहेतवे ॥१॥

स्वस्ति श्रीऋषभादि-श्रीवीरजिनं प्रणम्य श्रीमति तत्र श्रीसूरतर्बिंदर
 महाशुभस्थाने पुरंदरपुराकारे तत्र सकलगुणगणान्, गुणमणिअलंकृतान्, विबुधजन-
 रंजितान्, विद्वज्जनपंडितान्, चारुचातुरीचमत्कृद्दीप्तदेहान्, वाणिगुणमिष्टतान्, धर्मीष्ट
 महाधर्मवान्, षडत्रिंशद्गुणे शौभितान्, पंच महाव्रत-पंच सुमति-त्रय गुप्ति एवं

त्रयोदशप्रकार चारित्रधरणधीरसमर्थान्, अर्कवत् तेजकान्, शशिवत् शीतलान्, सुमेरुवत् अचलान्, समुद्रवत् गंभीरान्, कंदर्पदेवसम मूर्तिवान्, विद्यावंत वयरसेनवत्, शीयलगुणे स्थूलभद्रवत् दृढः, सकलगुर(ण)विद्यानिधानं, साधितसदाअष्टावि- (व?)धानं, महामुनीश, मुनिश्रेष्ठराय, भुवि भव्यजनान् भगवत् तुल्यभाय, पुरुषोत्तमप्रवरत्वं पुरुषसार, कलिकालमध्ये गौतमावतार, सरस्वती-कंठाभरण, वादीविजयलक्ष्मीशरण, विज्ञाताखिलपुराण, वादीकदलीकृपाण, निपुणश्रेणिशिरोमणे, कुमतांधकारनभोमणे, विजितवादीवृंद, वादीगरुडगोर्विद, वादीनिखदमुखभंजन, विद्याविहितअनेकजनरंजन, ज्ञानरत्नरत्नाकर, महाकविकृतकवीश्वर, शिष्यीकृत- बृहस्पते, विनतानेकनरपते, जीतानेकवाद, सरस्वतीलब्धप्रसाद इत्याद्यनेक बिरुदानि सकलनरलोकआलंबण आधारभूत, सर्व भवि प्राणी पक्षीरूपनो प्राग्वट समान, सकल महत् लोकनो तिलकायमान, सकलगच्छाधिराज, सकलगच्छामार्तडवद्घो- तायमान, सकलगच्छआभूषण, सकलभट्टारकपुरंदरभट्टारकजीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री १००८ श्रीविजेंजैनेंद्रसूरीश्वरचर्णान्, चरणकमलान् चर्णाम्बुजेभ्यो नमः ॥

ऐश्वर्य इन्द्रतुल्यं नरपति तथा दिव्यसौन्दर्यमूर्तिं,
देवत्वं कल्पवृक्षं गणकुलसमं मेरुचन्द्रार्कबिम्बम् ।
योगीन्द्रो जैननाथो परमसुखदः सारदाकण्ठवासं,
प्राज्ञः जैनेन्द्रश्रेष्ठं जगगुरुवरं प्रेमं नित्यं नमामि ॥

अथ सवैयो ॥३१॥

श्रीविजेंजैनेंद्रसूरि राजत हैं जैनराजा, भाग्यबली भूप जेंसें सुरमें सुरेंद्रसो ।
तेजमें दिणंद तेम सौमवंत ज्युं शशि, गंभीर्यता गुणोदधि त्युं महिमें महेंद्रसो ।
दांनीमां करण दाखुं ग्यान बुद्धिमां गणेश, ब्रह्म में अडिगव्रति मुनिमें मुनेंद्रसो ।
परंपरा वीरपाट थाट सदा घणें थोक, हर्षवंत दूजो हीर नरमें नरेंद्र सो ॥१॥

वेद श्रुति वइयाकरणी पाठी पंचकाव्यको, ज्योतिष सिद्धांत गुणलायक छत्रीसको ।
निजशास्त्र परशास्त्र न्याय तर्कको निपुण, भाषा सब भेद ठांनें आगम पेंतालीसको ।
कुराणको पुराणको राग कोक लिपि कलासामुद्रको, अंगलक्षण जाण हें बत्तीसको ।
जगगुरु जिनेंद्रसूर नायक मुनिनाथ मेरो, कर जोड प्रेम कहें दास हुं अधीसको ॥२॥

जाकी छबि सूरतको विशाल देख मोहें स्रव^१ मानुं द्रग मूरत ही कामदेव पेखीयें ।
जाका तप तेजको उद्योत मानुं सूरज सो अग्यांनरूपी तिमर मोहभंजन उवेखीयें ।
जाके जग योगके आसन ही चौरासी नाम आहार दृढआसन इंद्री दृढ देखीयें ।
चौरासी गछनायकको नाथ हें जिनेंद्रसूर कहें कवि प्रेम नेम वंदित विशेषीयें ॥३॥
मंत्र महा परम इष्ट वीर माणभद्र जाके, चक्केश्वरी पोमावती अंबिका सहाय हें ।
रक्षक हें गादीके इंद्र जक्ष दिगपाल भवानी चौसठ मिली शंकटन् हसाय हें ।
समरें थें हाजर सदा जाकी हजूर रहें रातदीह आछें जाम अरिकुल ग्रसाय^२ हें ।
कहे कवि प्रेम सुणों राजा जिनेंद्रसूरि आछे तूं ईश मेरो दूजो कौन भाय हें ॥४॥

अत्र श्रीथांदलानगरतः हुकमी, आज्ञाकारी, चरणरजरेणुसमानसेवक प्रेमविजय लिपिकृतं वंदणामेकसहस्र अष्टोत्तर १००८ त्रिकाल वंदणा अवधारसीजी । आप मोटा छे, कल्पवृक्ष छे, ईश्वर छे, धणी छे, सकलगुरु सद्गुण छे, मुझ सरिखा पतित सेवकनें श्रीश्रीजी साहिबांनो दर्शन घणु दुर्लभ छे । जे दिवस श्रीजी साहिबांनो दर्शन करस्युं ते दिवस सफल गिणसुं । म्हारें तो रात्र-दिवस श्रीजी साहिबांनो ज स्मरण छे । हुं तो श्रीश्रीजी साहिबांना गुणनी तारीफ आगें तो सदा सुंणांज छं । पिण वले पं. रामविजयजीना मुख थकी सांभलीने घणो हर्ष घणो सुख पांम्यो छुं । जिम कोईक रोगी तथा तृषाक्रांतथको अमृतपांन कर्यां घणो सुख उपजें हुं तद्वत् सुखी थयो छुं, तथा जलकमलवत् तथा जलमीनवत् । बीजुं हुं तो श्रीजी साहिबानां दर्शननी उत्कंठा घणी राखुं छुं. जो मालवदेशमध्ये श्रीमोक्षीपार्श्वनाथजीना दर्शन करवा सारु पधारें तो मुझनें दर्शन थायें । पिण श्रीश्रीसाहिबांनो तो आववो अमारें दर्शनांतरायना योगनें माटें कठिन छें ते वहिलो किम दर्शन थाय । अत्र दृष्टांत :- जिम कोई भरतक्षेत्रनो आर्यदेशनो रूपनो जे जीव ते अनार्यदेशमें वसें तेहनें प्रभुनो दर्शन केहवुं दुर्लभ हुवें तिम मुझनें स्वांमीनो दर्शन दुर्लभ छे, अने श्रीश्रीजी साहिबाने पासें रहे छें तथा वांदें छे तथा वांणी सुंणें छे ते महाविदेहना वासी तद्वत् जांणवां । घणो स्युं लिखुं आप माहाराज छे, बहु जांण छे, हुं तो स्वल्पमति छुं, अज्ञान छुं । थोडें लिख्यें घणो कर अवधारज्यो. इण अरजदास्त में इधको-ओछे लिखांणो होवें तो गुन्हो-तकसीर^३ माफ करसी । के 'गहिला-गुंगा-वावला' तोहि बंदा रावला' तथा 'बालक जदवा-तदवा' बोलें मात-पिता मन अमृत तोले' इति । अत्र लायक

कांम-कल्याण हमेसां लिखावसी दुजणी^६ जाणसी नही । अमारें तो हुकम व्यवहार सदाई राजनो ज छें । अनें वली श्रीजी साहिबांनी फुरमास आवसी ते माथें चढावी लेसुंजी । वलमान पत्र कृपाप्रसाद करी वहिला लिखावसीजी । तत्र श्रीश्रीश्री साहिबांने पार्श्ववर्ति साधु सर्व होवें तिणांसुं प्रेमविजयरी वंदणा वांचजोगी । मिति फाल्गुण सुद्ध २ गुरु संवत् १८४५ वर्षे श्रीश्रेय ॥

* * *

(१४)

जोधपुरथी मन्तरूपविजयजीनी रतलाम विजयजिनेद्धसूरिजीने विज्ञप्ति

मङ्गलाचरणमां संस्कृत पद्यो द्वारा आदिजिन, शान्तिजिन, नेमिजिन, पार्श्वनाथ, वर्धमानस्वामी तेमज माणिभद्रयक्षराजने नमन करी गुर्जरभाषामां पद्यपत्ररचनानी शरुआत करी छे । तेमां पण पूर्वोक्त इष्टदेवना स्मरणनी साथे माता सरस्वतीनुं पण स्मरण करायुं छे । पत्र लेखनक्रमानुसार हवे पछीनां पद्योमां कविए पद्मावती-छन्दमां मालवदेशनुं तेमज रतलाम शहेरनुं, अने ते पछीना भुजङ्गी-छन्दनां पद्योमां गुरुभगवन्तनुं वर्णन कर्युं छे । मालवदेशनी हांसी करतां पद्यो ए आ पत्रनी विशेषता छे । हास्य साथे पदार्थ रजू करवानी कविनी आगवी कळा अहीं जोवा मळे छे । अन्य पत्रनी जेम सूरिगुणवर्णन अहीं २ ढाळमां ३६ गुणोथी करायुं छे । त्यार पछी सर्व सामान्यगुणोनी संस्कृत गद्य अने पद्य तेमज गुर्जर गद्यमां वर्णना करी पछीनी ढाळोमां कविए मरुधरदेशनो तथा जोधाणानृप मानसिंघनो चितार आलेख्यो छे । मरुधरदेशनी वर्णना साथे त्यांना राजदरबारीओनुं, प्रजाजनोनुं, जैन-जैनेतर मन्दिरोनुं, उपाश्रयो तेमज सरोवरादि ऐतिहासिक नोंधोनुं विस्तृत वर्णन कविए 'गङ्गल'मां अद्भुत रीते रजू कर्युं छे । त्यार पछीनी ७ गाथा पण उपरोक्त वर्णनना पूरक अंश तरीके ज रचाई छे । 'आज हजारी....' आ देशीमां कविए सूरिगुणवर्णनानी साथे सूरिदर्शननी उत्कण्ठा पण आलेखी छे । वळी आपने अहीं पधारतां अन्य तीर्थोनी पण वंदना थशे ते विगतो त्यार पछीनी 'बिंदली' देशीना ५ थी ८मां पद्यमां गुंथी सूरिजीना संसारी अवस्थानी केटलीक ऐतिहासिक माहिती रजू करी छे । मुडीया लिपीना पत्रालेखननी शरुआतमां श्रीसङ्घे वन्दनादिपूर्वक चातुर्मास सम्बन्धि विगतो व्यक्त करी छे । ते सिवाय खास विगतमां उपाश्रयनी मरम्मत अंगेनी नोंध जाणवा योग्य छे । उपरोक्त विगतमांथी ज केटलीक वातो पछीना दूहाओ द्वारा वर्णवाई छे । पत्र खण्डित होवाथी हवे पछी विनती करता पद्योवाळी सज्जाय अधूरी ज रहे छे । सम्पूर्ण कृतिनी रचना भक्तिविजयना शिष्य कवि मनरूपविजये करी छे ।

शब्दार्थ

१. हाटक = सुवर्ण
 २. पंचाङ्गौ = पंचजन्य (शंखनुं नाम)
 ३. अधग = अधोगामी जीवो
 ४. रिछपाल = रक्षक
 ५. दग्ध = ?
 ६. मरहटे = ?
 ७. ध्रमरत्ता = धर्ममां आसक्त
 ८. सुघटी = सारा आकारनी
 ९. लावनता = लावण्य
 १०. वहनार = वधू स्त्री
 ११. लारै = पाछळ
 १२. वितारै = विशेषथी जोडे (स्वीकारे)
 १३. तेग = तलवार
 १४. विचालै = वच्चे
 १५. छडी = छत्रिका (?)
 १६. चित्रामवाल = चितारो
 १७. चुरी = चोरामां
 १८. छीलरा = छीछरा
 १९. ओगण = अवगुण
 २०. ठावौ = मुख्य (?)
 २१. सराहियै = वखाणीये
 २२. खतंग = युद्ध (?)
 २३. वणं = बनी छे
 २४. खाग = ख्याग
 २५. कुमी = अछत
 २६. सकज = कामकाजवाळा (व्यस्त?)
 २७. काहिका = कोईपण वस्तुनो
 २८. खेस = क्षति, ऊणप, पराभव(?)
 २९. चाव = सुन्दर ?
३०. झट्टां = झाट
 ३१. खगां = एक
 ३२. फब = ?
 ३३. अगगलीयां = आगका
 ३४. प्रोहित = पुरोहित
 ३५. नाजर = अदालतनो एक अमलदार
 ३६. दमामा = नोबत
 ३७. भुरजां = बुरज = किल्लाना मथाळा
 परनुं तोप माटेनुं स्थान
 ३८. छिव्व = छबी
 ३९. केहर = केर, गुलम
 ४०. अडालच = ? (नाम हशे ?)
 ४१. निजदीक = नजीक
 ४२. फकीतह = ?
 ४३. सरसात = ?
 ४४. मनारे = मिनारा
 ४५. महजीत = मस्जिद
 ४६. वच्चाक = (वच्चे?)
 ४७. असतल = ? (नाम हशे?)
 ४८. ओप = शोभा
 ४९. पोहकरणाक = ?
 ५०. सयान = शाणा
 ५१. मच्च = मच्या रहेवुं
 ५२. सुछिम = सुक्ष्म
 ५३. झालरा = एक प्रकारनुं वाद्य
 ५४. अपणाइत = आपणो गणी
 ५५. प्रारथीया = प्रार्थना करायेल
 ५६. पहिडै = पीडे
 ५७. लार = साथ

५८. सांभेला = सामैया
 ५९. अवस = अवश्य(?)
 ६०. अयवंती = अवंती (पार्श्वनाथ प्रभुनुं नाम)
 ६१. छतरी = ?
 ६२. मुदार = मदार, आधार
६३. सुगछी = स्वगच्छी
 ६४. टुटी = तुटी
 ६५. कानीरो = बाजुनो
 ६६. रयो = रह्यो
 ६७. हय जासी = थई जशे
 ६८. नीगरभी = नीगर्वी = गर्व वगरना

*

॥ ८०॥ श्रीमद्गौडीपार्श्वनाथाय नमः ॥ अथ लेखपद्धति लिख्यते ।
 तत्राऽऽदौ मङ्गलाचरणं पञ्चपरमेष्ठिस्तवना कथ्यते ।

काव्यं - श्रीआदिजिनस्तुतिः ॥

श्रीनाभेयजिनं सुरेन्द्रमहितं, विश्वत्रयोद्योतकं,
 लोकालोकप्रकास(श)कं सुखकरं, ज्ञानप्रदीपोद्धतम् ।
 मोहारिविजितं तपोभिविहितं कर्मारिनिर्नाशकं,
 वन्देऽहं शिवदं विशुद्धमनसा नृणां भवोत्तारकम् ॥१॥

॥ अथ शान्तिस्तवः ॥

श्रीशान्तिनाथं सुखदं नराणां, पारापतायाऽभयदं जिनेन्द्रम् ।
 खलु कृपाभिः सुरप्रेक्षणार्थं, विवर्णा(र्णि)तं वज्रिसभां नभामि ॥२॥

॥ अथ श्रीनेमिस्तवः ॥

व्याख्यातमिन्द्री प्रबलं परिषत्सु नेमि, रामं हरिं सुरगणं शतकोटिसङ्ख्यम् ।
 शङ्खुश्व(स्व)नेन जितमिन्द्रिथस्य शस्त्रैः,
 तस्याहमग्नि(ङ्घ्र)युगलं सततं प्रणोमि ॥३॥

॥ अथ श्रीपार्श्वस्तवः ॥

ज्वलितभुजगं दत्त्वा येन मन्त्राक्षरपञ्चकं,
 श्रवणसुणितं श्रीपार्श्वस्य गिरं मुखदर्शनम् ।
 असुरपदविं श्रीधरणिन्दं जातं भवनाधिपं,
 परमपदविं त्वं पार्श्वेशं नमामि भवोद्भवम् ॥४॥

॥ अथ श्रीवीरवर्धमानस्तुतिः ॥

वीरः स्वामिन् कनकशिखरे स्नानकाले घटानां,
समोच्चन्ता जलदसदृशि वारिधारः सुराणाम् ।
इन्द्रेणोक्तं क्षिणमपि स्थिरं कम्पितं तद्गिरिन्द्रं,
पादाङ्गुष्ठं परिमतिगिरि चम्पितं तत्समेतम् ॥५॥
विश्वश्रोतं चलति गिरयः कूटविन्दा(वृन्दाः) पतन्ति,
क्षम्भा प्राप्ता जलधिरखिलनक्रचक्रासमूहः ।
कण्ठे लग्ना सुरवधु विभो इन्द्र चित्तं विधत्ते,
त्वं वन्देऽहं प्रबल बलवान्, क्रियतां जन्महर्षम् ॥६॥

॥ अथ श्रीमाणभद्रस्तुतिः ॥

श्रीमाणभद्रं सुरयक्षराजं, सौख्यप्रदं विघ्नहरं नराणाम् ।
जिनेन्द्रसूरि(रे)र्जयकारि नित्यं, रिपुक्षयं सङ्घसुखं(ख)प्रदो मि(मे) ॥७॥

॥ इति मङ्गलाचरणप्रशस्तिकाव्यानि ॥

अथ दूहा : स्वस्तिश्री आदीसरु, धरै धरा उतपन्न,
नमत सुकवि इंद्रादिपद, काया ^१हाटक-वन्न. १
संकर जिनसासन-सुखद, अचिरासुत श्रीशांति,
पदवी त्रय एक ही भवे, पाम्या परम-महंत. २
जादवकुलअवतंस प्रभु, माधवमोद हरंत,
पूर संख ^३पंचाङ्गौ, संतन हरख धरंत. ३
पारस पारससें भये, वंस इक्ष्वाकुहि मांहि,
कुर्म लोह कंचन करे, ^३अधग उधार सांहि. ४
नमत-सुरासुर-मुकुटयुत, प्रतिबिंबन-नख-माल,
इंद्रवधु-आभा प्रगट, महावीर ^४रिछपाल. ५
माता तुं ब्रह्मसुता, वरदवरण वर देय,
^५दग्ध निकंदन कारणे, शक्त नमण कर लेय. ६
पंचतीर्थ सुगुरु गिरा, हाथ जोड शिर न[मा]य,
सुन रींजै सज्जन सुकवि, लिखुं लेख सुखदाय. ७
इति भद्रम् ॥

॥ अथ मालवदेशवर्णनम् ॥

मोटा मालव देशमै, तीरथ दोय उद्योत,
अयवंती मगसी उहां, सदा जागती जोत. १
श्रीमदौलतराव कै, राज करै मनरंग,
^५मरहट्टे मोटे मरद, जबर जीतवा जंग. २

॥ तो छंदजाति पद्मावती ॥

मालव धर सोहत, सब जन मोहत, कोडि-ध्वज वाणिज्य-धरा,
लांबा परलेखा, पुण्य विशेषा, ^५ध्रमरत्ता जिनराज तणा,
सिर सोहै मुगटी, सुंदर ^५सुघटी, ^५लावनता धारै,
तिण देश मझारै, पूज पधारै, अरज वधारै मनुहारै. १
पहिरण पाटंबर, झीणा अंबर, डील डिगंबर दूदाला,
पचरंगी बोरी, लटकन दोरी, रेसम-नाडा फूदाला,
^५वह-नार सुरंगी, नैन-कुरंगी, लख लख लोक फिरै लारै^{११},
तिण देश मझारै, पूज पधारै, अरज वधारै मनुहारै. २
शुभ श्रावक भावी, पुज्य वधावी, सुखसेती मंगल गावै,
नित नेम विंतारै, आगम धारे, सुदेव गुरु वंदन आवै,
निज कुल संभारै, अरथ विचारै, द्वादश व्रत मन सुध धारै,
तिण देश मझारै, पूज पधारै, अरज वधारै मनुहारै. ३
श्रावक सुविनीता, देश-वदीता, सदगुरु-भक्तें भाव घणा,
तामे वली खासा, पूरण-आसा, सोहै इम रतलाम तणा,
कवि वरणें केता, गुणां-उपेता, लाभ लीहंता नहि हारै,
तिण देश मझारै, पूज पधारै, अरज वधारै मनुहारै. ४
घर हाट हवेली, सुंदर मेहली, पोल पोल तोरण छाजै,
अति मोटा देहरां, सुंदर सेहरां, दंड-पाट सफरी राजै,
सौलम जिन ध्यानै, नवनिध ठानै, वाजै नोबत गुंभारै,
तिण देश मझारै, पूज पधारै, अरज वधारै मनुहारै. ५
राजै तिहां राजा, चढत दीवाजा, पर्वतसिंह तिहां राज करै,
विष्णुं कुं सेवै, लावा लेवै, क्षत्रीधर्मसुं चित्त धरै,

शत्रु सब कंपै, जग जस जंपै, तेग^{१३} तेज बहु धर सारै
तिण देश मझारै, पूज पधारै, अरज वधारै मनुहारै. ६
उमराव सुभटां, ज्यां बहु थटां, जीतण-जंगा जुग जाणै,
हिंगलाज ममाई का वरदाई, कवियण कीरत वाखं(खां)णै,
परजा सुखदाई, रहत सदाई, तज अन्याई सुखकारै,
तिण देश मझारै, पूज पधारै, अरज वधारै मनुहारै. ७

दूहा : शांतिनाथजी को शिखर, परबल अति परचंड,
सुर नर नित सेवा करै, मोटी महिमा मंड. १

॥ तो छंदजात भुजंगी ॥

सुरां मिंदरां जेम फावे जिनालो, भयै प्रात वंछां सकल पाप टालो,
घसै केसरं चंदणं चरच अंगी, करै आरती धूप कपूर संगी. १
करै नृत्य वाजित्र अति ही वजावै, सदा स्तवन जिनराजकै खूब गावै,
करी कोरणीकांम थांभा ^{१४}विचालै, ^{१५}छडी छज्ज-बंधी ^{१६}सुचित्रामवालै. २
धजाबंध सिखरं धरामांहि सोहै, सदा देखतां बहुत आनंद होवै,
विराजै सदा पूज्य आनंदकारी, प्रतप्पे सदा भांण जुं तेजभारी. ३
असीच्यार गच्छ तणी पातसाही, सदा जैपताका सुआसीस आही,
विजैधर्मसूरीसकै पाट छजै, भविजीव प्रतिबोधतां पाप भाजै. ४
देवे देशना सूरि **जिनंद** राया, भली भांति सहु संघ रै मन भाया,
सहु सूत्र सिद्धांतको भेद वाचै, सुणे देशना धर्मसुं रंग राचै. ५

पैतालीस आगमको ग्यान आखै, **भक्ति** सीस **मनरूप** ए अरज भाखै. ६

दूहा : नगर संघ वण्यौं सहु, चित्त धर अतिही चूप,
अब वर्णन हासी करु, रीझै सुर नर भूप. १
हितकरनै हासी करुं, मालवरी सुखदाय,
तन विकसै सुणतां सही, गुणी रीझ गुण गाय. २

॥ देशी - फतमलरी ॥ मालव देशे हासी ॥

गछपति कांई मोह्या मालव देश, रोग घणो जिण देशमै,
गछपति कांमणगारा लोक, नार चुंरी ओछा वेशमै. १

गछपति ओछी बोली नांना लोक, गुण-हीना अति ही ^{१७}छीलरा,
गछपति खांणे पीणे फीको सवाद, इण खांणासु होवै नर पीलरा. २
गछपति प्रीत न जांणैउ वैफल, अभिमानी अति क्रोधे भर्या,
गछपति आप सरब विधि जांण, इसडा श्रावक कांई मन धर्या. ३
गछपति ओर ^{१८}ओगण सवि छंड, एक वडो गुण जालीयौ,
गछपति **मगसीनै अयवंती पास**, तिण विधि मन थारो मालीयौ. ४
गछपति आवौ **मरुधर** देश, जनमभूम अब देखवा,
गछपति संघ करै अरदास, दिल चाहै पूजजीनै पेखवा. ५
गछपति चाहै जेम चंद चकोर, कमल चाहे दिनकर फरसवा,
गछपति जिम हम थांसुं प्रीति, द्रग चाहै सदगुरु दरसवा. ६
गछपति **भक्तिविजयनो** सीस, कवि **मनरूपह** अरज करै,
गछपति देवाणी साख उदार, अहोनिस् तुम्ह स्मरण करै. ७

॥ इति सझाय ॥१॥

॥ अथाग्रे सूरिछत्रीसगुणवर्णनमाह ॥

दूहा : भारतीकंठभूषणसमा, कलिगौतमअवतार,
अबोध जीव प्रतिबोधवा, तपतेजे दिनकार. १
उदयवंत दिनकर समो, करण कुमतिमति दूर,
प्रतपो श्रीतपगच्छपति, जिहां लागि भू-शशि-सूर. २
इक आणा अरिहंतनी, आराधै मनशुद्ध,
द्विविध धर्म जे उपदिशै, धरै त्रिण तत्त्व विशुद्ध. ३
च्यार कषायनै जीपवा, वली धरता व्रत पंच,
पीहर जे षट कायना, साते भय नावै संच. ४
आठे मद अलगा करी, नव वाडै धरै ब्रह्म,
आराधै गुरु इक मनै, दस-विध साधुनौ धर्म. ५
अनुपम अंग इग्यारना, अरथ अनेकना जांण,
बार उपांग तणा बहु, विधि विधि करै वखांण. ६
काठा तेरे काठीया, नाठा तेहथी दूर,
चतुर चतुरदश भेदना, विद्याइं भरपूर. ७

भाखै पनरै सिद्धना, सोल कलासंपुन्न,
ससिहर परै सुहामणु, वदन सदा सुप्रसन्न. ८

॥ देशी ॥ इडर आंबा आंबली रे - ए चाल ॥

सुगुरुजी मुझ सांभरे रै, दिनमांहि सो वार,
मन विकसे तन उल्हसे रै, गुरुनांम सुणी सुखकार,

भविकजन ! वंदो गछपतिराय. १

संयम सतरै भेदना रै, आराधै एकंत,

अष्टादश अलगी करै रै, पापथानिकनी पंति. २

उगणीस दोस काउसगगना रै, श्रावक सेवै पाय,

बावीस परिसह जीपवा रै, अति द्रढ मन वच काय. ३

सुपरइं सुगडांगसूत्रना रै, जाणै अध्ययन त्रेवीस,

चौवीसे जिनराजनी रै, आंण वहै निसदीस. ४

भावै पचवीस भावना रै, जाणै दशाकल्प छवीस,

सत्तावीस गुणे भर्या रै, लब्धि धरै अठावीस. ५

उगणतीस निवारता रै, पाप श्रुत-परसंग,

त्रीस थानिक महा-मोहनी रै, तास करै गुरु भंग. ६

एकत्रीस गुण सिद्धांतना रै, परकासै परवीण,

बत्तीसैं वर लक्षणे रै, लक्षत अंग अदीन. ७

तेत्तीसै आसातना रै, टालै सुगुरु सदैव,

चौतीस अतिसय जिन तणा रै, परूपता नित मेव. ८

पैत्रीस गुण जिनवांणिना रै, श्रीगुरु तेहनां जाण,

छत्रीसै गुण सूरिना रै, तेण सदा सोभमांन. ९

असीच्चार गणां सिरे रे, थे छौ मोटा भूप,

पंडित भक्तिविजय तणो, नित वंदे मनरूप. १०

॥ इति स्वाध्यायः ॥

दूहा : तूं रयणायर गुण भर्यो, लहिरे ज्ञान लीयंत,

पारन को पामै नही, अतिसय धीर अनंत. १

ज्ञानादिक मोटा रयण, अंतरगति भासंत,

च्यारुं दिश चारित्र-जल, पसर्यो पूरण पंत. २

इण जगमां अति दीपतो, जीपतो कोडि दिणंद,

श्रीविजयजिनेंद्रसूरींदनै, सेवै सुर-नरवृंद. ३

गयणांगण कागल करुं॥ ४

काव्य : असिति(त)गिरिसम(मं) स्यात्॥ ॥१॥

श्लोक : यथा केकी स्मरेन् मेघं॥ ॥२॥

दूहा : तपगछमे मेढी समो, गच्छ दीपावणहार,

श्रीविजयजिनेंद्रसूरीश्वरू, सुविहित-मुनि-शृंगार. १

श्रीमच्चारित्रपात्रचूडामणीन्, श्रीजिनशासनमण्डकान्, दशविधसमाचार्युपेतान्,
श्रीजिनाज्ञाकारि(र)कान्, अमृतमयमहिमानिधानान्, नरनारीसंसेवितपादारविन्दान्,
गच्छभारनिरवाहकवरवृषभान्, सुमतिगुप्ता(प्या)दिविराजमानान्, पञ्चाचारनरिति-
चारपालकान्, विनयजनवाञ्छितार्थप्रापकान्, अनेकागमरहस्यकोविदान्,
सल्लब्धिसागरगौतमगणधरसन्निभान्, सकलकलाकलापकौमुदिपतिसन्निभान्,
मिथ्यातमप्रध्वंसकर्तरीन्, साधुद्विरदयूथाधिपतीन्, अभिवेशागमाञ्जितबुद्धिनेत्रान्,
समुच्चरणमुनिजनवाञ्छितसूत्रार्थप्रापककल्पद्रुमान्, मिथ्यात्वमत्तद्विपश्रेणिकेसरि-
प्रकारान्, अज्ञानपरमशत्रु(त्रून्), ध्वान्तविदारणमार्तण्डान्, पञ्चमहाव्रत-पञ्चविंशति-
भावनासमन्वितान्, गुणगणगरिष्ठान्, विद्वज्जनवरिष्ठान्, सरस्वतीकण्ठाभरणान्,
वादिविजयलक्ष्मीशरणान्, राद्धान्तव्याकरणछन्दोऽलङ्कारनाटिकतर्कस्मृतिपुराण-
ज्ञातान्, विधि(वादि?)कदलीकृपाणान्, विज्ञश्रेणिशिरोमणीन्, कुमतान्धकारराशि-
नभोमणीन्, जितवादिवृन्दान्, वादिगरुडगोविन्दान्, वादिघूकभास्करान्, डिण्डीर-
पिण्डपाण्डुरयशमण्डितब्रह्माण्डमण्डपान्, विवेककलाकमलिनीविकासनैक-
मार्तण्डान्, अनवद्यगद्यपद्यविद्याचतुर्दशधरान्, परमाप्तरत्नरत्नाकरावतारान्,
मेरूगिरवद्धीरसारान्, क्षीरसागरवत् परं गम्भीरान्, विहिताचारचारुचारित्राचरण-
शीलान्, देशजातिकुलरूपादिजातिवान्, कुलवान्, विद्यावान्, भव्यजीवप्रतिबोधकान्,
श्रीगच्छभारधुरन्धरान् ।

क्षमाखड्गं करे धृत्वा, अष्टकर्मारिघातक[ः] ।

प्राणिनां हितकर्ता च, सप्तभयविवर्जक[ः] ॥१॥

जिनाज्ञापालने दक्षः, गच्छरीतसुधारकः ।
 क्रोधशत्रुवंशनन्तं, षड्त्रिंशद्गुणभूषितः ॥२॥
 सर्वशास्त्रप्रवक्तारं, भेत्तारं कर्मविद्विषाम् ।
 माया-मोहप्रजेतारं, धा(ध्या)तारं परमं पदम् ॥३॥
 ज्ञानदीपप्रदातारं, षट्कायप्रतिपालकम् ।
 अबोधस्य बोधदत्तं, **जीवनाख्यं** नमाम्यहम् ॥४॥

परम दयाल, वचने रसाल, जशवान्, कीर्तिवान्, सौभाग्यवान्, जि(जी)य कोहे, जीय माणे, जीय लोभे, जीय माये, जीप परिसहे, जीय इंदिये, धुवनी परे अचल, मेरुनी परे अकंप, सूर्यनी परे तेजवंत, चंद्रनी परे सौम्यवंत, कमलवत् निर्लेप, इत्यादि अनेकोपमायुक्ताणां षड्त्रिंशद्गुणैर्विराजमानान्, श्रीजिनशासन-उद्योतकारक, धन्य ते राजा, रांगा, जुवराज, ईश्वर, माडंबी, कोडंबी, श्रेष्ठ, सेनापति, इभ्य, विवहारीया जे श्रीश्रीपूज्यजीना चरणारवंद वांछा अनै वांदै ते धन्य । धन्य ते श्रावक, धन्य ते श्राविका जे श्रीपूज्यजीनी अमृतमय निरंतर देशना सांभलै । पोसह पडिक्कमण करै । व्रत पचवखांण करै । देशव्रत उच्चरै । पर्युपासना करै ते धन्य । श्रीश्रीपूज्यजी समस्त जीवना हितकारक, करुणासागर इत्यादि.

दूहा : श्रीश्रीश्रीश्री अति घणी, एकसो आठ धरान्,
 श्रीविजयजिनेन्द्रसूरीश्वरू, सपरिवारचरणान् ॥

॥ अथाग्रे मरुधरदेशवर्णनमाह ॥

दूहा : **मरुधर** देश लच्छी भर्यो, ^{२३}ठावौ सुखनौ ठोड,
 मरुधर तेण ^{२३}सराहियै, अनमी जिहां **राठोड**. १
 सकल गुणें करी सोभतो, सर्व गुणे सिरदार,
 सकल देसदेसां सिरै, मरुधरमंडल सार. २
 मोटा मोटा इहां किणे, सेहर वडा सोभंत,
 इंद्रपुरी जिम ओपमा, वर्ण च्यार विलसंत. ३
योधांणे नगराधिपति, **मानसिंह** महाराज,
 राजवियां सगलां सिरै, बुद्धि सुधारै काज. ४

सूरवीर क्षत्री सबल, क्षा(ख्या)ग त्याग निकलंक,
 योधासिर अनमी अधिक, जीपण मोटा जंग. ५
 भाग्यबली मोटो मणि, अमली बांण-अभंग,
 सुभटपुराधिप मोटको, जीपण वडो ^{२२}खतंग. ६

॥ अथ नृपवर्णनम् ॥ छंदजाति - त्रोटक ॥

भल देश जु भूपति **मान** भणं, वपु ओप प्रचंड अधिक ^{२३}वणं,
 कहू रूपप्रकास सुवास किस्यौ, जगजं[जां]ण जुं कृष्णकुमार जिसो. १
 खल ^{२४}खाग ग्रहे कर दुष्ट खंडै, मुख आगल शत्रव को न मंडै,
 तरवार अपार वहै तिणरी, जस-कीरत फेल रही जिणरी. २
 सुभट ही थाट दुर्वार सदा, कवि चारण भट्ट ^{२५}कुमी न कदा,
 अश्व गज ही रथ अपार जयं, जाचक शब्द जुं बोल जयं. ३
 तेज ही जूं प्रताप अखंड तपै, क्रांति देखत सूर ही वीर कंपै,
 जग-जेठ वडा उमराव जिकै, तव कीरत-वीरतमान तिकै. ४

॥ अथ योधांणनगरवर्णनम् ॥

दोहा : समरूं **गणपति**ने सदा, धरूं ध्यानं चित्त धार,
 जपूं गजल योधा तणी, निपट सुणो नर-नार. १

कवित्त : जग-जालिम **योधांण**, सहर सारा सिर सोहै,
 बाग वाडी विशेष, मनुष्य देखै मन मोहै,
 अन धन बहुला अधिक, वाज गज अधिक विराजै,
 सूर-वीर नर ^{२६}सकज, छिब इधकी तिहां छाजै,
 वर्ण ही च्यार सुखीया वसै, वदै मुख अमृत-वांण री,
 कवि देख जिसडी कही, जुगत इसी योधांण री. २

॥ तो चाल गज्जल ॥

मुरधर देश है मोटाक्, तिहां नही ^{२७}काहिका तोटाक्,
 जिसमै सेहर है **जोधांण**, वर्णुं ताहि मिष्ट ही वान. १
 महिपति **मानसिंह** महाराज, सब ही भूपमै सिरताज,
 डंका वाजते दश-देश, खल ही खगग ग्रहि दियै ^{२८}खेस. २

अणभंग मंत्री वड उमराव, चांपा कूप जेता ^{२९}चाव,
जोधा उद दूदा जोत, कम्मा नाटीयां करणोत. ३
धांधलखी चीरज धारीक, सुभट ही जाणधर सारीक,
गेहलोत मांगल्या गुणवंत, दश ही देशमें दीपंत. ४
धूजुं अटल वृद धारीक, ^{३०}झट्टां ^{३१}खगां अरी दे झीक,
मुंहणोत सींघवी मतिवंत, सही तिहां भंडारी सोभंत. ५
मुहता विप्र कायथ मांन, दोढीदार वड दइवांन,
वड वड भूपके गज वाज, रथ सुखपाल रूडै राज. ६
असवारी ज फब^{३२} है इंद, चिउं दिशि चढत दल जैचंद,
सुभट ही थाट क्षात्रीवट पूर, नरपति ^{३३}अगलीयां मुख नूर. ७
ता पिछ मंत्री सुरगुरु तुल, फब है बाग वाडी जुं फूल,
^{३४}प्रोहित व्यास बहु वलि पेष, सइद पठाण मुगल ही सेष. ८
^{३५}नाजर पात्र गायन नेस, वलि तिहां चोपदा रही वेस,
चारण भट्टकै बहु थट्ट, नाटिक नाचते बहु नट्ट. ९
जोय तिहां मल्ल करते युद्ध, बोलत बिरुद केइ बहुबुद्ध,
वाजत त्रीस षट ही वाज, गुंजत धरा अंबर गाज. १०
षट ही राग उचरत खास, परगट रागणी पढ पास,
गज ही करत तिहां गर्जार, हय ही उचरतै हौंकार. ११
जिहां धुर ^{३६}दमांमा सच जांन, निपट ही फरहरै नीसांन,
वर्णन पढत असवारीक, भन है सोभ अति भारीक. १२
अब कहुं सेहरका वाखांन, कीरत सुणो दे दे कांन,
कहुं गढ किला फुन कोटाक, मानुं मेरुसे मोटाक. १३
उहां दरवज्ज अति उंचाक, परगट आभ लग पोहच्याक,
^{३७}भुरजां ताहिकी भारीक, निरखित ^{३८}छिव्व नर-नारीक. १४
तिस पर वडवडी है तोप, ^{३९}केहर छूट अरि परकोप,
गढमै देवी चामुंडगराज, विष्णुं देहरा विराज. १५
महिल ही वडे हे मंडाण, इलमे देवभुवन ही आंण,
परबत तिहां पांचे [च]ढ्याक, भल भल सिद्ध तिहा भेट्याक. १६

ज्वालामुखीदेवी जाण, वड हणमंत भीम वखांण,
पदमसर राणीसर परगट्ट, थिर गुलाबसागर थट्ट. १७
सागर फते तिहां सर सात, पढते कीर्ति वड वड पात,
गंगेलाव फूलेलाव, नर तिहां बेठतै बहु चाव. १८
तापी वाव जेता कूप, चावा देखकर कर चूप,
बहु लंब चौवडा बाजार, वड नर साह करे व्यापार. १९
^{४०}अडालच न्याव है अदल्ल, मुखथी करत वड वड मल्ल,
चबूतरा कोटवाल ही चाव, निपट ही होत सच्चा न्याव. २०
तलहटी मेहल देख्या ताम, नव खंडमाहि जानत नाम,
हट्टा गोंख हवेलीक, झुक रहै झरोखा जालीक. २१
सही तिहां देहरा गंगस्याम, धरीया बिहारीकुंज-धाम,
जलंधरनाथका देहराक, मांनु सेहरका सेहराक. २२
भगवंत देहरा भारीक, नित नित वंदे नर नारीक,
राजै कचेडी ^{४१}निजदीक, तिहां दरीया ^{४२}फकीतह तीक. २३
सायर तिहां अति ^{४३}सरसात, आवत द्रव्य अरु दिन-रात,
चारण भट्ट चरचावान, देतै राव राणां दांन. २४
शिव गुणपति भैरुं साच, वण्या है देहरा मुखवाच,
^{४४}मनारै वडे अरु ^{४५}महजीत, पढते जवन कर करप्रीत. २५
यतीभुवन वणीया जोर, तुह सम भुवन [न]ही कोइ ओर,
प्रथम ही तपाका पहिचान, जिहां वलि खरतरांका जान. २६
पास ही चंद लूंका पेख, दयाधर्म उहां बहु देख,
परगट दरसणी पौसाल, रूडी वत्त वद रसाल. २७
सरवर मांन तिहां सच्चाक, वड नर गंग जिम वच्चाक^{४६},
पासवान् देहरा पहिचान, धरते उहां नर बहु ध्यान. २८
आसण मठ ^{४७}असतल आख, देख्या सिद्ध संत ही दाख,
तकीया फकीरां का तांम, अहोनिस् लेत अल्ला नांम. २९
सिंघव मोहणोत है सिरताज, भला भंडारी बंध ध्रम पाज,
मुहता वडा मर्द ही मर्द, सही करे अरीयणकुं सरद[र्द]. ३०

खीमसरा गोलीया अरु सांड, महिमै करै ध्रमकी मांड,
 श्रीश्रीमाल अरु सराप, जपते सदा प्रभूकै जाप. ३१
 घोघड रूगटीया वड रीत, पाले सदा ध्रमकी प्रीत,
 वली ललवांणी अरु मणीयार, दीपत वडे ही दीदार. ३२
 भारी ओप^{५५} भंडसालीक, छावा चौधरी है ठीक,
 सच ओप नगर ही सेठ, भल नर ल्यावते बहु भेट. ३३
 पंडित वडे ^{५६}पोहकरणाक, भागवत वेद मुखथी भाख,
 श्रीमालीजूं विप्र ^{५७}सयान, पूरै पढत वेद पुरान. ३४
 कायत्थ दौतकलम ही कान्, धरते ईश्वरीका ध्यांन,
 मक्के भेट मुसलमांन, जाकू सव्व(च्च?) जन ही जांन. ३५
 *आसण मठ असतल आख, देख्या सिद्ध संत ही दाख,
 पातर भगतणी बहु पेख, वैश्या वलि हे जूं विशेष,
 वरण्या सहिरका वाखांन, पवन छत्रीस है परमांन. ३६
 बाहिर नगर थानिक बोल, अब सुण चित्त आंणइ लोल,
 सागर वखत फुन है सूर, बाल ही समुद्द बहु भरपूर. ३७
 वणीया महिल तिहां विशेष, दोड ही आवतै नर देख,
 वणीया तिहां अधिका बाग, फुनि तिहां खेलते नर फाग. ३८
 [वडा] मंडोवर का मंडाण, जिहां वीर काला-गौरा जांण,
 नागाधडी मेला मंड, बहु नर आवतै परचंड. ३९
 अवर ही देवतां आवास, जग-नर पूजते बहु जास,
 जूना राजवीका जांन, मिंदर बहुत है मंडाण. ४०
 पारसनाथका परसाद, वलि असमानसे करे वाद,
 उहां उपासरा बहु ठाम, सेठ राजाराम खरच्या दाम. ४१
 प्रबल माली बहु ग्रह पेख, वाडी बागज्युं विशेष,
 लंबै पूंछ वृद्धि लंगूर, सही तिहां कूदतै ऊग-सूर. ४२
 बाग ही रायका वडाक, निपट ही रत्तही तडाक,
 सरवर सेखावत्तका सच्च, मांनव स्नांन गहगट ^{५८}मच्च. ४३
 तलाव ही वहुजीका ताम, नित वड संत लै प्रभू नांम,
 सिंघवी अखेराज सयांन, जाका निरमल सरवर जांन. ४४

कागा बाग है केसाक, अवर न देखीया एसाक,
 केते बाग केक मठान, वलि कीया सुछिम^{५९} ही वाखान. ४५
 वरण्या सहिरका वाखाण, मेरी मत के उनमान,
 ईषत नगर गुण अणपार, पंडित पढै नावै पार. ४६
 वली अढार [ए]कोतर (१८७१)वर्ष, हिकमत करी काती हर्ष,
 निपट ही पूर्णिमा तिथि नीक, छावी गजल कीनी ठीक. ४७
 तपगछ गछमै सिरताज, रिधु जिणंदसूर ही राज,
 पंडित भक्ति महिमा मोड, कहि मनरूप कवि कर जोड. ४८

कलस : योधनयर जग जांण, इंद्रपुरी सम ओपत,
 वाजत वज्ज छत्तीस, नित ओछव कर नरपति,
 राज-रिद्ध वड रीत, प्रीत नर-नार संपेखै,
 अही सूर अडग, दुनी वड नर थे देखो,
 वाह जी वाह ओपम वडिम, मनुष्य घणा सुख-मांनरी,
 कवी दीठी जिसडी कही, जग-सौभा योधांण री. ५० [४८]

॥ इति गजल सम्पूर्णम् ॥

दूहा : पुर बाहिर वणीयो प्रचंड, मिंदर महा सुहाय,
 सुखदायक नायक सकल, कीर्त्ति करत कविराय. १
 जबर झरोखा जालियां, विचमै चोक विसाल,
 सुंदर काम सुहामणो, निरख्यां करै निहाल. २
 नाथ जलंधर राजकुं, जपै मांन महाराज,
 देवनाथजीको दरस, कीया हुवै सिध काज. ३
 हाटा थट्ट बाजार हद, बागा खूब वणाव,
 झाझा भरीया ^{६०}झालरा, चिहुं दिस देखण चाव. ४
 महिल झरोखा मालिया, वणीयो काम विशेष,
 सरणै आयां सुख करै, सुधरै काम अनेक. ५
 नगर घणा इण मुलक मै, एक एकथी सार,
 पिण सहु नगरां सेहरो, योधनयर सुखकार. ६

इम अनेक गुण नगरना, कहितां नावै पार,
पूज्य नयर पावन करो, जिम हुवै हर्ष अपार. ७

॥ अथ सज्ञाय ॥ आज हजारी ढोलो प्रांहणो - ए देशी ॥

सासणनायक वचनथी, पांमी सुगुरुपसाय, सुगुरु म्हारां हो,
अरज लिखुं श्रीगुरु भणी, सांभलो गछपतिराय, सुगुरु म्हारां हो. १
नगर **योधाणो** पधारीयै, श्रीविजयजिनेन्द्रसूरीराय, सुगुरु म्हारां हो,
ऊमाहो बहु दिन तणो, वांदवा गछपतिपाय, सुगुरु म्हारां हो. २
सफल करो संघ वीनती, द्यो दरसण गछराज, सुगुरु म्हारां हो,
सुभहितसाधुसिरोमणि, गणपति गुणना जिहाज, सुगुरु म्हारां हो. ३
युगप्रधानं जगमां जयो, वड-वखती व्रतधार, सुगुरु म्हारां हो,
सूध संजमधर जगगुरु, गौतमगुणभंडार, सुगुरु म्हारां हो. ४
सीयलै थूलभद्र समो वडै, विद्याइ वयरकुमार, सुगुरु म्हारां हो,
बालपणै व्रत आदरी, पालै पंचाचार, सुगुरु म्हारां हो. ५
तपगछगगनदिवाकरु, सोभित गुणे छत्रीस, सुगुरु म्हारां हो,
श्रीविजयधर्मपटोधरू, दिन दिन सबल जगीश, सुगुरु म्हारां हो. ६
परम-दयायै प्रेमसुं, करज्यो करुणा कृपाल, सुगुरु म्हारां हो,
सुगुरु सेवकने दिल भरी, महिर करो रिछपाल, सुगुरु म्हारां हो. ७
उत्कंठा मन अतिघणी, श्रीगुरुदरसण काज, सुगुरु म्हारां हो,
साचा सेवक जाणनै, मया करौ महाराज, सुगुरु म्हारां हो. ८
तीरथ-यात्रा फल इहां, दीपता श्रावक सार, सुगुरु म्हारां हो,
सांभलवा सदगुरु तणी, वांणी अमृत जलधार, सुगुरु म्हारां हो. ९
हूं सेवक तुम्ह चरणनौ, साहिब गरीब-निवाज, सुगुरु म्हारां हो,
अपणाइत प्रतिपालीयै, बांह ग्रह्यानी लाज, सुगुरु म्हारां हो. १०
व्रत पचवखाणादि धर्मनौ, होस्यै लाभ अपार, सुगुरु म्हारां हो,
दान प्रभावना पूजणा, सांमीवछल सुखकार, सुगुरु म्हारां हो. ११
नगर.....

थांहरै सेवक छै घणा, मांहरै श्रीगुरु आप, सुगुरु म्हारां हो,
मनना मनोरथ पूरवै, जिम टल जायै संताप, सुगुरु म्हारां हो. १२

“प्रार्थीया “पहिडै नही, ए उत्तम आचार, सुगुरु म्हारां हो,
आस सफल अम कीजीयै, अरज सुणो गणधार, सुगुरु म्हारां हो. १३
सुनिजर कीजै सेवक भणी, दीजै वंछित दानं, सुगुरु म्हारां हो,
विनय विचित्र कर वीनती, सफल करी द्यौ मानं, सुगुरु म्हारां हो. १४
इम गछपति गुण गावतां, पांम्या अधिक उल्हास, सुगुरु म्हारां हो,
पंडित भक्तिविजय तणो, **मनरूप** करै अरदास, सुगुरु म्हारां हो. १५

दूहा : कर जोडी श्राव[क] करै, वीनती वारंवार,
मरुधर पूज पधारज्यौ, लीया साधु-थट “लार. १
ओच्छव “सांभेला अधिक, करसी संघ केरोड,
उमंग करै मन आवज्यौ, मरुधर देशा-मोड. २
अन पाणी मीठा “अवस, वलि मुख मीठी वांग,
नही रोग सोगह निपट, खूब धरम री खांग. ४
मोटा तीरथ मरुधरा, भेटो भगते भाव,
इण कारण तुम्हे आवज्यौ, रूडा तपगच्छराव. ५

॥ ढाल ॥ देशी - बिंदलीरी ॥

धणीय “अयवंती ध्यावूं, तपगछपतिरा गुण गावूं हो, सदगुरु अरज सुणो
[ए आंकणी]

अरज सुणीजै मोरी, हूं तो चाहूं सेवा तोरी हो, सदगुरु..... १
अन धन बहू चित्त धारो, पूज **मरुधर** देश पधारो हो, सदगुरु....
मरुधर-श्रावक मोटा, तिहां घरमै नही छै तोटा हो, सदगुरु..... २
ज्यां राज गमै कारण जाझा, वलि माने छै महाराजा हो, सदगुरु....
नीसांग नगारा वाजै, सुखपालां बेठा छजै हो, सदगुरु..... ३
जाली मिंदर जोखां, गाजै बेठा तिहां गोखां हो, सदगुरु.....
वली श्रावक एहवा वंदावो, पेखंता बहु सुख पावो हो, सदगुरु..... ४
भल भल तीरथ भेटो, मानव भव्यना दुख मेटो हो, सदगुरु.....
रांगपुरो तिहां राजै, बिम्ब **आदीसर** अतिछजै हो, सदगुरु..... ५
फलोधी पारसनाथ, पूज्यां हूवै सनाथ हो, सदगुरु.....
कापरडो वलि कहीयै, लख-फल प्रभू पूज्यां लही[यै] हो, सदगुरु..... ६

छाजै बलूंदै ६३छतरी, हर्ष आंणीनै पूजो हितरी हो, सदगुरु.....
 पाली नगर थे पेखो, दूजो कैलास सही देखो हो, सदगुरु..... ७
 पंच देहरा तिहां पूजो, एहवौ नही छै दूजो हो, सदगुरु.....
 सौझित सेहर सवायौ, आप जनम तिहां ही ज पायो हो, सदगुरु..... ८
 मात गुमानदेजाया, पिता हरचंद नवनिधि पाया हो, सदगुरु.....
 वाघरेचा गोत्र विराजै, ओशवंशमै अधिक ही छाजै हो, सदगुरु..... ९
 दरसन साहिब देज्यौ, जन संतोषै जस लेज्यो हो, सदगुरु.....
 गुरु भक्तिविजय सुपसावै, कवि मनरूप गुण नित गावै हो, सदगुरु..... १०

॥ इति गुरुविज्ञप्तिज्ञेयम् ॥

तत्रत्य पं. विद्याविजयजी, पं. माणिक्यविजयजी, पं. फतैविजयजी, पं.
 जीतसागरजी, पं. रामविजयजी, पं. दोलतविजयजी, समस्त साधांसु १०८
 वार वंदणा अवधारसीजी ।

अत्रत्य पं. मनरूपविजय, पं. कमलविजय, पं. ऋषभविजय, पं.
 चतुर्विजय, पं. बुद्धिविजय, पं. विद्याविजय, उमेदविजय, भगवांनविजय,
 रंगविजय, मोहनविजय, भावचारित्रीया शिष्य रत्नचंद, अगरचन्द, पनालाल,
 दीपचंद, ऋद्धिकरण समस्त ठाणु १५री वंदणा व०

॥ श्रीगोडीजी सत छै जी ॥

॥ समस्तश्री रतलाब सुथाने पुज परमपुज सरब ओपमा बीराजमान, अनेक
 ओपमा लायक, पुजश्रीभटारक सकल भटारकपुरंदर भटारकजीश्री १०८
 श्रीवीजेयजीनद्रसूरीश्वरजी चरणकवलायसु जोधपुरथी सदा अग्याकारी समस्त
 सिंघ लीखावतु बंदण १०८ वार अवधारसीजी.

अठारा समाचारश्री जी रा तेज परतापसु भला छै । आपरा सदा आरोग
 चाहीजे । आपरा डीलारा घणा जतन करावसी । सारी ६३मुदार आपरा डीलासु
 छै । सुजतनतो श्रीगोडीजी करसी पण सिंघने तो लीखीयो चहीजे । अप्रंच
 पुनीयास मनरूपबीजेजी, रीखबबीजेजी आपरी आग्यासु अठे चोमासे
 मेलीया । सो बोत जोग्य हे ने धरम धानमें बोत परवीण छै । सु जोधपुररा
 चोमास लायक छै । बीजु उपासरे वखाण श्रीरायपीसेणी सुत हुवे छै ।

सीजझाय श्रीजंबुदीपपनतीरी हुवे छै । धरमनी मरजाद आछीतरे ६३सुगछी
 परगछी सरब आवे छै । श्रीजीरी आग्य अखंड पाले छै । ओर उपासरी
 मरमत हुय गई छै । रीपीआ २३५) लाग गया छै । और पीण खोटो भागो
 ६३टुटी सुधर गयो छे । एकण ६३कानीरो भीतरो काम ६३रयो छे । सो
 ६३हयजासी । सो पुनीयासजी मनरूपबीजेजी घणा वरससु चोमासे आया छै ।
 सु अबरके तो चादर पीछैवडीरी चकरी खण(?) सींघसु कीहई आई नही
 सो अबरके चोमासे ईणने हीज रखावसी । ईणमे गछरो उदोतपणो नीजर
 आवसी । मारी पीण सारा सींघरी मरजी छै, ने ईणसु सींघ बोत परसन छै
 सु अबको चोमासो तो सारा सींघरी अरजसु ईणने ही ज ईनामत करावसी ।
 ईतर अरज जरूर मंजुर करावसी, ओर मनरूपबीजेजीरी तरफरी जीती
 बीरती... ईंधकी ओछी कहे सु नही मनावसी । अे बडा जोग छै । नीगरभी ६३
 छै । मारगरा चलणवाल छै । ने चीत्र लेखमे लीखो छे सु आप वचासी ने
 धरम ध्यान रे अवसर सिंघने आद करसी ।

दूहा : सिंघ समस्त इहां थकी, लिखे लेख श्रीकार,
 त्रिविध त्रिविध कर वंदना, अवधारो गणधार. १
 धर्मध्यान इहां पण घणा, नित नित नवला नेह,
 ओच्छव मोच्छव अभिनवा, कहिता नावै छेह. २
 परब पजूसणपारणा, सांहमीवछल सार,
 आडंबर अधिका थया, परिघल अनेक प्रकार. ३
 छठ अठम पनरे दशम, मासखमण तप-नेम,
 थया अनेक ईहां किणे, नित अधिका ध्रम ने[ते]म. ४
 पोसह पडिकमणा तणो, नित नित अधिका नेम,
 दया-धर्म नित नित नवौ, धर्मध्यान वलि तेम. ५
 निराबाध सुण(ख) तप तणा, श्रीजीना सुखकार,
 समाचार श्रीसंघनै, देज्यो धरि अति प्यार. ६
 जिम इहां संघ समस्तनै, ऊपजै अधिक आणंद,
 पूज्य तणां परभावसुं, नित नित हुवै सुखकंद. ७

संघ सकल कर जोडनै, एम करै अरदास,
पउधारो श्रीपूज्यश्री, जोध नयर चौमास. ८
गुरुजी अत्र पधारतां, होस्यै लाभ अछेह,
सकल संघनी वीनती, अवधारीजे एह. ९

॥ अथाग्रे समस्त संघनी वीनती री सझाय कहे छइ ॥ देशी - रसीयारी ॥

श्री श्रुतदेवी प्रणमी भावसूं, गाय..... पटोधर,
संघ सकलनी रंग-भर वीनती, पटोधर. १
नगर योधांणे हो श्रीजी..... पटोधर,
मांन वधारी हो पटोधर. २
वाट जो [अहींथी पत्रनो भाग खण्डित छे]

* * *

(१५)

माङ्गरोलमां बिजाजमात विजयजिनेब्दसूत्रिने सोझतना सञ्जनो विज्ञापितपत्र

मङ्गलाचरणमां पांच जिनेश्वरोनी तथा माणिभद्रवीरनी संस्कृतमां स्तवना करी कविए गुर्जरभाषामां पत्र रचनानो प्रारम्भ कर्यो छे । कविए सौ प्रथम सोरठ देशनुं वर्णन कर्युं छे । 'गङ्गल' चालमां सोरठदेशना प्रसिद्ध शत्रुञ्जय अने गिरनार ए बे तीर्थोनुं स्मरण करी माङ्गरोलनी राज्यव्यवस्था, लोकव्यवस्था, जिनालयो तेमज श्रावक-श्राविका गणनुं सुन्दर चित्रण कर्युं छे । त्यार पछीना दूहा, सवैया, पद्धडी छन्द तेमज देशीना रागमां ३६ सूरिगुणनुं वर्णन करी फरी ते ज भावानुलेखन गद्यबद्ध रचनामां कर्युं छे । पद्धडी छन्दमां रचायेलुं ते पछीनुं मरुधरदेशनुं वर्णन ऐतिहासिक दृष्टिए महत्त्वनुं गणाय । मानसिंह भूपालनुं, अन्य पदाधिकारीओनुं, कोट-बाग-जैन-जैनैतर मन्दिरोनुं, उपाश्रय विगोरेनुं वर्णन कविनी वर्णनशक्तियो परिचय करावे छे । त्यार पछीनां संस्कृत पद्यो तेमज दूहाबद्ध वर्णनमां कविनी गुरुमिलननी उत्कण्ठानुं स्वरूप जणाय छे । फरी छप्पयबद्ध कवित्तमां सूरिजीना गुणोनुं वर्णन करी कविए २ देशी द्वारा सूरिजीने सोझित पधारवा विनन्ति करी छे । सूरिजीना सहवर्ति मुनिवृन्दने वन्दना जणावी गद्यपत्रालेखननी शरुआतमां सूरिजीना गुणवैभवनी विगत आलेखी चातुमासार्थे पधारेल रूपविजयजीनी तथा आराधनानी विगतो रजू करी छे । पत्रान्ते फरी विनन्ति रूपे रचायेल स्वाध्यायमां सोझितनी टूकमां वर्णनाने गुंथी अन्य मुनिवृन्दनी वन्दना जणावी खामणालेखन द्वारा पत्र पूर्ण कर्यो छे ।

पत्रनी रचना कोणे करी छे ते अहिं विचारवा योग्य छे । 'गङ्गल'कार कवि राजेन्द्र मनोहरविजयना शिष्य छे. वीनती स्वाध्याय ढाळ २नी रचना जे रूपविजयजीए करी छे तेओ मनरूपविजयजीना शिष्य छे । बन्ने महात्माए भेगा थई पत्र लख्यो होय तेम पण बने । छतां ते अंगे शोध करतां विशेष बाबत जाणवा मळे ।

शब्दार्थ

- | | |
|---|--------------------------------|
| १. पिंडित = पंडित | २८. गल्ल - ? |
| २. पाखर - पाछल (फरतो?) | २९. सारन्फेर - ? |
| ३. भलक्या - भडकेला | ३०. जवड - जब्बर (मोटुं) |
| ४. इधक - अधिक | ३१. छोह बंध - चूनो धोळेलुं (?) |
| ५. फाब - शोभवुं(?) | ३२. सखर - सुंदर |
| ६. त्रंवाल - कांसानुं एक जातनुं वाद्य | ३३. नीरद्धि - समुद्र |
| ७. सिकदार - (सिक्कादार उपरथी) सुंदर (?) | ३४. डरांक - बीकण |
| ८. हासलसद्द - करलेखार (?) | ३५. वांटै - वहेंचे |
| ९. जद्द - जीद (?) | ३६. चूतरा - चतुर |
| १०. ह्युमण - कामदेव | ३७. कच्चेडी - कचेरी |
| ११. देसोत - राजा | ३८. खांप - ? |
| १२. चोसरा - चारनी संख्याना | ३९. रिणमांइ - रण मेदानमां |
| १३. चंवर - चामर | ४०. सपूज - श्रीपूज्य |
| १४. मांझ - मर्यादा | ४१. सको - सर्व कोइ |
| १५. धुन - ध्वनि | ४२. तवै - स्तवना करे |
| १६. चोज - विशेषे | ४३. भाखर - पर्वत |
| १७. ताह - सुधी | ४४. बाहुडता - प्रत्युत्तर |
| १८. दर्ईवान - नसीबवाळो (?) | ४५. बीकाण - बीकानेर (?) |
| १९. ज्वान - जुवान (?) | ४६. क्रन - कर्ण |
| २०. डारण - ? | ४७. जठे - ज्यां |
| २१. भुंवाल - राजा | ४८. जद - ज्यारे |
| २२. खग - तलवार | ४९. आढा - विस्तृत (?) |
| २३. झाट - झटके | ५०. वांटणो - बहेचनार |
| २४. हेर - ? | ५१. ब्रद - विद्वान् |
| २५. दोयल - दुर्जन | ५२. हमरके - आ वखतना |
| २६. डाव - ? | ५३. वुहार - व्यवहार |
| २७. भराथ - ? | ५४. आरिज - आर्य |

*

श्रीमदिष्टदेवाय नमः ॥ अथ लेखपद्धति लिख्यते ॥

श्रीमदादिनाथाय नमः ॥ श्रीमच्छान्तिनाथाय नमः ॥ श्रीमन्नेमनाथाय नमः ॥

श्रीमत्पार्श्वनाथाय नमः ॥ श्रीमन्महावीराय नमः ॥५॥

स्वस्तिश्रीवृषभेश्वरं जिनवरं, शत्रुञ्जयोद्धारकं ॥१॥

श्रीशान्तिनाथं सुखदं नराणां ॥२॥

स्वस्तिश्रीज(य)दुवंशभूषणमणिं, श्रीनेमिनाथं प्रभूं(भुं) ॥३॥

स्वस्तिश्रीशिवमार्गदं गुणवतां पूजाधिकानां हि च ॥४॥

स्वस्तिश्रीत्रिशलात्मजं जिनवरं सिद्धार्थवंशोद्भवं ॥५॥

अथ मांणभद्रजी स्तुतिर्लिख्यते ।

श्रीमाणभद्रं सुरयक्षराजं ॥६॥

अथ भाषामयी पंचपरमेष्ठिनां स्तुतिर्लिख्यते ॥

दूहा : स्वस्तिश्रीप्रभु(भू) आदिजिन ० १

स्वस्ति श्रीजिन सोलमो ० २

यादवकुलनो सेहरो ० ३

अश्वसेननृपकुलरवि ० ४

सिद्धारथकुलदीवलो ० ५

॥ अथ वीरस्तुति ॥

दूहो : मांणभद्रदेवत भलो ० ६

॥ अथ प्रथम सोरठदेशवर्णनमाह ॥

दूहा : सहुदेसां सिरसेहरो, सोरठ है सिरताज,

रिद्ध सिद्ध बुध है प्रबल, घण थट्ट है गज-वाज. १

॥ कवित्त । छप्पय ॥

सोरठ है सिरताज, वडा नर सदा वखाणै,

अन धन्न जिहां अपार, जैन-ध्रम सहु नर जाणै,

रंग राग बहु रूप, सुभट थट्ट जिहां सकज्जह,

बाग वाडी फुलवाद, करै नर धर्म सकज्जह,

हय-वाल(ज)बंध घर घर घणा, कवि जन बहु कीरत करै,

कांन दे नरां सुणज्यौ कहूं, सोरठ सहु देसांसिरै. २

॥ अथ चाल गजलरी ॥

सोरठ देस सब सिरताज, समवर अवर नह को आज,
रिध सिध जिहां अनंत अपार, बहु बुधवांन है नर नार,
तीरथ **सिधाचल** तिहां धांम, दूजो **नेमपरबत** नाम,
वाडी बाग है विसेष, ^१पिंडत प्रगट त्यां हि ज पेख,
^२पाखर कोट है परचंड, नही है अवर नव ही खंड,
तिण तलवणी खाई खास, हियमै देखे हरख हुलास,
कंगुर कोट लख ही कोड, जोतां जगतमें नहि जोड,
वड वड तोप विकट विराज, ^३भलक्यां अरी जावै भाज,
घन उंच है जु दरबज घाट, कहुं मइ वज्रके ज कपाट,
ओर ही सैर देख्या अपार, चोहतै वने सुगटा च्यार,
हाटां वणी लख हजार, विध विध करत है वेपार,
महाजन सेठ तिण विच मंड, न्याई नृपत नहि लै दंड,
वसहै वरण च्यारुं वास, सुखिया सरस सिव केलास,
पुर **मांगरोल** कै महाराज, **मीयां मानक** रहै राज,
सुत है दोय पारसरूप, ओपम कहुं इधक ^४ अनूप,
दीठा **सोमजी दीवाण**, करतो **अणदराम** ही काम,
मीया फोजदार ही ^५फाब, **मुदी मूरतजी निबाब**,
करहै राजके सबइ कांम, रजवट रहै आतुं जांम,
थिर गज वाज राजमै ठठ, सखरा सूरवीर सुभट्ट,
सखरो बुद्धवां[n] सिरकार, जगमै प्रभा जिनकी सार,
रागी करत है बहु राग, वाजा सहै इतना वाग,
धन धन घुरत जिम त्रंबाल, निजरां नरां आंख निहाल,
नव नव खेलगनका नाच, रंगे राग मुख सुरराच,
नटवा गाय गीत जु नाद, वदहै बोल वादो वाद,
काजी वाचते **कुरान**, वलि जुध करत नित जुवान,
मुगल ज सैद सेख पठांण, बलसै खैचतेक बाण,
दीठा तिन जिनदेहराक, नीके करै नर सेवाक,
अष्टम वीसमो जिन तास, परतिख पूर परचा **पास**,

ऊंचा महल अतिआवास, नीका निपट हैज निवास,
पासै वण्या वाग ज वेस, दरषत फले फूल असेस,
श्रीफल देख दारम दाख, चटके मुखासुक फल चाख,
सब ही जांन त्रियवग सच्च, **बाबु मियां हरचंद** रच्च,
पक्की वावडी विच पेख, राजी होत नर सहु देख,
सोहै चोतरै सिकदार, सखरा न्याच(य?) कर निरधार,
सायर लेत 'हासलसद्, देतां करन नही को ^६जद्,
महाजन सेठ सुखिया मांन, देवै अहोनि स बहु दांम,
नांनजी सेठ बुधनिधांन, आछी भगत गुरु उर आंन,
चतुर्मास दोय कीध हे सार, बहु भक्ति कीधी अपार,
सब जगतमें हुइ इनकी ख्यात, कीरत विस्तरी बहु भात,
धरमसी सेठ सबल सुणंत, **मोदी सेठ कपुर** भणंत,
श्राविका वालुबाई आद, बहु वलि श्राविका गुणनाद,

दूहा : सहर वखाण्यौ हु सुण्यौ, गुणिजन सुणज्यो गुझ,
अब पद्धडी छंदह रचु, गुण वरणुं श्री पुज. १
मुझ मुख कीरत कहां कहूं, कहां ओपम कहवाय
श्रीविजैजिनिद्रसूरिदनी, कीरत सुजस कहाय. २

॥ सवईयो - इगतीसो ॥

असो है प्रतापवांन, पूरन अखंड ग्यांन, नीत सनमांन जहां, आनंद उदोत है,
आंननकी सोभा मांनुं, द्युमंणकी क्रांत जैसी, तैसी है मधुर वांणी, सुण्या हर्ष होत है,
ताहि गुरुराज जुकी, कीरत कहां लग, कांनि संदेह जांनुं मै, सूरजकी जोत है,
लहर दरियाव गुण, गुहिर सागर जिसो, **विजैजिनेइंदसूर**, असो देसोत^{७७} है. ३

॥ छंद जाति पद्धडी ॥

अवतार **विजै साखा** प्रबल, नितमेव तपै गादी अचल,
ये है सूरमंत्रधारक प्रसिद्ध, षटतीस गुणै सोभत समृद्ध,
चोसैरा चंवर^{७८} छलकंत नित्त, सिर परै छत्र सोभत अमित्त,
झलहलै वदन जिम चंद जांन, कीरत जग पसरी किरण भांन,
व्रत पश्चाधार साहस सधीर, नव वाड मांझ^{७९} गुनके गंभीर,

इग्यार अंग उपांग बार, छ छेद ग्रंथको वचै सार,
 धुन मेघ जेम गर्जत वखाण, नितमेव साचवै पचखाण,
 नवतत्व ज्ञानको सकल जांन, सिद्धांतभेद-विद्यानिधानं,
 विधवांन भाष्य रस ग्रंथ आंन, पुन कर्मग्रंथको भेद ग्यांन,
 जीव-अजीवको भाव भिन्न, ^{१६}बतवाय देत सब जीव चिन्न,
 भवि लोक सुणत विकसै सरोज, उपजै संदेह तिहां पूछै चोज,
 नित आवै श्राविक वंदै पाय, परगटै जोत अंधियार जाय. ४

॥ अथ गुरराज षट्त्रिंशद् गुणवर्णनमाह ॥ धरम जिणेसर गावो रंगसूं - ए देशी ॥

एकविध असंजम टालक सही, दुविध धरमना प्रकास, म्हरां गुरुजी,
 तीन तत्वना जाणक थे अछे, च्यार कषाय विनास, म्हरां गुरुजी. १

भविजन वंदो रे एहवा गछपति [टेर(क)]

पंच महाव्रत पालक स्वांमिजी, षट कायना पीर, म्हरां गुरुजी,
 सात भयाना आप निवार छे, आठ मदां नावि धीर, म्हरां गुरुजी. २
 नवविध ब्रह्मचारजना धारवी, दश विध धर्म प्रकास, म्हरां गुरुजी,
 अंग इग्यार तणा जाणक वली, द्वादश अंग-उपास, म्हरां गुरुजी. ३
 त्रयोदश काठियाना जीपक तुम्हे, चवदै विद्याना जाण, म्हरां गुरुजी,
 पंचदश भेदे सिद्ध-प्रकाशक, सोलै कला [शशी] वदन सुजांण. म्हरां गुरुजी. ४
 सातदश भेद प्रकाशक पूजाना, अठार सहस शीलांग, म्हरां गुरुजी,
 उगणवीस काउसगदोषनिवारक, वीस-तप-थान उपास म्हरां गुरुजी. ५
 एकवीस गुण श्रावकना प्ररूपक, बावीस परिसह जीप[क], म्हरां गुरुजी,
 तेवीस अध्ययन सदा सुगडांगना, चोवीस जिनाज्ञापाल, म्हरां गुरुजी. ६
 पंचवीस भावनाना अति भावक, छव्वीस दसाकल्पप्रपाल, म्हरां गुरुजी,
 सत्तावीस साधुगुणांन प्रकाशक, अठावीस लब्धदयाल, म्हरां गुरुजी. ७
 एगुणत्रीस पाप सुरत परसंगना, त्रीस महा मोहनी थान, म्हरां गुरुजी,
 वारक वर्जक छे गुरुजी तुम्हे, इगतीस गुणना विनांण, म्हरां गुरुजी. ८
 बत्रीस लक्षण करि पूजजी विराजता, तेत्रीस असातना टाल, म्हरां गुरुजी,
 चोतीस अतिसयना पररूपक, पैत्रीस वांणीयै विसाल, म्हरां गुरुजी. ९

दुहा : छत्तीस सूरिगुणै करी, सोभंता गुरुराय,
 इह विध देशना देशता, नित नित वंदु पाय. १

॥ अथाग्रे ओपमा लिख्यते ॥

सकलगुणनिधानं, सकलक्रियासावधानं, सकलगुणालंकृत, सकलजननलिनदिवाकर,
 सकलनरिंदपूजनीक, सकलसिद्धशिरोमणिः, वादिमानमोडन, याचकजनदुखदारि-
 द्रतोडण, धर्मचक्रवर्तः, जैनधर्मउद्योतकारक, अहंकारीमानमर्दन, सर्वजगत्रवन्दन,
 पापनिकरनिकंदन, राजामनरंजन, वादीभटनिकंदन, कर्मगजविखंडन, पापतिमरभंडन,
 श्रीजिनशासनदीपक, बहुशास्त्रवादजीपक, वादीचक्रचूडामणि, राजतदिवसनिशामणिः,
 वादीसिंहसार्दूल, वादीकंदउन्मूलन, भुवलयचक्रचूडामणिः, परमपूज्य, परमात्मा-
 प्ररूपक, परमधर्ममूर्तिः, परमकृपाल, परमदयाल, याचकजनप्रतिपाल, परमपंडित-
 शिराल (?), वाचा वाचाल, निश्शेषनम्रीभूतनृपाल, श्रीजिनशासनपतिसाह,
 तपागछउद्योतकारक, कंदर्पोन्मादमारक, धारकांधारक, सर्वसिद्धांतपारक,
 परमकल्याणकारक, श्रीश्रीविजयधर्मसूरि गुरुजितां पट्टधारक, गादीउछहकारक,
 प्रभाविकां प्रभाविक, सर्वजगत्रदीपकसमानं, शत्रु मित्र जिम परमानं,
 षट्त्रिंशद्गुणैर्भ्राजमान, राजमानं, शोभमानं, दीपमानं, इत्यादि अनेकोपमागुणालंकृतान्,
 श्रीजिनशासनचक्रिवर्तिसमानान्, कलिकालगौतमावतारान्, सकलसूरशिरोमणीन्, समुद्र
 जिम गंधीरान्, सिंह जिम निर्भयान्, भारंड पंखी जिम अप्रमत्तान्, मेरु जिम
 गंधीरान्, सूर जिम तेजस्वीन्, चंद्र जिम शीतलान्, षोडशकलासंपूर्णवदनान्,
 सश्रीकान्, परमसोभावान्, सकलभट्टारकपुरंदर भट्टारकजी-श्रीश्री१००८
 श्रीश्रीविजयजिनैन्द्रसूरीश्वरजीत्कानां चरणां, चरणकमलां पत्रम् ।

धन्य ते गुजरात देस, धन्य ते मांगरोल नयर, धन्य ते श्राविक-
 श्राविका, धन्य ते ग्राम-नगर-पुर-पट्टण-सन्निवेस जिहां श्रीपूज्यजी विहारण करै,
 चौमासो करै, धरती पवित्र करै, चरणोदक प्रसवै । धन्य ते मांगरोलना श्राविक-
 श्राविका जे नित्य श्रीपूज्यजीना मुखनी अमृतमयी वांणी सांभलै । कांन पवित्र
 करै, पोसह-पडिकमण-व्रत साचवै, पच्चक्खांण करै । श्रितपागच्छमाहै दीपक
 समानं श्रीपूज्यजीना मुखनो प्रभात समै दर्शन करै, पूजा प्रभावना करै, धन्य ते
 श्राविक-श्राविका पुण्यभंडार भरै । इत्यादिक श्री पूज्यजीना गुणनी तारीफ हजारै
 गरमै जीभ हुवै तो वर्णवे न सकै, मो मंदमतिथी किम वर्णवाय ?

॥ अथ मरुधरदेशवर्णनमांह ॥ छंद जात पद्धडी ॥

देशां जू सिहर **मुरधरह** देस, **सोझत** सहर तिणमै विसेस,
 प्रथमही अन धन जिहां पूर, देख्या जू दुःख सब जाय दूर. १
 तिहां भूप **मांसिंघह** भणंत, वपु तेजवान बहु बलवणंत,
 तिनकी जू कीर्त्ति दश देश ताह^{१७}, वडवडह भूप कहै वाह वाह. २
 दर्ईवान ज्वांन^{१८} रण^{१९} सुदेख, पराकम्म तेज रवि जिम ही पेख,
 भुजबली भिम जेहो भुंवाल^{२०}, परदुखटाल पर प्रजापाल. ३
 वद मुखा वचनपीयूषबाण, बल सबल जाहि अरजन्नबाण,
 तिनकै जू तेज अरि पिख्य त्रास, बस्ती ज छोड किय वन ही वास. ४
^{२१}खग ^{२२}झाट थाट किय खल हि खंड, जग मांहि जस हि रोपे जू दंड,
 चिहुं दिसा तेज है चक्रवर्ति, कहते जू कवि नव नवी किर्त्ति. ५
 रिद्धि सिद्धि वृद्धि अष्ट हि रखंत, नव निद्धि ताहि नित नित वधंत,
 हय गज हि थाट द्वार हि जू हेर^{२३}, कहीयै भंडार मांनुं कुबेर. ६
 जिह सुजस पसर नव खंड जास, दोगण^{२४} जू दुष्ट नित होत दास,
 अहोनिहस हि होत प्राक्रम अवाज, भल भले गढपति जाय भाज. ७
 वद सत्यवत्त महा सूरवीर, निज खित्तवट्ट मुख लीयां नूर,
 उमराव साव तिनकै अपार, है स्वांमधरम बहू हुजदार. ८
सिंघवी भंडारी मोहणोत सर्व, **मुंहता** जू कांम गुण ग्रहया गर्व,
 करते जू शुद्ध चित्त स्वांम काज, **कायत्थ** करै लिखणोसु काज. ९
 वड हथ समच्छ बहु बुद्धवंत, के वास जेम सहु नर कहंत,
 परगट्ट धरमबल तिन ही पाय, अरिदल कितेक दीने उडाय. १०
 इण मंत्री सम्म नही कोई ओर, तिनके जू वधत नव नवे तोर,
 धन धन्य कहत सहू नरह धीर, वड है वजीर वीराद वीर. ११
 चउ नीत जाण चित्त नित चाय, डारण जू किते गुंथै जू डाव^{२६},
 हिकमत्त छत्त सहू सिद्ध हाथ, भुजबली अतुल जीपै ^{२७}भराथ. १२
 भूपत्तमांन सनमांन भल्ल, गुनिजन सुजस्स पढते जू ^{२८}गल्ल,
 षड खंड शत्रू दीय कित ही खेस, देते ही दाद दशही जू देश. १३

जिह राजकाज भुजभार लीन, केतें सुधार वड कांम कीन,
 तिनकी जू वत्त सुण नृपहि कांन, सहि देत नित्य नित्य सनमांन. १४
 नव नवी रीझ नृप नित हि देत, हियमै हरख अत आंण हेत,
 करहै जू राजके सब हि कांम, नव कोट मांहि तिनका जू नांम. १५
 गुरु देव सेव कर बहू प्रवीन, लायक ग्यांन ध्रम वात लीन,
 विद्या विवेक बहू बुद्धवांन, जगरीत-भात सब हि जू जांन. १६
 ओपै जू लखण बत्तीस अंग, सही तजै नीच जनकें जू संग,
 बहुतरह कला जांणण प्रवीण, नितमेव बुद्ध उपजै नवीन. १७
 वर्णवुं नगर विश्वा जू वीस, सारद मात नम्माय सीस,
 जाकी जू किर्त्ति नव खंड जास, कहै कवी दूसरा जू कैलास. १८
 परकोट सैहर प्रथम ही पिछांन, जोज्यो जू लंक सम ही जू जांन,
 तिनके जु भुरज कंगुरे पेख, दोगण जुडवत द्रिग ही जू देख. १९
 जिस परह नाल है जू जंछूर, छूटै जुकरै अरि चक्कचूर,
 बहू लंब चोवटा है बजार, निरखै जू हरख कर नरह नार. २०
 हाटां जुछटा श्रेणी जू हेर, फब है अवल्ल ^{२३}सारन्नफेर,
 देखो ज प्रबल अन धन अपार, वडे वडे साह करे व्यापार. २१
 मांहे जु किला मेर हि समांन, छावा जु **वि(वी)रमदेका** थांन,
 उचै ही ज देव करते अवाज, भलभले शत्रू ही जाय भाज. २२
 सही जिनह देहरा है जू सात, पर जनह [दर्श] जाय प्रभात,
जलंधरहनाथ देहरा जु जांन, ऊंचा ^{३०}जवडे है अस्समांन. २३
शिवका जु मंदिर चवदै जु साच, **विष्णुं** ज **शिंभु** सम मेल वाच,
 अडिग है **ऊपासरा** जु **इग्यार**, **पोसाल तीन** जाणो ति वार. २४
तपगछ तणो आलय जु तांम, मांनु ज नलनीगुल्मह विमांन,
 वणीयो भुवन अतही विसेष, द्रिग देत देत वड नरह देख. २५
 जाली झरोख तिणमै जू जोर, छोहबंध^{३१} कांम चिहुं को ओर,
 तिस परह कलीय लागी जूताह, चतुर हि देखते चित्त चाह. २६
 थिर लगे तिहां वड वडे थंभ, पेखे जू नरह होत है अचंभ,
 भूय परह सखर वणी है जू भींत, जगके उपाश्र सब लये जीत. २७

माहैं ज साधु वड है महंत, तप-तेजवांन ध्रमजान-तंत,
 हाकम हवेली वणी है जु हद्द, वरणवै लोक वाह-वा जु वद्द. २८
 अन्नेक वापी कूप है अपार, पेखतां नरह पावै न पार,
 वलि है जु बाग वाडी विसेष, दुनियां जु आय तिनकुं ज देख. २९
धरमहपुरा जु तिहां **वटधांम**, ^{३३}नीरद्धी सप्त लगी कीय नांम,
 वलि अपर कीर्त देशह विदेश, चित चाह दांन देते हमेस. ३०
 जीवा ^{३४}डरांक केते जगत्त, वड धन्य नरह ^{३५}वांटै सुभट्ट,
 कोटवालि ^{३६}चूतरा कोटवार, अद्दल्ल न्याव(य) करते अपार. ३१
 हासल्ल लेत सायर हमेस, ^{३७}कच्चेडी कांम करते विशेष,
 जिहां ^{३८}खांप च्यार बहु चतुर जान, वखत हि विलंद बुधके निर्धान. ३२
 महाजनह अन्य जिहां मंदिरवांन, देते जु अहोनिअ अभैदानं,
 देवतरूप तिहां विप्र देख, वेदह पुराण पढते विसेष. ३४
 सूभट्ट थट्ट जिहां है जू सूर, ^{३९}रिणमांझ अश्व देते जू ऊर,
 बहु ग्यांन ध्यांन **कायत्थ** कुबुद्धि, सदभावशक्ति पूजत सुसुद्धि. ३५
 षडतीस पोन वसत है खास, मदमस्त रहत ही बार मास,
 सेवग समर्थ प्रभू करै सेव, देवी ^{४०}सपूज के अन्य देव. ३६
 बाहिर जू कितेक **मठांन** बोल, इषो जू चित्त आंणीइ लोल,
 चावी जू **देवी चांमुंड** माय, सेव्यां जू शक्ति करते सहाय. ३७
 शीतला मात **हनुमांन** हेर, फब रहै शिव ही भूतेश फेर,
गोरा जू **श्यांम खेतल** गिणंत, वंका जू देव **नरसिंघ** वणंत. ३८
 जनवडे **पीर दरगह** सुजांन, के ते जु जवन पढते कुरांन,
 सखर ही वडे मुर ही जू साच, वड नरह कीतै कहै मुखा वाच. ३९
 गुणवंत देव मोटो **गणेश**, हित करह नरह पूजत हमेस,
 अस्थलह मठ केते अपार, नितमेव आवते नरह नार. ४०
 सब ही जू नमत कायर जू सूर, पूजा जु होत है भरह पूर,
 वरण्या जु नगर का जू वखांन, मेरी जु मत्तकै उन जु मान. ४१
 भूल ही जू चूक पारे है जु भ्रंत, सुकवि सुधार लेज्यो जू संत,
 संवत **अठार छीहंत्र** (१८७६) साच, फाल्गुनह मास शुद पक्ष वाच. ४२

पूनम जू तिथकै दिनह पेख, दुरस ही जू छंद कीनौ है देख,
 तपगछ सदा मोटो जू तांम, गुरराज **मनोहरविजय** नांम. ४३
 सही तिहां **देवसूर** ही जू साख, भल कवि शिष्य **राजिंद** भाख,
 सीखै जु सुणै पावै जु सीख, दिन दिनह टलत दालिद दुख. ४४

॥ कलस ॥ कवित्त छप्पय ॥

वद्यो छंद गुणवंत, भला कवि तिण मन भावै,
 रीझै राव ही रांण, सुणै नर अवर ^{६२}सरावै,
 भाव अवल बहु भेद, वेद वाचै सुवखांणै,
 चारण भाट हि चतुर, जिकै गुण बोली जांणै,
सोझाली नयर वरनी सुकवि, जे जे छोड हूति जित्ती,
 सुण श्रवण साच मांनो ^{४१}सको, ^{४२}तवै कीर्ति तिणरी कित्ती. १

॥ इत्यादि छंद पद्धडी संपूर्णम् ॥ अथाग्रे श्लोक लिख्यते ॥

नित्यं ब्रह्म यथा स्मरन्ति मुनयो हंसा यथा मानसं,
 यद्वच्च स्फुटशिल्लिकावनगजा ध्यायन्ति रेवानदीम् ।
 तद्वद्दर्शनलालसाः प्रतिदिनं युष्मान् स्मरामो वयं,
 धन्य कोऽपि स वासरः यदि भवेत्(द्) यत्राऽऽवयोः सङ्गमः ॥१॥
 यच्चिन्तन्ति मयूरपावसत्रतुं हंसाऽपि मानासरं,
 यच्चिन्तन्ति ---तत्प्रगुणितं मातङ्ग बन्धुं वनम् ।
 पाकश्चिन्तति याति सूर्यवदनं मीनो जलं चिन्तयेत्,
 तद्वद् चिन्तति अहर्निशं गुणनिधे!त्वद्दर्श वञ्छामहे ॥२॥
 यथा स्मरन्ति(ति) गौ वत्सं ० ॥३॥
 दीपो तेलं यथा ध्यात्वा तपयं (पयः) चाहन्तु चातक(ः) ।
 तथाऽहं सर्वदा चित्ते-ऽव्ययं(य!) ध्यानं(न)अ(म)हर्निशम् ॥४॥
 वारंवारमयं चिन्ता, वारंवारमयं कथा ।
 युष्माकं दर्शनोत्कण्ठा, नेत्रयोः केन पूर्येत् (पूरयेत्) ? ॥५॥
 प्रीतिलीते पद्मदयालवल्ले, सस्नेहवाक्यामृतसारिणीभिः ।
 अहो(ह)र्निशं पूज्य ! तथाऽभिस(सि)ञ्च्या(द्)

यथा च सा पल्लवसालिनी स्यात् ॥६॥

॥ अथाग्रे स्नेहोक्त दूहा लिखनीया ॥

दु(दू)हा : किहां कोयल किहां अंबवन, किहां दादुर किहां मेह,
 वीसार्या नवि वीसरे, गुरुजी तणा सनेह. १
 मठ मांहे तापस वसै ०२
 एक घडी आधी घडी, तिणमै आधो आध,
 जब ही दरसण पाईये, सो सुखीयारथ कीध. ३
 हियडां भितर दव बलै, कोय न जाणै सार,
 कै जाणै मन माहरो, कै जाणै किरतार. ४
 तिसीयो तडफै नीरकुं, भूखो चाहै भात,
 जेम तुमारा दरसकी, चाह धरं दिनरात. ५
 चातिक चाहै मेहकुं, चकवा चाहत मोर,
 हम चाहुं तुम्ह दरसकुं, जैसै चंद चकोर. ६
 साहिब तोरां दरसकी, मो मन है हुल्हास,
 जैसै पंथी पंथसिर, पल पल जलकी प्यास. ७
 हियडा तुं हेजालुवो, ^३भाखर गिणै न भित,
 जाकै कारण तुं झुरै, ताकै मन नहीं चित. ८
 कामकाज इह छोरकुं, जो हम लायक होय,
 कृपा करि लिखज्यो सदा, अंतर न रहै कोय. ९
^४बाहुडता देज्यो सदा, कागद इधक हुल्हास,
 हितकर लिखज्यो हाथसुं, दसकत अपणै खास. १०
 गुरुजीसु इक वीनती, मांजीजो महाराज,
 कृपा करीनै मेडतो, लिखज्यौ श्रीगुरुराज. ११
 साहिबजीनुं वीनती, देओ सह ^५बीकांण,
 महिर करी लिखज्यो तुम्हे, सुंदरपुर जोधांण. १२
 संवत अढारै छिहंत्तरै(१८७६), वलि फागुण शुदि मास,
 तिथ पूनम शशि वासरै, लिख्यौ लेख हुल्हास. १३

॥ कवित्त ॥ छप्पय ॥

पंच महाव्रत पाल, काय षट पाल कृपानिध,
 सत्तर भेद संयमह, वले जिणरी जाणण बुध,

सुमति गुपति सहू सोध, बोध भविजन बहू दायक,
 पायक ग्यांनप्रवीण, वदै मुख अमृत वायक,
 नायक गछ असीच्चार नित, प्रसिद्ध ऋद्धि भरपूर है,
विजैजिनैद्रसूरि ग्रहीया वडिम, तपै पाट ध्रमसूर रै. १
 तुझ दरसण दुख दूर, पूर पुन प्रगट देखै तब,
 तुझ दरसण दुख दूर, जगत सुख ही उपजै जब,
 तुझ दरसण दुख दूर, रोग-गम नित वाधै ऋद्धि,
 तुझ दरसण दुख दूर, शत्य केई नर पांमै सिध,
 तपगछनाथ तेज हि तरूण, जगत राह दोय जांणीयै,
 बहु ग्यांन ध्यांन जांणण प्रबल, **विजैजिनैद्र** वखांणीयै. २
 गुणकर समंद्र गंभीर, चंद जिम उजल चिहुं दिशि,
 मेर जीही द्रढ मनह, खलह तिण देख जायै खिस,
 कंचननी(नि)र्मल काय, दांनकर ^६क्रन जिम देयण,
 अवर सूरन हई सो, लायक त्रिद जग सहू लियण,
 धजबंध पूज तपगछ धणी, अवस वात चित आंणीयै,
 साहपतिसाह पगवंद सह, **विजैजिनैद्र** वखांणीयै. ३

॥ इति छप्पय संपूर्णम् ॥

॥ अथ वीनतीरी सिझाय लिख्यते ॥ ढाल ॥ बिंदलीरी ॥

प्रणमुं सरसति पाय, गुण गावुं गछपतिराय हो, सदगुरु अरज सुणो,
 अरज अमारी अवधारो, **सोझाली** नगर पधारो हो, सदगुरु अरज सुणो. १
 मुरधर देस छे मोटो, ^७जठे अन धनरो नह तोटो हो, सदगुरु अरज सुणो,
 जठै नगर **योधांणो** राजै, ओतो अलकापुरि सम छजै हो, सदगुरु अरज सुणो. २
 भूपति **मांसिंध** राजा, वाजै नित नोबत वाजा हो, सदगुरु अरज सुणो,
 नयर **सोझाली** निरखो, जिकां इंद्रपुरि छै सरिखो हो, सदगुरु अरज सुणो. ३
 बाग वाडी आराम, नव खंडमै जिण रो नांम हो, सदगुरु अरज सुणो,
 भगवंत देहरा भारी, पूजा हुवै सतरप्रकारी हो, सदगुरु अरज सुणो. ४
 श्रावक बार व्रतइ साजे, गुणनिध नित नितका गाजे हो, सदगुरु अरज सुणो,
 पोसा नै पडिकमणा, वलि भेद सिद्धांता भणणा हो, सदगुरु अरज सुणो. ५

सुगुरु तणी करै सेवा, पूजै एक अरिहंत देवा हो, सदगुरु अरज सुणो,
ज्यांरा गुण केता मुख गाऊं, परतिख नही पार न पाऊं हो, सदगुरु अरज सुणो. ६
तिकै दरसण देखण तोरा, मेहआगम चाहै मोरा हो, सदगुरु अरज सुणो,
किरपा तिहां पर कीजै, देशना ध्रमरी तिहां दीजै हो, सदगुरु अरज सुणो. ७
थे गिरुवा बहु गुणधारी, आ वीनती सुणज्यौ सारी हो, सदगुरु अरज सुणो,
विजैजिनेंद्र गछराया, अँतो **रूपविजय** गुण गाया हो, सदगुरु अरज सुणो. ८

॥ इत्यादि श्रीजीरी वीनती ॥श्री॥

इंडर आंबा आंबली रे, इंडर दाडम द्राख - ए देशी ॥

शांतनाथ प्रणमुं सदा रे, वलि सदगुरुना पाय,
गुण गावां गछपति तणा रे, आणंद अंग न माय
सुगुरुजी! थे मोटा महाराज. १

दरसण देखण ताहरो रे, ऊमाहो मुझ अंग,
अभिलाषा अहोनिष घणी रे, रूडो तुम्हथी रंग. २
सिंघ करै वीनती सदा रे, निपट सहू नर नार,
अरज तिहां री अवधारीये रे, सहुना कारज सार. ३
सोरठ देशै गछपति रे, विलंब रह्या केई वार,
एक वार मुरधर आवज्यौ रे, एह अरज अवधार. ४
भाव धरीनै भेटसां रे, परगट गछपतिपाय,
जन्म सफल ^{४८}जद जाणस्यां रे, हियडै हरख न माय. ५

रूपविजय कहै मांनज्यो रे, रीत अवस गछराय,
साची अरज छै साहिबा रे, कूड म जाणो काय. ६

॥ इति संपूर्णम् ॥

दुहा : दुखकाटण **दोलतविजय**, मुनिवर वडो महंत,
तपगछमै सोभै तरुण, तव गुण मुख नव तंत. १
मांणकविजय मोटो मुनि, गुणवंत जाण गरथ,
पैतालीस आगम पढै, ^{४९}आढा करै अरथ. २

रामविजय रिधवांटाँणौ, गुण गौतम गणधार,
जसधारी जतीयां सिरै, नित वंदै नर नार. ३
फतैविजय ब्रद^{४९} फाबतो, इल मोटो अणगार,
जीतसागर बहु जस लीयण, **क्षमाविजय** मुनिराय. ४
श्रेय इत्यादिक परिवारसुं, मांनीज्यो मनुहार,
त्रिविध त्रिविध कर मांनज्यो, वंदन वार हजार. ५

संवत् १८७६ व० मिति फागुण शु. १३

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

स्वसत श्रीमांगलौर वंदर सुभ सुथाने पूज प्रमपूज सरब ओपमा विराजमान, ०००
रांजमान, सोभवान, दीपवान, इत्यादिक वडी वडी ओपमा विराजमान,
सकलगुणनिधानं, सकलक्रियासावधानं, सकलनरंदपूजनीक, सकलभट्टारकपुरंदर,
सकलभट्टारक-सिरोमण, भट्टारकजी श्रीश्री१००८ एकहजार आठ श्रीश्री**विजेजिनंद-**
सूरस्वरजी च्रणायनं चरणकवलायनं सोझतथी सकल सिंघ लिखतं वंदणा १०८
एकसो आठ वार अवधारसीजी । अठा रा समाचार भला छै । आप रा सदा सुख
आरोग चाही जै । आप रा डीलां रा घणा जतन करावसी । जतन तो श्रीवीर
साहबजी करसी पिण श्रीसिंघनुं तो लिख्यो चाहीजे । अप्र च ^{४३}हमरके चोमासै
पुन्यास **रूपविजेजी** तुम्हे [मे]लीया सो जोग गीतारथ छे । प्रभाते पाटीये
वखाण-पछखाणविध-^{४३}वुहार मरजाद भली रीत साचवे छे । अणासू इसा ही ज
गितारथ जोग्य प्रमांणीक हुवै तिकांनु चोमासै मिलावसी । श्रीसिंघ री तो लिखण
रो कारण ओछे सो क्रिपा करने हमरको चोमासो इणांनु ईज रखावसी । अठां
लायक कामकाज हुवे सू लिखावसी । श्रीदेवजात्राये सिंघनुं याद करसी । समसथ
साधुवाने वंदणा वचावसी । सावक सावकणीया री वंदणा एकसो आठ वार
अवधारसी । म्हा रामदास री वंदणा एकसो आठ वार अवधारसीजी । सं. १८७६
रा मिति फागुण सुद १५ वार सोमदिने ।

॥ अथ श्रीगुरुराजविज्ञप्तिस्वाध्यायः लिख्यते ॥

॥ देशी - रसियानी ॥

श्री**विजैजिनेंद्र**सूरिंदजी सांभलो, तपगछना शिणगार, राजेश्वर,
दरसण देख्या हो सुख ऊपजै सही, जिम रवि कमल प्रकाश, राजेश्वर. १

सोझत नयरै हो पूजजी पधारीयै, श्रीसिंघ पूरो रे आस, राजेश्वर,
 सूरि गुण षटत्रीसे सोहता, मोहता नर नै नार, राजेश्वर. २
 बतीस [स]हसदेस सोहै भलां, आरिज^{४४} साढा पंचवीस, राजेश्वर
 तिणमै हो नगर सोझाली सोहामणो, ओपमा अलिका नगीस, राजेश्वर. ३
 राठोड वंसै हो राज करे तिहां, मांनसिंह मोटो भूपाल, राजेश्वर,
 जेहनी आण अखंडित निरवहै, षट दरसण प्रतिपाल, राजेश्वर. ४
 ऊंचा मंदिर सोहै अति भला, प्रोढी फबती रे पोल, राजेश्वर,
 जिननां मंदिर सुंदर सोभता, ओपै हाटांनी श्रेणी, राजेश्वर. ५
 सिंघनी वीनती सफल करो सही, पूरो मनरी रे कोड, राजेश्वर,
 सोझित नगर पधारो साहिबा, अरज करां कर जोड, राजेश्वर. ६
 सिंघनै उमाहो हो तुम्ह दरसण तणो, हुंस घणी मन माय, राजेश्वर,
 मधुकर समरै हो जिम केतकी भणी, जिम रेवा गज चाह, राजेश्वर. ७
 तप जप खप संजम करता थका, अप्रतिबंध विहार, राजेश्वर,
 जनमभूमिनै हो आवी संभारज्यो, मनगमती मनुहार, राजेश्वर. ८
 सिंघनी वीनती मानो गछपती, अवधारो अरदास, राजेश्वर,
 गुरू मनरूपविजय सुपसायथी, रूपनि पूरो रे आस, राजेश्वर. ९

अत्रत्य पं० रूपविजय ग०, पं० प्रतापविजय ग०, पं० कपूरविजय
 ग०, पं० मांनविजय ग०, पं० मांणिक्यविजय ग०, लघु शिक्ष गुलालचंद,
 गंभीरमल, लालचंद, फतैमल प्रमुखनी वंदणा १०८ वार अवधारसीजी ।
 समस्त ठाणु १३नी वंदणा पंचावसीजी ॥श्री॥

लिखितं पं० रूपविजयेन ।श्रीरस्तु ॥

* * *

(१६)

पाटण विजयजिनेद्धसूरिजीने मेडताथी श्रीसञ्जनो विनन्तिपत्र

प्रस्तुत पत्र पाटणमां बिराजमान विजयजिनेन्द्रसूरिजीने उद्देशीने मेडताना श्रीसङ्घे पाठव्यो छे । अन्य पत्रोनी जेम पत्रनी शरुआतमां पञ्चजिन तेमज यक्षराज माणिभद्रने वन्दन करवा पूर्वक कृतिनुं मङ्गलाचरण करायुं छे । पछी कृतिमां सौ प्रथम गुर्जरदेशनुं वर्णन करता कविए महाप्रभावक श्रीशङ्खेश्वर पार्श्वनाथप्रभुनी उत्पत्ति अंगेनो संक्षेपमां इतिहास आप्यो छे । ते तीर्थभूमिना नजीकना मोटा शहेर पाटणमां सूरिजीनी स्थिरता होवाथी हवेनी 'गझल'मां कविए अनुक्रमे पाटणनी बजारोनुं, व्यापारी जनसमाजनुं अने जैन-जैनेतर मन्दिरोनुं स्वरूप अद्भुत रीते चीतर्युं छे । उपाश्रय तेमज धर्मशाळांनी झीणामां झीणी विगत कविए मोतीदाम-छन्दमां आलेखी छे । गझलमां अने आ छन्दमां वपरायेला फारसी मिश्र बोलीना शब्दो परथी मोगल सल्तनतनी लोकमानस परनी अमीट छाप स्पष्ट जणाई आवे छे । गुरुगुणवर्णनारूप १०८ गुणोने चार ढाळमां वर्णवी कविए गुरुनी तुलना चन्द्र साथे करती एक देशीबद्ध ढाळनी रचना करी छे । गुरुभगवन्तने मेडता पधारवा विनन्ती करवा नगरवर्णनानी शरुआत कवि मेडतानरेश धनराजनी गुणवर्णनाथी करे छे । पछी शहेरना विस्तृत वर्णननी इच्छाथी कवि 'गझल' रूपे शहेरना बजारो, व्यापारीवर्ग, राज्यसत्ता, जैन-जैनेतर मन्दिरो, भौगोलिक स्थळो, उपाश्रयो विगेरे ऐतिहासिक बाबतो काव्यमां गुंथी छे । पत्रनी आ सामग्री, मेडताना इतिहासनी दृष्टिए घणी ज महत्त्वपूर्ण छे । पछीनी देशीमां पूज्य गुरुभगवंत साथे रहेता मुनिवृन्दने पोतानी साथेना शिष्यादिपरिवारनी वन्दना जणावी प्रत्युत्तर पाठववा विनन्ति करे छे । हवे पछी मुडीया लिपीमां सूरिगुणनी नोंध तेमज चातुर्मास तथा पर्युषणपर्व अंगेनी विगतो नोंधी छे । 'आदिनाथप्रभुना जिनालयनुं काम शरु छे' आ वात परथी कोई प्राचीन जिनालयनो जीर्णोद्धार के नूतन जिनालयना काम अंगे श्रीसङ्घे पत्रमां विशेष प्रकाश पाड्यो छे । पत्रान्ते गुरुभगवन्तनी देहशोभानुं वर्णन करी सूरिने मेडता चातुर्मास पधारवानी विनन्ति स्वीकारवा

कहे छे । साथे साथे सूरिदर्शननी उत्कण्ठा वर्णवी पत्र पूर्ण करे छे । कृतिकार तरीके विनयविजय, तेमना शिष्य कुंवरविजय तथा कस्तुरविजय एम त्रण नाम मळे छे. तेमां गुर्जरदेशनी तेमज ४४ थी १०८ गुणोनी रचना विनयविजयनी, १ थी ४५ गुणोनी गाथा कुंवरविजयनी तथा मरुधरवर्णनथी पत्रान्त विनन्ति सुधीनां पद्यो कस्तुरविजयना रचायेला छे. आम त्रण कविओनी रचना भेगी करी आ पत्र तैयार थयो होय एम बने. छतां आ बाबत पर विद्वानो पोताना विचारो जणावे ए ज आशा.

शब्दार्थ

- | | |
|--|---|
| १. उबारण = बचावनार | २१. पलमादार = ? |
| २. हेवा = इच्छा | २२. चरणे = चारण (?) |
| ३. निवाण = जळशय | २३. चित्राम = चितरामण |
| ४. वरनवर = श्रेष्ठमां श्रेष्ठ | २४. उस्तादइ = उस्ताद = होंशियार
माणस |
| ५. सोबायत = ? | २५. उमया = पार्वती |
| ६. भायत = ? | २६. मीर = पैसा |
| ७. नैना = नयन | २७. रत्त = रक्त |
| ८. मुखमल = मखमल | २८. जोट = जोड |
| ९. सावटु = रेशमी जरियान वस्त्र | २९. नेवज = नैवेद्य |
| १०. मुलतान = देशविशेषनुं वस्त्र | ३०. रिछयाल = रक्षक |
| ११. गुदरी = गुजरी, बजार | ३१. उन = तेमने |
| १२. जुरत = जोडावुं | ३२. छेलां = कामीजन |
| १३. बज्जाज = कापडियो | ३३. भूह = भ्रमर |
| १४. सखरा = सुंदर | ३४. सावक = ? |
| १५. सराफ = नाणां धीरनार | ३५. हीरांन = हेरान |
| १६. दमडा = द्रम्म, एक चलण | ३६. वेसर = नथ, वाळी |
| १७. ढेर = ढगलो | ३७. फूटरलोक = सुंदरमनुष्य |
| १८. मुंमन = मेमण, मुसलमानोनी एक जात | ३८. डार = ? |
| १९. खरादी = लाकडा, हाथीदांत वगेरेनी कोतरणी करनार | ३९. वाघ = वस्त्र |
| २०. जरदार = भरतकामवाळुं वस्त्र | ४०. हासल = दाण, कर |
| | ४१. जिहांक = ज्यां |

- | | |
|--|--|
| ४२. जगाइत = जकात (?) | ७१. दूणै = बे गणा |
| ४३. तिहांक = त्यां | ७२. फेर = फरक |
| ४४. मेंगल = हाथी | ७३. भमटा = भ्रमर |
| ४५. चखांल = ? | ७४. हासलडांण = कर, दाण |
| ४६. सुजत्थ = ज्यां (?) | ७५. पार्षेक = नजीकमां |
| ४७. विधात = विधाता | ७६. पसार्या = दवावाळा (?) |
| ४८. सुहत्थ = स्वहस्त | ७७. माजनी = मांडणी, उंचाइ (?) |
| ४९. जकमंध = ? | ७८. चांतरो = चोतरो |
| ५०. उदोत = उद्योत | ७९. कबज = कब्जे |
| ५१. हदोहद = मनोहर (?) | ८०. मैजीद = मस्जीद |
| ५२. पाधर = सीधा (कर्या), सुधार्या | ८१. अैन = अन्न, अनाज |
| ५३. सामुहो = सामो | ८२. सायरडांण = सागर |
| ५४. घरासिया = गरासिया | ८३. पव्वे = वज्रथी (?) बनेलो |
| ५५. मोडखांप = मुगटना हीरा (आभला जेवा (?) | ८४. ओदादार = अधिकारी, होदादार |
| ५६. दगल = यूथ(?) | ८५. सैर = शहेर |
| ५७. दफै = विखेरी नाखे | ८६. किरमची = एक जातना कीडा |
| ५८. त्रपमांन = सूर्य | ८७. दांती = हाथीदातनी नकशी करनार |
| ५९. घन्न = मेघ | ८८. कंसर्या = कंसारा(?) |
| ६०. तडदांह = विजळी (?) | ८९. दिसावर पीठ = अन्य देशनी पेढी |
| ६१. भलक्कत = भालो | ९०. अत = अर्हि |
| ६२. सेल = एक प्रकारनो भालो | ९१. रंगरेज = रंगारा |
| ६३. नाज = नाद | ९२. मूंठ्या = हाथनुं एक प्रकारनुं घरेणुं |
| ६४. बुगपंत = बगलानी पड्क | ९३. ठंठारा = कंसारा(?) |
| ६५. नगीना = [शहेररूप] झवेरातनी कारीगरी | ९४. उमेर = उमेद, इच्छा |
| ६६. नोख = टोच, अणी | ९५. जरायत = वरसादना पाणीथी थती खेती |
| ६७. रेजावासता = रेशमी वस्त्र | ९६. जारत = दर्शन |
| ६८. जरतास = झरीयान | ९७. झंगीक = मोटुं |
| ६९. कटलो = कोटवाळ | ९८. संगीक = मनोहर |
| ७०. पंच = महाजन | ९९. पाती = पत्र |
| | १००. सुगटी = सारा घाटवाळी |

१०१. डोल = ?	१०७. छमछरी = संवत्सरी
१०२. पना = ?	१०८. पुडी = पुरी
१०३. सप्रवारा = सपरिवार	१०९. चांगो = सारो
१०४. च्रणांन = चरणान्, चरणो	११०. सेरोवग = श्रावक
१०५. रजाबंध = राजी (?)	१११. सेरोवका = श्राविका
१०६. पडकुणा = प्रतिक्रमण	११२. आछो = अच्छो - सारो

*

॥ ६० ॥ श्रीइष्टदेवाय नमः ॥ श्री जिनाय नमः ॥ अथ श्रीलेखपद्धति लिख्यते ॥

श्रीमदादिनाथ-शान्तिनाथ-नेमनाथ-पार्श्वनाथ-माहावीरेभ्यो नमः ॥

स्वस्ति श्रीवृषभेश्वरं जिनवरं शत्रुञ्जयोद्धारकं,
नाभेयात्मजमादिनाथजिनकं भरतादिकानां हि च ।
पितरज्येष्ठतरं महासुखकरं संसारिणां जीवनं,
धर्मिष्ठं सुखदं नमामि सततं भक्त्या नमस्कृत्य च ॥१॥
श्रीशान्तिनाथं सुखदं नराणां, पारापतायाभयदं जिनेन्द्रम् ।
खलु क्रिपाभि सुरप्रेक्षणार्थं, विवर्णित वज्रिसभां नमामि ॥२॥
स्वस्तिश्रीजदुवंसभूषणमणिं श्रीनेमिनाथप्रभू(भुं),
दुष्टघ्नं पशुमोक्षणं कुलरविं श्रीकृष्णरामार्चितम् ।
श्रेष्ठं मोहमयीविकारहरणं राजीमतीभर्तृकं,
वन्दे भव्यतमसमुद्रविजयस्याङ्गोद्भवं स्वामिनम् ॥३॥
स्वस्तिश्रीशिवमार्गदं गुणवतां पूजाधिकानां हि च,
दुष्टात्मानमिदं च कूर्मसठकं ज्ञानप्रदं पावनम् ।
नासालग्नजलप्रवाहसहनं नागस्त्रियाऽभिस्तुतं,
वन्देऽहं क्षमिनं क्रियासु कुशलं श्रीपार्श्वनाथं जिनम् ॥४॥
स्वस्तिश्रीत्रिसलात्मजं जिनवरं सिद्धार्थवंशोद्भवं,
भूपाल(ला)ङ्घितपादपद्मयुगलं सिद्धान्तशास्त्रार्थदम् ।
वन्देऽहं चरमं जिनं सुखकरं श्रीवर्धमानाख्ययं,
नित्यैकाग्रमनः प्रसन्नसुहृदा ध्यातं परं पारगम् ॥५॥

॥ अथ माणभद्रजीरी स्तुतिलिख्यते ॥

श्रीमाणभद्रं सुरयक्षराजं, सौख्यप्रदं विघ्नहरं नराणाम् ।
जिनेन्द्रसूरिर्जयकारि नित्यं, रिपुक्षयं सङ्घसुखं प्रणोमि ॥६॥

॥ इति श्रीसंस्कृतमयी पञ्चपरमेष्ठीनां स्तुतिः ॥ अथ भाषामयी पञ्चपरमेष्ठीनां स्तुतिः ॥

दूहा : स्वस्तिश्री प्रभु आदिजिन, धर्म तणो दातार,
युगलाधर्म निवारणो, ते वंदु करतार. १
स्वस्तिश्री जिन सोलमो, जीव उबारणहार,
ते प्रभु समरुं नित प्रतै, कर जोडी करतार. २
यादवकुलनो सेहरो, नेमिनाथ महाराय,
ते वंदु आणंद धरी, राजीमतीवर राय. ३
अश्वसेननृप कुलरवि, वामाउदरे हंस
पार्श्वनाथ नित प्रणमतां, हुवै ज कुलअवतंस. ४
सिद्धारथकुलदीवलो, त्रिसलामात मल्हार,
वर्धमान जिन वांदता, थायै धन श्रीकार. ५

॥ अथ वीरस्तुतिः ॥

दूहा : माणभद्र देवत भलो, अवर देव सिरताज,
उडुगणमें ससिदेवता, तिम सोभत यक्षराज. १
गुर्जर देसें दीपतो, श्रीसंखेश्वरपास,
मही[य]लमां महिमा अधिक, पूरें सहुनी आस. २
मूरत तणी महिमा अधिक, कहता नावै पार,
केइ तर्या जिनचरणथी, के भवजलं तरस्यै पार. ३
सेतुबंध जिननामथी, जलधि विषै जिम रांम,
जीत लई लंका पुरी, सीता युत निज ठांम. ४
युध कीयो यादवपति, जरासंधसुं जोर,
विद्या जरा सवि मिट गइ, मेली थी जिण जोर. ५
नेमि तणा वयणै करी, आराध्यौ जिनराय,
दीधी आंण पदमावती, मूरति मनोहर माय. ६

श्रीसंखेसर परसादथी, वासुदेवपद पाय,
आज लगण ए मूर्त्तिनो, महिमा सुरगण गाय. ७

॥ ढाल ॥ नणदलनी ॥

गुर्जर देस छै वारु, तिहां सेहर घणा छै सारु हो, भवियण हिवै सुणो,
तिहां पाटणपुर अति दीपै, सुरनगरीनें अति ही जीपै हो, भवियण हिवै सुणो. १
तिहां श्रीपास विराजै, जस महिमा अधिकी छाजै हो, भवियण हिवै सुणो,
जस सुरपति गुण गावै, जस नर नारी मिलीनें आवें हो, भवियण हिवै सुणो. २
असुर विद्याधर सगला, सुरपात्र रचै तिहां खेंला हो, भवियण हिवै सुणो,
त्रिण भुवन[मां] पूजाणी, प्रभु मूरति सुरतरुखांणी हो, भवियण हिवै सुणो. ३
एहवा जिनने वांदीजै, नरभवनो लाहो लीजै हो, भवियण हिवै सुणो,
प्रभु मूरति मोहनगारी, निरख्यांथी लागे अति प्यारी हो, भवियण हिवै सुणो. ४
इह भव जिनपदसेवा, परभव पण एहज हेवा हो, भवियण हिवै सुणो,
तिम वली तारंगो सोहै, भविजनना चित अति मोहें हो, भवियण हिवै सुणो. ५
जैन धर्मनो धाम, तिहां सरसा सगला ठाम हो, भवियण हिवै सुणो,
तिहां वृद्धनगर छै वारु, पाटणनगर अति सारु हो, भवियण हिवै सुणो. ६
वन उपवन आराम, तिहां देवरमणना ठाम हो, भवियण हिवै सुणो,
नदीय निवाण सुचंगा, जिण देख्या अतिहि उमंगा हो, भवियण हिवै सुणो. ७
धनि ज[न] जिहां पूरा, तिहां धर्मस्थितिमें सूरु हो, भवियण हिवै सुणो,
पभणी पांचमी ढाल, विनयविजय सुविसाल हो, भवियण हिवै सुणो. ८

॥ अथ गुर्जर देसमांहै पाटणनगरवर्णनम् ॥

दूहा : प्रथम गिरा गुरुदेव नम(मुं), तिम वलि जिन वर्धमांन,
गजल चाल पाटण वरन, चरन वरनवर आंन. १
गो सम गुर्जर धर नमय, पट्टण सहर प्रसिद्ध,
कवरसना ओपम कहै, सुरपुर आभा लिद्ध. २
सोबायत भायत सबै, हामो गायकवाड,
राजनीत अति राजतो, प्रजा सबै प्रतिपाल. ३

॥ गजल चाल लिख्यते ॥

पट्टण सोहते अति अभिराम, रसना कैहैत है गृहधाम,
नगरी अमरथी छिव जोर, असा सिहर नही कोइ ओर. १
वरणन करत हु बाजार, बैठै सेठ साहुकार,
अभिनव सोभती हटश्रेण, आवै लोक सोदा लैण. २
मुलमुल देख मैहमुंदीक, नैनां होत चकचुदीक,
मुखमल सावटु मुलतांन, सोदा ग्रहैता तोतान्. ३
सुनवर जालियां अरु गोख, चोहटै बीच सुंदर चोक,
गुदरी जुरत है बहु लोग, तिहां मनमुज देखवा अतिजोग. ४
आवी बैठते बज्जाज, सोदा करत है सिरताज,
सखरा सोभते सराफ, दमडा परखते दिल साफ. ५
बैठै पांन तंबोरीक, भरीयां खूब चंगेरीक,
छाबा फूलमाला हाथ, भमर लूब ते तिण साथ. ६
घेवर लाडूवांके ढेर, चाखै तनकतोहवे जेर,
मुंमन खरादीकी हाट, पटवा बैसते घण थाट. ७
सोना घरत है सोनार, दुपटा ओढणें जरदार,
तंबू तांनीया मनिहार, बेचत हार पलमादार. ८
चातुरहद चितारेक, कांसी घडत कंसारेक,
चरणें वरणमै छत्रीस, सोहै लक्षणें बत्रीस. ९
वरनुं सेंहरके आवास, आछी कोरनीं हें जास,
तोरण जालिया फुनि गोख, नाटारंभकी है नोख. १०
सारे सोहते चित्राम, कीने उस्तादइ कांम,
लिछमनकुमर सीताराम, नाटारंभ के चित्राम. ११
रावण रूप मनमोहेंक, दस सिर वीस भूज सोहेंक,
मंडे रूप हें माहादेव, उमया संग हें नितमेव. १२
होतें वाघ अतिभारीक, अंबा रुंख की तारीक,
मंडे काबली बहु मीर, खेचें लाल तरगस तीर. १३

बुलबुल बाज तीतर मोर, मंडे सावनुं घनघोर,
 बहुते जैनके प्रासाद, करते गगनसेती वाद. १४
 भेट्यां टलत हैं विखवाद, वाजत संख घंटानाद,
 जीजां झालरां झिणकार, धपमप मादला धौंकार. १५
चिंतामण पास चिंता चूर, देखत होत दालिद दूर,
 उंचा देहरा असमांन, प(पो)ढो हेम-मेरु जांन. १६
 सुंदर कलस धजादंड, एहवी छिव नही ब्रह्मंड,
 चातुर लोक हैं अति चूप, करतें आरती अनूप. १७
 कुमति छोडके निज मत्त, दरसण देख रहतें रत्त^{३७},
 वरनुं वेस हनुमांन, धरते लोक जाका ध्यांन. १८
चंडी कालिकाके कोट, सोहते सुरनराकी जोट^{३८},
 पैहरण फुलकी हैं माल, आंनन सोभतो विकराल. १९
चोसठ सक्त बावनवीर, पेहरें हार लडकत हीर,
 जागत-जोत चंडी-थान, ^{३९}नेवज लावते बहुमांन. २०
 झणणण झालरां झिणकार, होते नोबतां ठिणकार,
 माता सेंहरकि ^{४०}रिछपाल, मेटें भ्रम मायाजाल. २१
 थानक बहुत **गोगा पीर**, महिमा बहुत **खेतल वीर**,
 वनिता खूब है वैश्याक, कांमी चित्त ^{४१}उन खोज्याक. २२
 नीके लागणें हे नेंण, बोलें मुख्य मधुरें वेंण,
 मुखभर चावते हैं पांन, ^{४२}छेलां मार ^{४३}भ्रूंहेके बान. २३
 ओढण दिखणीके चीर, नैनां ^{४४}सावकाको तीर,
 भ्रकुटीयुगल कोकबांण, आसक होत है हीरांन^{४५}. २४
 चालत हस्तनीकी चाल, सुंदर सोहती वाबा(चा)ल,
 पांनी भरत है पनीहार, दीसत रंभकें उनीहार. २५
 घमके घुघरा घमरोल, रणझण वाजती रमझोल,
^{४६}वेसर वेस मोती भाल, सोभत बीज ज्यां भलकार. २६
 देख्या **सहसर्लिगा** घाट, जुडीया नारीयांका थाट,
 अवर थान है चंगाक, देख्या होत मन रंगाक. २७

मांटीमरद हैं मुंछाल, ^{४७}फूटरलोथ(क) ज्यां फूंदाल,
 सादी बांघ है सिर पाघ, सुधै ^{४८}डार पेंहरण ^{४९}वाघ. २८
 राजै राज **गाइकवाल**, छाजै नीत सखरी चाल,
^{५०}हासल चूकते ^{५१}जिहांक, ^{५२}जगाइत लेत हैं ^{५३}तिहांक. २९
^{५४}मेंगल मदसु झरतेक, देखी लोक थरहरतेक,
 सुंदर फोजकें सिणगार, सोभें राजके दरबार. ३०
 हयवर करत हैं हिंसार, तेजी खूब हैं तोखार,
 कबी कूदणा केकाण, साचा पवनवेगी जांण. ३१
 बैठत आप मिल दरबार, मिलते लोक तहां हज्जार,
 कालीकोट हैं वीरांण, देखें अरी छंडे प्रांण. ३२
 वरणें बाग वर वाडीक, नीकी सोहती झाडीक,
 बाहिर देव देवी थान, जांनों सहरकें उनमान. ३३

दूहा : तिण सेंहरें सोभत भलो, किलो मनां क्रम मेट,
 उपासरो श्रब सुनन ध्रम, श्रमण साधू जिन भेट. १
 उभें ^{५५}चखांल खचकित हैव, जाली गोख सुधाम,
 ते रसना पावन भणी, कहूं नाम अभिरांम. २

॥ अथ छंद जात मोतीदाम ॥ उपाश्रयवर्णनम् ॥

बन्यो अति सुंदर देवविमांन, पयोधर परीव सुसीम पिछांन,
 थुडी तस नीम पताल ^{५६}सुजत्थ, घड्यो गजधार ^{५७}विधात ^{५८}सुहत्थ. १
 किनां सुर-थान हर्यो ^{५९}जकमंध, किनां ग्रहधाम लियो भुजबंध,
 किनां अलकान्नपनो ग्रहकोस, लख्यो इसडो भल आलय जोस. २
 वदै पृथवी जस पोलीयो नांम, फबै न्ख(व?)खंड सुपोलि भिरांम,
^{६०}उदोत अपार अछै ध्रमसाल, उभें पट देख घणो सुविशाल. ३
 तिहां मुनि बैठण थान सुखद, झरोख गवाक्ष बनें ^{६१}हदोहद्द,
 वडा जसवंत रहेज महां(हं)त, सबै श्रुतबोध अभ्यास करंत. ४
 वसै **यखराज** लियां निज साज, खरो अरिखंड तपागछराज,
 जिहां गणधीस तपें गछईस, विराजत भांनुं समो निसदीस. ५

उभें कर जोड करत आवाज, अहो! गछराज सुणो माहाराज,
रहै सब साह सदा कर जोड, वदै कवतेह तणा जस कोड. ६

॥ अथ गुरुवर्णनम् ॥

दूहा : तिण थानिक सोहत सिरें, सुधर्म जंबु गणधार,
पट्टपरंपर अनुक्रमें, रत्नाकर गुणधार. १
देव प्रभु रयणायरु, खिमा-दयाभंडार,
धर्ममूर्ति धरणीतले, धर्मसूरि गणधार. २
तास पट्ट पूर्वाचलें, उदयो जेम दिणेंद,
अधिक तेज वचने सरस, सोहै विजयजिनेंद्र. ३
पुण्यप्रतापी प्रबल छै, जस गुण अधिक विलास,
पट्टण सेंहरे सोहता, वांणी अधिक रसाल. ४
तेह तणा गुण वर्णवुं, मुझ मतिने अणुसार,
जीव अधिक जो वर्णवइं, तो ही न पावै पार. ५
अष्टोत्तर गुण वर्णवुं, संख्या कहुं सुणाय,
श्रोताजन सवि सांभलो, दिन दिन दोलति थाय. ६

॥ अथ गच्छाधिराजवर्णनम् ॥

॥ उंबरीयोनें गाजै हो भटियांणी रांणी वड चूवै - ए देशी ॥

सकल सूरीश्वरराया हो, मन भाया साहिब माहरां, प्रणम्यां पातिक जाय,
देख्यां दरसण निजरें हो, पामें परमाणंद ज्युं, दिन दिन अति सुख थाय. १
सकल.....

एकविध पुण्य प्रभावें हो, दुविध धर्म भाखै सदा, तीन गुप्तना जांण,
च्यार कषायना जीपक हो, तिम पंच सुमतिधारी सदा, षट भाषा सवि जांण. २
नय सातेना चाही हो, मदचूरक अष्ट महीधरा, नवतत्त्वभाषक सूरि,
दसविधि धर्म प्रकासक हो, अंग इग्यार भाखो मुदा, बार उपांग भरपूरि. ३
काठीया तेरना जीपक हो, चउद विद्याना सायरु, पनरे करमादानं,
तेह तणा उपदेसी हो, सोल कला तिम चंद ज्युं, ओपो अधिका रांण. ४

सतरे भेदे संजम हो, पालक अतिहें प्रेमसुं, सील सहस्स अष्टांदस जांण,
उगुणीसैं अध्ययने हो, ज्ञातासूत्र वखांणता, वीस समाधिना ठांण. ५
एकवीस भेदें सबले हो, साधु तणा भाख्या जिके, तेह तणो उपदेस,
परिसह बावीस जीपक हो, चित चो(त्रे)वीससुगडांगना, अज्झयणा कहो ईस. ६
चौवीसी नित वंदो हो, भावो पचवीस भावना, छव्वीस दसाकप्प जांण,
गुण सत्तावीस भाख्या हो, साधु तणा कह्या जिनजी, तेहना तुमे छो जांण. ७
प्रभु तुम ही ए जांणो हो, अठवीस आचार कल्पना, उगुणतीस पापश्रुत ईस,
तीसैं भेदें मोहनी हो, चोथो अंग कही खरी, भाषक हो जगदीस. ८
सिद्ध तणा इकतीस हो, गुण भाख्या छै आगमै, भाषक हो मुनिराज,
बत्तीस जोगसंग्रह हो, धारक छो प्रभुजी तुमे, पालक छो गुरुराज. ९
गुरुनी साखै भाखी हो, तेत्रीसैं आसातना, तेहना प्ररूपक ईस,
अतिसय छै श्रीजिनना हो, चोत्रीसै करी सोहता, वांणी गुण पैत्रीस. १०
छत्रीस अध्ययनना हो, उत्तराध्ययने भाखीया, तेह तणा तुमें जांण,
गणधर सेंत्रीस भाख्या हो, कुंथुनाथ जिन तणा, भाख्यो श्रीजिनभांण. ११
पार्श्वनाथजी जांणो हो, सहस अडत्रीसे आर्यका, उत्कृष्टी गुणखांण,
एहवा श्रीनेमिनाथें हो, ओहीनांण प्ररूपीया, उगुणचालीससैं मुनि जांण. १२
बावीसमा श्रीजिननी हो, सहस चालीसे साधवी, तेहना जांण छो देव,
इकवीसमा नमि जिननी हो, इकतालीस सहसैं साधवी, भाखी छै जिनदेव. १३
वीर जिणेसर पाली हो, दीक्षा लोचनयुग(४२) सही, वर्ष मास षट जांण,
तेहना तुमे उपदेसी हो, वली पुण्य-पापविपाकना, अध्ययन त्रयालीस जांण. १४
जिनराज तणा गुण गाता हो, सुख-साता सेवकनें सदा, पहली ढाल रसाल,
पंडित विनयनें सीसै हो, कवरै पभणी मुदा, नित नित मंगलमाल. १५

दूहा : दक्षिणदिसि धरणेंद्रना, लाख चम्मालीस धाम,
तेहना थे सुविशेषथी, भाषक जगगुरु स्वामि. १
लाख जोयण पैताल छै, च्यार भेदना जांण,
सुर नर तिरय निर्वाणना, तेहना प्रभु छो जांण. २
ब्राह्मी लिपी मांहै कह्या, छयालीस अक्षर संख,
ऋ ऋ लृ लृ ए ऐ, षट अक्षर नही संख. ३

आसाढी पूनिम दिनें, कर्क संक्रांतनें मांण,
सैतालीस लक्ष योजन अधिका, रविगत सर ते जांण. ४
धर्मनाथ अरिहंतना, गणधर अडतालीस,
तेह तणा उपदेसीया, गछधुरंधर ईस. ५
तेरेंद्रीनो आऊखो, अहोरति गुणपंचास,
तेह तणा जांणक प्रभु, सुणवा गुरुमुख आस. ६
मुनिसुव्रतस्वामी तणी, साध्वी संख्या जांण,
सहस पंचास जगगुरु कहै, समुवयांग प्रमांण. ७

॥ ढाल - दूजी ॥ देव तणी ऋद्धि भोगवी - ए देशी ॥

चमर असुरनी सुहम सभाना, एकावन सत थंभा,
तिम वली बलिंद्रनी, एकावन सय थंभा रे. १

सूरिपति भाखै गुरुउपदेस,

सुर नर असुर विद्याधर सुरपति, वांछै वांणी सुविसेश रे [ए आंकणी]
मोहनी कर्मना नांम कह्या छै, बावन्न संख्या जांण,
तेह तणा उपदेसी छे प्रभु, कुमति मिटावण भांण रे. २ सूरिपति.....
त्रेपन्न ऋषि श्रीवीरना, पोहता अनुत्तरविमाने,
संवर परिया महा तपस्वी, तेहना छे अनुमांन रे. ३ सूरिपति.....
अवसर्पिणी उत्सर्पिणी कालें, चउपन्न पुरुषरतन्न,
तेहो तणी उत्पत्ति थाइं, जांणक छे सुविदिन्न रे. ४ सूरिपति.....
मल्लिनाथ अरिहंतनो आयु, सहस पंचावन वरस,
पूरण भोगवी सिवपद पोहता, जाणक छे गुरु सरस रे. ५ सूरिपति.....
जंबूद्वीपमांहे शशि दोय परिकर, उडगन छप्पन जांण,
जंबूद्वीपपन्नतीमांहे, तेह तणो परिमांण रे. ६ सूरिपति.....
मल्लिनाथना मनपजवनांणी, सत्तावन सय मांन,
तेह तणा उपदेसी साहिब, परम-गुणागर जांण रे. ७ सूरिपति.....
पढम दोय तिसु पंचम पुढवी, मिलीया निरयावासा,
लाख अठावन सगला मिलीया, जांणक छे गुरु भासा रे. ८ सूरिपति.....

मल्लिनाथना ओहीनांणी, गुणसठिसयनो मांन,
विविध प्रकारें तेह प्ररूपक, अधिक दीप गुरुग्यांन रे. ९ सूरिपति.....
विमलनाथनो देहप्रमांण, साठ धनुष उंच जांण,
तेह तणा आराधक स्वामी, निरुपम निरमल नांण रे. १० सूरिपति.....
कनकाचलनुं पेंहलें कांडै, जोयण सहस इगसठि,
उंच पणें ते अधिको जांणो, भाषक श्रीगुरु इठ रे. ११ सूरिपति.....
बासठि विमांन पहिलें प्रतरें, संख्यानो परिमांण,
तेह तणा जांणक छे गुरुजी, दिन दिन थाओ कल्याण रे. १२ सूरिपति.....
ऋषभनाथनें त्रेसठ पूर्व लक्षौ, माहाराज्य पदनी पांमी,
कुमरपणुं पिण सहित ए जांणो, भाषक गुरु सिर नांमी रे. १३ सूरिपति.....
चमरेंद्रनें सामानिक देवता, चउसठिसहस सूरा,
तेह तणा भिन्न भेद वखांणो, गिरा-गुणें करी पूरा रे. १४ सूरिपति.....
जंबूद्वीपमांहे अधिका सोहै, रविमंडण पैसठि,
जांणक छे तुमे गुरुराया, पभणें विनय बोल उत्कृष्टो (उक्किट्टि रे. १५ सूरिपति.....

दूहा : मनुष्यक्षेत्र मांहि अधिका, चंद सूर भासंत,
छासठि संख्याइं सहित, भाषक श्रीगुरु संत. १
शुद्ध समकित जे हुवै, सतसठि गुण करी पूर,
देव चलायो नवि चले, उपदेसी भरपूर. २
पछिम पूरब धातकी, अडसठि विजय वखांण,
उत्कृष्टा जिनवर तिहां, अडसठि संख्या जांण. ३
मोहनी कर्म वर्जी करी, कर्म प्रकृति नित सात,
उगणोत्तरि संख्यया कही, भववारक गुरु त्रात. ४
कर्म मोहनी अधिकतर, सीत्तर कोडाकोडि,
सागर संख्या जांणीयै, न करें एहनी होडि. ५
अजितनाथ अरिहंतनी, एकोत्तरि पूर्व लाख,
गृहस्थवास वसी करी, समवायांगे साख. ६
कला बहोत्तरि पुरुषनी, तास तणा भंडार,
भाखो छे भविजन भणी, साख्र तणें अणुसार. ७

॥ ढाल - तीजी ॥ सहेली हे आंबो मोरीयो - ए देशी ॥
 बीजु बलदेव विजय ते, पाली आयु हो तिहोत्तरि लख वर्ष कै,
 सिद्ध थया सिवपद लही, वली आवस्ये कें हो मतिभेद छै वर्ष कै. १
 सूरीश्वर इम ते उपदिसै, भविजननें हो भाखैं छै भेद कै,
 श्रोता श्रवण देई सुणें, सुणवानी हो मनमांहि उमेद कै. २ सूरीश्वर.....
 वीरना बीजा गणधरु, अग्निभूति हो चोहोत्तरि वास कै,
 आयु पालीनें सिद्ध थया, इम जंपै हो गुरु वांणी उल्लास कै. ३ सूरीश्वर.....
 नवमा सुविधि जिणेसरु, केवलि तेहना हो सय पंच्यत्तरि जाण कै,
 मुगतमहिलमै जइ वस्या, प्रभु पाखै हो भवियणनें वाण कै. ४ सूरीश्वर.....
 भवनपति विद्युत तणा, दक्षिण उत्तर हो मिलिनै थया धाम कै,
 लाख छहोत्तरि सवि कह्या, गुरु भाखै हो निश्चयथी नांम कै. ५ सूरीश्वर.....
 गदतोय तुसिया देवता, परिवारै हो तेहनो छै अतीव कै,
 वरस सतोत्तरि आऊखो, सिवरमणी उल्लास कै. ६ सूरीश्वर.....
 वीरनो आठमो गणधरु, अकंपित हो अभिधान छें जास कै,
 अठोत्तर वरसनो आऊखो, सिवरमणी हो पोंहता छै वास कै. ७ सूरीश्वर.....
 रयणप्रभा पुढवी तणो, धोचर मांह(?) हो उगुण्यासी जेह कै,
 जोयण सहस मिल्यां वली, अबाधा हो विच अंतरु एह कै. ८ सूरीश्वर.....
 तीर्थकर इग्यारमो, असी धनुषनो हो उंचो देहमांन कै,
 पहिलो तृपृष्ठ वासुदेवनो, देहमांन हो इक्यासीनो मांन कै. ९ सूरीश्वर.....
 मनपज्जवनांणी तेतला, गुरु जंपै हो भवियणनें विलास कै,
 श्रीगुरुना चरण ग्रह्या थकां, सुभ गतिमां हो मूंकै भवि तास कै. १० सूरीश्वर.....
 देवानंदानी कूखमै, रह्या वीरजी हो संख्या ब्यांसी जाण कै,
 अहोरतो तिहां अतिक्रमी, कूखै पोहता हो त्रिसलानें ठांण कै. ११ सूरीश्वर.....
 त्रासी दिवसें जइ वस्या, सिद्धारथ हो घरणीनें उल्लास कै,
 गर्भसंहार समें भण्यो, भविजननें हो गुरु भेदप्रकास कै. १२ सूरीश्वर.....
 लख चौरासी जिन कही, जीवायोनी हो पुढवी आदि जाण कै,
 मनुष्य पर्यते सवि मिली, गुरु जाण कें हो संख्याना प्रमांण कै. १३ सूरीश्वर.....

आचारांगसूत्र चूलिका, तिण सहित हो उदेसणकाल कै,
 पच्यासी उदेसा भाखीया, श्रीप्रभुजी हो भवि जननें विलास कै. १४ सूरीश्वर.....
 सुविधिनाथ अरिहंतनें, गणधरनो हो छ्यासीय मांन कै,
 गुणविचार कह्या सही, विनयविजयनें हो नित प्रत सुख जाण कै. १५

दूहा : ज्ञानावरण अंतरायनी, दुविधि कर्म में टाल,
 षट कर्म उत्तर कही, सत्यासी संभाल. १
 चंद्रतणा परिवारमें, अट्यासी ग्रह जाण,
 नांम कह्या सिद्धांतमें, प्रभु ते अधिक वखांण. २
 शांतिनाथ श्रीजिनतणी, सहस नव्यासी जाण,
 एकउंणी नवसै अधिक, प्रभु जाणें परिमांण. ३
 देहमांन शीतल तणो, नेऊ धनुष सविसेष,
 अजितनाथ अरिहंतना, गणधर नेउ असेष. ४
 कुंथुनाथ भगवंतनें, ओहीनांणी परमांण,
 एकाणुं सय मुनिवरा, नीतिखेत्रना जाण. ५
 गणधर गोतम अधिकतर, लब्धि तणो भंडार,
 बाणु वर्ष आयु भोगवी, पोहता मोक्ष-दुवार. ६
 शांतिनाथ अरिहंतना, त्राणुं सय मुनिराय,
 चउद पूर्वधारी थया, भाखै गुरु गुणराय. ७

॥ ढाल - चउथी ॥ नदीय जमुनांकै तीर, उडै दोय पंखीया - ए देशी ॥

अजितनाथ अरिहंतने, ओहीनांणी संपदा,
 चोराणुं सय मुनिराज स्तव्या सुख संपदा;
 वीर जिणंदना सीस ते मोर्यपुत्र जांणीयइ,
 वर्ष पंचाणु आयु भाख्यो सूत्र आंणीइ. १
 वाउकुमारना लाख छिन्नु घर सवि कह्या,
 दक्षिण-उत्तरश्रेणि-भवन सास्वत रह्या;
 तेह तणा उपदेशकै दाता श्रीगुरु,
 श्रीजिनेंद्रजी गुरुरायनें नमस्कृत्य हुं करूं. २

इकवीसमा नमिनाथने वारें दसमो थयो,
हरिषेण चक्रवर्ति सत्ताणुं सय पद जयो,
रेवती नक्षत्र आदि येष्टा ते तिम गुणी,
तारा संख्या जाण अठाणुं इम भणी. ३
मेरु पर्वत भूम जोयण निनाणुं अछै,
ऊंचो अधिको सहस संख्या सास्त्रमै अछै,
तारा संख्या एम नक्षत्रे सतभिखा,
तेह तणो परिमाण भाखै गुरु जिन सारिखा. ४
बीजे देवलोकै भूमि ए अधिकी दोय सै,
तेह तणो परिमाण भाखें गुरुजी तिसै,
जंबूद्वीप दोय अधिक दोयसै सही,
तीर्थ तणो परिमाण कहयो क्षेत्रथी लही. ५
प्रकृत कही अभिधाननी अधिक तीन इकसते,
कर्मग्रंथमें एह संख्या छै सही मतें,
च्यारे दिसिना च्यार विमान अनुत्तरें,
भाखै छै गुरु भेद सिद्धांतने अनुसरें. ६
सहस्रारे सुरलोकनी संख्या सहि मनै,
पंच अधिकने एकसो सास्त्रमै सुभमतै,
बोलै गुरु मुखबोल भविक श्रुत सांभलें,
भिन्न भिन्न करि भेद कहै ज्युं आपलै. ७
छठो सत्यप्रवाद नामै पूरव कह्यो,
तेह तणो परिमाण एककोडि रस(६)पद लह्यो,
मज्झम ग्रैवेक चैत्य संख्या किण पर कही,
अधिक सप्तने एकसो सास्त्रथी लही. ८
सूरीश्वर **जैनेंद्र** सदा अहिनिंसि जपै,
सूरिमंत माहामंत्र जप्या सवि क[रम खपै],
अष्टोत्तर जपमालकै मणीयै सिद्ध करी,
पामै ते गुरुराज अष्ट सिद्धनें इम वरी. ९

सोहम-जंबू-पाट परम-दीपावता,
सुजस तणा गुणखाण अधिक मन भावता,
पूरव पुण्य प्रमाण पायो छै पटकरु,
श्रीतपगछनो सिररूपकै मानुं रति समवरु. १०
अष्टोत्तर गुण एम के गुरुना में कह्या,
स्तवता मंगलमाल सदा मन गहगह्या,
गुणरत्नाकर माल **विनयविजयै** कही,
चोथी ढाल रसाल के नवें निधि सुख लही. ११

श्लोक : असिति(त)गिरिसम(मं) स्यात्०॥ १

दूहा : अवर तिण देसै पुर घणां, पिण सहु जग-प्रसिद्ध,
पाटण सैहर दीपै सदा, इंद्रपुरी सम रिद्ध. १
पवित्रकरण पंचम अरै, जंगम सुगुरु-जिहांज,
श्रीविजयजिनेंद्रसूरीश्वर, जिहां विचरें मुनिराज. २

॥ अथ ढाल ॥ चंद कहै रांगी सुणो है कै साजन, टिण रित मेहकै...
वली चंदनी हे - ए देशी ॥

सूंदर मूरति सोहती रे साजन, दीटां आवै दाय कै तन मन रंगस्युं ए,
वंदो श्रीविजयजिनेंद्रसूरिंद कै, तन-मन रंगस्युं ए [ए आंकणी] १
चतुर नमो गुरुचंद्रमा ए साजन, नित नित चढतें नूर [कै] तन-मन रंगस्युं ए
छ दस कलाए सोहतो ए साजन, चढ्यो पुण्यअंकूर कै तन-मन रंगस्युं ए. २
कुमतितिमिर दूरै करै ए साजन, पूरै समीहित आस कै तन-मन रंगस्युं ए,
तारा जिम अन्य तीरथी ए साजन, अधिक न तास उजास कै तन. ३
जिनशासनसमुद्र उल्लसै ए साजन, सुमतिरयणी सुखकार कै तन-मन रंगस्युं ए,
हरखित श्रावक श्राविका ए साजन, कुमुद अनें कासार कै तन-मन रंगस्युं ए. ४
अमृतपूरै झरै देसना ए साजन, संयमओषधि सुख एह कै तन-मन रंगस्युं ए,
आनंदित दिस दिस थइ ए साजन, कुमतिवियोगणीदुख कै तन-मन रंगस्युं ए. ५
नित्य उदय जाणीयै ए साजन, राहु तणै वसि नांहि कै तन-मन रंगस्युं ए,
जलधर पिण नही ओलवै ए साजन, कलंक नही इण मांहि कै तन-मन रंगस्युं ए. ६

शीतल मनशाताकरं ए साजन, उज्वल विमल अभंग कै तन-मन रंगस्युं ए,
गुरुमुख ससिहर ओपमा ए साजन, राजै अविहड रंग कै तन-मन रंगस्युं ए. ७
चंदवदन गुरुजी तपो ए साजन, दीठो अति सुखकार कै तन-मन रंगस्युं ए,
वंछितपूरण जग जयो ए साजन, सुंदर अति श्रीकार कै तन-मन रंगस्युं ए. ८
गछनायक गुरु गछपति ए साजन, गच्छाधिप गच्छेश कै तन-मन रंगस्युं ए,
गच्छदिवाकर गणधरु ए साजन, गणराजान गणेश कै तन-मन रंगस्युं ए. ९
गुण अनंत गुरुजी तणा ए साजन, मुख कहि न सकै कोइ कै तन-मन रंगस्युं ए,
आप मुखैं जो भारती साजन, जो कहै तो धन होइ कै तन-मन रंगस्युं ए. १०
श्रीविजयधर्मसूरीदनो ए साजन, पटधारी सुप्रसिद्ध कै तन-मन रंगस्युं ए,
श्रीविजयजिनेंद्रसूरीश्वरु ए साजन, नमतां हुवै नव निधि कै तन-मन रंगस्युं ए. ११

दूहा : तपगछमां मेढी समो, गच्छदीपावणहार,
श्रीविजैजिनेंद्रसूरीसरु, सुविहितमुनीशृंगार. १
भाग्यवंत महिमानिलो, सोभागी सिरदार,
परउपगारी परगडो, महिमामेरु अपार. २
श्रीश्रीश्रीश्री अति घणी, एकसो आठ धरान्,
श्रीविजयजिनेंद्रसूरीसरु, सपरिवारचरणान्. ३

श्रीश्रीश्री १०८ श्रीश्रीविजयजिनेंद्रसूरीश्वरजी चरणान् चरणकमलान् ॥

॥ अथ मरुधरवर्णनम् ॥

सारद पाय प्रणमी करी, गणपति लागुं पाय,
सहर मेडतो सोहतो, देख्यां आवै दाय. १
ईति भीति लाभै नही, न पडै दुरित दुकाल,
सुखीया लोक वसै घणा, तिहां नही कोइ जंजाल. २
सकल देसदेसां सिरै, मरुधरमंडल सार,
तेहमां नगर विराजतो, अलकापुरी अवतार. ३
धर चंगी चिहु दिसि हरी, शीतल नीरप्रवाह,
दिसि च्यारुं ही देखतां, नयर मेडतो वाह. ४
रवि शशि किरण जिहां धरै, आवै देवविमानं,
घडी यक वासो ते करै, देखी एहवो सुथानं. ५

नगर तिहां देसै घणा, एक एकथी सार,
सरव नगर सिरसेहरो, मेदनीपुर श्रीकार. ६
मारिवाड देसां सिरै, सहु देसां सिरमोड,
छावा नर तिहां नीपजै, अमली मांण अरोड. ७
तिण देसै देसाधिपति, मांनसिंह नरपाल,
वैरी जन ^{५२}पाधर कीया, ले करमें करवाल. ८
सूरवीर खत्री सिरें, ख्याग त्याग नीकलंक,
सुप्रताप मोजा-समुद्र, न्यायवंत निस्संक. ९
राज करै तिहां राजवी, मांनसिंह महाराज,
तेहना तेजबले करी, शत्रू गया सहु भाज. १०
राठोडां सिरसेहरो, रतिपति कैरें रूप,
षट दरसण पालै खरो, भला नमाड्या भूप. ११
तिण राजा रा नामथी, भागै अरी असेष,
जंग न जोडै ^{५३}सामुहो, नयणां निरख विसेष. १२
नरपति चाहो चिहुं युगै, धरम नीत नरपाल,
सीम समंदा लग करी, अरिभंजण मछराल. १३
वरण वेश इण देसनो, सुणियै श्रीगुरुराय,
तीन पहोर नृप मांननी, तरुण सीम संधाय. १४
चांपा कुंपा मेडत्या, जोधा उदा जांण,
चांदा भोम ^{५४}घरासिया, थंभइ ताय वखांण. १५

॥ अथ मत्सुद्दीवर्णनम् ॥

सांम कांम सिंघवी सझै, सरस भंडारी सोध,
^{५५}मोडखांप मुहणोत है, जुध सम मुंहता जोध. १६
खांप च्यारु बुधवांन ए, सभा मांन सिणगार,
उलटै ^{५६}दगल अरियां तणा, सो लेवै तुरत उतार. १७

॥ अथ राजवर्णनम् ॥

त्रोटक छन्द

प्रथवीयपती तप-तेज तपै, अरीयां असीधारसु होत ^{५७}दफै,
विजमाल तखत्तसु ओप दियां, गुमांन तपो सुत फोज लीयां. १

“त्रपमानं महानं तव वंदनकुं, मन उज्ज्वल पाप निकंदनकुं,
गडधौंम नगारन धुंस दीयै, घनराज तणी पर ओप लियै. २
गजराजघटा वण “घन्न तणी, तडदांहं° भलक्कत सेल^{६२} अणी,
गगडधौं निसाण सुघोष वजै, गडडाट पयोधर ^{६३}नाज गजै. ३
^{६४}बुगपंत सुसेत पताक वहै, मिल दंपति चात्रक चित्त चहै,
सुरणाइ वजै सुर कोकिल है, असवार समीर अनोपम है. ४
नर मोर झिंगोर वदै मुखतै, प्रतपो घननाथ सदा सुखतै,
इण भांत अनोपम क्रांत लियां, वरषै करदान आवाज किया. ५

॥ अथ सेहरवर्णनमाह ॥

दूहा : सारदमाता समर हुं, गुरके लागु पाय,
मेदनीपुरकुं वरणवुं, दीजै उक्त वताय. १
जिनवरवांणी सोहती, दया-जीव बहुजांन,
दांन सील तप भावना, एते धर्म प्रमाण. २
मारवाड सुखधाम है, सिरै विचालै सेहर,
बहु मिंदर रचना बहु, रहत जैन की मेहर. ३
मेहर करी सब जीवपै, जैन धर्म प्रगटाय,
जिनवर चोवीसुं सबै, वसै सेहरकै मांहि. ४
कविजनसुं कर जोडकै, यथाबुद्धि अनुंसार,
गजल **मेडता** सैहरकी, सुणो सकल नर नारि. ५

॥ गजल चाल ॥

मेडता सहर है अभिरामं, रसना वरणवै जस धामं,
नगरी लंकथी छिव जोर, असा सहर नवि कोइ ओर. १
पहिला वरनवुं बाजार, सगला सेठ साहुकार,
हदोहद है हटश्रेण, ऊभे लोक सोदा लेण. २
मुलमुल सावटु मलतांन, सोदा ग्रहै तानोतांन,
मुखमल देख मैमूदीक, नैणां होत चकचूंदीक. ३
वरनुं नगीनाकी नोख^{६५}, सुनतां होत है मन जोख,
रेजावासता जरतास, सेला डोरिया फिर खास. ४

जिनवर देहरो फिर जानं, ^{६६}कटलो नाम ही वाखांन,
होवै पंच° एको ठामं, सारै स[ब] कोईको कामं. ५
सोनी घडै चांदी हेम, मांहै खोट घालण नेम,
सुनवर जालियां अरु गोख, चोहतै वीच सुंदर चोक. ६
कपडो विकत है भारीक, चाहो चीज लो सारीक,
सखरा सोहते सराफ, दमडा परखते दिल स्याफ. ७
आना आठसोकै लार, एतो व्याजको विस्तार,
करडा कंदोयाका कामं, सो तो करै ^{६७}दूणै दामं. ८
घेवर लाडवाके ढेर, वरणुं पंच वरणा ^{६८}फेर,
मालण साग ही देवेंक, दमडा तुरत ही लेवेंक. ९
छावां फूलमाला हाथ, ^{६९}भमटा लूब ते तिण साथ,
मंडी मांहै आवैऽनाज, जावै स[ब]को लेवण काज. १०
गहुं बाजरीय..... र, मुंग अरु मोठका अणपार,
गाडा ऊंट भर भर आण, वेच्यां भरै ^{७०}हासलडांण. ११
मणिहारा बैसते ^{७१}पाषेंक, डबी कंठीयां राखैक,
आगूं पसौर्याकी हाट, जिनकै औषध्यांका थाट. १२
मिंदर **बालजी**को जानं, दरसन करत सकल जिहांन,
मिंदर ^{७२}माजनी अनूप, निरखे **चतुरभुज ब्रजभूप**. १३
कहियै ^{७३}चांतरो धर नेह, तस्कर ^{७४}कब[ज] करते तेह,
ऊंची बोत है **मैजीद**, करती गगन सैहती जीत. १४
नीचै **अैर्न**को कोठार, चऊदिसि हाटका विस्तार,
तिनके निकट ^{७५}सायरडांण, हासल भरत है बहुमानं. १५
आगूं **नाथ**का है **थानं**, ताकुं नमत नरवर आंन,
बैठे पान तंबोरीक, भरीयां खूब चंगेरीक. १६
तिनके पास अति सोहैक, देहरा **आदका** मोहैक,
ऊंचो देहरो असमानं, ^{७६}पव्वे हेम-मेरु जानं. १७
सुंदर कलस धजादंड, एहवी छिव नहीं ब्रहमंड,
चातुर लोक है अति चूप, करते आरती अनूप. १८

कुमती छोडकै निज मत्त, करते दरस होते रत्त,
 मिथ्यामतके है जान्, तिनकुं करत है हेरान्. १९
 भेट्यां टलत है विखवाद, वाजै संख घंटानाद,
 जीझां झालरां झणकार, धप-मप मादला धुंकार. २०
 दस एक जैनके प्रासाद, करते गगन सेती वाद,
 गनपत सोहते है ठोर, साहमी राजकी है पोर. २१
 मांहे गोख जाली महैल, तामै सुभट करते सहैल,
 अंबा नागणेचा थान, ताको भूप राखै मान. २२
 बैठै सकल ओर्दाँदार, झूठै साच काढै तार,
 हाकम हुकम है सिरजोर, ताको परगनांमै तोर. २३
 आगै देहरो जस धाम, मुरधर कोट नवमें नाम,
 मांहे च्यार भुजवारैक्, सो तो प्रानको प्यारैक्. २४
 ताकै द्वारपै घडियाल, नोबत बजत है चोसाल,
 वरण आठ दस आवैक्, पूजा भक्तसु भावैक्. २५
 चुतरभुज सैरैकै रिछपाल, मेटै भ्रम मायाजाल,
 सेवग ध्यावते धर चूप, करते आरती अनूप. २६
 झणणण झालरां झणकार, टणणण टोकरी टणटंकार,
 मंडप सभा मन भावेक्, गुन ज्यां हरीके गावेक्. २७
 आगूं मोचीयांको वास, दरगा पीरकी है खास,
 पटवा तणी हाटां जोर, तिनकै जोर न आवै ओर. २८
 रेसम किरमचीका ढेर, वरणें पंच वरणा फेर,
 पटवा पोवता है पाट, ज्यां आभूषणा है थाट. २९
 दांती कंसर्या आगैक्, दिसाँवरपीठ अत लागैक्,
 वाकै पास है रंगैरेज, रंगत खूब ल्यावै तेज. ३०
 आगूं लखारा भारीक्, मूंठ्या पैरती नारीक्,
 आगै ठंठाराकी हाट, कांसी वासणाका थाट. ३१
 सिवको देहरो भारीक्, सेवे सहु नर-नारीक्,
 सागरदेव भरीयो नीर, मिंदर दोय उनकी तीर. ३२

आगै दूधसागर डोल, ताके पास है दोय पोल,
 मैजत् पीरकी छाजेक्, आगै रगतमल गाजैक्. ३३
 आगूं बेटवाको बाग, तिणमै रूख बहोतसे साग,
 मांहे राजका है मैल, तिणकुं देखणीकी सैल. ३४
 पासै हीरका पगल्याक्, अकबरसाह प्रतबोध्याक्,
 पूजा भक्तसूं भावैक्, सहु नर-नारीयां आवैक्. ३५
 मेलो मंडत है भारीक्, दसमी पोस दिन सारीक्,
 सागरडां गोलाइ जान, लक्ष्मी मात को तीहां थान. ३६
 करते पूज सकलँउमेर, चढते फूल चंदन नीर,
 आगूं नवसर भारीक्, सोभा करत नर नारीक्. ३७
 साची वरवासणकी राय, तिनके सकल नमते पाय,
 कुंडल जबर हें दरियाव, तिनकुं देखणैको चाव. ३८
 तामें जुगत है सारीक्, निपजें जरायत^{३५} भारीक्,
 मालकोट है अनुंसार, चहुं दिस भुरजको विसतार. ३९
 मांहे पीरको मकान, तिनकी करै जारत^{३६} आं,
 ज्यां है रूखकी झंगीक^{३७}, पंखी रैत है संगीक^{३८}. ४०
 तिनके वीच वाडी पास, सब जन आवते उल्लास,
 भावै भावना भारीक्, पूजा करत नर नारीक्. ४१
 तपगछाछपती सोहैक्, धरमसूर इ[म] मन मोहैक्,
 तिणकै छित्तरीकै पास, पगल्या आदका है आस. ४२
 मांहे वीरको है थान, चढते फूल पाती पांन,
 परचा पूरहै ततकाल, मेटै भ्रम मायाजाल. ४३
 असो वीर साचो जोर, तपगछमांय उनको तोर,
 सांमी सिरै सोझत पोल, उंची सुगटी है डोल^{३९}. ४४
 भैरव सैरडीयो भयभंग, चडते तेल-पना^{४०} अंग,
 छतरीमांय छाजै छेल, करै बाग वाड्या सैल. ४५
 लोडोपासरो आगैक्, मांहे वंदन श्रीराजैक्,
 सामो देहरो छानैक्, तिनमै आदि जिन छाजैक्. ४६

तपगच्छतेज-प्रबल प्रताप, **पोषदसाल** - दी थाप,
वडोपासरो भारीक, उनकी छिब है न्यारीक. ४७
जाली गोख सुंदर चोक, बैठै करै साधू जोख,
साचो **मांगभद्रवीर**, भेट्यां जायै दुख सहु पीर. ४८
साहू रहत बारै मास, साझै जोग तप उपवास,
साख्र सिद्धांतको अभ्यास, करते जोग केरो न्यास. ४९
वचते सूत्र सार्थ सिद्धांत, श्रवण्यां मिटै मनकी भ्रांत,
श्रावक श्राविका भाविक, गुन गुरुदेवके गावैक. ५०

॥ इति श्रीमेडतारी गजल श्रेयां भवतु ॥ अथ भास लिख्यते ॥

॥ झिरमिर वरसें मेह हो लाला, परसालै पांणी पडे म्हांरा लाल - ए देशी ॥
श्रीश्रीजी पासै छें तेह हो लाला, गीतारथगण गुण बहु म्हांरा लाल,
नांम प्रणामे(माणे) जेह हो लाला, विवरीनें हवे ते कहु म्हांरा लाल. १
मांगिक्यविजय मांगिक हो लाला, **फतैविजय** मनोहरु म्हांरा लाल,
दोलतविजय दीपतां हो लाला, **जीतविजय** सुहंकरु म्हांरा लाल. २
खिमाविजय खिमावंत हो लाला, **हीरविजय** हीरो भलो म्हांरा लाल,
प्रेमविजय गुणगेह हो लाला, **लक्ष्मीविजय** लक्ष्मीनीलो म्हांरा लाल. ३
साधु गुणना गेह हो लाला, इत्यादि मुनि मै कह्या म्हांरा लाल,
अवर हुवै मुनि जेह हो लाला, साहिबा पासै जे रह्या म्हांरा लाल. ४
वंदना संघ तणीह हो लाला, त्रिविध त्रिविध करी वीनवुं म्हांरा लाल,
हिव सहु सुणो अत्र महंत हो लाला, नांम लिखुं हुवै जेहवुं म्हांरा लाल. ५
हेमविजय गुणगेह हो लाला, **केसरविजय** कलानिलो म्हांरा लाल,
कसतुरविजय उछरंग हो लाला, **मांगिक्यविजय** महिमानिलो म्हांरा लाल. ६
कवरविजय गुणधाम हो लाला, **उदयविजय** मनोहरु म्हांरा लाल,
जीनविजय गुणवंत हो लाला, **सुरेंद्रविजय** सोहंकरु म्हांरा लाल. ७
कीरतविजै कीर्तवंत हो लाला, **चंदसरी** ते वीनवै म्हांरा लाल,
वंदना करें नितमेव हो लाला, सर्व साधुनी मानवै म्हांरा लाल. ८
साधु नें श्रीसिंघ हो लाला, वंदणा अमाहरी अवधारज्यो म्हांरा लाल,
इहांना सिंघ तपोह हो लाला, तिहांना सिंघनें जुहारज्यो म्हांरा लाल. ९

जंगम थावर तीर्थ हो लाला, वंदणा होय हजार ज्यो म्हांरा लाल,
नांम लेई करो यात्र हो लाला, वलता पत्र दिरावज्यो म्हांरा लाल. १०
संवत अठार इक्यासि (१८८१) हो लाला, मीगसर सुदि सप्तमी वरें म्हांरा लाल,
श्रीजी भणी लेख लिख्योह हो लाला, **कस्तुरवीजै** वीनती करै म्हांरा लाल. ११
दूहा : त्रिविध त्रिविध करी वंदना, अवधारो गुणगेह,
कवरविजय कर जोड कै, लिख्यो लेख धरि नेह. १
॥ इति श्रीगुरु गच्छाधिराजस्वाध्यायः ॥ श्रेयो मंगलो भवतु ॥ श्रीः ॥ श्रीः ॥
॥ श्री परमेसरजी सत छै जी ॥

श्रीपाटणनगर सुभ सथाने सकल सुभ ओपमा लायक, अनेक
ओपमा विराजमान, कलकालश्रीगौतमावतार, सरसुतीकंठआभरण.... पुज,
सकलगछसीरोमणी, सकलभटारकपुरंद्र भटारकजी श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री १०९
श्रीश्रीविजैजिनंदसुरीसुरजी ^{१०३}सप्रवारा ^{१०४}च्रणांन ^{१०५}च्रणकवलाय श्रीमेडतानगरथी
सदा सेवग, आग्याकारी, हुकमी, पाटभगत श्रीसींघ संमसत लीखावतु त्रीकाल
वंदणा दीन प्रतै वार १०८ वार अवधारसीजी । अठारा संमाचार श्रीपुजजी री
क्रीपा करनै भला छै जी । श्रीपुजजीरा सदा सरवदा आरोग्य चाहीजैजी ।
श्रीपुजजी रै आहार पांणी गंगाजल आरोगणरा घणा जतन करावसीजी । जतन
तो श्रीमांगभद्रजी करै छै पीण सेवगने ओ लीखणो चाहीजैजी । श्रीपुजजी मोटा
छेजी, श्रीगणधरजी री गादी विराजीया छे सु श्रीपुजजी रा गुणनो पार नहीजी ।
मेडता रा सींघ उपरै सदा क्रीपा भाव राखै छै जीणसु वसेष रखावसीजी ।
संघ वीनती रो चीत्र लेख मेलीयो छे सु सभासुमधे वंचावसी नै क्रीपा करने
सींघने वंदावसीजी । सींघने भेटण री घणी ज ऊतकंठा लाग रही छै सु
श्रीफलोधी पारसनाथजीरी जात्रा साटु पधारसीनै सींघनै पावन करावसीजी घणी
अरज..... लखीजैजी । पटो मेलीयो सु सबा समुखे वेचायो छे तै पुजजी री
आग्या अखंड पलै छै जी । मेडतै चोमासै श्रीजी री अग्यासु **पुनास**
श्रीहेमवीजैजी, **केसरवजैजी**, **कीसतुरवीजैजी**, **कवरवीजैजी** रहा । सींघनै
घणा रजाबंध^{१०६} राखीया छै नै श्रीपजुसणा परबनी वीगत पणे पुजा, प्रभावना,
वखांण, पछकांण, पोसा, ^{१०७}पडकुणा तथा चेत्रपाल घणा आडंबरसु नीसरी छे ।
^{१०८}छमछरी रा पारणा खीवसरा अमरचंद सीरीचंद ठोरमलरे घेरे सीरा ^{१०९}पुडी

रो हुवो छे । श्रीसीघ रो १००चांगो उदोत छै । पाटीपे वोखान ऊतराधेनजी वचीजे छे ने श्रीसंतनाथ चरित्र वचे छे । सैझाय श्रीगीनाताजी वचे छे । वखाणमें सेरो वग^{१००}, सेरोवका^{१११}, गछी, परगछी आवै छे । सींघ रो अने श्रीजी रा उपासरा रो घणो^{११२} आछो गावे छे । श्रीआदेसरजी रा मींदर रो काम सरु छे ने ऊपासरा रो मरमत पीण हुवै छे । मरमत घणी चोखी हुई छै ने पूरे कांम सरु छे । और सादवी रतंसरीरे ठीकाणे सादवी चंदसीरी रो पटे नाब घलाय देसी । श्रीजी स्हायबा रे पुरमे गीतारथ..... घणै मांन वंचावसीजी । और मेडते चोमासौ ईसाइ जोग्य देखो जीणानै लखाव सीजी । खेत्र री मरजाद माफक रहै ने गछ रो अछो लगा छे जीणाने लेखावसीजी । श्रीदेवराज री हुई जीण दीसा आयुखो वासखेपन्ही मंगायो छे जी..... घरै हाथ वात रही थी । अगलेवार आचार पं. पेमवीजैजी समाचार लखा छे..... ते सारा समाचार प्रेम वीजेजी कहे सु जाणसीजी । क्रीपा करनै दीरावसीजी । १८८१ रा पोस वद २ वार बुध ।

? दत(स्त)क तें सीवचंद रा छे समतत सींघ री आग्यासु ।

श्रीपांटणनगर रा श्रीश्रींघने मैडता रा समसत सींघ री जुहार वचावसी घणै घणै मांनसु । धन छै श्रीपाटण रो सींघ सु नीत ऊट्ये श्रीजी रा च्रणारवींद भेटै छे नें श्रीजीस्हायबा रा मुखारवींदरी अमृतवांणी सुणै छे तीनें श्रीजी स्हायबा री सेवा भगत नीत साचवै छै तीउ धन छै ।

॥ अथ गुरुभास लिख्यते ॥ अथ वीनतीकी स्वाध्याय लिख्यते ॥

॥ हमारे पगल्यां ने पायड ल्याज्यो हो रसीया मारु - ए देशी ॥
मेडते नयर पधारो हो गछपति म्हांरा, श्रीसींघ वीनती हो साहिब इम करें,
जगगुरु श्रीजयकारी हो साहिब म्हांरा, प्रबल प्रतापी हो साहिब सुख धरें. १
भालस्थल अति दीपें हो गछपति म्हांरा, उज्वल पखमें हो चंद मनोहर,
आनन चंद सम दीपें हो साहिब म्हांरा, आंखडी ओपें हो कमलदल सुखकर. २
नासिका सूकचंचू राजै हो गछपति म्हांरा, अधिक विराजे हो दंत मोती परे,
अधर प्रवाली दीपें हो साहिब म्हांरा, अतिही विराजै हो सोवनसी प्रभा. ३
श्रवण दोनुं अतिराजै हो गछपति म्हांरा, पोतनीसोला हो कंठ सोहामणो,
रिदय नाभि सुभ अंगे हो साहिब म्हांरा, पदपंकज हो अति रलीयांमणो. ४

जै जै लक्षण अंगे हो गछपति म्हांरा, ते ते दीसैं हो पुन्यप्रकृति तणा,
पट्टप्रभाकर सोहै हो साहिब म्हांरा, श्रीश्रीगुरुजी हो धर्मसूरिंदना. ५
चउमासो पउधारो हो गछपति म्हांरा, मेडता नयरे हो गुरुजी कृपा करो,
केणहीक समये हो साहिब म्हांरा, हित करी चित धरो. ६
जन्मभूमिनो ए देस हो गछपति म्हांरा, वाल्हो लागें हो सहूनें हितकर,
इण रीतें मन धारो हो साहिब म्हांरा, महिर करीने हो साहिब दिल धरो. ७
तिहां गांम नगर पुर एहवा हो गछपति म्हांरा, जिहां तो विचरे श्रीगुरु मलपता,
अमने विसारी मुक्या हो साहिब म्हांरा, गुज्जर देसे हो स्युं रह्या मोहता. ८
जिम चात्रक चित मेहा हो गछपति म्हांरा, जिम वली मनसें हो रांम सीता चहै,
गज समरे जिव रेवा हो साहिब म्हांरा, एहवा गुण तुमचा हो मुझ मनमै रहै. ९
श्रवण सुणी गुण ताहरा हो गछपति म्हांरा, इम तुझ भेट्यां हो साहिब सुख घणो,
तुमची मोटी वांणी हो साहिब म्हांरा, भविजन सुणता हो नेह ज अति घणो. १०
विनयविजयनो सीस एम हो गछपति म्हांरा, वीनति मांनो हो

कस्तुर[वि]जय तणी,

सिंघ समक्षें भाख्यो हो साहिब म्हांरा, हित करी धरज्यो हो दिल मै अम्ह तणी. ११

॥ इति श्रीगुरुगुणवीनतीस्वाध्यायः समाप्तः ॥ श्रीः ॥

* * *

(१७)

मुंबई - विजयदेवेन्द्रसूरिजीने सुरतथी संघतो पत्र

सौ प्रथम जिनेश्वरदेवनी स्तवना द्वारा अन्य पत्रोनी जेम अहीं पण मङ्गलाचरण करायुं छे । संस्कृत-गुर्जर बन्ने भाषाना पद्योमां पांचे जिनेश्वरोनी तेमज माणिभद्रवीरनी स्तवना करी कविए सूरिजीना १०० गुणोनुं पद्यात्मक वर्णन प्रारम्भ्युं छे । पांच ढाळमां ते गुणवर्णना करी पछी मां सरस्वतीने वन्दना करवा पूर्वक कविए मुंभाइ (मुंबई) बंदरनी वर्णना आलेखी छे । नगरवर्णननी ढाळमां नोंधायेल ममाईमाताना मन्दिरनी, वालकेश्वरनी लक्ष्मीदेवीनी, तथा कोलाबानी नोंध विशेष उल्लेखनीय छे । 'सरसति.....' ए देशीमां श्रावक शेट मोतीशा, शेट बालाभाई, फुलचंदभाई के जेमनी विनन्तिथी सूरिजी मुंबई पधार्या तेमनां सुकृतोनी आछी रेखा पत्रलेखमां कविए वर्णवी छे । मुंबईनां जिनालयोनी विगत नोंधी फरी सूरिगुणनुं वर्णन करता कविए १० रुचिओनुं वर्णन त्यारपछीनी ढाळमां कर्युं छे । मुंबईथी सङ्घमां सूरिजीना पधार्याथी थयेली आराधनाओनी वातो दूहाबद्ध रजू करी पछीनी ढाळमां सूरिजीने सुरत पधारवानी विनति पूर्वक 'गङ्गल'मां सुरत शहेरने कवि आलेखे छे । ऐतिहासिक कही शकाय तेवी राजा लबीष्टीत् (अंगरेज), कोटवाल आडेसरं (अरदेशर?), किल्लेदार भावसिंह, नवाब नश्रुदिन, नगरशेट लक्ष्मीदास, हुंडीकार आतमराम(?) विगेरेनां नामोनी नोंधनी साथे साथे नगरलोकव्यवस्था, वाणिज्य, जिनालय, जैनेतर मन्दिरादि विगतोनी पण कृतिमां खास नोंध उमेराइ छे । अन्य पत्रोमां जोवा मळती सूरिगुणवर्णना जेवी ज गुणवर्णना प्रस्तुत पत्रमां देखाय छे । पत्रमां ज्ञातिवार उल्लेखित करायेल श्रावकवर्गनी यादी आ पत्रनी मुख्य विशेषता छे । पद्यपत्रान्ते चातुमासार्थे सुरतमां पधारेल पं. प्रेमविजयजीनी चातुर्मासिक आराधना अंगेनी विगतो लखी श्रीसङ्घ पूज्यश्रीने सुरत पधारवा विनन्ति करे छे । त्यार पछीनी भटीयाणी-देशीनां पद्योमां सूरिजीने सहवर्ति मुनिवृन्दनी वन्दना जणावी कविए फरी सूरिगुण-स्तवना आलेखी गद्यात्मक रीते सहवर्ति मुनिवृन्दनी वन्दना जणावी छे । सुरतनी तोले अन्य कोई शहेर न आवे ते बताडवा कविए करेलो मुंबईना त्रसजीवोना त्रासनो उल्लेख हास्य उपजावे तेवो छे । त्यारबाद

'वीरजीने वचने' ए देशीमां सुरतमां पधारतां थता तीर्थयात्राना लाभोनी साथे श्रीसङ्घनी दर्शनाभिलाषानुं वर्णन करी पद्यात्मक तेमज गद्यात्मक रीते कविए पूज्यश्रीनी निश्रामां रहेल मुनिवृन्दने वन्दना निवेदित करी छे. पत्रान्ते खामणा पूर्वक श्रीसङ्घना श्रावकोनी सहीथी पत्र पूर्ण थाय छे ।

पत्ररचना कोणे करी छे ? ते अंगे मूङ्गवण थाय तेवुं छे. अडधा पत्र सुधी प्रेमविजयजीनुं कृतिने अन्ते नाम मळे छे. अडधा पत्रमां अमरविजय. कदाच एम बन्नुं होय के अमरविजयजीए ज कृतिने अन्ते स्वनामनो उल्लेख न करतां वडीलना नामनो उल्लेख कर्यो होय ।

कृतिमां जोडणी यथावत् जाळवी छे ।

शब्दार्थ

१. जितहति = जीतेला हाथी जेवुं (?)
२. झुज्य = युद्ध
३. वेता = जाणनार
४. अंब = माता (?)
५. पट्ट = कहेनार
६. भट्ट = भ्रष्ट
७. बूर्ज = किल्लानी उपरना भागे तोप मुकवा माटे करायेली जग्या
८. देपूर = देवपुरी ?
९. चीकूर = वाळ
१०. सारीमार = रमत (सोगठी वडे रमाती) (सारी-रमत)
११. कहाक = केटलाक
१२. मथंत = वलोववुं
१३. रोक = रोकड द्रव्य
१४. नारुकारु = हलकी जातनुं, वसवायानी १४ जात तेमां ९ नारु अने ५ कारु
१५. वस्तिरण = विस्तीर्ण
१६. जनमार = जन्मारो
१७. ठाएक = रहेली
१८. फत्तेमारी = एक जातनुं नानुं वहाण
१९. रिकुं = रक्षक (?)
२०. सब्बाब = ?
२१. सल्लाक = शाळा
२२. लसतीक = व्याप्त
२३. अडबे = आरबो
२४. गुघर = घुंघरा
२५. महेंरीया = स्त्रीओ
२६. गाज = मोटा अवाजे (?)
२७. निमजा = एक प्रकारनो मेवो
२८. रेल = बहुलता (?)
२९. छब = छबी
३०. अल्हाद = आह्लाद
३१. अस्थल = अस्थिओने
३२. अत्थाग = घणा
३३. आवगुं = आगवुं
३४. पईठ = पेठा

*

परमात्माने नमः ॥

स्वस्ति श्रीस्वर्णवर्णः स्तुतिपथविषये प्रापितो लेखनाथै-
नीर्ति लोकस्य कृत्वा सततहितकृते धर्ममाख्याय भव्यान् ।
वंशद्रुं स्वस्य शाखाशतकपरिवृतं यो व्यधाद् विश्वपूज्यं,
भूयाद् वो नाभिसूनुस्त्रिभुवनतिलकः स श्रिये पुण्यमूर्तिः ॥१॥
शान्तिर्विघ्नविदारणैकनिपुणः शान्ति सुरा(ः) संश्रिता(ः),
कर्मो(मौ)घः खलु शान्तिना प्रतिहतोऽभीक्षणं नमः शान्तये ।
शान्तेयु(र्मु)क्तिसुखं प्रवृत्तममलं शान्तेर्यशो निश्चलं,
शान्तौ ज्ञानमनन्तवस्तुविषयं शान्ते! क्रिया(न्) मङ्गलम् ॥२॥
सर्वज्ञं जितमन्मथं सुरवधूसंस्तूयमानं विभुं,
स्फूर्जन्मोहगजेन्द्रसिंहमनघं गाम्भीर्यरत्नाकरम् ।
स्मेरास्यामनुरागिणीं नृपकनीं त्यक्त्वा व्रतं संश्रितं,
श्रीनेमिं यदुवंशमौक्तिकनिभं वन्दे दयामन्दिरम् ॥३॥
पीयूषसोदरवच(ः)कृतभव्यमोदो,
विश्वातिशायिमहिमा जगतामधीशः ।
गीर्वाणमौलिमणिरञ्जितपादचूलः,
पार्श्वप्रभुर्जयति मङ्गलनामधेयः ॥४॥
देवेन्द्रा ऋषयो निजात्मशुचये हर्षोल्लसन्मानसा,
विश्वाश्चर्यकरं चरित्रमसकृद् गायन्ति यस्य प्रभाः ।
कल्याणं वितरन् जनान् शिवपथे प्रस्थापयन्नादरात्,
स श्रीवीरविभुर्जगत्त्रयपतिः सङ्घाय दत्ताच्छ्रियम् ॥५॥
विघ्नव्रातमहीध्रभेदनपविर्धर्मार्थिभूमिस्पृ.... [शां],
जैनेन्द्रे वरशासने कू(कु)शलकृत्(द्) धर्मार्थिनां प्राणिनाम् ।
सर्वत्राऽस्खलितप्रभावविदिता गच्छे तपानामनि,
नीयाच्छ्रीविजया[न्] देवेन्द्रगणपान् श्रीमाणिभद्रः श्रियम् ॥६॥

दुहा : सारद चरणकजे नमी, मांगुं वचनवीलास,
अरु प्रणमुं निज गुरु तणे, हियडे धरी उल्लास. १

सत्रुंजय गीरीसेहरो, आया ऋषभ जिणंद,
पूर्व नवाणुं वारमे(ते), चित्त धरिय आणंद. २
प्रभपुरे सोहामणो, अचिरासुत मनोहार,
जस नामे चित्त उल्लसे, शांति जिणंद जुहार. ३
उज्जंतसेले जयो, नेमि जिणंद दयाल,
कम्मंधणदावानले, तपें कियो पायाल. ४
प्रियंगुवरणे करी, सोभे जास शरीर,
सो वामेय समरतां, सोसवे गुणतीर. ५
वीर धीर प्रभु सही, दांनधीर वली तेह,
तपे धीर प्रभु तुं जयो, हु प्रणमु नीत तेह. ६
पांचे पदने चित्त धरी, गच्छपतीगुण कहुं सार,
मध्यद्वीप वीचरे मुदा, छत्रीस गुणभंडार. ७

॥ अथ गच्छाधिराजाधिष्ठायक माणिभद्रवीरस्तुति ॥

कवित्त : श्रीतपगच्छनायक सहाय, जितहति जसु बल गरजे,
सूर्य समोवड कांती, रिषिराजन दायक वर,
जसु धवल कीर्तिविस्तार, यक्ष माणिभद्र बल अधिक वर,
वर्धित सुवास जस नांमथी, रीझत निरुपम सहचरीय,
यक्षराज तेजबल सूरिवर, श्रीदेवेन्द्रसूरि जय वरिय. १

॥ इति श्रीमांणीभद्रकवितः ॥

सकल देसनगरसिरोमणि नगर, नर-समुद्र-वापी-कूप-तडागादि-वाडी-वणखंड-
आरामसुशोभिते, श्रीजिनप्रसादकलसध्वजामनोहरश्रेणिसुशोभिते, उपाश्रय-
साधर्मिकजनसहितधर्मिजनस्थानकनित्योत्सवसंयुते, न्यायप्रवीणनरपति, बिंदरउत्तम,
श्रीपूज्यचरणन्यासरेणुपवित्रिते, श्रीमूमाइबिंदुर महासुभ स्थाने, पूज्याराध्य, परमपूज्य,
अर्चनीयान्, परमपूज्य, चारित्रपात्रचूडामणि, कुमतांधकारनभोमणि, सकल-
कलासंपूर्ण । अथाग्रे एकसतगुणवरणनमाह ॥

दूहा : स्वस्ति श्रीसुंदर सुगुण, सकलकलाभंडार,
गुरुगुणरयणायर प्रतें, लेख लखुं मनुहार. १

बिंदर एक अनोपम, **मंबाई** सुविसार,
तमोतम श्रीपुज्यजि, सकल कला सिरदार. २
ज्ञाता सकल समय तणा, समय एक अप्रमत्त,
समयवेता जाणज्यो, मम विनति एक सत्त. ३

ढाल : जि हो कुंवर बेठो गोखडे - ए देशी ॥

जिहो अरिहंतआज्ञा एक श्री, जिहो प्रतिपालक छं रे धीर
जिहो दुविध धर्मप्रकासका, जिहो तत्त्व त्रणना तीर. १

सूरीश्वर नीसूणो ए अवदात [आंकणी]

जिहो तुर्यगतीनीवारका, जिहो पंचम गतिना रे साध,
जिहो छ कायरक्षाप्रते, जिहो गौतम सरीखा साध. २
जिहो सात महाभय जिपका, जिहो अड मदसत्रु रे चूर,
जिहो नव भेदे अरू ब्रह्म छे, जिहो ज्ञापक छे प्रभू पूर. ३
जिहो दशवीध श्रमणधरम तणा, जिहो प्रकासक गुरू धीर,
जिहो अंग इग्यारे धारता, जिहो तेह तणा तुम्हे वीर. ४
जिहो दुवालस उपांग जे, जिहो उ[प]देशक छे रे पूज्य,
जिहो तेर काठिया ते प्रते, जिहो निकासक वड झुज्य^१. ५
जिहो चौदे विद्या जेय छे, जिहो जाणग छे वड वीर,
जिहो पन्नर भेदे सिद्धना, जिहो प्रभु जाणग वर धीर. ६
जिहो शषि दीपे सोले कला, जिहो तनुं सोहे जस भुप,
जिहो पूजाभेद ते जाणता, जिहो सत्तर भेद अनूप. ७
जिहो अष्टादस सिलांगना, जिहो धारग सुगुण सूरीस,
जिहो एकोनविसति दोषना, जिहो काउसग वारीस. ८
जिहो विसतिथानक तप करी, जिहो एकविस गुण जे रे श्राद्ध,
जिहो प्ररूपक गणपती(ति) तुम्हे, जिहो सुगुण पुरंदर सीद्ध. ९
जिहो जिपक तुम्हे बावीसना, जिहो परिसहफोज जे साज,
जिहो सुगडांगसमय तेवीसना, जिहो जाणग पूज्य महाराज. १०
जिहो चोवीसे जिनजी तणी, जिहो आज्ञा पालो रे राज,
जिहो पणविस भावना भावता, जिहो साधे आतमकाज. ११

जिहो दशा-कल्प-व्यवहारनां, जिहो आराधक छवीस,
जिहो तपोधन सगवीसना, जिहो जाणो वीसवावीस. १२
जिहो लब्धि छे अडवीस जे, जिहो धारग छे वडविर,
जिहो पापश्रुतप्रसंगमे, जिहो ओगणत्रिस वीर. १३
जिहो मोहनी-ठाण जे त्रीस छे, जिहो वारक प्रभु वड वीर,
जिहो सिद्धगुण एकत्रीसना, जिहो वेता^२ तुम्हे प्रभु धीर. १४
जिहो **विवेकवीजय वाचक** तणो, जिहो नर उत्तमसु रे **प्रेम**,
जिहो **विजय** तणी विनती सुणी, जिहो दाखो नित नित खेम. १५

दूहा : सिद्धारथकुलदीनमणी, वर्धमानं जिनचंद,
वंदु जिन चोवीसमो, नयनानंद आनंद. १

॥ कुंअर गभारो नजरे देखतां जि - ए देशी ॥

कर-चरणे करी सोभता जी, लक्षण अरु बत्तिस रे,
आसातन तेत्रीसना जी, वारक विसवावीस रे. १ कर-चरण.....
उपदेसक अतिसय तणा जी, जिनना जे चउतिस रे,
जिनवांणि पांत्रिसना जी, तुम विण कुण अधीस रे. २ कर चरण....
छत्रीस छत्रीसी गुणे जी, राजित गच्छाधीस रे,
श्रीजिनजि कुंथु तणा जी, गणधर जे सगतिस रे. ३ कर चरण....
खुडुयावीमाणवीभतिना जी, उद्देसा सडत्रीस रे,
जाणक धारक सवी तुमे जी, तप्पागछाधीस रे. ४ कर चरण....
अढिधीप तेहने वीसे जी, कुलपर्वत छे जास रे,
एक उणे चालीस छे जी, तेह तणा छे भास रे. ५ कर चरण....
भगवइ अंग जे तेहनां जी, उद्देसा चालीस रे,
जाणो सुभ तेहज तणां जी, देवेंद्र गछाधिस रे. ६ कर चरण....
सिद्धाचल गीरीवरतणां जी, एकतालिस गंभीर रे,
प्रकासक देवेंद्रजी जी, वाधे जस गुणकीर रे. ७ कर चरण....
पूण्यतत्त्व बायालना जी, ज्ञायक गुरु सुधिर रे,
कर्मविपाक जे सूत्रना जी, त्रेतालिसना वीर रे. ८ कर चरण....

धरणिधर प्रथवी तणा जी, भुवन लाखचुमाल रे,
जाणो तुमे श्रीपूज्यजी जी, भांगो सवी जंजाल रे. ९ कर चरण....
लाख पीस्तालीस जाण छो जी, सिद्धसीलानुं मान रे,
ब्राह्मी लीपी वर्णना जी, छेहालिसनुं मान रे. १० कर चरण....
उद्गमदोस टालता जी, लेता सुद्धाहार रे,
सुगुरुजी तुमे जाणजो जी, सडतालिस मनोहार रे. ११ कर चरण....
पतन सहसअडत्री(ताली)सनो जी, भोक्ता कहिइं तेह रे,
सर्व भुपती जेहने जी, सिस नमावे तेह रे. १२ कर चरण....
तेरेंद्री जे जीवगा रे, आयुमान प्रमाण रे,
एक उणुं पंचासनुंजी, दिननां जाण सुजाण रे. १३ कर चरण....
पंचास जोयण मुलथि(थी) जी, पोहलो दीर्घवैताह्य रे,
दिसो छो गणनाथजी जी, संजम-रूपधनाह्य रे. १४ कर चरण....
प्रेमविजयनी वीनती जी, अवधारो गछराय रे,
वंदना नित-नित जाणज्यो जी, अवधारो माहाराय रे. १५ कर चरण....

जि रे म्हारे जाग्यो कुंअर जांम - ए देशी ॥

जी रे मारे देसणकाल सुजाण, नव भेदे ब्रह्मचर्यना जिरे जी,
जी रे मारे कथकासक्त सुजाण, भेद एकावन तेहना जिरे जी. १
जी रे मारे द्विपे अरु जिनबिब, नंदीसर वृत्त आठमो जिरे जी,
जी रे मारे उपदेसक वर अंब(?), बावन चैत्य जिहां समो जिरे जी. २
जी रे मारे वरस एक चारित्र, त्रेपन ऋषी श्रीवि(वी)रना जिरे जी,
जी रे मारे चोपन दिन सुपवीत्त, नेमिसर छदमस्तना जिरे जी. ३
जी रे मारे पंचावन अध्येन, कल्याणफलवीपाकना जिरे जी,
जी रे मारे कह्या तेहना भेद, चरमनीसाइं सांजना जिरे जी. ४
जी रे मारे समय भाख्या सार, जाणग अंतरद्वीपना जिरे जी,
जी रे मारे छप्पन कहीइं उदार, पुज्य सदा सुरेंद्रना जिरे जी. ५
जी रे मारे जाणो सुखे गणीस, संवरभेद सत्तावना जिरे जी,
जी रे मारे पंचम कर्म भणीस, उत्तरप्रकृती अठावना जिरे जी. ६

जी रे मारे दिन संवत्सर जाण, एक उणो ते साठमा जिरे जी,
जी रे मारे देसक सुगुण-प्रमाण, ते संवत्सर साठमा जिरे जी. ७
जी रे मारे कीजे सट्टी एक, जोयण एक ज तेहना जिरे जी,
जी रे मारे भाग तणु सुविवेक, चंद्रादिक मंडल तणा जिरे जी. ८
जी रे मारे बासठ जेह प्रतर, देवादिक उर्ध्वलोकमां जिरे जी,
जी रे मारे दुर्गतिभंजन वि(वी)र, उपदेसी वर गछमां जिरे जी. ९
जी रे मारे नरपति जेह त्रेसठ, समय परमाणे दाखिया जिरे जी,
जी रे मारे तेह तणा छो पठ^५, त्रेसठसिलाका भाखिया जिरे जी. १०
जी रे मारे जाणग द्वा(धा)रग तास, ईत्थिकला चउसट्टना जिरे जी,
जी रे मारे रस्मि जंबू जास, मंडल ते पणसट्टीना जिरे जी. ११
जी रे मारे भासण सुद्ध समत्थ, छासट्ट गणधर जीन तणा जिरे जी,
जी रे मारे मासना भासण अत्थ^६, सडसट्ट नक्षत्रे मणा जिरे जी. १२
जी रे मारे जोयण अरु अडसट्ट, वैताह्य दीर्घ ज वलि जिरे जी,
जी रे मारे रागादिकथी भट्ट^७, मांन प्रमाण सवे मलि जिरे जी. १३
जी रे मारे कर्म सातनि जेह, एक ऊणी सित्तेर वलि जिरे जी,
जी रे मारे पूज्य भासण तेह, कर्मप्रकृति सवि मलि जिरे जी. १४
जी रे मारे **प्रेमविजय** कहे एम, त्रिजि ढाल सोहामणि जिरे जी,
जी रे मारे **तपगछपति** सुविसाल, मया करो सेवक भणी जिरे जी. १५

दूहो : सोभे श्रीगुरुजि सदा, भविजनने सुख-सात,

आस्या पूरो दासनि, मात तात विख्यात. १

॥ ढाल - ४ ॥ कामणगारो ए कुकडो रे - ए देशी ॥

भेदन मोहनीकर्मनी रे, सित्तेर कोडाकोड,
समतासायर पूज्यजी रे, पूरो मनना कोड
पूज्य पधारो तुम्हे अम्ह पुरे रे [ए आंकणि]
बिजो चक्रि जे वलि रे, सगर कहिजे सार,
पूर्व लाख एकोत्तरे रे, गृहस्थावास उदार. २ पूज्य.....
रवि-ससी पुष्कर अर्धमा रे, दुगसित्तरी सुभ जास,
दाखो भाखो लोकने रे, सुद्धो मारग भास. ३ पूज्य.....

त्रेहोत्तर लाख संवत्सरे, हलधर वर गंभिर,
जाणो तेह सूरीश्वरा रे, सवि गुणगणना तिर. ४ पूज्य.....
अग्निभूति गणधरतणुं रे, आयु वर्ष प्रमांण,
चूमोत्तर ग्रंथे कह्या रे, दाख्या सुगुण सुजांण. ५ पूज्य.....
पूष्फदंत जिनजि तणुं रे, वर्ष पंचोत्तर आय,
भवन छोतर लख तणुं रे, विद्यूतकुमार सुहाय. ६ पूज्य.....
एक एक महुरत तणा रे, सत्योत्तर लव-माण,
अकंपीत गणपती तणु रे, वर्ष अठ्योत्तर जांण. ७ पूज्य.....
जंबूद्वीप मनोहरू रे, प्रतोलि सूभ चार,
विच अंतर एक एकनें रे, सहस्र-ओगण्यासी सार. ८ पूज्य.....
बिजे स्वर्गे भासिया रे, एसी सहस्र सामान्य,
नव नव भिक्खुपडिमा छती रे, एकएसी वीतन्य. ९ पूज्य.....
ब्यासि दिन-रयणि लगे रे, वर्धमान जिनमाय,
वसिया ते सवि जांणता रे, देवानंदा-ठाय. १० पूज्य.....
जिन दशमा सितल तणां रे, गणधर त्र्यासि धार,
पूर्व लाख चोरासिनु रे, आयु ऋषभ श्रीकार. ११ पूज्य.....
आचार अंगे उद्देसीया रे, पंचासि उद्देस,
नवमा जिन सुवधि तणा रे, छयासि गणधर सेस. १२ पूज्य.....
ग्रंथ कर्म छइं मलि रे, सत्यासि नीरधार,
प्रकृति गछपती जाणता रे, [उप]देसो सूधाचार. १३ पूज्य.....
चंदपनती सूत्रमा रे, दाख्या ग्रह सवी जोग,
अठ्यासी तस विमली रे, देख्यो सवि उपयोग. १४ पूज्य.....
विवेकविजय वाचक तणो रे, **प्रेमविजय** लघुभ्रात,
चोथि ढाल मे ए कहि रे, आगे सुणज्यो वात. १५ पूज्य.....

दूहा : **तुरणीपूर** अति सुंदरु, ईभ्य वसे सुवीनीत,
ते माटे विनती सुणि, अमचि पूरो खंत. १

॥ ढाल - ५मी ॥ देशी - सूरती महिनानी ॥

सोलसमा प्रभुजि तणी, सहस नव्यासि जोय,
साध्वीतणी संख्या सवि, दाखो गुरुजी सोय. १
दसमा श्रीसितल तनू, नेउ धनूष परीमाण,
तेह देशो गणनाथजि, तुम्ह चरणे अम प्राण. २
कालोदधि सागरतणी, परधी जाणो भूप,
लाख एकाणू मानने, कथकासक्त अनूप. ३
इंद्रभूति गणधर तणू, बांणुं वर्ष उदार,
त्राणू जांणो सुखकरा, अडमा जिन गणधार. ४
बीजा स्वामी अजितनां, वरिया सीव-महानंद,
चोराणु ते मूनिवरा, अवधिज्ञानी वंद. ५
सप्तमा श्रीसूपाश्वरना, पंचाणू गणधार,
एकेका चक्री तणां, छन्नुं कोटी उदार. ६
कर्म आठनी सवी मली, उत्तरप्रकृती जोय,
सत्ताणुं ते पुज्यजी, भाखो मुझ सुख होय. ७
प्रथम जिणंद श्रीआदीजी, दे देसना सुखकार,
अठाणु निज पुत्रने, करे उपगार उदार. ८
सिद्धाचल सिखरे चढ्या, स्वामि आदिजिणंद,
पूर्व नव्वाणू वारमे, [भा]सो देवेन्द्र गणधार. ९
सततारा सुभ उडुतणा, वेत्ता सुभ गुरु द्वी(धी)र,
कुल सत एकसोत्तर भला, दिपक शुभ वडधीर. १०
समाधी मुख जोग जे, अट्ट महा वली जेह,
धारग पारग तासना, भविबोधक वर मेह. ११
एकसोएक गुणे भला, सूरी जस(ग)विख्यात,
प्रतपो ए वर गछपती, **वीजयदेवेन्द्राख्यात**. १२
प्रेमविजयनी वीनती, अवधारो गछराय,
पंचमी ढालमें भण्या, गुण सुगुरु-सुपसाय. १३

॥ इति एकसतगुणवर्णनसमाप्तः ॥

अथाग्रे मुमाईबिंदरवर्णनमाह ॥

दूहा : वचन सरल रसना प्रते, देति भगवति मात,
वचनामृत कविता प्रते, आई वसे मुख वास. १
हंसारूढ सितांबरा, कर धृत वीणा सार,
सा वागेश्वरी मुझ दीओ, वांणी वचन श्रीकार. २
स्वयंभूरमणोदधि, मध्य वीसाल सुरंग,
बिंदर एक सोहामणू, **मुमाई** सुवीचंग. ३
सकलराज सीर राजतो, अंगरेज माहाराज,
सघले जग जस गाजतो, राज सवे माहाराज. ४
नगरसेठ तेहने वीसे, **मोतिचंद** अमूल,
खेमचंद सुत तासनो, राजे तस अनुकूल. ५

॥ ढाल ॥ वाल्हो वजाडे वांसलि रे, पेलि गोपियो वजाडे रंग ताल रे
रास रमाड्याजि - ए देशी ॥

श्रीफल फोफल सुंदरु रे कांइ, दाडिम अरु जंबीर रे,

देव्ये(वै)द्रसुरी वंदिये रे [आंकणी]

कदलीफल नारंगना रे कांइ, वन गुहिरे गंभीर रे देवेन्द्र..... १
वनराजि तिहां अतिभली रे कांइ, मोगर चंद कदंब रे देवेन्द्र.....,
बोलसरी मचकुंदना रे कांइ, चारु सुरंभ सुअंब रे देवेन्द्र..... २
लंका नगरी समोवरु रे कांइ, वप्र सोहे श्रीकार रे देवेन्द्र,
पुरट्टाल सुभ श्रेण छे रे कांइ, ^०बूर्ज अनुप उदार रे देवेन्द्र.....३
मुंमाई लंका समी रे कांइ, जलमध्य छे दोय रे देवेन्द्र,
देपूर^८ गई लंकापुरी कांइ, मुंमाइ बनी सोय रे देवेन्द्र.....४
दंड सोहे जस छत्रमां रे कांइ, बंधन जास चीकूर^९ रे देवेन्द्र,
पासा सारीमारमे रे कांइ, एसे लोक प्रचूर रे देवेन्द्र..... ५
छिद्र सोहे उरहारमे रे कांइ, करपिडन वीवाह रे देवेन्द्र,
पर-अपवादमे मुक छे रे कांइ, एसे लोक ^{१०}कहाक रे देवेन्द्र.....६
परछिद्र देखण अंध छे रे कांइ, परधन हरवा पंग रे देवेन्द्र,
एसी सेहर बडाइ हे रे कांइ, लोक वसंत सुचंग रे देवेन्द्र..... ७

श्लोक - नगरवर्णनम् ॥

सद्वीक्षपथ्यरम्याणि, कौतुकानि च भूरीषः(रिशः) ।
प्रवास -- वैधुर्यं, पथिका विस्मरन्ति षः (?) ॥१॥
तद्वस्तु ---- तत्र, प्राप्यते प्र(प)णभिः सदा ।
यत्कथास्वपि ---, तत्सर्वमपि वीक्ष(क्ष्य)ते ॥२॥
यत्र चक्राङ्गता हंसे, -- वस्वकुलक्षयम् ।
अरीष्टं सूती(ति)का गेहे, जने नैव कदा.. [चन] ॥३॥
यन्मृगाक्षी मुखाम्भोज-लावण्येन विनी(नि)र्जिता ।
तपतेऽत्रैव त्रपया, सरोजलिः सरोजले ॥४॥
धनी(नि)नां यत्र हर्मे(र्म्ये)षु, सद्नेषु मनीषी(षि)णाम् ।
वर्द्धते श्री-सरस्वत्यो, मिथः प्रि(प्री)तिर्गतागते ॥५॥

॥ ढाल पुवली(?) ॥

ध्वज गाजे गुहिरे सदा रे कांइ, चिहुं दि[शि]ए भमंत रे,
मांनु सवि दुर्जन तणा रे कांइ, जाणे मनहि मर्थंत रे ८
ममादेवी मातनु रे कांइ, भुवन सोहे उत्तंग रे,
तास नामे सर सुंदरु रे कांइ, सरस सोभे सुविचंग रे ९
पुरमे न्यात चोरासि छे रे कांइ, छत्रिस राजकुलिस रे,
लक्ष्मीदेवी जिहां वसे रे कांइ, **वालकेश्वर** ईस रे १०
रयणायर उपकंठमे रे कांइ, गोदि छे अनुप रे,
जहाज बने अति मोटका रे कांइ, थंभ सुरूप सुकुप रे ११
चीन बंदीरमा नीत वहे रे कांइ, धननी रोक^{११} अनेक रे,
व्यापारी घणी जातिना रे कांइ, क्रय वीक्रय सुवीवेक रे १२
वर्ण अढार वसे तिहां रे कांइ, नव नारु कारु^{१२} जेह रे,
तेणे नयणे सुखीया सदा रे कांइ, अन्योअन्यषु नेह रे १३
भक्तीवंत श्रा[व]क वसे रे कांइ, **कुलाबेसु** नीवास रे,
जे नर जाइं देखवा रे कांइ, रोटि दालसु खास रे १४
प्रेमविजय सीस इम भणे रे कांइ, भव सकल सुवीसेस रे,
भक्ती करो माहाराजनी रे कांइ, नीसुणी हु हरखेस रे१५

दूहा : तपागळाधिरायवर, सोहे सारद चंद,
 घणु प्रतपो परीवारयुत, देवेन्द्र वंद्यानंद. १
 ॥ ढाल ॥ सरसति त्रिभोवनसामनी देवी - ए देशी ॥
 ओसवालसिरसेहरो जि, मोतिसा साहुकार,
 सात पेढी जेणे उद्धरी जि, कीधा सुभ जगसार,
 सवी तुंमे वंदो रे देव्ये(वे)द्रसुरीस्वरराया १ [ए आंकणी]
 अढार चुमोत्तर वर्षमां जि, सिद्धाचलगीरीराय,
 अमीचंद साकर तणो जि, भेटावे सुत राय. २ सवि.....
 अढार पंच्यासि वर्षमां जि, मागसिर उज्जलपक्ष,
 तृतिया सुभ तेह ज तणी जि, थाप्या आदि सुदक्ष. ३ सवि.....
 मोतिसा सेठ ज तणी जि, वाडी एक अनुप,
 तामे ऋषभ सुराजता जि, कांतिवंत सुरूप. ४ सवि.....
 भोएखले ए ठाम छे जि, वस्तिरण^{१५} सुखकार,
 दिन दिन जस जगमां घणो जि, सफल करे जनमार.^{१६} ५ सवि.....
 साहेब दादा तेहमा जि, आस्या पुरे तांम,
 मोति-सेठनि वाडीमां जि, आवे सहु को कांम. ६ सवि.....
 श्रीमालिजाते भलो जि, कांन्हजिसा प्रसीद्ध,
 सुत बे तास भला कह्या जि, जगमां उत्तम कीद्ध. ७ सवि.....
 प्रथम नांम कल्याणजी जि, दुजा त्रीकम नांम,
 सुत कल्याणजिसा तणो जि, दीपचंद सुठांम. ८ सवि.....
 नांम दुजु तासनुं जि, बालाभाई विख्यात,
 मावित्रे बालकपणे जि, हुलरामण आख्यात. ९ सवि.....
 अढार सत्यासि वर्षमाजि, सत्रुंजयगीरी जेह,
 संघसू हर्षे मेलवी जि, निज जन्म कृतारथ तेह. १० सवि.....
 कपुरचंद बोघा तणो जि, फुलचंद सुफुल,
 घोघे श्रीजिनपासनु जि, चैत्यालय अमूल. ११ सवि.....
 मारु हि(ही)राचंदजि जि, हीरा सम जस कीर,
 खडतरगछे सोभता जि, चींतामण जगवीर. १२ सवि.....

हीराचंद हियडे हसे जि, देखि श्रीजिन पास,
 पुरणपुन्ये पांमिओ जि, सेवक पुरो आस. १३ सवि.....
 दमणवासी जेह छे जि, अमरचंद जस नांम,
 सा दाता अतिसुंदरू जि, राखण जगमे नांम. १४ सवि.....
 ताराचंद मोतिचंद तथा जि, चीनाई-सिरताज,
 गगने तारो सोहतो जि, सा कीरति जग आज. १५ सवि.....
 विजयजिनेंद्रसुरी तणा जि, पट्टालंकार सुर,
 लेख लखी तेडाविय जि, पोहता मनना पुर. १६ सवि.....
 प्रेमविजय सीस इम भणे जि, सुणजो सहु नर-नार,
 लेख तणी मे वणेवि जि, सातमी ढाल उदार. १७ सवि.....

दूहो : धर्म तणा मावित्र दो, माता रूपा सुरूप,
 सा माता तुंम दोयनि, किधा जगमां भुप. १
 ॥ ढाल ॥ विनयपद दशमुं प्रकास्युं तथा पालडीपुरनी सेरीए भमता वाल्हा ॥
 उत्तम कांम करे सवि रे वाल्हा माहरा एहवो पुरुषरतन रे,
 रूपा मात उदरे धर्यो रे, मुक्तासुक्तां रतन रे,
 सुरीपद वंदो रे, लली लली लागु पाय सूरिपद..... १
 वीचमे जास वीराजता रे वाल्हा माहरा, त्रेविसमा श्रीपास रे,
 सुरज उदई आवता रे, आस्या पुरे तास रे. २ सूरिपद.....
 आणंदसुरी-देहरे रे वाल्हा माहरा, आदिश्वर अरीहंत रे,
 तस पासे सुविराजता रे, पुरे भवि मनखंत रे. ३ सूरिपद.....
 सागरगच्छे सोलमां रे वाल्हा माहरा, शांतिजिणंद जुहार रे,
 शांतिकर श्रीसंघने रे, ईत-उपद्रवहार रे. ४ सूरिपद.....
 मुल कोटमा ए प्रभु रे वाल्हा माहरा, शांतिकर श्रीशांत रे,
 अचिरानंदन जग जयो रे, सुमतीवंत सुदांत रे. ५ सूरिपद.....
 मुंमाईं सुभ नगरनो रे वाल्हा माहरा, संघ भलो श्रीकार रे,
 सेवा करे महाराजनि रे, पूजा ओच्छव सार रे. ६ सूरिपद.....
 संवर पंच इंद्री तणा रे वाल्हा माहरा, नवविध ब्रह्माचार रे,
 गुत्तिधर प्रभु तेहना रे, मुक्त कषाय च्यार रे. ७ सूरिपद.....

महाव्रत पांचे युक्त छे रे वाल्हा माहरा, पालो पंचाचार रे,
समीति पंच गुत्तीना रे, छत्रीस सुरीआचार रे. ८ सूरिपद.....
ग्रंथे दश रुचियो भणी रे वाल्हा माहरा, कहु तेहना नांम रे,
जेहना मनमांहे रुचे रे, सारे तस नीज कांम रे. ९ सूरिपद.....
प्रथम रुचि उपदेश छे रे वाल्हा माहरा, नीसर्ग बीजि सार रे,
त्रीजि आज्ञारुची भणी रे, सूत्ररुचि अरु च्यार रे. १० सूरिपद.....
बीजरुचि पंचमी भणी रे वाल्हा माहरा, अभिगम छट्टी धारो रे,
विस्ताररुचि क्रियारुचि रे, सत्तमी अठमी श्रीकार रे. ११ सूरिपद.....
संक्षेपरुचि नवमी कही रे वाल्हा माहरा, दशमी रुचि ओर धर्म रे,
दशरुचिओ जे सरुहे रे, तेह पांमे शीवशर्म रे. १२ सूरिपद.....
पूज्य रुचिओ आदरे रे वाल्हा माहरा, देव्येंद्र उर वरहार रे,
माण्यक्यविजय वाचकवरे रे, प्रणिपत वारंवार रे. १३ सूरिपद.....
खंत्यादि दश धर्म छे रे वाल्हा माहरा, भावो भावना बार रे,
पडीरूपादि चौदना रे, गुण छत्रीस धार रे. १४ सूरिपद.....
वाचक **विवेकविजय** तणो वाल्हा माहरा, **प्रेमविजय** वर जास रे,
लेख तणो उदंत ज सुणीने, पांमो हर्ष-उल्लास रे. १५ सूरिपद.....

दूहा : तथा सुरति देशी ॥

हवे ओपम गुरुजि तणा, सुणजो थई सावधानं,
पट्टपरंपरा-परगडो, ठाम-ठाम जस मांन. १
पृथ्वीपट कागल करं, लेखण करं वनराय,
सायर सघला मिस करं, तो ही तुम गुण लिख्या न जाय. २
श्रीपूज्यजी गुण अनंतमय, तरी न सकु तेण,
अवगुण एक न संपजे, रहु विलंबी तेण. ३
हीयडा ते किम वीसरे, जे सदगुरु सुविचार,
दिन दिन ते पण सांभरे, जिम कोयल सहकार. ४
वीसर्या ते नवी वीसरे, समर्या चित्त न माय,
ते गुरुजि किम वीसरे, ते विण घडी न जाय. ५
गिरुआ सेहजे गुण करे, चित्त एक पण जांण,
विजयदेव्ये(वें)द्रसुरी वांदता, दिन दिन चढते वांन. ६

॥ अथ श्लोक ॥

यथा स्मरन्ति(ति) गा(गौः) वत्सं ० ॥

दूहा : राजगृही श्रीवीरजिन, समोसर्या सुखकार,
तिम पुजे पावन कर्यो, **मुमाइंबिंदर** सुविचार. ७
चतुर लोक तिहां वसे, बुद्धिप्रकास अनेक,
मधुर वचन मुख बोलता, एहवा जन सुविवेक. ८
धन्य ते श्रावक श्राविका, जे वंदे गुरुपाय,
नांममंत्र गुरुनो जपे, नांमे नवनिध थाय. ९
वांणी सुणे जे गुरु तणी, धन धन ते नर नार,
पच्चक्खांण श्रीमुखे करे, धन धन तस अवतार. १०
केइ बारे व्रत उच्चरे, केइ वहे उपधांन,
व्रत चोथुं निश्चे करे, श्रावक चतुर सुजांण. ११
मुमाइंबिंदरना संघनो, भाग्य वडो संसार,
चोमासे श्रीगुरु रह्या, **श्रीविजयदेव्ये(वें)द्र** गणधार. १२
पंच माहाव्रत पालता, तिम वलि पंचाचार,
सुमति गुपति सुधी धरे, गुरुगौतमअवतार. १३
कलिकाले जिनवर समो, प्रगट्यो पुन्यअंकुर,
विजयजिनेंद्रगुरु पाटवी, दिन दिन चढते नुर. १४
केहता दिसे कारिमो, संभारज्यो ससनेह,
मेहर्बानि पुज्य राखज्यो, धरज्यो धरमसनेह. १५
गामे नगरे वीचरता, पद ठववा वडवीर,
मुमाइं वर बिंदरे, ठविया पद वरधीर. १६

॥ ढाल ॥ नांम इलापुत्र जाणिइं, धनदत सेठनो पुत्र - ए देशी ॥

समए सात कथा कही, सोहम जंबु हजुर,
सुत्र उत्तराध्येनमां, समता तस चूर. १

सुरीश्वर वर सोभता, तपगछ तणा छे गुरु थंभ... सूरीश्वर.....
सिक्षा देता च्यारनी, आठ प्रमाद ते दुर,
कारक तुमे उपगारनां, विजयदेव्येंद्र सुगुर. २ सूरीश्वर.....

अनुजोग चार चित्तधरो, अप्रमत्त अरु अकसाय,
जोग अजोग सवे वली, समवायंगे कहाय. ३ सूरीश्वर.....
कहेता धर्मकथा तणा, जीवदया उर धार,
चारीत्रपात्र सुपात्र छे, ज्ञान तणां आधार. ४ सूरीश्वर.....
पंचम काले प्रांणिने, उपगारी गुणधीर,
भरतसु दक्षण-अर्धमां, वीचरे महियल वीर. ५ सूरीश्वर.....
लाहो लेता धर्मनो, पट्टेधर श्रीसार,
विजयजिनेंद्रसुरी तणा, विजयदेव्येंद्र [गण]धार. ६ सूरीश्वर...
अम्ह पुरे पधारजो, एक वार महाराज,
अम्ह विनति हियडे धरी, आज हमारा साज. ७ सूरीश्वर.....
कृपा करो वीनति सुणी, वीलंब न करसो पुज्य,
सेवक अम्ह सरीखा घणा, वीनति ए अम्ह गुज्य. ८ सूरीश्वर.....
माणिभद्र श्रीवीरजि, पुरे मननी रे खंत,
अट्टमी चौदसी सेवतां, देता सुख अनंत. ९ सूरीश्वर.....
मगरवाडे मेवासमे, माणिभद्र महाराज,
तस सीर नांमे गळपति, सारे वंछीत काज. १० सूरीश्वर.....
सिद्धाचलगीरीवरे जई, सिद्धा उत्तम कांम,
रथजात्रा जुगतें करी, राख्या पूर्वज नांम. ११ सूरीश्वर.....
तरूणीपुर बींदर थकि, आणि अधिक उल्लास,
प्राणप्रिय तुम्ह दरीसथी, छे साता सुख-वास. १२ सूरीश्वर.....
तुम्ह पत्रि वरहंसनी, मुझ करकमले आय,
सोह चढाइ अतिघणी, ते जिभे न लीखाय. १३ सूरीश्वर.....
तुम्ह बिन को जगमे नही, अवर पुज्य जगदीस,
कृपा करो सेवक उपर, सेवक नांमे सीस. १४ सूरीश्वर.....
डुंगर गुरु उपदेसथी, भ्रात-विवेकसु प्रेम,
नरउत्तम **अमर** भणे, राखो अविहड खेम. १५ सूरीश्वर.....

॥ इति श्रीमुमाइवर्णनं समाप्त ॥

अथाग्रे सूरतबिंदरवर्णनं गजलमाह ॥

दूहो : श्रीगुरुचरण नमि करी, समरु सरस्वती मात,
गजल **सूरत** सेहरकी, बरनुं ते अवदात १
॥ तो गजल चाल ॥
सूरत सेर हे सारेक, बिंदर दीपता भारेक,
मानुं स्वर्गसें आएक, आपोआपही ठाएक^{१७}. १
मात **तापीनदी** हे सार, बेल चढती हे दोय वार,
चढते पांनी ये भरपूर, वांणण आवते ससनूर. २
सफरी फतेमारी^{१८} आवेक्, मेवा-माल ही लावेक्,
नांनी भांत नावा नाम, ज्याके पांनीमें सुभ ठाम. ३
तापीनदीकी हे लहेर, **सूरत** सेहर पर हे महिर,
कोट परकोट हे खाईक, चिहुं दिस फिरीनें आईक. ४
कंगुर वन्या हे हदसार, देखत होत हे हुंसियार,
तोपां धरि हे अति-वंक, जांणे जीपति हे लंक. ५
द्वादस खुब दरवाजेक्, वाजा वाजते सारेक,
लबीष्टीत् साहिब हे **अंगरेज**, राज करे हे अति तेज. ६
आडेसर पारसी कोटवाल, न्याव करे हि इकताल,
मालेसिंह किल्लेदार, सूरत पर गिने अधिकार. ७
किल्ला खुब हे वड वंक, तोपा धरेह निस्संक,
धरर छूटती हे नाल, रिकुं^{१९} करे हें संभाल. ८
फररर फरकते निसान, मांनु चढेहि असमान,
घननं वाजते घंटाक, गननं गरजते गडडाक. ९
किल्ले दारुगोले साज, करडे अंगरेज के हें राज,
नश्रुदिन खुब हे **नव्वाब**, हिकमत पूर हे सब्बाब.^{२०} १०
मुसलमानं अरु **काजीक्**, **ख्वाजा** पीरसें राजीक्,
वोरा लोककी सल्लाक^{२१}, **मुल्ला** मानते अल्लाक्. ११
पारसीलोक हे भरपूर, सघले विणजमांहि सूर,
देव कर पूजते हे **आग**, मात **तापीकुं** पाए लाग. १२

पद्म सईद हे मुगलान, खाधे धरे हे कब्बान,
 मयगल मलपता छाजेक्, मदझर मेघ ज्युं गाजेक्. १३
 हयवर हिंसते बाजीक्, दिनकर होत हे राजीक्,
 म्यांना सैंकडूं सुखपाल, वहेलु रणकती घंटाल. १४
 सूरत सहरकी वसतीक्, लच्छीपूरसे लसतीक्,
 उमदा लोग हे रंगाक्, खावे मालभी चंगाक्. १५
 २३अडबे खड बके व्यापार, लेते देत हें अणपार,
 गणिका करे हें सिणगार, मानुं अपछरा अनुहार. १६
 नाटिक करे हि मनरंग, तेसैं चली जेसे गंग,
 रणझण रणकते वीणांक्, गुघर^{२४} ठणकते झीणांक्. १७
 मरदां महेंरीया^{२५} आवेक्, नाटिक देख सुख पावेक्,
 नगरसेठ लखमीदास, श्रीजिनधरमके हि प्यास. १८
 सबसैं सिरे आतमराम, हुंडी लेखत हे जस नांम,
 किल्ला पास हे चोगान, गुजरी इह हे बहु मांन. १९
 पटकूल वेचते बज्जाज, तुरत ही दांम लेते गाज^{२६},
 मुगलीसरा हे इक पास, उंची हवेली हे खास. २०
 पटवे रेसमीका कांम, किसबी तुरत लेते दांम,
 चीनी-खांनेकी दुक्कांन, तंबोली वचते हि पांन. २१
 गांधी मर्द हे गाजीक्, कप्पड सिवते दरजीक,
 कंदोइ करे हे खाजेक्, बरफी जलेबी ताजेक्. २२
 किसमीस द्राख निमजा^{२७} रेल^{२८}, केला बिदांम रेलाछेल,
 दाडिम नींबु अरु नारिंग, लेकर वेचते सुचंग. २३
 वाडी वाव हे वनराय, जूइ सेवंती अरु जाय,
 दमणो चंपेली तरु सार, परिमल लेत हे अणसार. २४
 क्षत्रीलोक हे उत्तंग, कायथ लोककुं हे रंग,
 ब्राह्मण नागरुकी जात, हरिहर ध्यावते दिन-रात २५
 निज-निज धरमआणाकार, पाले बहोत ही नर नार,
 अढारे वरण हे एसेक, सुखीया लोक हे तेसेक. २६

मोटा च्यार हे चोहटाक्, श्रेणी खुब हे हट्टाक्,
 पुरे पचवीस हे इतगार, गोपीपुरा हे हदसार. २७
 उंची हवेली सिरे दार, गोखे बेठी हे नरनार,
 झवेरीलोक हे ओसवाल, परखे हीरा पन्ना लाल. २८
 नित प्रतें घोटते हिं भंग, पीवे कटोरे हिं रंग,
 भोगी भमर हे छब^{२९} खुब, मोती मांणकें लहलुंब. २९
 जैनी भणसाली धनपाल, दयापाल ते पुन्यपाल,
 जिहा छे जैनका प्रासाद, देखत होत हे अल्हाद. ३०
 श्रीजिन जागतो ध्रमनाथ, मेले सिवपुरीनो साथ,
 सूरजमंडणा हे पास, सहनी पूरतें आस. ३१
 गोडी संखेसरो जिनराय, सुर नर सेवते हे पाय,
 देवल वडे पिसतालीस, बहू सुर नराका ईस. ३२
 ते दरसण देख सुख पावेक, दुख भय रोग ही जावेक,
 श्रावक श्राविका आवेक, मुनिजन भावना भावेक. ३३
 चौरासी गच्छ ही दीपेक, अष्ट ही करमकुं जीपेक,
 साधु साधवी गुणधार, सत्तरभेद संजम सार. ३४
 नजीक उपासरा हें तास, तपगछ दीपता हे खास,
 सकल साधुगुणें भरीयाक्, ॐ विवेकविजय गुण दी(दरी)याक्. ३५
 पांचें जैनके सिद्धांत, श्रावक सुणंत हे बुद्धिवंत,
 व्याकरण छंदकुं जाणेंक्, भाषाग्रंथ हिये आणेंक्. ३६
 दया विनय व्रत धारेक, इकवीस गुणें ही सारेक,
 जैनधरम-आणाकार, पाले बहोत ही करे सार. ३७
 उपासरे तपांके बहुमांन, मांणिभद्र वीरके हें थान,
 ऐरावतकी है असवारीक्, ज्याकी सोभा हें भारीक्. ३८
 मगरवाडें तुं ही राजेक, स्वेत क्रष्ण ही छाजेक,
 जक्ष हे खुब मतवालाक्, काटे करमका जालाक्. ३९
 तीरथ [सोहे] असनीकुमार, अंग पखालते नर नार,
 हील मील मांडते मेलाक्, खुबी करत हे खेलाक्. ४०

विष्णुंलोककुं हे रंग, रटते रामकुं हे चंग,
मंदिर हइ हे दोय च्यार, वसते किसनके कुंमार. ४१
हणुमंत एक हे बालाक, मिलते मेदनी मालाक,
अस्थल^{३१} बांधते अत्थाग^{३२}, रहतें वड वडे वैराग. ४२
दरगा खुब हे दरीयाव, अच्छे लोककी हे आव,
सोखी बहोत सन्यासीक, मांडे खुब मठवासीक. ४३
षट् दरसन खुब हे प्यारेक, रहतें जगतसें न्यारेक,
वसती खुब हे विस्तार, भासा बोलते हैं व्या(या)र. ४४
अवर बिंदर हे हदनार, सुरतबिंदर हे सिरदार,
सुरतनयरनी छबि सार, कहता पाईयें नही पार. ४५

॥ इति श्रीसूरतबिंदरवरणन गजल सम्पूर्ण ॥ अथाग्रे सूरतबिंदरवरणनं ॥

॥ सवियो ॥

सूरतबिंदर सोभित सुंदर, तापीनदीके किनारें बसायो,
बडे बडे वाहण पडे बहु भांती के, मानु ए देवविमान रचायो,
नर नारिके ठाठ मिले बहु घाटके, नावत धोवत पाप नसायो,
एसी छबी देखत इंद्र चले, गजराजघटा सेती चित्त रमायो. १

॥ गोपीपुरावर्णनं ॥

॥ सवियो ॥

गोपीपुरामांहि जवेरिका कांम के, देवल खुब धरमनाथ रचायो,
सूरजमंडण पास संखेश्वर, गोडीचा रायको तेज सवायो,
कमठकुं गंजण नागकुं तारण, कर्मकुं तोडिकें सिवपुर ध्यायो,
एसी छबि पेख इंद्राणीय इंद्र, नरेंद्र नागेंद्र ही सीस नमायो. २

॥ अथ उपाश्रयवर्णनं ॥

॥ सवैयो ॥

चोरासीय गच्छ तपे सिरताज के गोपीपुरामे उपासरो ठायो,
मांगिभद्रको स्थानिक खुब दीपे पंचरंगी फूलें गहगट्ट सवायो,
नर नारिय आय बंदे गुरुपाय के धर्मकथा धर्मलाभ बतायो,
जंबूद्विपपन्नति सुणे एक चित्त के चंद्रप्रभुको चरीत्र सुणायो. १

॥ अथाग्रे गुरुवर्णनमाह ॥

श्रीपूज्यजी [जा]यसंपन्ने, कुलसंपन्ने, बलसंपन्ने, रूवसंपन्ने, विणयसंपन्ने, नाणसंपन्ने, दंसणसंपन्ने, चारित्रसंपन्ने, तवसंपन्ने, उयंसी, तेयंसी, वच्चंसी, जसंसी, जीयकोहे, जीयमाणे, जीयलोभे, जीयपरीसहे, जीयइंदीए, जीविआ-समरणभयविप्पमुक्के, तवप्पहाणे, गुणप्पहाणे, एवं चरणकरणनिग्गहनिच्छहखंति-अज्जव-मह्व-गुत्ती-मुत्ती-विज्जा-मंत-बंधेच-नय-नीम-सच्चं-सोयं-नाण-दंसण-चरित्ते, उराले, घोरतवस्सी, घोरबंधेचरवासी इत्यादि गुणें करी अलंकृत, ज्ञातसर्वपुराण, वादीलक्ष्मीश्रेणिशिरोमणि, वादीतिमिरदिनमणि, वादीकदलीकृपाण, वादीपर्वतइंद्र, वादिताराचंद्र, वादीगरुडगोविंद, जीत्यावादीवृंद, वादीगोधूमघरट्ट, वादीमानमर्दितमरट्ट, वादीहरणहरी, वादीमदज्वरधन्वंतरी, वादीतिमिरभास्कर, वादीविषयशंकर, वादीमुखभंजन, सकलभूपालरंजन, जीत्या अनेक वाद, सरस्वतीलब्धवरप्रसाद, सरस्वतीकंठाभरण, वादीविजयलक्ष्मीशरण, कुमत-मतजडापाडक, पाखंडमतनिर्धाटक, कलिकालश्रीगौतमावतार, शुद्धपंधना देखाडणहार, कुमतना उत्थापक, न्यायमार्गना प्रवर्तावणहार, भविकजीवनें रत्नत्रयना दायक, सर्वगुणलायक, श्रीगुरु आज्ञा आराधक, मिथ्यात्वमतनिकंदक, सकलक्रियाकठोर, छ लाख छत्रीस सहस्र सूत्रना पारगामी, स्वसमय-परसमयना जाण, अनेकशास्त्र प्रमाण, व्याकर्ण-तर्क-नैषध-कुमारसंभव-पाणिनीय-काव्य-छंद-अलंकारादिविद्याप्रवीण, षट्दर्शनप्रवीण, श्रीजिनशासनउद्योतकारक, उत्सर्ग-अपवाद निश्चय-विवहार कारणना जाण, षट्भंगीनें विषै विदुरवर, परदेशपंचायण, अनेकदेश नगर पुर पाटण खेड कब्बड द्रोणमुह संनिवेशनें विषे विहारना करणहार, धन्नाणं ते राजा राणां जुवराजा कोडंबिक श्रेष्ठि सेनापति ईभ्य व्यवहारीया जे श्रीपूज्यजीनी निरंतर अमृतमय देशना सांभले, धन्य ते श्रावक, धन्य ते श्राविका, श्रीपूज्यजीना चरणकमल वांछा अने वांदे ते धन्य, अने पोसह पडिक्कमणां करै, व्रत पचक्खाण करै, देसविरति उच्चरें, पर्जुषणा पर्व करे ते धन्य. करुणासागर, महिमामेरु, धर्मभारधुरंधर, समुद्रनी परें गंभीर, मेरुनी परें धीर, क्षमाभंडार, तपतेजदिवाकर, चंद्रमानी परें सौम्यवदन, वायुनी परें अप्रतिबंध, भारंडपंखीनी परें अप्रमत्त, वृषभनी परें धोरी, कुंजरनी परें सोंडीर, सिंह जिम दुर्धर, कर्मलेपिं करी रहित, पंच महाव्रत भार वहवानें विषै धोरी,

महाउदयदीप्यमान, तेजपुंज, तपस्वी, धर्मभारधुरंधर, वाचा अविचल, कुलमंडन, कुलदीपक, कुलउद्योतकारक, भव्यजीव आशाविश्राम, जिम देवतामाहें इंद्र, तारामाहें भंभा, सतीमाहें सीता, शास्त्र माहें गीता, हाथीमाहें ऐरावण, साहसीकमाहें रावण, वनमाहें जिम नंदनवन, काष्ठमाहें जिम चंदन, बुद्धिमाहें अभयकुमार, तीर्थमाहें शेत्रुंजय सार, पुन्यवंतमाहें शांतिनाथ, ब्रह्मचारीमाहें श्रीनेमिनाथ, जिम कर्म माहें मोहनीकर्म, धर्ममाहें श्रीजिनधर्म, रत्नमाहें चिंतामणि, पर्वमाहें पर्जुषण, तिम गच्छमाहें श्रीतपागच्छ तेहना सिरदार, मनवंछितफलदातार, समस्त आर्यदेशें सर्व अमारिनी उद्घोषणा प्रवर्तावक, परमपूज्य परमगुरु, श्रीमत्तपागच्छाधिराज भट्टारकपरंपरापुरंदरभट्टारक, श्रीश्रीश्री १०८ श्रीविजयदेवेन्द्र-सूरीश्वरजी सपरिवारान् चरणकमलान्, श्रीसूरतर्बिंदरात् सदा आदेशकारी चरणसेवक दासानुदास पायरजरेणुसमान, दशाओसवाल ज्ञाती सेठ रत्नचंद निहालचंद, सा. भीखा रूपजी, सा. वीमलचंद झवेरचंद, सा. रूपचंद वनमाली, सा. सुरचंद खुसालचंद मलबारी, सा. नरसीदास दुलभदास, सा. खुसालचंद लालचंद, सा. धर्मचंद केसरीसिंघ, सा. खुसाल नाथा, सा. अमरचंद मोतीचंद, सा. लखमीचंद खुसालचंद, सा. हर्षचंद जेचंद, सा. धर्मचंद नांनाभाई, सा. हर्षचंद मीठा, सा. मनोर दुर्लभ, सा. नेमचंद मोतीचंद, सा. तलकचंद हेमचंद । विसास्त्री(श्री)माली सोरठीया डोटिवाला खुसाल वर्धमान, सा. संघवि ताराचंद फतेचंद, सा. वीरदास मालजी, सा. झवेरचंद फतेचंद, सा. गोडीदास सकलचंद, सा. गुलाल मीठा, सा. हरीभाई भुला, सा. दुलभ पुंजीया, सा. विमलचंद सोभागचंद, सा. प्रेमचंद वणायक, सा. धर्मचंद खेता, सा. हेमचंद वेलचंद, सा. जोईता मेघजी, सा. रायचंद झवेरचंद, सा. दीपचंद वीजेचंद, सा. ताराचंद लालचंद, सा. दीपचंद भवानी, सा. रायचंद सोभाग, सा. भायचंद नथुं, सा. वीमलचंद लखमीचंद, सा. तलकचंद माणिकचंद, सा. माणिकचंद प्रेमचंद । तलपदा स्त्री(श्री)-मालीज्ञाती सा. नगराज पुंजीया, सा. विमलचंद माणिकचंद, सा. वनमाली भाईदास, सा. पनाचंद नथुं, सा. सुरदास रायकरण, सा. नांनाभाई हीराजी, सा. नारणदास अमाईदास, सा. पाना नांनाभाई, सा. नागर सुंदरजी, सा. वनमाली भुला, सा. इंद्रजी त्रीकम, सा. लाला आणंदजी, सा. वीमलचंद ताराचंद, सा. मलुकसा । विसा ओसवाल ज्ञाती सा. पानाचंद रायचंद, झवेरि नेमचंद वखतचंद, सा. मोती पारेख, सा. वर्द्धमान जीवण, सा. केसरीचंद

नांनचंद, सा. धर्मचंद भुदर, सा. दीवचंद फुलचंद, सा. नेमचंद झवेरचंद, सा. नथुचंद हीरा, सा. फते सुखमाल, सा. खेमा बका, सा. वखत वेलचंद, सा. लालचंद किका, सा. मोतीचंद सोभागचंद, सा. जेठा हरजी, सा. झवेर राजपाल, सा. सवाई जीवणदास, सा. खुबचंद हर्षचंद, सा. नेमीसा सवाई, सा. धर्मचंद दुंगरी, सा. पांनाचंद खुसालचंद, सा. सोमचंद नथुं, सा. वीरचंद लालचंद, सा. माणिकचंद मलुकचंद, सा. गटक वीरा, सा. केसरसिंघ माणिकचंद, सा. सोमचंद खुसाल, सा. वर्धमान लीलाधर । विसा पोरवाड ज्ञाति सा. लालचंद अखा, सा. फतेचंद रूपचंद, सा. उत्तमचंद देवचंद, सा. खुसाल मंगल, सा. नांनाभाई गलाल, सा. जेचंद गलाल, सा. हरखु मीठा, सा. प्रेमचंद मोतीचंद, सा. प्रसोत्तम हर्षचंद, सा. नरसीदास मयाचंद । भावसार ज्ञाति भा. जगजीवन कुबेर, भा. हीरा भगवानं, भा. त्रीकम मीठा, भा. नथुसा, भा. हरजीवन त्रीकम । अथ श्राविकाओ सेठाणि झवेरबाई, श्रा. जोईतीबाई, श्रा. सिंघवण कंकुबाई, श्रा. दुलभबाई, श्रा. नांनीबाई, श्रा. अमृतबाई, श्रा. सूर्यबाई, श्रा. जीवणकुंवरबाई, श्रा. भुलीबाई, श्रा. हेमकुंअरबाई, श्रा. रामकुंवरबाई, श्रा. रत्नबाई, श्रा. सांमकुंअरबाई, श्रा. भुलीबाई, श्रा. हेमकुंअर कुंदलता, श्रा. प्रेमकुंअर, श्रा. रूपांबाई, श्रा. जडाव, श्रा. ईच्छा, श्रा. हेमकुंअरबाई, श्रा. हेमकुंअर-मालीफलीई, श्रा. वीजली, श्रा. सोवनबाई, श्रा. पारबतीबाई, चेली हर्षी प्रमुख समस्त संघके त्रीकाल द्वादशाव्रत वंदना अवधारवीजी । यत श्रीपूज्यजीना सुख संजम निराबाधपणाना, सुखे धर्मध्यान प्रवर्त्यना लेख सविस्तर करी समस्त संघने हर्ष उपजाववा । अपरं च श्रीपूज्यजीने प्रसादे समस्तसंघने सुख-साता छें जी । तथा श्रीपूज्यजीने आदेसे करी पंन्यास श्रीप्रेमविजयजी तथा पंन्यास श्रीनरोत्तमविजयजी अत्र चोमासानी स्थिति सारी पठे साचवी छे जी । श्रीपूज्यजीना गीतारथ जेहवा जोईयें तेहवा ज छे । पंन्यासजी पधार्या पछी घणां जीव धर्मध्याननें विषें प्रवर्त्या छे जी । तथा पजुसणांपर्व महोमहोत्सवपूर्वक थया छें जी । तथा श्रीपूज्यजीने प्रसादे सत्तरभेदीपूजा, वीसस्थानक तथा नवाणु तथा सा. तलपदा श्रीमाली मलुकचंद साइं कराव्यु अष्टोत्तरी स्नात्रमहोत्सव तथा श्रीहरीपूरामध्ये श्रीलाडुआ श्रीमाली संघ समस्ते पंचकल्याणक तथा नंदीश्वरद्वीपमहोच्छव तथा अष्टोत्तरीस्नात्र महोच्छव तथा बिंबस्थापनमहोच्छव घणा आडंबरें थया छें । तथा विसाओसवाल ज्ञाति सा. गलालचंद सोमचंदे आसाढ चोमासानुं सामीवच्छल आवगुं^{३२} जमाड्युं छे ।

तथा अठाईधरना पारणा सोरठीया स्त्री(श्री)माली ज्ञाति तथा छमछरीना पारणां सा. ओछवभाई तथा सा. हरजीवन धर्मचंदे आऊगो कर्यो छे । तथा प्रभावना तथा तपमध्ये पाखीतप, तथा चोमासितप, तथा छमछरीतप, तथा माणिकतप, तथा पंचमीतप विधिये सहित तथा छठ, अठम, दशम, दुआलस, अठाईयो प्रमुख पोसह पडिक्कमणां व्रत पच्चखांण विसेषें थया छें ते अवधारवुंजी । बिजुं श्रीसंघनी विनति एक जे श्रीपूज्यजीनें वांछानी श्रीसंघनें उत्कंठा घणी छे । ते माटे श्रीसूरतसेहर वेला पधारवुंजी । घणु सुं लखींइ । श्रीसूरतना संघनें श्रीपूज्यजीनी देसना सांभलवाने घणो उछाह छे । ते लिखता पूर्वतुं नथी । बिजुं जे दीवस धन्न करी जाणसुं जे दीवसे श्रीपूज्यजीनो दरसण थस्ये ते माटे श्रीजी साहिबने वेला पधारवुंजी जीम सकलसंघनो मनोरथ पूर्ण थाय । ए वीनती अवधारवीजी । जीहां श्रीपूज्यजी देवजात्रा करो तिहां श्रीसूरतना संघनें संभारवोजी । अत्र सिझायध्यानें ज्ञातानी थाय छे, व्याख्यांनमां सूत्र **जंबूद्वीपपन्नति** वंचाय छे, ते उपर **चंद्रप्रभुचरित्र** वंचाय छे ।

अथ गुरुभास लिख्यते ॥

दूहा : दरीसण ताहरो देखता, सकल जाये संताप,
अंग अधिक सुख उपजें, खुले अनंता पाप. १
गुणवंत मोटा गच्छपति, परगट विद्यापूर,
नीर गंगा जिम नीरमला, सही मंत्रधारी सूर. २

॥ देशी - भटीयांणिनी ॥

श्रीविजयदेवेन्द्रसूरिराया हो, साहिबजी तुम्ह करु विनती,
सूरिशिरोमणी सार,
देखतां सवी भागे हो, दुख-दोहग जायें थाइं ऊन्नति,
जेह तणो मुखचंद. १
श्रीविजय..... [आंकणी] वंदो तपगछराय
सुखसंपत्ती थाइं हो, सूरी प्रणांम करें थकें,
जन्म कृतारथ थाय,
गोयम सोयम आदे हो, सूरीश्वरकू देखके,
शिर नांमे त्रिणकाल. २

श्रीविजयदेवेन्द्रसूरिराया हो साहिबजि तुम्ह करुं विनती.
प्रेमवीजय नित प्रेम हो, सू(सु)खेमविजय वर सुभ मनें,
विजय नरोत्तम रूप,
अमरविजय नीत वंदे हो, **माणिक्यविजय** सुपूज्यनें,
हेमविजय वर साध. ३ श्रीविजय.....
वंदना नित अवधारो हो, तपगछ तणां सिरसेहरो,
अवर साधु वर जेह,
सपरिकर सवी नांमे हो, त्रीकाले सुखकर सुभ वरा,
बत्रीसे सुखकार. ४ श्रीविजय.....
लक्षण अंगे बीराजे हो, रूपें सहु जगने मोहता,
नीर्जीत कांमविकार,
पंच माहाव्रत पाले हो, प्रवचन आठेसु सोभता,
लब्धि तणा भंडार. ५ श्रीविजय.....
वांणी सजल-जलद समी गाजे हो, भवीक सीखी श्रवणें सुणी,
मोद लहे मनधीर,
सुध धरम उपदेसे हो, भवीयणनें देई हित मुणी,
गुण गावे नर नार. ६ श्रीविजय.....
चीत्त धरी **सुरतनो** हो, वाल्हेस्वर सुअवधारज्यो,
सुं लखींइ गुंण तास,
पाउसुं सूधारो हो, सूरीश्वर संघ संभारज्यो,
चरण नमें नितमेव. ७ श्रीविजय.....
संघसिरोमणि वारु हो, सा. **भाईचंद** सुसेहरो,
अवर श्रावीका जेह,
वडेरी **जोइतिबाई** हो, संभारे नित जिम मेहरो,
सूरीवरसु तास. ८ श्रीविजय.....
श्रीवीजयजिनेंद्रसूरिना हो, साहिबजि तास पटांबरु,
महिमा मेरु समान,
दीन-दीन चढते वांने हो, नांमे नव नीद्ध ऋद्ध करु,
पांमी गुरुउपदेस. ९ श्रीविजय.....

सूरीश्वर गुण गातां हो, दलीह जाइ ते सुभ मणें,
दरिसण दुरित पलाय,
गछपतीना गुंण गावे हो, सुप्रेमविजय सिस इम भणें,
वीनतडि ए अवधार. १० श्रीविजय.....
॥ इति श्रीविनति सिञ्जाय संपूर्ण ॥

अथाग्रे मुनीवंदनमाह ॥

अत्रत्य पं. प्रेमविजय ग., पं. खेमविजय ग., पं. नरोत्तमविजय ग., पं.
रूपविजय ग., पं. अमरविजय ग., पं. माणिक्यविजय ग., मु. हेमविजय ग.,
मु. गुलाबविजय ग., मु. जसविजय ग., प्र.ठा. ९नी वंदणा १००८ वार
अवधारवीजी । साध्वी रत्नत्रयी[श्री], सा. जलस्त्री(श्री)नी वंदणा अवधारवीजी ।

॥ अथ गुरुवंदनभास लिख्यते ॥

दूहा : कुंकणदेशमें साहिबा, वीचरो छो गणधार,
तीरथजात्रा नीत करो, करतां उग्र विहार. १
ए देशी दीपे घणो, मुमोईबिंदर बहुमोल,
गछपतिजि तुमें सांभलो, सुरतनें नही तोल. २
नीमोही देशमें साहिबा, स्युं मोह्या गछराय,
सूरतसेहर पधारजो, संघना सीझे काज. ३
मांकण चांचण मगतरा, सूक्ष्म जिव अपार,
सांझ समे मुख पेसतां, मच्छर करें झणकार. ४
सूरतनो सहु संघ मली, विनती लिखें बनाय,
श्रीजि साहिब पधारजो, प्रणमुं तुमारा पाय. ५

॥ अथ विनतीना भास प्राह ॥ वीरजीने वचनें अमृतरस झरे रे - ए देशी ॥

जनमुखवासनि पद प्रणमी करी रे, विनति करे सुविसाल,
संघ चतुर्वीध मलीनें विनवें रे, पांमे मंगलमाल. १
सूरत सेहर पधारो गच्छघणी रे [ए आंकणी]
ते देसे मोह्या साह्यबा रे, नीसनेही गछराय,
वेला पधारो हो सूरतसेहरमा रे, संघने आनंद थाय. २ सूरत.....

सूरतसेहर छे गुरुजि अभिनवो रे, भोजन नव-नवि भांत,
साल दाल सुथरा अतिसोभता रे, मेवा तणी घणी जात. ३ सूरत.....
संघ तणा मनोरथ पुरवा रे, पउधारो गच्छराय,
पनरमा धर्मनाथ जीनेंसरू रे, वली सुरजमंडण पास. ४ सूरत.....
संघ चाहे छे गुरुजिने अह-नीसे रे, वीनतडी अवधार,
सा. अमीचंदकुलमणी दीनकरू रे, मात सरूपा-उरहार. ५ सूरत....
वाट जोता पुज्यजी बहु दीन थया रे, संदेसा केइ वार,
पिण मनमें तुमे आंणो कीम नही रे, द्यो दरीसण एक वार. ६ सूरत...
तुम दरीसण वीण सुरत संघने रे, घडी एक वरस समान,
संघ वंदावा पुज्यजी पधारीये रे, द्यो उपदेसनुं दान. ७ सूरत.....
मुमाईबिंदरनो संघ ते जांणज्यो रे, कांमणगारो ते होय,
भोलवि राख्यो गुरुजिने तिहां कणे रे, मनमा विमासीने जोय. ८

सूरत....

जण जण पुछें हो सुरत संघना रे, गछपति आवंता दिठ,
आडा डुंगर दरीया अति घणा रे, पण मनमाहें पईठ^३. ९ सूरत.....
एम करवु गुरुजिने नवि घटे रे, स्युं ललचावो दीन-रात,
एकवार संघने वंदावा पधारीइं रे, कहीइं केतलीक वात. १० सूरत.....
तुम आवेथी गछपति अतिघणो रे, संघने बहु सुख थाय,
संघने विसरता गुरुजि नवि बने रे, गुणनीधी गछपतिराय. ११ सूरत....
सीता चाहे हो दशरथपुत्रने रे, जिम रेवा गजराज,
तिम ईछे छे गछपतिराजने रे, गुरुदरिसण सुखसाज. १२ सूरत.....
अंग उपांगे पाठक सोभता रे, चरक-करण सीत्तरी गुंण ग्यांन,
ए पंचविस गुणे करी दीपता रे, वाचक मांणिक्यविजय सुभ ध्यांन. १३

सूरत.....

क्षमा कांति हीरे रूपे भला रे, रत्न गुमांन सुदर्शन तेह,
कस्तुरविजय आदे सहु मुनिवरा रे, वंदना होजो नित नित एह. १४
सूरत.....

अमीय समाणी हो गुरुनि देशना रे, सांभले ते नर नार,
धन ते दिन वली धन वेला घडी रे, गछपति वांदे सुखकार. १५ सूरत.....

विजयजिनेन्द्रसूरिना पट्टधरू रे, विजयदेवेन्द्रसूरिराय,
सूरत संघनी विनंति मांनई रे, अमर नमें नित पाय. १६ सूरत.....

॥ अथाग्रे मुनिवंदनमाह ॥

॥ तत्रत्य ॐ श्रीमाणिक्यविजयजी, पं. खेमाविजयजी, पं. शीवचंदजी, पं. कांतिविजयजी, पं. हीरविजयजी, पं. रत्नविजयजी, पं. जीतसागरजी, पं. दर्शनविजयजी, पं. गुमांनविजयजी, पं. दांनविजयजी, पं. धर्मानंदजी, पं. मांनविजयजी, पं. किस्तुरविजयजी, पं. हेमविजयजी, पं. जीतविजयजी, पं. अमीचंदजी, पं. हर्षचंदजी, पं. लालचंदजी, पं. वृद्धिचंदजी, पं. नरंद्रसागरजी, पं. वीरमविजयजी प्र. परिवारने वंदणा कहविजी । श्रीश्रीश्रीश्रीश्री ॥

संवत् १८८९ वर्षे मासोत्तममासे माघमासे शुक्लपक्षे पंचमितिथौ ५ शनौ वासरे श्रीयां भवतु । श्री ।

* * *

(१८)

वीसलनगरमां बिराजमान विजयदेवेन्द्रसूरिजीने जोधपुरथी पं. सिद्धविजयजीनो पत्र

अन्य पत्रनी जेम आ पत्रमां पण संस्कृत पद्यो द्वारा पांचे जिनेश्वरोनी वन्दना पूर्वक पत्रलेखननुं मङ्गलाचरण कर्तुं छे । त्यारबाद बीजां संस्कृत पद्योथी माणिभद्र यक्षराजनी स्तवना करी कविए छप्पयमां तेमज 'आज भले....' ए देशी द्वारा गुर्जर देशनुं तेमज वीसलनगरनुं सुन्दर आलेखन कर्तुं छे । वीसलनगरनी राजाखान (?), मन्त्री इच्छाचन्द, पण्डित भाउ फणेश, शेट मनछ मगनजी, हेमजी, जेठा लखमी, मेता रामजी विगेरे राज्यपदाधिकारीओनुं वर्णन करी कविए त्यांनां जिनालयो, जैनैतर मन्दिर, वाव-तळाव विगेरे स्थापत्यो, धर्मशाळा, पोशाळादि स्थानोनो तादृश चितार पत्रमां रजू कर्यो छे । 'म्हारा पगल्याने....' ए देशी द्वारा गुर्जरदेशना लोकोनुं कटाक्षबद्ध स्वरूप आलेखी सूरिजीने जोधांणा पधारवा अरज करे छे । सूरिगुण ३६ नुं स्वरूप 'चन्द्रप्रभ मुख...' ए देशीमां वर्णवी अन्य गुणोनुं वर्णन त्यार पछीना कवित्तमां तथा संस्कृत श्लोकबद्ध रचायेल लघुकाव्यमां कवि रजू करे छे । आ पत्रनां संस्कृतपद्यो आगळना पत्रमां मळतां संस्कृत पद्य जेवा ज छे । फरकमां त्यां ज्यां पालनपुर नगरनुं नाम छे त्यां अहीं वीसलनगरनुं नाम जोवा मळे छे । वीसलनगरनां जिनालयोने जोइ भक्तिवश आप त्यां अत्यार सुधी भले रह्या पण हवे करुणा आणी अमने दर्शन आपवा आप जोधांणा पधारो एम कवि विनन्ति करे छे । अहीं जिनालयोनी साथे सङ्गळायेली विगतो ऐतिहासिक दृष्टि ए घणी महत्त्वनी छे । त्यार पछीनी ढाळमां कविए मरुधरदेशनुं, जोधांणा नगरनुं, पोळ, सरोवरादि स्थापत्योनुं वर्णन आलेख्युं छे । फरी त्रिभङ्गी छन्दमां मरुधरनुं, त्रोटक छन्दमां मांनसिंह नृपतिनुं तथा 'अज जिम.....' ए देशीमां राज्यपदाधिकारीओनुं तेमज नगरना परिसरमां आवती तीर्थभूमिओनुं अने नगरना जिनालयोनुं अद्भूत वर्णन कविए रजू कर्तुं छे । त्यार पछीनां पद्योमां पूज्यश्रीना निश्रावर्ति श्रमणवृन्दने पोतानी साथे रहेला मुनिवृन्दनी वन्दना जणावी पत्रालेखननी संवत् साथे स्वनामोल्लेखपूर्वक पद्यपत्रनुं कविए समापन कर्तुं छे । मुडीया

लिपिमां लखायेल गद्यपत्रनी शरुआत सूरिना ३६ गुणोनी वर्णनाथी करी पं. सिद्धविजयजीना सफळ चातुर्मास अंगेनी विगतो श्रीसङ्घे रजू करी छे । फरी आवता वर्षे पण आमनेज चातुर्मास अहीं राखशो एवी विनन्ति करी पत्रनुं समापन करे छे । पत्रान्ते सूरिजीना श्रीसङ्घमां पधारता थता उत्साहनी विगतो नोंधी खामणा लखवापूर्वक लेखक पत्र पूर्ण करे छे ।

प्रस्तुत कृतिनी रचना दीपविजयजीना शिष्य कवि सिद्धविजयजीए करी छे.

*

॥६०॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीमत्पञ्चपरमेष्ठिने नमः ॥ श्रीपञ्चतीर्थपतये नमः ॥
श्रीयक्षाधिपतये नमः ॥

वंदे श्रीआदिनाथं सकलसुखकरं देवदेवेन्द्रवन्द्यं,
राजा श्रीनाभिधेयं जगतजयकरं तस्य वंशेषु जातम् ।
मातर्मरुदेवि(वी)नाम्नी सकलशुभकरी कन्दराकुक्षिसिंह,
तस्मिन् चरणे लुठन्ति शिववधु(धू) वधु(धू)टी सिद्ध मे संददं(दा)तु ॥१॥

॥ श्रीशान्तिनाथस्तुतिः ॥

श्रीशान्तीश्वरं जिनवरं प्रणमामि भक्त्या,
विश्वेश्वरस्य कुलसम्भवशुभ्रसक्त्या (?) ।
तन्नामधेय सुखसम्पदकारको मे,
गर्भस्थितैव प्रकरोति च रोगहानि(र्नि) ॥२॥

॥ अथ श्रीनेमिस्तुतिः ॥

नेमिर्नेमवरं विभू(भु)र्जयकरं श्रीचन्द्रवंशोद्भवं,
श्रीयादवकूलभूषणं शुचिवरं सामुद्रविजयानुजम् ।
राजीराजीमतीविबोधनपरं कामद्रुमोन्मूलयन्,
वन्दे नेमिजिनं द्विविशमवरं कारुण्यपुण्यापणम् ॥३॥

॥ श्रीपार्श्वनाथस्य स्तुतिः ॥

पार्श्वेशं पार्श्वनाथं कमठशठहठं कन्दकुदालभूतं,
वामामातप्रसूतं कलमषलहरं अश्वसेनावतंशम्(सम्) ।

तीर्थे सम्मेतशिखरे(शैले) शिवपदविलसन् नामविख्यातकीर्ति(र्त्ति),
एतत् पार्श्वं नमामि धरणिपदयुतं नागनागेन्द्रवन्द्यम् ॥४॥

॥ श्रीवर्धमानस्तुतिः ॥

वीरं वीरजिनेश्वरं द्युतिमहान् दिव्या विभूत्यान्वितं,
मेरुश्चालनचालनैकप्रवरं सिद्धार्थसूनो मही ।
एतत्तीर्थपतिं सुरेन्द्रमहितं श्रीगौतमाराधितं,
धीरत्वादिगुणान्वितं जयतु मे श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥५॥

॥ श्रीमाणभद्रस्तुतिः ॥

बहून् पूज्योभ्यर्च्यो जगति जयकर्ता शुचिनृणां,
गदां चक्रं पुष्पं विमलफलदां अंकुशधरम् ।
महान्माणिक्येन्द्रो विजयत हहैत्युत्कटवरं,
वैस(सवै) श्रीपूज्येभ्य वितरतु मनोवाञ्छितसुखम् ॥६॥
एतत्पञ्चजिनाधीशान-प्रणम्य परमेष्ठितः ।
जक्षाधीशं च सानन्दै-र्लिख्यते लेखपद्धतिम् ॥७॥

॥ अथ लेखपद्धति ॥

प्रेमें प्रणमु भारती, गणपति गुणगंभीर,
सदगुरुचरण सुहंकरं, तीरथपति जिन वीर. १
सहु देशां सिरसेहरो, धर्मधुराधर धीर,
गुर्जर जगमां परगडो, निरमल गंगा नीर. २
वड कवि ओपम वर्णवै, मन धरि मतिनी दोड,
पिण सुरगुरु न कही सकै, धर गुज्जरनी जोड. ३

छप्पय : गुणनिधि है गुजरात, देश सारां सिर दीपत,
काबल बलख खंधार, जोर तिणही को जीपत,
बहु बुधि रिध-सिधवान, वसै तिहां नर ही विचक्षण,
दयाधरम उर धार, जिन गुरु पूजत नित जन,
उपगार करत नर नारि अति, सकल काम सुख अनुसरै,
गुजरात देस अति वेस इण, कहो होड कुण तसु करै. १

॥ आज भलें दिन ऊमाहो - ए देशी ॥
 सहु देसां सिर सोहें हो मन मोहै नर नारी तणा,
 गुज्जर धर सुभ वेस,
 रोग सोग नहीं व्यापे हो संतापें कोपे पापनें,
 आपे सुख अति वेस. १ सहु.....
 नित प्रति सहु नर नारी हो, सुभकारी सारी सोहती,
 मोहती इंद नरिंद,
 उज्वल अनुपम वेसें हो, सुखलेसें नयनां चोरती
 मोरती मान महेंद. २ सहु.....
 दिव्य रूप धरें देही हो, जग तेही इंद्राणी नही,
 पूजें जिन त्रिण काल,
 षट कायक प्रतिपालें हो, रखवालें प्रवचनमातनें,
 सत्य शील सुभ चाल. ३ सहु.....
 वन्दन अनूपम राजें हो, सुख साजै सारद चंदज्युं,
 वचन अमृत रसाल,
 तिण ही ज उत्तम देसें हो, नहीं क्लेसें रेसे सुंदरुं,
 वीसलनयर विसाल. ४ सहु.....
 ओपम एहनी कहवा हो, नवि लहवा गुरु निज बुद्धिथी,
 मुझथी किम कहवाय,
 तो पिण बुद्धि विस्तारै हो, किंचित् वर्णवुं,
 सद्गुरुपद चित्त लाय. ५ सहु.....
 अनड अभंग अगंजी हो, नहि रंजी अरिदल देखनें,
 गढ मढ पोल प्रचंड,
 कंगुर भुरज छै चंगा हो, बहुरंगा खाइ-बंधक,
 उंडा अति ब्रहंड. ६ सहु.....
 तिहां राजिंद सुखसाजे हो, विराजें नीत गुणें करी,
 षट्दर्शनप्रतिपाल,
 खान महा सुलतान हो, सुभवान दानगुणें करी,
 मानमहेंद रिपुसाल. ७ सहु.....

नित प्रति स्वधर्म पालता हो, सुद्ध माला इष्टना नामनी,
 जपमाला जग सार,
 रटत सदा तन मनथी हो, वली वचनें स्तवना इष्टनी,
 सिष्ट सदा हितकार. ८ सहु.....
 अनमी जगमें राजे हो, दिवाजे साजें तेजथी,
 मानुं रवि परभात,
 उदयो गुणगण किरणे हो, नहिं वरणे रातो रोसथी,
 पोसक परम सुजात. ९ सहु.....
 तस मंत्री मनमोजें हो, नहि खोजें पापसंतापनें,
 इच्छाचंद सुभ चाल,
 चोर चरडने दंडे हो, नहि खंडे आण नरिंदनी,
 हाकम दीनदयाल. १० सहु.....
 पंडितपद करि राजे हो, वलि गाजें राजेंद काममें,
 भाउ फणोस विख्यात,
 सेठ पदें सुभ गाजें हो, विराजें मनछा मगनजी,
 देवी अमोलख जात. ११ सहु.....
 हेमजी जेठा लखमी हो, नहि विषमी सरधा तेहने,
 केसव चिमन गुलाब,
 मेंता पदमें राजें हो, वलि उत्तम सारथ रामजी,
 एहनें धर्मनो जांब. १२ सहु.....
 अवर वली गुरुरागी हो, सुभ जागी सरधा तेहने,
 अधिका लिखमीवंत,
 वलि तिहां पवन छतीसे हो, मन हीसें सदगुरु नामसुं,
 वसत सदा सुख संत. १३ सहु.....
 वलि जिनघर तिहां चंगा हो, मनरंगा पास चिंतामणि,
 च्यार भूम चोसाल,
 शांतीसर मन भाया हो, सुखदाया सेवक संतनें,
 धन्य ते पूजे त्रिण काल. १४ सहु.....

नगर सदा रखवाले हो, प्रतिपाले अंबा **कालिका**,
भीमनाथ महादेव,
जालेसर दरवाजें हो, विराजे अधिकी खंतसुं,
 सारें सब जन सेव. १५ सहु.....
हीरावाव सुचंगी हो, नहि भंगी गंगतरंगथी,
 पालीबंध तलाव,
 वाग मनोहर सोहे हो, मन मोहें रागी लोकनें,
 देखत अधिको चाव. १६ सहु.....
धर्मसाला सुविसाला हो, तिहां जाला कर्मना कापवा
वडतपगछनी सार,
 जाली गोख जरोखा हो, जहां *जोखां करता मुनिवरा,
 धर्मध्यान उरधार. १७ सहु.....
 तेह नगरना वासी हो, विसवासी इक गुरुचरणना,
 वीनति करें बहुवार,
 पूज पधारें वेगें हो, नहि छेगें^५ संघनी वीनती,
 साथे मुनिपरिवार. १८ सहु.....
 संघ वधावै हरखै हो, धन वरषै पावस मेघज्युं,
 गुहलीगीत रसाल,
 भक्तिवसें गुरु आगें हो, वड भागें आगम सांभलें,
सिद्ध सहाइ विसाल. १९ सहु....

॥ छंद - छप्पय ॥

वीसलनयर सुधाम, सहर सारां सिरसेहर,
 धर्म दया उरधार, पापदल दूरें परिहर,
 संघ सहु त्रिण वार, साचै मन जिन सेवै,
 भावै द्वादश भाव, दान सुपात्रे देवै,
विजैदेवेंद्रसूरि वंदै विविध, भाव सक्ति मति अनुसरै,
 वीसल अनूप गुर्जर धरै, कवि ओपम कहां तक करै. १
 दूहा : सहारा घणा उण देसमें, एक एकथी सार,
 पिण सहू जगमां परगडो, **वीसलनयर** उदार. १

॥ म्हारा पगल्यांनैं पायल लाज्यो - ए देशी ॥

गुणनिधि गुज्जर मोह्या हो सदगुरु म्हारा,
 छयलछबीला हो श्रावक देखने,
 थारी सूरति अति सुंदर सुखदाइ हो सदगुरु म्हारा,
 नयण उमाहया हो दरसण पेखवा. १
 जिम चंद चकोरी मेहा हो सद..., चात्रक मनमे हो नित प्रति चितवै,
 जिम चंपकतरुवन लीनो हो सद..., भमर ते भीनो हो नित प्रति चितवै. २
 वलि दिनकरतेज उमाहया हो सद..., कमलनी विकसें हो सहसकिरण थकी,
 तिम तुम्ह गुण मन लीणो हो सद..., तन वलि चीनो^६ हो गुरुचरणां थकी. ३
गुर्जरलोक ठगारा हो सद..., मोहनगारा हो मोहया गुरु भलै,
 स्युं स्युं बोली बोलें हो सद..., कपट न खोले हो अंतर एटलै. ४
 पीलर वरणें देहा हो सद..., मानवदेहा हो सुंदर भामनी,
 कृसतनु केसरवेसें हों सद..., अंबरदेसें हो मांनुं^७ दामनी. ५
 गुरुनी भक्ति घणेरी हो सद..., करै अनेरी हो नव नवी भांतसुं,
 द्रुमक चिंतामण पामी हो सद..., तिम परि परिखें निरखें खांतसुं. ६
मात सरूपा उरजाया हो सद..., सुजस सवाया हो **अमीकुल**चंदमां,
 दिनकर तुल्य प्रतापी हो सद..., **चोपडा**गोत्रें हो जिम घन चंद्रमा. ७
 गच्छ चउरासीनो राजा हो सद..., चढत दिवाजा हो तखत तपा तणै,
जोधानें नयर पधारो हो सद..., अरज अवधारो हो संघ सहु इम भणै. ८
 दरसण द्यो वडभागी हो सद..., तन-मन-रागी हो इक गुरुचरणथी,
 प्रवर पंडितपदधारी हो सद..., **दीप** जयकारी हो **सिद्ध** कहै सरणथी. ९

दूहा : सारद सार दया करी, दीजै वचन विलास,
 गुण गाउं सदगुरु तणा, अष्टोत्तरशत खास. १

॥ चंदाप्रभु मुखचंद सखी मोए देखन दे - ए देशी ॥
 पूज चरण सुखदाय सखी मोयें वंदन दे,
 अहनिशि नमुं चित लाय सखी मोयें वंदन दे,
 इंद नरेंद मन भाय सखी मोयें वंदन दे,
 तन मन वचन उमाय सखी मोयें वंदन दे,

परमानंदपद थाय सखी मोयें वंदन दे,
 भारतीकंठ विराजता सखी वंदन दे, कलि गौतम अवतार. सखी.....,
 अबोध जीव प्रतिबोधवा सखी....., तप तेजें दिनकार सखी.... १ पूज....
 एक असंजम टालता सखी....., दुविध धर्मदातार सखी.....,
 तीन तत्त्व वाचक वरु सखी....., च्यार कषायकुठार सखी.....२ पूज....
 पंच महाव्रत पालता सखी....., जीवरक्षक षटकाय सखी.....,
 भय साते ही परहर्या सखी....., आठे मद ही हठाय सखी.... ३ पूज....
 वाड नवे ब्रह्मचर्यनी सखी....., पालक विसवावीस सखी.....,
 आदर करिनें आदर्या सखी....., दश यतीधर्म जगीश सखी.... ४ पूज....
 वाचक अंग इग्यारना सखी....., पडिमा मुनिनी बार सखी.....,
 धारक वारक मोहना सखी....., पारक सुद्ध आचार सखी.... ५ पूज....
 जीत्या तेरै काठिया सखी....., चउद विद्या बहु जाण सखी.....,
 सोहमगणधरपटधरा सखी....., पनरै सिद्ध वखाण सखी.... ६ पूज....
 सोल कला शशि निरमला सखी....., पूनिम परें जस लीध सखी.....,
 सतरै भेद संयम वरा सखी....., एकंत तन मन कीध सखी..... ७ पूज....
 सील अंग जिन उपदिस्या सखी....., धारक सहस अठार सखी.....,
 काउसगना वलि जाणियें सखी....., उगणीस दोष निवार सखी..... ८ पूज....
 वीसथानिकतप आकरा सखी....., उपदेशक गुरुराय सखी.....,
 इकवीस सबला सिद्धांतमे सखी....., जाण तज्या मुनिभाय सखी..... ९ पूज....
 दुधर-परिसह जीपीया सखी....., मन-सुद्धे बावीस सखी.....,
 सुयगडांगना वीरजी सखी....., कह्या अज्झयण तेवीस सखी.... १० पूज....
 आणा जिन चोवीसनी सखी....., पालक आप जगीस सखी.....,
 भावना पणवीस भावता सखी....., कप्पाज्झयण छवीस सखी.... ११ पूज....
 निरमल गुण मुनिराजना सखी....., जाणक सत्तावीस सखी.....,
 नंदीसूत्रमें मतिज्ञानना सखी....., भेद कह्या अडवीस सखी.... १२ पूज....
 पापश्रुत सिद्धांतमें सखी....., कह्या जिनवर गुणत्रीस सखी.....,
 मोहनीकर्मनें वारता सखी....., पूरा थानक तीस सखी.... १३ पूज....
 सिद्धनां गुण तें जाणिया सखी....., शास्त्र थकी इगतीस सखी.....,
 जोगना संग पिण धारीया सखी....., वलि लक्षण बत्रीस सखी.... १४ पूज....

आशातन सदगुरुतणी सखी....., टाली आप तेतीस सखी.....,
 अतिसय जिनना जाणता सखी....., उपदेशक चोतीस सखी.... १५ पूज....
 वाणी गुणथी गाजता सखी....., त्रिगडै जिन पेंतीस सखी.....,
 छत्तीस उत्तराध्ययनना सखी....., वाचक आप जगीस सखी..... १६ पूज....
 गणधर पदना गुण घणा सखी....., पिण संख्या छत्तीस सखी.....,
 पंडित दीपविजय तणो सखी....., सिद्ध नमें निस दीस सखी..... १६ पूज....*

[अनुद्धृत पद्यो-]

[.....अवसर पामी सार. ३ पृ. २०० पछी-]

मनआनंदे महामुनी, वंदै पास कल्याण,
 आदीसर अवलोक्तां, मन उपनो सुभ ध्यान. ४
 तीन सिखर भूमी वली, तीन तिहां जिनराय,
 वांदी बैठा मुनिवरा, मन आनंद न माय. ५
 वली कंसारापोलमै, देहरा दीपै दोय,
 जेठा लखमीचंदनो, वली दलजी खुस्यालनो होय. ६
 खजुरी मोहला विचै, उपासरो चोसाल,
 तिहां विराजै गणधरा, देशन छे सुविशाल. ७
 वेदवाडीमांहि वली, वायांनी ध्रमसाल,
 आगे वली त्रिपोलीयो, चलै तिहां सुभ चाल. ८
 संवेगी मुनिवर तणो, उपासरो इक सार,
 मोलवाडामें देहरो, कर्मचंदनो धार. ९
 इत्यादिक महाधामनें,

★ आ पत्रमां हवे पछी आवता दूहा, श्लोक, ढाळो व. पालनपुर बिराजमान
 विजयदेवेन्द्रसूरि पर रूपेन्द्रसागरजीअे नागोरथी लखेला पत्रमां (क्र. १९) यथावत्
 उद्धृत थयां छे. तेथी अे पद्यो अत्रे न लेतां फक्त अनुद्धृत पद्यो ज अत्रे छाप्यां छे.
 समग्र पत्रना वर्णनक्रमनो ख्याल आवे ते हेतुथी पत्रनी सम्पादकीय भूमिका
 यथावत् राखी छे. वास्तवमां आ पत्र मूळभूत होवाथी अने रूपेन्द्रसागरजीनो पत्र
 आना पुनर्लेखनरूप होवाथी आ पत्रमां बधां पद्यो छापी बीजा पत्रमां अतिदेश
 करतो जोइतो हतो, पण अमारी पासे लखाण अलग क्रमे आव्युं होवाथी तेम करवुं
 शक्य नथी बन्युं. - शी० ।

[पोलां सात प्रचंड छै... पृ. २०१ पछी-]

राणीसर जग दीपतो, जीपतो लहर तरंग सुगुरुजी,
गुलाबसागर जलथी भर्यो, रहत सदा जल चंग सुगुरुजी. ७ मरुधर.....
 तिहां राजा जग राजतो, गाजतो तेज अनंत सुगुरुजी,
मांन महीपति **मरुधरै**, बुद्धिबलें विलसंत सुगुरुजी. ८ मरुधर.....
 सूरवीर साहसधरु, खाग त्याग निकलंक सुगुरुजी,
 जोधांसिरे जस जयकरुं, सबला माने संक सुगुरुजी. ९ मरुधर.....
 वचन न खंडे आपणो, धर्मथी अधिक मंडाण सुगुरुजी,
 तन धन ममता परिहरें, **सिद्ध** वचे सुप्रमाण सुगुरुजी. १० मरुधर.....

॥ छंद - त्रिभंगी मरुस्थलस्य ॥

सहुदेसासारं,

[वंदुं चित्त लाय के'. पृ. २०५ पछी-]

रूपविजय महिमानि(नी)लो, **रत्न** मुनिवर हो रत्ननी खान के,
हीरविजय अति हरखसुं, नित सेवे हो दानविजय जाण के. ३ श्रीविजय.....
सुदरसनविजय चित्त उजलें, **विवेकसागर** हो अति विनयप्रधान के,
 गुमानविजय गुण आगला, **रंगसागर** हो रहें चरण प्रमाण के. ४ श्रीविजय.....
 इत्यादिक मुनिवरघणा, सेवें सदगुरु हो नित चित्त लगाय के,
 मन तन वचनथी साचवै, गुरुसेवा हो सव सुखनी दायके. ५ श्रीविजय.....
 इहांथी वंदें भावसुं, **नगजयमुनि** हो नित नवलै रंग के,
ईसरविजय आणंदथी, **सिधजयमुनि** हो मनरंग अभंग के. ६ श्रीविजय.....
रिषभविजय रंगें नमें, **नवलमुनि** हो तुम वंदें भाय के,
मांनविजय मनरंगथी, **संभूमुनि** हो सुभ वदन उमाय के. ७ श्रीविजय.....
गौतम जयपद चाहतो, मुनिभावे हो **मोती** मन आण के,
दुरगो जीतो जयकरु, **भगवानो** हो **गंग अगर** प्रमाण के. ८ श्रीविजय.....
 इहांथी **मोहन** वंदना, मानीजै हो गुरु वार हजार के,
 सहु मुनिवरथी वंदना, कहज्यो अहनिशि हो नित करुणाभंडार के. ९ श्रीविजय.....
रामसिरी अति रंगसु, वंदै सुभ मनै हो पूरै अनुराग के,
कनकसिरी करै वंदना, **अमृतसिरी** हो अधिकै वडभाग के. १० श्रीविजय.....

धन्य ते श्रावक श्राविका, गुरुचरणें हो रहें चित्त लगाय के,
 तेहनें धर्मलाभ माहरो, वलि संघनी हो वंदना मुनिराय के. १०(११) श्रीविजय.....
 तिहांना संघ प्रतें वलि, सहु संघनो हो कहज्यो परणाम के,
 संघ प्रतें संभारज्यो, देवदरसनें हो करुणाना धाम के. ११(१२) श्रीविजय.....
 संवत रसनवसिद्धविधु (१८९६), पोषमासे हो शुचि पांचमी दाख के,
 गुरुवारें गुरुगुण भला, गाया भावे हो तन-मननी साख के. १२(१३) श्रीविजय.....
 तपगळमा अति दीपता, गुरु गिरुवा हो गुणना भंडार के,
गुलालविजय गहरा^{२९} गुणी, शिष्य दीपक हो जय **सिद्ध** मन धारके १३(१४)
 श्रीविजय....

॥ श्री जिनाय नमः ॥

स्विस्ती श्रीविसलनगर सूभ सुथाने पुज परमपुज सरब औपमाविराजमांन, अनेक
 ओपमालायक००० छतीस छतीसी एकसौ आठ सूरीश्वरगुणै करी विराजमांन,
 जंगमजूगप्रधान, सकलभट्टारक सिरौमणि पुरंदरभट्टारकजी श्रीश्री१०८ श्रीश्रीश्रीश्रीश्री
 विजयदेवेंद्रसूरीश्वरजी चरणान् चरणकमलायत जौधपुरथी सदा अग्याकारी चरणसैवि
 समसत संघ लिखतं वंदणा १०८ वार दिन प्रते त्रिकाल अवधारसि अठारा
 समंचार श्रीश्रीजीरा तैज प्रताप सुनिजर कर भला छै। श्रीश्रीजी साहबा रां धरमध्यांन
 खांन पांन रा सदा सरवदा आरोग्य चाहीजै। श्रीश्रीजी साहबा रां दरसण री
 अभिलाषा अत्यंत है सू संघ ऊपर कीरपा करनै दरसण दीरावसौ तिको दिन
 सफल हुसी। अठे चांमासा ऊपर संघरे नांवे सूवरण वरणा आलंकृत पत्र सदा
 आवै है। सू अैस आयौ नही सू किरपा करनै दीरावसी। संघनू भुलौ न चाहीजे।
 संघ तो सदा सुसेवक छै। तथा उण चामासी संघ उपर कीरपा करनै पं.
 श्रीसिधविजेजीनू मेलीया सु घणा जौग्य छै ने श्रीजिनराजरौ धरमध्यांन पोसो
 पडिकमणौ वखांणवाणी जिनपुजादिक री बधोतर उछव आछी तरैसू हुवा छै। ने
 फैर उछव धरम री वधोतर सदा हुवै छै, ने वाख्यांण श्रीनंदिजी मे श्रुतज्ञान रौ,
 उपदेसामे समकीतसूत्र रो ईधकार वचीजै छे सु मालम रहसी। नै आवतौ चांमासो
 अठे रखायासुं संघनै उपदेस धरमध्यांन पढावण री बधोतर आछीतरैसू हुवै छै, सु
 कीरपा करने चांमासौ बेठा-बेठ रखावसी। संघें वीनती अठे खेत्रेंमे धरमध्यांन रौ
 कालानुसारै लाभ दैखने लिखी छै। सू जरुर मनावसी। बीजु तौ श्रीश्रीजी साहब
 कीरपा करने मेलो सु प्रमांण छै। पीण अवरके तौ जरुर बेठाबेठ रखावसी।

घणौ काँई विनवां आप तौ सरव जांण छौ । श्रीसूधर्मास्वाम री गादी विराजीया छौ
सु जरूर कीरपा कर संघने लाभ देखीनै ईणांनुं रखावसि । संघ उपर कीरपा
सूदृष्टी रखावौ जिणथि विसैष रखावसी । श्रीधरमध्यांने देवजात्राए संघनै याद
करावसी वलमांन सूखलेख कीरपा करने दीरावसी । संघ लायक सेवा बंदगी
फूरमावसि । सरब साधूनै वंदणा केसी । संवत् १८९६ रा पोस सुद १४ सुकर वार
खीवजा राजगरा सुग चंद हरखचंद स्ही..... वनण(णा) वंचावसी..... ?

दूहा : संघ सकल मिलनें सदा, [आ चार दूहाओ पृ. २०७]

॥ देशी - गुहंलीनी ॥ सवाई गुरु एहनी चाल ॥

प्रणमी श्रुतदेवी माय, गाउं श्रीतपगछराय, जस नामें नवनिधि थाय,
सूरीश्वर वीनती अवधारो, हित नित करि(री) चित्तमां विचारो,
जोधांणें जरूर पधारो, आवी वीरजिणंद जुहारो. २ सूरीश्वर.....

तुम्ह दरसन प्यारे लागे, संघ वीनवें अधिक रागें, चोमास करो वडभागे. ३ सूरीश्वर....
गुरुसूरति मोहनगारी, सहुनें देखत लागें प्यारी, एह गुरुनी जाउं बलिहारी. ४ सूरी०.....
संघनो आग्रह मानीजें, वाणी अमृतरस पोषीजें, गुरु चरण कृपारस दीजे. ५ सूरीश्वर...
गुरु आयां लाभ ज थास्यें, व्रत नियम तपादिक आस्यें, पटकूल घरे पथरास्यें. ६
सूरीश्वर.....

पोसा पडिकमणा सार, साहमीनी भगति अपार, वरस्यें सिद्धपद जयकार. ७ सूरी०.....

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसिहीआए मत्थाएण वंदांमि । इच्छाकारेण
संदिसह भगवन् अब्भुठिओहं अब्भिंतर दिवसीयं राइयं पक्खियं चउमासियं
संवच्छरियं पांचे पडिकमणें खामेउं इच्छं ०॥

सीरी सीरीमल मनरूप जुहरमलरी वदण १०८ वर वदण वचावसी ।

..... वनण १०८ वचावसी । कीराप(रपा) राखावसी ।

.....

* * *

(१९)

पालनपुर बिराजमान विजयदेवेन्द्रसूरिजीने नागोरथी रूपेन्द्रसागरजीनो पत्र

संस्कृतमिश्रित गुर्जर पद्यमां आदिनाथ प्रभुनी स्तुति द्वारा कवि
पत्रालेखननी शरुआत करे छे. त्यार पछी अनुक्रमे शान्तिनाथ, नेमनाथ,
पार्श्वनाथ, वीरप्रभु तेमज माणिभद्रजीनी स्तुतिरूप मङ्गल करी कविए गुर्जरदेशनुं
वर्णन शरु कर्युं छे । ज्यां शत्रुञ्जय अने गिरनार जेवां पावन तीर्थो छे ते देशनां
केटलां वखाण करी शकाय तेम कही कविए पालनपुर नगरनी वर्णना करता
पल्लवीया-पार्श्वनाथ जिनालयमां थता महोत्सवनुं, त्यांना श्रावक-श्राविका गणनुं,
व्यापारीवर्गनुं, नर-नारी वृन्दनुं सामान्य वर्णन आलेख्युं छे । त्यार पछीना दूहा
तथा देशीमां सूरिजीना ३६ गुणोनी वर्णना करी कवि विजयदेवेन्द्रसूरिजीना गाम,
माता, पिता, वंशादिना नामोल्लेखपूर्वक स्तुति द्वारा सूरिजीने नागोर पधारवा
विनन्ति करे छे । सवैया तथा कवित्तना पद्योमां फरी सूरिगुणस्तवना वर्णवी
पछीना पद्योमां गुरुदर्शनना अभिलाषने कवि वर्णवे छे । पत्रनी मध्यमां २१
श्लोक वडे करायेली सूरिगुणवर्णनाने आ पत्रनी विशेषता कही शकाय ।
पालनपुरमां पूज्यश्री शा कारणथी पधार्या ते कारणोने जणावी करुणाथी ए
गुरुजीने मरुधरमां पधारवुं जोइए एम रजुआत करे छे । “आज हजारी” देशीमां
नागोर शहेरनी राज्यव्यवस्था, स्थापत्यो, जैनैतरमन्दिरो, जिनालयो, उपाश्रयोनी
अद्भुत वर्णना रजु करी छे । त्यार पछीनां पद्यो पण उपरना ज वर्णनना पूरक
होइ राजाधिराजना गुणोनुं तेमज राज्यरिद्धिनुं वर्णन त्रिभङ्गी छन्दमां तथा त्रोटक
छन्दमां कवि आलेखे छे । राज्यना अन्य वहीवटदारोनुं वर्णन ‘अज जिम...’
ए चालमां करी नागोरना परिसरनी अन्य तीर्थभूमिओनो कविए सुन्दर चितार
रजु कर्यो छे । सूरिजी साथे विराजमान मुनिवृन्दने पोतानी तेमज सहवर्ति
मुनिवृन्दनी वन्दनानुं आलेखन ‘अजित जिणंद’ ए देशीमां रजु करी गद्यपत्रनी
शरुआत सूरिगुणवर्णनथी ज करे छे । पं. रूपेन्द्रसागरजीनी चातुर्मासिक
आराधनानो उल्लेख त्यार पछीना गद्यपत्रालेखमां जोवा मळे छे । फरीना
चातुर्मास माटे पंन्यासजीने ज राखवा एवी विनन्ति करी आगळना दूहाओमां

सूरिजी प्रत्ये मिलननी आतुरताने रजू करे छे । पत्रान्ते नागोरना श्रीसङ्घना चातुर्मासनी विनन्ति अवधारवा विनवी सङ्घमां पूज्यश्रीना पधारता थनारा उत्साहनुं वर्णन करी खामणा खामी पत्र पूर्ण करे छे ।

प्रस्तुत पत्रनी रचना पण्डित मानसागरना शिष्य कवि रूपेन्द्रसागरे करी छे ।

शब्दार्थ

- | | |
|--|-------------------------------|
| १. लरै = दबावे (?) | १६. अज्झ = आर्य |
| २. मनमेर = मनस्मर-कामदेव | १७. जज्झं = युद्धमां |
| ३. कहांसत = कहेवावुं | १८. दफै = नाश करे |
| ४. टूंक = अन्य शिखरो | १९. धोंस = अवाज |
| ५. धु = धुवनो तारो | २०. उत = जाणे |
| ६. सुपरे = सारी रीते | २१. तडिदाह = विजळी (?) |
| ७. दिनथाट = घणा दिवसो सुधी | २२. इत = अहीं (?) |
| ८. पूरतंत्र = (तपना परम) तंत्रथी पूरा | २३. सेल = एक प्रकारनो भालो |
| ९. नूरजंत्र = रूपथी (जाहेर) अने यंत्रमां (निपुण) | २४. खांप = आभला |
| १०. कूरहंत्र = क्रूर (कषायने) हणनार | २५. अरकीयो = अटकीयो - अट्क्यो |
| ११. अनड = अनम्र | २६. गर = घरे |
| १२. कुंगर = कांगरा, शिखर | २७. नीराट = नीरांत |
| १३. भुरजा = किल्लानी उपर तोप गोठववा माटे तैयार करेली जग्या | २८. अवरक = आ वखते |
| १४. समस = मत्ससहितनुं (?) | २९. उप्रं = उपर |
| १५. झडां = ? | ३०. द्रसीटी = दृष्टि |
| | ३१. आयद = याद |

*

श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीमांणभद्रवीराय नमः ॥ अथ चित्रलेख प्रारभाते ॥

॥ प्रथम आदिजिन स्तुतिकव्य ॥

स्वस्तिश्रीआदिदेवं चरणयुगलं प्रणमंति नित्यं नराः,
वृषभ हि लच्छन काय कञ्चन समं अद्भूतकान्ति जिना ।
रोग हि सोग उचाट आपददलं गमयन्ती तत्पर सदा,
भव्य ही जीव जू तारणं तु शरणं देवाधिदेवं नमः. १

॥ शांतिस्तुति सवैर्यो २३सो ।

शांत ही नाथ सदा सुखदायक लायक केवलज्ञान संपूरो,
ओच्छव देव जू सेव करे नित ताल मृदंग ही तूरो,
जाहि भज्या सुख होत हें जीवकू जावत दुखारु दालिद्र दूरो,
हथणापुरराज कीये ध्रमकाज पछै ग्रहयो संयम मारग सूरु. २

॥ नेमिस्तुति सवैर्यो २३सो ।

नेम ही देवकी सेव करुं नित चित्तमे धार वडी चतुराई,
राजल नारकू त्याग करै ध्रमध्यांन धरै लरै कर्म कषाई,
स्याम शरीर बन्यो जिनको तिनको लच्छन शंख शिवादेवी माई,
बालपने ब्रह्मव्रत धर्यो ज्युं कर्यो मनमेरकुं मीनह काई. ३

॥ अथाग्रे पार्श्वनाथस्तुति काव्य - छप्पय ॥

प्रणमुं देव जिन पास, आस पूरै प्रभु अहोनिशि,
कमठदलन किरपाल, वले लंछन जिनधरम-विस,
सैहसफणा-शिरछत्र, शत्रु भाजै तिह समरत,
नीलवरण जगशरण, सदा दुख हरत कहांसत,
झिगमिग ज्योति तिनकी जगत, देवत्रुद्धि सिद्धि निद्ध दीयें,
पूजीयां पाप कटत हें, प्रबल पार्श्वनाथपद प्रणमीयें ४

॥ महावीरस्तुति ॥ छंद - अडि[य]ल्ल ॥

वर्धमान चित्त आन विबुधवर, निज पद अभैदेत तोकू नर,
इंद ही चंद नरिंद नमत नित, वंद ही चरन हरन दुख सतवत. १

प्रबल लघु पद मेरु जूं चंपित, कर धर धरें उदधि हि कंपित,
जन उधार पार कर जिनवर, हितकर भज्यां दुख भव भवहर. २
अथ दूहा : पंच जिनेसर प्रणमनें, आंणी चित्त उल्लास,
मांणभद्रमहिमा कहूं, जागत मर्द है जास. १

॥ मांणभद्रस्तुति दूहा ॥

दूहा : गुर्जरात देशै दीपता, मांणभद्र महाराज,
मगरवाडमै प्रगटीया, सारत सहुना काज. २
तपगछमंडन सुरतरुसमो, गणनायक वरदाय,
मांणिकसाहिब दीजीयै, दरसाउ परतिख आय. ३
रयणचिंतामणि तूं सही, कामकुंभ सुखकार,
साहिब **मांणक** माहरै, अन धन तणो दातार. ४
ताहरा तो गुण छै बहु, सुरगुरुथी न कहाय,
वीर साहिब तुम हो वडा, गुरुनें करो सुपसाय. ५
लिछमीलीला दीजीयै, महिर करी **जक्षराय**,
सेवक जांणीनें आपज्यो, दिन-दिन रंग सवाय. ६

॥ अथाग्रे गुज्जरदेशवर्णनमाह ॥

सकल गुणे करि सोहतो, सकल देश शिरदार,
गुज्जरदेश सुहामणो, तिहां **सेत्रूंजो** नें गिरनार. १
कर्मभूमिमां एहवो, तीरथ अवर न कोय,
दरसणथी पातिक हरे, नमतां नव निधि होय. २
इण गिर कांकर कांकरे, सीधा साधु अपार,
प्रथम जिणंद पधारीया, पूर्व निनांणु वार. ३
नेमि विना तेवीस जिन, समोसर्या गिरराज,
तीर्थ एह जग सास्वतो, इम बोल्या जिनराज. ४
मोटा मोटा जिहां वली, सहिर घणा सोहंत,
इंद्रपुरी जिम सोहता, वर्ण च्यार विलसंत. ५
जैनधर्म जिहां जागतो, मोटो मूरतवंत,
आज इणें पंचम आरै, दिनकर जेम दीपंत. ६

वर्ते जिहां जिनआगना, श्रावक जिहां परम दयाल,
जिनपूजा बहु भगतिसुं, जीवदयाप्रतिपाल. ७
इम अनेक ते देशना, केता करुं वखांण,
गछपति चोमासें रह्या, तिण ते धन्य शुभ ठांण. ८

॥ अथ देशनगरवर्णनमाह ॥

॥ ढाल ॥ वालाजी पंचमी मंगलवार के प्रभाते हींडवो रे लो - ए देशी ॥

गुरुजी भरतक्षेत्र-मझार के देशशिरोमणी रे लो,
गुरुजी सहस बत्रीसै देश के, वर्णवुं ते भणी रे लो. १
गुरुजी मुख्य देश मंडाण के, सिरैं गुज्जर कहयो रे लो,
गुरुजी जिहां **संखेश्वरा पास** जिणंद के, तेणें सास्त्रे लह्यो रे लो. २
गुरुजी महिमंडल मंडाण के, स्वर्गनें थोभतो रे लो,
गुरुजी हारी इंद्रपुरी दूरें जाय के, लही गुणें सोभतो रे लो. ३
गुरुजी तिण देशें अभिरांम के, नयर घणुं दीपतो रे लो,
गुरुजी **पालणपुर** सिरदार के, स्वर्गने जीपतो रे लो. ४
गुरुजी राज निबाब धिराज के, **मोती मैहतो** अधिकारीयो रे लो,
गुरुजी तिहां रह्या दिलमाय के, तिण नयरें कहें रे लो. ५
गुरुजी बाग वाडी आराम के, सजल जले भर्या रे लो,
गुरुजी पहाड अतहि परचंड के, सोहैं टूके^४ कर्या रे लो. ६
गुरुजी महाजन अति उछरंग के, तीरथ भेटता रे लो,
गुरुजी सेवें पासजिणंद के, पाप सवी मेटता रे लो. ७
गुरुजी वंदे गुरुजीना पाय के, अति उच्छव करी रे लो,
गुरुजी गुण गावें गुरुजीना के, बहु प्रेमें करी रे लो. ८
गुरुजी भावना भावें जाय के, जिनमंदिर करे रे लो,
गुरुजी पूजा सत्तर प्रकार के, ते शिववधू वरे रे लो. ९
गुरुजी तिहांना संघनो मोटो भाग के, गुरुवांणी सुणे रे लो,
गुरुजी केई वहे उपधान के, केई सिद्धांत भणे रे लो. १०
गुरुजी धन धन जस अवतार के, जनम लेखें करे रे लो,
गुरुजी स्वस्तिक पूरे आय के, मुक्ताफल धरे रे लो. ११

गुरुजी लूँछणा लेती अपार कें, गुरु नयणां फेरती रे लो,
 गुरुजी तृपति न पांमे तेह कें, नयणां हेरती रे लो. १२
 गुरुजी पालनपुरनो संघ कें, गुरु वंदे भावसू रे लो,
 गुरुजी गुरु वांछानो एह प्रभाव कें, तारे जेम नावसूं रे लो. १३
 गुरुजी करो धुँनि परें राज कें, उच्छवरंगें धरी रे लो,
 गुरुजी मांनसागरनो शीस, गुण गावै प्रेमे करी रे लो. १४

॥ पुनः नगरवर्णन देशी ॥

तिण देशें अती दीपतो रें, सकल नगर सिणगार सोभागी सांभलो,
 दीठां हरखित हुवै रै, पालणपुर सुविचार सोभागी सांभलो. १
 अलिकापुर होय अवतर्यो रे, मांनवलोक मझार सोभागी सांभलो,
 अनुपम सोभा जेहनी रे, कहत न आवे पार सोभागी सांभलो. २
 पल्लवीया पास सोहामणा रे, परचा पूरत संघ सोभागी सांभलो,
 नित नित ओच्छव अभिनवा रे, करे भविक मनरंग सोभागी सांभलो. ३
 सत्तर भेद पूजा रचे रे, भाव भगति भरपूर सोभागी सांभलो,
 नाटिक बहुविध नाचतां रे, कर्म करै चकचूर सोभागी सांभलो. ४
 समकित(ती) श्रावक श्राविका रे, जिनधर्म इकतार सोभागी सांभलो,
 सातक्षेत्रें धन वावरे रे, करे सफल अवतार सोभागी सांभलो. ५
 वसे जिहां व्यापारीया रे, धनपति धनद समांन सोभागी सांभलो,
 दांन मांन करी आगला रे, दिन दिन चढते वांन सोभागी सांभलो. ६
 देवकुमर सम दीपता रे, मांनवना तिहां थाट सोभागी सांभलो,
 अपछररूपें सोहती रे, नारी निरुपम घाट सोभागी सांभलो. ७
 पहिर पीतांबर पदमणी रें, सोलें सझी सिणगार सोभागी सांभलो,
 चालें गजगति चातुरी रे, सारा हें संसार सोभागी सांभलो. ८
 आवत जब बाजारमै रे, देखत ख्याल खुस्याल सोभागी सांभलो,
 व्यापारी व्यापारसुं रे, लेत अमामा(पा?) माल सोभागी सांभलो. ९

॥ अथ गुरुराजवर्णनमाह ॥

दूहा : उदयवंत दिनकर समो, करण कुमतिमति दूर,
 प्रतपो श्रीतपगछपती, जां लगइं भू शशी सूर. १

इक आणा अरिहंतनी, आराधें मनशुद्ध,
 द्विविध धरम जे उपदिसै, धरे त्रिण तत्त्व विशुद्ध. २
 च्यार कषायनं जीयता, वलि धरता व्रत पंच,
 पीहर जे षट कायना, साते भय नावै संच. ३
 आठे मद अलगा करी, नव वाडै धरें ब्रह्म,
 आराधै गुरु इक मनै, दशविध साधुनो धर्म. ४
 अनूपम अंग इग्यारना, अरथ अनेकना जाण,
 बार उपांग तणा बहू, विधि विधि करै वखांण. ५
 काठा तेर जे काठीया, नाठा जेहथी दूर,
 चतुर चतुरदश भेदना, विद्यायै भरपूर. ६
 भाखैं पनरे सिद्धना, सोल कलाये संपून,
 शशीहर परै सुहामणुं, वदन सदा सुप्रसन्न. ७

॥ अथ देशी - इडर आंबा आंबली रे - ए देशी ॥

सो गुरुजी मुझ सांभरें रे, दिन मांहीं सो वार,
 मन विहसै तन उल्लसैं रे, गुरुनांम सुणी सुखकार. १
 भविकजन! वंदो गछपतिराय [आंकणी]
 संयम सतरै भेदसू रे, आराधै एकांत,
 अष्टदश अलगी करै रे, पापथानिकनी पंति. २ भविक.....
 उगणीस दोस काउसगना रे, ते वारै निसदीस,
 दुस्तप तपविधिसू वली रे, सेवें थानक वीस. ३ भविक.....
 गुण इकवीस तणा धणी रे, श्रावक सेवै पाय,
 बावीस परीसह जीपता रे, अतिदृढ मन वच काय. ४ भविक.....
 सू(सु)परै सुगडांग सूत्रना रे, जाणें अध्ययन त्रेवीस,
 चोवीसइं जिनराजनी रे, आण वहै निसदीस. ५ भविक.....
 भावै पचवीस भावना रे, जाणें दसाकल्प छवीस,
 सत्तावीस साधु गुणें भर्या रे, लब्धि धरे अठावीस. ६ भविक.....
 उगणत्रीस निवारता रे, पापश्रुत परसंग,
 त्रीस थानिक महामोहनी रें, तास करें गुरु भंग. ७ भविक.....

एकत्रीस गुण सिद्धना रे, परकासै परवीण,
 बत्रीसै वर लक्षणे रे, लक्षत अंग अदीन. ८ भविक.....
 तेत्रीसै आसातना रे, टालें सुगुरु सदैव,
 चौत्रीस अतिसय जिन तणा रे, परूपता नितमेव. ९ भविक.....
 पेत्रीस गुण जिन वाणिना रे, श्रीगुरु तेहना जाण,
 छत्रीस गुण सूरीना रे, तेण सदा सोभमानं. १० भविक.....
 असीच्यार गणां शिरे रे, थे छो मोटा राय,
 मांसागर पंडित तणो रे, रूपेंद्र वंदे पाय. ११ भविक.....

॥ अथ गुरुदेशनगरवर्णन ॥

दूहा : धन सेत्रोवा नगर तिहां, धरा नांम धराय,
 धन जाति ओसवंश में, अवतरीया मुनिराय. १
 धन गुरु जिहां जनमीया, धन्य तुम्हारी जाति,
 धन चोपडा अमीचंद नें, धन सरूपदे मात. २
 पटधारी जिनेंद्रसूरिनें, भलो सोभायो पाट,
 गुरु प्रतपो रवि परें, राज करो दिनथाट°. ३
 नागोरनो संघ वीनवे, वेग पधारो राज,
 अम्हनें तुम्हे पावन करो, सारो धर्मना काज. ४
 नागोरनो संघ मिली करी, भाखें वचन विशेष,
 अवधारो अम्ह वीनती, सुंदर लिखीयें लेख. ५

॥ अथ सवैया ॥

इंद्रिय पांचको पोष निवारक, धारक सत्य संतोष आराधै,
 नवविधि वाड मनोहर दाखत, दसविध धर्म मुनिपद साधै,
 बारस भावना नित्य संभारत, तप-जप खप करि संयम वाधै,
 सूरि छत्रीस गुणें करि राजत, वीरजिणंद पद मारग लाधै. १

॥ कवित्त ॥

उदयें दिनेंद्र ध्रम, जाहर जिनेंद्र जोत, विमल सुरेंद्र ध्यान, जिनको निहार्यो है,
 सबही सुरेंद्र मिल, चोसठ करत सेव, नीके नरेंद्र आन, धरम उर धार्यो है,

सकल भट्टारक मणेंद्रसिर जगतगुरु, षट् गुण गुणेंद्र युं, मुनेंद्रपद तार्यो है,
 राजत जिनेंद्रसूर, तखत देवेंद्रसूर, नूरपूर तप साध, रमेंद्र पोष दोष वार्यो है. २
 दूहा : पूरतंत्र तपसा परम, सूरमंत्र सिरताज,
 नूरजंत्र जाहर निपुण, कूरहंत्र मुनिराज. ३
 पूज तणा गुण वर्णवुं, मुझ मुख जीहा एक,
 ब्रह्मा च्यार मुखे करी, कर न सकें गुणलेख. ४
 गयणांगण कागल करुं ॥ ५
 अम्ह हियडो दाडिम कुली ॥ ६
 हियडै ते किम वीसरै, जे सज्जन सुविचार,
 छिन छिनमे नित संभरे, जिम कोयल सहकार. ७
 किहां कोयल किहां अंबवन ॥ ८
 मठ मांहै तापस वसै ॥ ९
 गोह पहिली नीपजे ॥ १०
 दरसण दीजै साहिबा, करि करुणा हितकार,
 आज इणें दुसम अरै, तुंहि ज संघआधार. ११

॥ अथ गुणवर्णनम् ॥

स्वस्तिश्रीफलवर्द्धिपार्श्वमनिशं वन्दे सदानन्ददं,
 ते यस्य स्मरणेन पापभवभीकष्टं सतां शाम्यति ।
 विश्वव्यापिमहान्धकारपटलं सूर्यो यथा नश्यति,
 सद्बृन्दारकवृन्दवन्दितपदं मोहारिनाशेऽगदम् ॥१॥
 मर्त्यक्षेत्रगतोऽपि लोकत्रितयं विद्योतते दीप्तिभिः,
 ज्ञानादर्शतलेन हस्तकणवत् पश्यन्ति सर्वाङ्गिनः ।
 मेघो वर्णित वारि वारिधि तथा दिश्यन्ति सज्जन्तवः,
 तं पार्श्वं प्रणिपत्य निर्मलधिया कुर्वे गुरोर्वर्णनम् ॥२॥
 प्रवरे पालणपौरे, कुबेरर्द्धिसमन्विते ।
 अखण्डनीतिसंयुक्ते, धर्मकर्मान्विते पुनः ॥३॥
 एतादृशे शुभे स्थाने, निवश(स)न्ते(न्ति) महाधियः ।
 गुणौघवच्छिरोमण्यः, सकलभट्टारकेषु च ॥४॥

जाइकुलबलसंपन्ने, रूवे विनयदंसणे ।
 नाणचारित्र(त्त)संपन्ने, ओयस्तेजवच्चंसी य ॥५॥
 यसस्वी खन्ति मुत्तिश्च, मद्दवाज्जवसंयुते ।
 परीसहोवसग्गाश्च, खमे विषयवासना ॥६॥
 सर्वविद्याविनोदश्च, विज्ञश्रेणिशिरोमणिः ।
 वादीगुरुडगोविन्द, वादीघरट्टमुद्गरः ॥७॥
 वादी समुद्रआगस्त्य, वादीघूकअहर्मणिः ।
 विद्यानवद्यविहित-सर्वभूपालरञ्जनः ॥८॥
 वादीमस्तकशूलं च, वादीचूर्णे महोदधि ।
 वादीमर्दितमानं च, सिंहशार्दूलवादिषु ॥९॥
 वादीज्वरहरो वैद्यः, वादीहरिणकेसरी ।
 वादीवेश्याभुजङ्गश्च, शब्दलहरीतरङ्गभुक् ॥१०॥
 षट्दर्शनपशौ गोपः, भाण्डागारसरस्वती ।
 द्विसप्ततिकलाभर्ता, सर्वशास्त्रार्थधारकः ॥११॥
 महाकविविनितश्च, शीक्षिकृतबृहस्पति ।
 जितानेकवृन्दवादी, शुद्धमार्गप्रवर्तकः ॥१२॥
 न्यायमार्गधरो वेत्ता, मिथ्यामतनिकन्दक ।
 क्रयाकटोरकर्ता च, ज्ञाता स्वपरसामय ॥१३॥
 मेधाचतुर्दशौधीमान्, द्विसप्ततिकलाधरः ।
 उत्थापकश्च कुमते-शुद्धपन्थप्ररूपकः ॥१४॥
 शाब्दतर्ककाव्यकोषः-छन्दाऽलङ्कारधर्मवित् ।
 द्रव्यास्तिकस्तु पर्यायै-रस्तिनास्तिविशारदः ॥१५॥
 उत्सर्गापवादस्य, निश्चयैर्व्यवहारयुक् ।
 श्रीजैनशासनरतः, उद्योतकशिरोमणिः ॥१६॥
 श्रीवीरशासनेरर्क, भव्याम्भोरुहबोधक-
 दबोधबोधकश्चैव, वादीघूकविमर्दकः ॥१७॥
 धन्यास्ते रायराणाश्च, धन्या इभ्यनराधिपाः ।
 श्रावक-श्राविका धन्या, गुरोर्वन्दत्यहर्निशम् ॥१८॥

शृण्वन्ति तत्पराः भूत्वाः, अमृतध्वनिदेशनाम् ।
 धर्मकृत्यपराश्चैव, व्रतपचक्खाणधारकाः ॥१९॥
 सारणा वारणाश्चैव, चोयणा पडिचोयणा ।
 पञ्चाचाररता नित्यं, पञ्चप्रस्थानस्मारकाः ॥२०॥
 धन्या गणधराः पूज्याः, सर्वजीवोपकारकाः ।
 किं बहुना गौतमश्चैव, श्रीसोहम्मपरम्पराः ॥२१॥

॥ इत्यादि सर्वोत्कृष्टगुणोपेता महामुनयः करुणाकटाक्षैर्ममैवावगन्तव्यम् ॥

दूहा : पृथ्वी पदे पावन करी, आव्या गुर्जर देश,
 भाग्यदशा जागी भलै, सदगुरु कीयो प्रवेश. १
 भावठ भागी मूलथी, पालणपुरनी राज,
 श्रीविजयदेवेंद्रसूरीश्वरा, जगजीवन हितकाज. २
 धर्म सुणें धन वावरे, धन्य तिहां नर नार,
 जिम तिम आतमहित करै, अवसर पांमी सार. ३
 मन आनंदे महामुनी, वंदै पासजिणंद,
 पापतिमर दूरै हरै, दीपे तेजे दिणंद. ४
 वली मिंदर जिनवरतणा, वंदै अधिक उमंग,
 धर्मध्यांन ध्रमसालमैं, करै भविक मनरंग. ५
 उपासरो सोहैं सरस, ऊंचो अति मनुहार,
 तिहां विराजै गणधरा, देसन छै बहुसार. ६
 अवर गच्छतणा वली, उपासरा सोहंत,
 तिहां बैठा मुनिवर भणैं, आगम अधिकै खंत. ७
 इत्यादिक महा धामनें, देख देख गुरुराय,
 आनंद अधिकै गहगहै, मन तन वचन ऊमाय. ८
 पिण करुणां आंणी मनें, द्यो दरसण इक वार,
 पउधारो आदर घणैं, मरुधर देश मझार. ९

॥ अथ मरुधरदेशनगरवर्णनम् ॥

दूहा : सहु देसां सिरसेहरो, मोटो मरुधर देश,
 धण कण जल अधिका तिहां, वांणी रूप विसेस. १

बुद्धि-वृद्धि बहुली तिहां, साच वाच सुभ नीति,
रूप रंग रति कांति अति, धर्म कर्म शुभ रीति. २

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो - ए देशी ॥

बाग बगीचा अतिघणा, अधिक तिहां वनराय सुगुरु मांहरा हो,
अनड^{११} नदी सायर घणा, कमणा नही छै काय सुगुरु मांहरा हो. १
मरुधर देस पधारीयै [ए आंकणी]
विनयी लोक बहु गुणी, उपगारी उर धार सुगुरु मांहरा हो,
दांन दियण दाता भला, तप संयमना कार सुगुरु मांहरा हो. २ मरुधर...
मरुधर नयर छे नवनवा, सेहर नागोर तिहां सार सुगुरु मांहरा हो,
नव कोटां सिरसेहरो, लीलालहिर अपार सुगुरु मांहरा हो. ३ मरुधर.....
राठोडांनो बैसणौं, अनमी अटल अभंग सुगुरु मांहरा हो,
गढ नागोरें अति भलो, देखत नवलो चंग सुगुरु मांहरा हो. ४ मरुधर.....
ऊंचो अधिक मनोहरु, मेरुसुं मंडै वाद सुगुरु मांहरा हो,
पोला सात प्रचंड छै, सिरइं पोल सुप्रसाद सुगुरु मांहरा हो. ५ मरुधर.....
पूरवदिशिमें परगडी, सूर्यपोल सुखकार सुगुरु मांहरा हो,
कुंगर^{१२} भुरजां^{१३} सुंदर, समस^{१४} सरोवर धार सुगुरु मांहरा हो. ६ मरुधर....
गीदांणीसर अति दीपतो, जीपतो लहरतरंग सुगुरु मांहरा हो,
तिहां भैरव जग राजतो, छाजतो तेज सुचंग सुगुरु मांहरा हो. ७ मरुधर.....
बखतसागर जलथी भर्यो, निरमल जल रहै नित्त सुगुरु मांहरा हो,
नर नारी बहुला मिली, केलि करै इकचित्त सुगुरु मांहरा हो. ८ मरुधर.....
वलि सरवर त्रण्य जांणीयै, लाल सागरनें प्रताप सुगुरु मांहरा हो,
मोरचो विषम झंडां तणौं, अरीनें उपजै संताप सुगुरु मांहरा हो. ९ मरुधर....
तारकीन पीर जागतो, बाहिर सेहरनें पास सुगुरु मांहरा हो,
मेहलायत करी सोहतो, परचा पूरत खास सुगुरु मांहरा हो. १० मरुधर.....
मुरलीधर मन मोहतो, सेहर विचै सोहंत सुगुरु मांहरा हो,
शिवमारगमहिमा घणी, सेव करै बहु संत सुगुरु मांहरा हो. ११ मरुधर.....
योगीसर बहु युगतिंसुं, साचवै गढ मन शुद्ध सुगुरु मांहरा हो,
आंण वहै महारायनी, तेहने न लेस कुबुद्ध सुगुरु मांहरा हो. १२ मरुधर.....

हिव मंदिर जिनवर तणा, सात अछै सुखकार सुगुरु मांहरा हो,
आदीसर अविलोकता, न रहै पापपसार सुगुरु मांहरा हो. १३ मरुधर.....
हीरावाडीयें सोभता, वर्धमांन जिनचंद सुगुरु मांहरा हो,
घोडावतनी पोलमें, चोमुख शांतिजिणंद सुगुरु मांहरा हो. १४ मरुधर.....
पास सुमति वलि वांदता, दुख जाय सवि दूर सुगुरु मांहरा हो,
दोय मंदिर दिगंबर तणा, प्रतपें अधिकें नूर सुगुरु मांहरा हो. १५ मरुधर....
पूजा सतर प्रकारनी, विरचै हरख अपार सुगुरु मांहरा हो,
नर नारी मिलि भावसूं, मणुअ जनम करै सार सुगुरु मांहरा हो. १६
मरुधर.....

सांडासाहनी पोलमां, ऊपासरो चउसाल सुगुरु मांहरा हो,
तिहां मुनिवर दीये देसना, सुणें भविक उजमाल सुगुरु मांहरा हो. १७ मरुधर....
इत्यादिक तपगछ तणा, स्थानिक जांणों पंच सुगुरु मांहरा हो,
श्रावक श्राविका युगतिंसुं, करें धरमनो संच सुगुरु मांहरा हो. १८ मरुधर.....
दूहा : पासचंद तणा वली, स्थानिक कहीयै दोय,
खरतरना त्रण जांणीयै, लौंकाना चउ होय. १
तिहां मुनिवर बेठा थका, उद्यम करै अपार,
योतिष वैद्य सिद्धांतना, जांणणहार उदार. २
पोसालां पंच सोभती, पढै तिहां बहु बाल,
राजपंथ सोहै तिहां, चलै जिहां सुभ चाल. ३
न्याय नीति पालै सदा, हाकम अति हितकार,
कोटवाल चित उजलै, करै नगर रखवाल. ४

॥ ढाल-तेहिज ॥

तिहां राजा जग राजतो, गाजतो तेज अनंत सुगुरु मांहरा हो,
तखत-महिपति मरुधरै, भाग्यबलें विलसंत सुगुरु मांहरा हो. १९ मरुधर.....
सूरवीर साहसधर, खाग त्याग निकलंक सुगुरु मांहरा हो,
जोधांसिरै जस जयकर, सबला मांनें संक सुगुरु मांहरा हो. २० मरुधर.....
वचन न खंडै आपणौं, धर्मथी अधिक मंडाण सुगुरु मांहरा हो,
मांनसागर गुरुरायनो, रूपेंद्र वंदे सुप्रमाण सुगुरु मांहरा हो. २१ मरुधर....

॥ अथाग्रे छंद - त्रिभंगी मरुस्थलस्य ॥

सहुदेसासारं, मरुधरधारं, जगविस्तारं, जयकारं,
अनधन अपारं, बुद्धिविचारं, रूपअनूपम, सुरधारं,
दया-दानदातारं, गुणज्ञातारं, पापनिवारं, परदारं,
सहगुरु ध्यातारं, तनमनमारं, मोहमहीपतिमदहारं. १
नही क्रोधप्रचारं, मानहतारं, मतिविस्तारं, मनधारं,
वाच सच सारं, ममतामारं, सम-दम-मद्व शुभकारं,
उपगार अपारं, सुद्ध संभारं, निंदा विकथा नहि कारं,
तपजपपदधारं, प्रीतिप्रचारं, जगसुखकारं, जनसारं
इण देस हि अज्झं^६, सोभासज्झं, नागोरह पत्तन, सहु मज्झं,
रज्जै जहां रज्जै, तखत महज्जं, तेज तपै मानुं सुरज्जं,
कंपै अरिज्झं^{१०}, कारह लज्जं, देशांतर तनदहज्जं,
भूपांबिलभज्जं, जगजससज्जं, सबहियरज्जं, सुखसज्जं. ३

॥ अथाग्रे त्रोटकछंद नरेन्द्रस्य ॥

पृथवीयपती तपतेज तपै, क्रियबंधन वैरी दरिद्र दफै^८,
मानेस तखत्तसु ओप दियां, महिपति सुकिति सुभाव लियां. १
नृपतखत इहां गुरुवंदनकुं, मनउज्जल पाप-निकंदनकुं,
दिशि धौम नगारकि धौंस^{११} दियै, घनराज तणी परि ओप लियै. २
गजराजघटा उत^{१०} घन्न तणी, तडिदाहं उतें इत^{१२} सेल^{१३} अणी,
वर धुंस निसाण सुघोष वजै, गडडाट उतें घनसाज गजै. ३
बगपंति सुसेत पताक वहै, इत लोक सुचात्रक चित्त चहै,
सरणाइ वजै सुरकोकिल है, असवार समीर अनोपम है. ४
नर मोर झिंगोर वदै मुखतें, प्रतपो नरनाथ सदा सुखतें,
इण भांति अनूप सुकांति लिया, वरषें कर दांन अवाज किया. ५

दूहा : जग नही महिपती एहवो, तखत तणें अणुहार,

धर्मनी तनें पालवा, प्रगट्यो राम ज सार. १
जसु जस पसर्यो उदधि लग, कहां तक करुं वखांन,
तीन प्रहर नृपतखतकी, सीम उलंघत भान. २

संघवी सगलामें सिरै, महणोतां मनधार,
भंडारी भलपण लहै, महतां महि इकतार. ३
च्यार खांप^{१४} अति चूंयसू, सभा तखत सिणगार,
उलटै दल अरिया तणा, लेवै तुरत उतार. ४

॥ अज जिम कोइक पोषै अंगण - एहनी चाल ॥

मरुधर देस अनूप विराजे, तिहां नयर नागोर राजै रे,
तखतमहिपति तिहां सुखसाजै, तेजें अरीदल भाजै रे. १
सदगुरु वीनतडी अवधारो, नागोर नयर पधारो रे,
संघ तणी वीनती चित्त धारो, सहना काज सुधारो रे. २ सदगुरु.....
एह नरिंदना काज सुधारण, चांपावत जग जाणो रे,
कुंपावत करडा मन आणें, मेडतिया महिराण रे. ३ सदगुरु.....
उदावत अनमी अधिकेरा, जोधा जाण घणेरा रे,
जैतावत जसमांहि वडेरा, करणोत काज वसेरा. ४ सदगुरु.....
कर्मसोत नृपकाज सधीरा, चांदावत वड वीरा रे,
इत्यादिक सामंत वजीरा, खाग त्याग गुणधीरा रे. ५ सदगुरु.....
राठोडांनो राज वदीतो, नागोरें गढ जग जीतो रे,
तखतसिंह वड वखत प्रतीतो, गुरुचरणें सुपवीतो रे. ६ सदगुरु.....
तिण कारण वीनती उर धारो, पूजा पधारो वेगें रे,
सहस मुनि गहगाट संघातें, दिन दिन चढते रंगें रे. ७ सदगुरु.....
तन मन वचन रह्यो तुम चरणें, चंद चकोरां जिम वरणें रे,
भमर लीणो जिम केतकी परणें, वलि मोरा घनसरणें रे. ८ सदगुरु.....
मरुधरतीरथ अति ही दीपंता, वाडीपास महंता रे,
फलवर्धि आबु वरकाण सोहंता, राणपुरें रिषभ दीसंता रे. ९ सदगुरु.....
इत्यादिक तीरथ छै मोटा, वंदै तिहां नही तोटा रे,
नरक निगोद तणा दुख खोटा, सहजें विलाय पंपोटा रे. १० सदगुरु.....
मसि काली तुम गुण छे उज्जल, किम करि लिखीयै लेख रे,
करुणा करि दरसणसुख दीजै, रूपेंद्र वदै सुविसेष रे. ११ सदगुरु.....

दूहा : श्रीरष्टोत्तरयुत गणी, गणधर सहुना मोड,
श्रीविजयदेवेंद्रसूरिदजी, कोन करै तुम होड. १

॥ अजित जिणंदसुं प्रीतडी - ए देशी ॥

मरुधर देस पधारीयै, **नागोरें** हो जगजनहितकार कें,
करुणा कीजै साहिबा, श्रीसंघनी हो वीनती चित्त धार कें. १
श्रीविजयदेवेंद्रसूरीश्वरा, धन्य मुनिवर हो सेवें नित तुम पाय कें,
चरणकमलनें सेवतां, तेहनें इहांथी हो वंदु चित्त लाय कें. २ श्रीविजय.....
रूपविजय महिमानिलो, **रत्न** मुनिवर हो रत्नथी खाण कें,
हीरविजय अति हरखसुं, नित सेवें हो **कांतिविजय** जाण कें. ३ श्रीविजय.....
केसरविजय चित्त ऊजलें, **विवेकसागर** हो अति विनयप्रधान कें,
दानविजय गुणआगला, **रंगसागर** हो रहै चरण प्रमाण कें. ४ श्रीविजय.....
इत्यादिक मुनिवर घणा, सेवें सदगुरु हो नित चित्त लगाय कें,
तन-मन-वचनथी साचवै, गुरुसेवा हो सब सुखनी दाय कें. ५ श्रीविजय.....
इहांथी वंदै भावसुं, **रूपेंद्रसागर** हो नित नवले रंग कें,
खेमसागर आनंदथी, **केसरसागर** हो मनरंग अभंग कें. ६ श्रीविजय.....
मुनि **गोतम** रंगें नमै, **लालसागर** हो तुम वंदै पाय कें,
रिषभमुनि मनरंगथी, वंदै भावै हो सुभ वदन ऊमाय कें. ७ श्रीविजय.....
उमेदमल उमंगथी, रंगें प्रणमें हो रतनों मन धार कें,
पूनिमचंद्र कर जोडिनें, वलि वंदै हो चित्त हरख अपार कें. ८ श्रीविजय.....
इहांथी **मोहन** वंदना, मांनियै हो गुरु वार हजार कें,
सहु मुनीवरथी वंदना, कहज्यो अहनिशि हो नित करुणा भंडार कें. ९
धन्य ते श्रावक श्राविका, गुरुचरणें हो रहै चित्त लगाय कें,
तेहनें धर्मलाभ माहरो, वलि संघनी हो वंदना मुनिराय कें. १० श्रीविजय.....
तिहांना संघ प्रते वली, सहु संघनो हो कहज्यो परणाम कें,
संघ प्रते संभालज्यौ, देवदरसनें हो करुणाना धाम कें. ११ श्रीविजय.....
उगणीससत(१९०७) संवत्सरें, मृगशिर मासें हो वदि तेरस दाख कें,
रविवारें गुरुगुण भला, गाया भावें हो तन-मननी साख कें. १२ श्रीविजय.....

तपगच्छमां अति दीपता, गुरु गिरुवा हो गुणना भंडार कें,
कृपासागर गहरा गुणी, **मांनसेवक** हो **रूपेंद्र** मन धार कें. १३ श्रीविजय.....

॥ इति श्रीविज्ञप्तिपत्रं संपूर्णम् ॥

॥ श्री जीनाय नमः ॥

स्विस्ति श्रीपालणपुर सुभ सूथाने पुज, परमपुज, सरव ओपमा बिराजमान,
अनेकओपमालायक००० इत्यादिक छतीस छतीसे, एकसो आठ सूरीश्वर गुणे
करी बिराजमान जंगमजूगप्रधान सकल भट्टारक सिरोमणी पुरंदरभट्टारकजी श्रीश्री
१०८ **विजयदेवेंद्रसूरीश्वरजी** चरणानु चरणकवलायनै **नागोर**थी सदा अग्याकारी
चरणसैवी समसत संघं लिखत बदणा १०८ वार दिन प्रते त्रिकाल अवधारसी ।
अठारा समाचार श्रीश्रीजी रा तेज प्रंताप सुनिजर कर भलो छै । श्रीश्रीजी साहबा
रा दरसण री आभीलाषां अत्यंत है सु संघ ऊपर कीरपा करनै दरसण
दीरावसो तिको दीन सफल हूसी । अठै चोमासी संघ ऊपर कीरपा करनै पं.
रूपेंद्रसागरजीनुं मेलासो घणा जोग्य छै नै श्रीजिनराज रो धरमध्यान पोस
पडिकमणो वखण वाणी जिनपूजादिक री बधोतर उवछ आछीतरसु हवा छै ।
पूरे उछव धरम री बोधोतर सदा हूवै छै । हमैक पुसतक पीण गंगां वरससू
अरैकीयो थो सो इणा रा ऊपदेससु सिधवी मयाचंदजी रै गर^{२६} लीधो छै नै
ऊछव पुसतक रा नीराट^{२७} गणो हुवा छै । नै वखणे श्रीनंदीजी सुतर वचीजै
छै सो मालम हइसी । नै आवतो चोमासो श्रीसिध ऊपर कीरपा करनै इणानु
ही जै रखावसी । पं. रूपेंद्रसागरजी रो चोमासो अठ रखायासु सिधनै ऊपदेस
धरमधांन पढावण री बधोतर आछीतरसू हूसी सो कीरपा करनै चोमासो
बंठाबेठ रखावसी । सघे वीनती अठै खतरमै धरमधान री कालानुसार लाभ
देखै लीखी छै सू जरूर मंनावसी । बीजूतो श्रीश्रीजीस्थाब कीरपा करने मेलो
सो प्रमाण छै पीण अवरक^{२८} तो जरूर बंठाबेठ रखावसी । घणो काइ वीनवै
आप तो सरव जाण छै । श्रीसुधरमास्वाम री गांदी वीराजो छै । सो जरूर
कीरपा सघने लाभ देखीने इणानु ही ज रखावसी । सीघ ^{२९}उप्रं कीरपा
सुद्रसीटी^{३०} रखावै जीणथी वीसष रखावसी । श्रीधरमधांन देवजातराए संघनै
आयद^{३१} करावसी । वलमान सुलेख कीरपा करनै दीरावसी । संघ लायक
सेवा बंदगी फुरमावसी । सरव साधुनै वनणा कहसी चोपडा गीरधारीमलकी

बनणा १०८ वार वचावसी । श्री । १९०७ पोस वद ५ भोमवार ।

दूहा : संघ सकल मिलिनं सदा, वीनती करै छइं एह,
नागोरें पधारज्यो, मनडुं तुम चरणेह. १
थे गिरुआ गुणवंत छे, वीर सोहम पट्टधार,
महामुनिवर करनें मया, द्यो दरसण इक वार. २
जिम मन पसरें माहरो, तिम जो कर पसरंत,
चरण ग्रही सरणें रहूं, अमृतध्वनि विलसंत. ३
पदपंकजरजभ्रमरसम, नित सेवक सुभ चाल,
आग्याकारी अधिक मन, रंजन अतहि रसाल. ४

॥ देशी - नणदलकी ॥

पूज पधारो अम देसडै, नयर नागोर मझार सदगुरु,
संघ सकलनी वीनती, मांनज्यो निरधार सदगुरु. १ पूज पधारो.....
संघ ऊपर सुनिजर करी, आवी करो चोमास सदगुरु,
धर्मलाभ थास्यै घणौं, सहुनी पोहचस्यै आस सदगुरु. २ पूज पधारो....
तुम दरसणनें ऊंमण्या, भविजन जप रह्या जाप सदगुरु,
जिण दिन तुम दरसण होस्यै, मिटस्यै मोहसंताप सदगुरु. ३ पूज पधारो....
प्रेमें प्रथम जिणंदनें, जूहारो जगभाण सदगुरु,
तपगच्छकेरा राजीया, निरुपम नयना जाण सदगुरु. ४ पूज पधारो....
नियम तपादिक अति घणा, होस्यै हरख अपार सदगुरु,
पटकूलादिक बहु परै, पथरास्यै घरे सार सदगुरु. ५ पूज पधारो....
श्रीविजयजिनेंद्रना पाटवी, श्रीय देवेन्द्रसूरीराय सदगुरु,
गुरु प्रतपो रवि ससि परै, रूपेंद्र रंग सवाय सदगुरु. ६ पूजा पधारो....

* * *

(२०)

अमदावाद बिराजमान देवेन्द्रसूरिजीने जोधपुरथी श्रीसङ्घतो विनन्तिपत्र

सौ प्रथम संस्कृतभाषानां २ पद्योमां श्रीपार्श्वनाथ प्रभुने, त्यार बाद पांच पद्यो द्वारा क्रमथी पांचेय जिनेश्वरोने, त्यारबाद दूहाबद्ध वर्णनामां माणिभद्रयक्ष, सरस्वतीदेवी, गुरुभगवन्त, पद्मावती तेमज चक्रेश्वरीने वन्दन करवारूप मङ्गलाचरण करी प्रथम ढाळमां कवि गुर्जर देशनुं प्राकृतिक सौन्दर्य अद्भुत रीते रजु करे छे । जो के ते करतांय अमदावाद शहेरनी वर्णना करनार मत्तगयंद अने त्रिभङ्गी छंदनां पदो चडीयातां छे । शहेरनी दरीयाशा पीर, हठीभाईनुं देहरूं, भद्रकाळी मंदिर, माणेकचोक, सेठ मगननो बाग, अष्टापदनुं जिनालय, आवी घणी हकीकत ऐतिहासिक दृष्टिए, तो बीजी नगरकोट, प्रजाजन विगेरेनुं वर्णन काव्यात्मक दृष्टिए महत्वनुं छे । सूरिजीना ३६ गुणोनी स्तवनानां पद्यो आ काव्यनी विशेषता छे । अन्य विज्ञप्तिपत्रना गुणवर्णनानां पद्यो करतां आ पद्यो घणां सुन्दर तेमज विशेष बोध आपनारां छे । त्यार पछी 'मोतीडा' देशीमां सूरिजीना आभ्यन्तर गुणोनुं वर्णन करी कवि मरुधर देशनुं वर्णन करे छे । पत्र जोधाणाथी लखायो होइ पत्र लेखनक्रमानुसार कविए त्यार पछी जोधाणाना राजानुं, राजरिद्धीनुं, लोकव्यवस्थानुं, जैन-जैनेतर मन्दिरानुं, लोकोपयोगी सरोवर, वाव-बाग-बगीचानुं तेमज श्रावकसमुदायनुं बारीकाईथी आलेखन 'गङ्गल'मां रजु कर्युं छे । अहीं पण कवि जोधपुरनो चितार आलेखवामां सफळ थया छे । त्यार पछीनी ढाळोमां श्रीसङ्घना श्रावकोनुं गुणवर्णन, सूरिदर्शननी तेमनी चाह, तेमज सूरिजी पधारता सङ्घना उत्साहनी वातो कविए वर्णवी छे । सूरिजीना सहवर्ति मुनिवृन्दने वन्दना निवेदित करी संवत् निर्देशपूर्वक स्वनामोल्लेख जणावी पद्यपत्र कवि पूर्ण करे छे । गद्यपत्रनी शरुआतमां मुडीयालिपीमां सूरिजीना १८ गुणो तेमज अन्य आन्तरिक गुणवैभवने जणावी श्रीसङ्घनी सूरिदर्शनोत्कण्ठा तथा चातुमासार्थे पधारवानी विनन्ति रजु करे छे. पत्रान्ते फरी सूरिजीना पधारता थनारा सुकृत्योनी पद्यात्मक रजुआत करी सूरिजीना वधामणा करवापूर्वक खामणा सत्कृत्योनी याचना करे छे ।

मोतीडानी ए देशी, वालिम वहिला - ए देशी, वेशाख वदि - ए देशी तेमज वालाजीनी - ए देशी आ ४ देशीना कृतिकार तरीके प्रमोदविजयनुं नाम छे । बाकी प्राप्त स्थानोमां कवि तरीके रत्नविजयनो उल्लेख छे । आ परथी पत्रनो महत्तम अंश रत्नविजयनो होइ पत्ररचना तेमनी होय तेम विचारी शकाय । छता आ अंगे विद्वानो प्रकाश पाडे ए आशा ।

शब्दार्थ

- | | |
|----------------------------------|---|
| १. डारे = दूर करे | २५. जत्तं = जातना |
| २. कच्छपी = वीणा | २६. थागं = अंत |
| ३. उकत्थ = उक्ति | २७. वेखं = जाणवुं (?) |
| ४. हुलास = उल्हास | २८. हराणं = हराववुं |
| ५. ओवरण = ओवारणा | २९. भालं = निहाळवुं |
| ६. वज = ? | ३०. जांबल = जांबू |
| ७. पंथान = प्रतिष्ठान | ३१. पभणं = बोलवुं |
| ८. विढ = ? | ३२. मरुव = मरवो |
| ९. वटाउ = ? | ३३. खुलेलं = खुलेलु |
| १०. पकी = पाकेली | ३४. नलपुंज = वांसनी झाडी (?) |
| ११. कचनार = एक वृक्ष | ३५. रंगरसं = सुंदर |
| १२. चक = चकली | ३६. नरोड = नरोडा (गामनुं नाम) |
| १३. झट्ट = तुरंत | ३७. पट्टबंधं = (शत्रुंजयनो) पट्ट बंधाय छे |
| १४. गव्युति = गाउं | ३८. भाववर्धं = भाव वधारनार |
| १५. वाजे = वाद्य वडे | ३९. भीर = भीड |
| १६. नकवेसर = नाकनुं घरेणुं, चुंक | ४०. अथगं = अथाग |
| १७. कुचफल = स्तन | ४१. अलं = पुरतु |
| १८. बंभने = ब्रह्माने | ४२. नेन मचं = आंख बंध करवी |
| १९. गाल = गाळ, अपशब्द | ४३. कुंजड = कंजूस माणस |
| २०. थोव = स्तोक, अल्प | ४४. स्याग = शाक |
| २१. पसत्थ = प्रशस्त | ४५. ढिग = ढगलो (?) |
| २२. अेमद = अमदावाद | ४६. थानं = ताको |
| २३. कटकह = सैन्य | ४७. गेणाकार = घरेणा बनावनार (?) |
| २४. नेज = वावटो | ४८. उमंद = आनंदथी (?) |

- | | |
|---|--|
| ४९. विलोत = विलुप्त थवुं | ७९. मनराक् = मिनारा |
| ५०. टारे = नाश करे | ८०. अरकि = सूर्य (?) |
| ५१. भास = भ्रांति (?) | ८१. छिबा = रंगारा |
| ५२. भरं = भ्रम | ८२. घानजा = वाणंद |
| ५३. भिस्तमग = विश्वासु (?) | ८३. भरावा = भरवाड (?) |
| ५४. जबं = ज्यारे | ८४. वणिगर = वणकर |
| ५५. सेन = स्येन (बाज) पक्षीनुं
आववानुं स्थान ? | ८५. सोरगर = सुथार (?) |
| ५६. टाणं = ताणवुं | ८६. खारोल = ? |
| ५७. वहेगार = वहावनार | ८७. खेरादि = ? |
| ५८. वने = बन्या | ८८. चुडीगर = मणियार |
| ५९. सुखमाल = सुंवाळो | ८९. षटीक = कसाय |
| ६०. खर्खरो = खरबचडो | ९०. डवगर = चामडाना ढोल विगेरे
बनावनार |
| ६१. चाव = इच्छा | ९१. सीसगर = काचना वासण विगेरे
बनावनार |
| ६२. सुतभूति = श्रवण (?) | ९२. कलाल = दारू वेचनार |
| ६३. पडिअछ = पडदा के भीतना अंतरे | ९३. पवेद्याक् = ? |
| ६४. सुमि = समिति | ९४. छयल = चतुर जन |
| ६५. मनिषाकर = बुद्धिना भंडार | ९५. किरणा = ? |
| ६६. लघवा = तुच्छ (टूकी) | ९६. सूरूज = ? |
| ६७. वप्रनंद = लघु कोट (?) | ९७. गुलदावद = ? |
| ६८. थोभ = स्थिति | ९८. बोहो = बहु |
| ६९. थाग = उंडाण | ९९. पंखिनका = पंखिओनो |
| ७०. सुंडाला = गणपति | १००. राइका = राजानो |
| ७१. गगण = गगन | १०१. अबरेखा = ? |
| ७२. विहाल = बेहाल | १०२. सहर = शिखर |
| ७३. समाद = समाधि | १०३. छाण = शोध |
| ७४. साय = सहाय | १०४. मुसद्दी = राजकारभारी पुरुष |
| ७५. पंकत = पडिक्त | १०५. पेचाण = ओळखाण |
| ७६. हेराक = आश्चर्यकारी (?) | १०६. संमार = सुधारवुं |
| ७७. एन = अन्न | १०७. अलि = ? |
| ७८. भलभाक् = सारा भाग्यवाळो (?) | |

१०८. स्यावे = सोहावे	१११. विन्ने = विनय
१०९. पुसकरावत = पुष्करावर्त	११२. कुकरादृष्टि =
११०. गवलि = गहुंली	११३. लीगार = जरापण

*

श्रीमदिष्टदेवाय नमः ॥ अथ श्रीलेखप्रसस्ति लिख्यते ॥

॥ श्रीमदादिनाथ-शांतिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरेभ्यो नमः ॥

॥ अथेष्टत्वात् प्रथमं पार्श्वस्तुतिः ॥

स्वस्ति पद्मा सदा यस्य, पदपद्मावशिष्यत् ।
यदुपासकविश्वासं, श्रयत्यद्यापि सम्मदात् ॥१॥
प्राप्य देवश्रयोब्जं यत्, कीर्त्तिर्दिव्यति दिव्यति ।
लेखालेखार्यलेखार्च्यः, स जयत्यादिबोधदः ॥२॥

॥ अथ पञ्चेशस्तुतिः ॥

हतं कर्मशत्रून् जितं कामदेवं, सुरेन्द्रैः कृतं त्वोत्सवं पञ्चमुख्यम् ।
धृतं योगमार्गैरनेके सुधर्मं, नमामो वयं तं च नाभेरपत्यम् ॥१॥
उदारप्रभावविश्वमार्तण्डतद्वत्, कृतात्यन्तदुर्दुष्टदोषायमानम् ।
स्वयं शुद्धबुद्धिं सुधन्यं च लोके, जिनः शान्तिनाथो ददातु प्रसौख्यम् ॥२॥
विशुद्धप्रभाज्ञानभृदेवपूज्यः, स्तुतः किन्नरैये(र्यो)गिक(कैः) सर्वमान्यः ।
जितः कामराजो दधानः सुयोगं, स नेमिर्जिनः पातु मां भूविहारी ॥३॥
सुरैरर्चितं कीर्त्तितं चाऽऽप्तपार्श्वं, मनोऽभीष्टदं कर्मसर्वविनष्टम् ।
सुखं लेखपत्रं लिखामो गणेशं, नमस्कृत्य पूर्वं जिना(निजा)नन्दहेतुम् ॥४॥
सुमेरुक्षितीन्द्रेशतुल्यं सुधीरं, सदोद तंवा (?) जिनेशं गभीरम् ।
सुलाभा(?) भवाम्भोधितुल्यं च तीरं, नमामो वयं साधुनाथं तु वीरम् ॥५॥
॥ इति पञ्चतीर्थीनमस्कार भुजङ्गच्छन्देन कृतं अथ गच्छाधिष्टदेवेभ्यो नमस्कारः ॥
दूहा : तिर्थं पंच प्रणमि धुरे, संस्कृत वचनविलास,
शब्द धातु का गम नही, सूरिभक्ति वाचाल. १
तपगच्छसानिधि तत्परा, देविदने परतक्ष,
वर दीधो तिणे हर्षसुं, मणिभद्र वड यक्ष. २

संकट चूरे संघना, पूरे मननी कोड,
तन्मय ध्यानं अनुभवे, डारे चिंता तोड. ३
षोडस नामे सोभती, कच्छपी पुस्तकहत्थ,
हंस चढी अंबर चरे, सो द्यो झटति उक्तथ. ४
ज्ञानदीप प्रगटे हृदे, चित्तभर्म मिट जात,
जो रवी तमभंजन करे, सगुरु नमो साक्षात. ५
पद्मावती चक्रेश्वरी, नमुं संघसुखदाय,
लेख लिखुं गछपति भणी, उकती द्यो मुझ माय. ६
विश्वमयि जसु व्यापियो, जस उद्योत हुलास,
गच्छपतियां सिर सोहता, मुगटे मणि-प्रकास. ७
स्वस्ति श्रीसुख हेतु छे, अव्यये मंगल जाण,
गुज्जरधर हिवे वर्णवुं, श्रवण करो इकतांन. ८

॥ अथ श्रीमति तत्रेति परिभाषा(ष)या आश्रित्य ॥ अथ गुज्जरदेशवर्णनमाह ॥

ढाल - डोरी थारी आवे हो रसिया कडतले अथवा प्रणमिअ पास जिणेसर प्रेमसुं
- ए देसी ॥

सरब देश सिर मुगटमणी, गुज्जर देश समृद्ध मनोहर,
नयर पुरे करी सोभा जेहनी, कहतां नवि होय बुद्ध मनोहर. १

मनरंगे ओव'रणवजसु कीजीये [ए आंकणी]

ग्राम ग्रामांतर पुर पंथाननु, विढ वटाउ रे जात मनोहर,
पादपश्रेणी इट्टु नामनी, विलोक्ति पांमे रे संत मनोहर. २
अंबवृक्ष अमृत सम ओपमा, जांबु काजु रे रेणु मनोहर,
खरजुरा उंबर महुडा भला, टीबरु नींबु रे जाण मनोहर. ३
बद्रीफल आंबली अरु करमदा, कोठ वडी पकी रे पीलु मनोहर,
वृक्षादिक षट्त्रतु फल तणा, तिहां घाल्या पंखि रे मालु मनोहर. ४
मधुमालती मचकुंद कोरंट अरु, कंचनार फुलि रे रंग मनोहर,
तीण वासे भमर भमरी मली, तिहां रह्या गुंजी रे चंग मनोहर. ५
पग पग पंथे हो वापी सरवरु, नीरें भरीया रे थट्ट मनोहर,
चक बक बतक पंखी तिहां घणा, केइ आवे उडी रे झट्ट मनोहर. ६

वहे सरिता बहु नीरप्रवाहथी, डगले डगले रे जाण मनोहर,
तस तटे शब्द दिईं सारस भला, असत्ये सत्य प्रमाण मनोहर. ७
इण वर्णव करी वन तीहां शोभता, ^{१४}गव्युति गव्युति रे गाम मनोहर
तीहां नर-नारी वृंद वृंदे मिली, गाता प्रभुना रे नाम मनोहर. ८
ताल कंसाल मृदंग ^{१५}वाजे करी, घुमर दीईं रे नार मनोहर,
कटी मेखल रणके वली घुघरी, झणके नेउर रे सार मनोहर. ९
^{१६}नकवेसर भालतीलक सिर राखडी, कंठे मुक्तिक रे माल मनोहर,
अंग चंग ^{१७}कुचफल देखी करी, रंभा दिईं ^{१८}ब(बं)भने रे ^{१९}गाल मनोहर. १०
वली सीलगुणे करी सोभे नर नारी, वहे कुलवटनी रे रीत मनोहर,
देव गुरु धर्म सदा हृदये धरे, छंडे व्यसन रे सात मनोहर. ११
धर नारिया केता व्यवहारिया, करता गमन रे बाह्य मनोहर,
कीरियाणादिक वस्तु विक्रियता, धरता कमला रे म(स?)द्य मनोहर. १२

॥ दूहो ॥ सोरठो ॥ वरणव जाण अपार, गुज्जर देश तणा सही,
एक जीभ एक मुख, कहतां पार न पामीईं. १

॥ छंद मत्तगयंद ॥ सप्त'भ' गणोपलक्षित ॥

अहमदावाद अछे अति सुंदर, सोहत लंक समान ही जानो,
पुंस वडे भल नार कहावत, देख लजे गइ रंभ विमानो. २
रागरसे भर चातुर मोहत, काज करें अपने सुभ ध्यानो,
सूरि वसे चउमास सुधाकर, एह पखे परमोद वखानो. ३

॥ अथ गुज्जरमध्ये राजनगर, तस्य वर्णनमाह गुर्जरवर्णनं कृत्वा ॥
दूहो : इम वरणव गुजरातनो, कीनो मन उलास,
राजनगर हि[व] वर्णवुं, द्यो सरसति प्रकाश. १

॥ अथ मत्तगयंद छंद पूर्वव ॥ अमुक नगरे इति परिभाषा ॥ देश आश्रु(श्रि)त्य ॥

राष्ट्र वडे बहु देख नरां पिण, गुज्जर देशह मे जब पेख्यो,
चावल खांण तणां बहु ओपत, बोलत वात हस्ये जब देख्यो,
धारत अंग सु[व]र्ण अनोपम, अंबर ^{२०}थोव पसंस्थ हि वेख्यो,
लोक वसे परमोदरसे भर, भामहि ^{२१}अेमद सहर अनोखो. १

॥ इदं गौरवत्वं नगरस्य ॥ अथ नगरारामवर्णनं ॥ छंदजाति - त्रिभंगी ॥
द्वात्रिंशत् स्वरोपलक्षित-

सरसति मातं, जगत सुहातं, मनमां ध्यातं, सुखकरं,
द्यो वचनविलासं, मनउलासं, अहिमद तासं, किर्तिकरं,
बहु नगरपसत्तं, अछे सुसत्तं, घाटनिमत्तं, ब्रह्मरचं,
इह घट्ट सुघट्टं, भूतपगट्टं, गुज्जरपट्टं, मानसचं. १ गुज्जर.....
तटनी तटपासं, कांप जु खासं, राजप्रकासं, अगरेजं,
जहां ^{२३}कटकह पूरं, जोध सनूरं, वाजत नूरं, ध्वजनेजं,
मयगल मदमत्तं, अश्वसु नत्तं, काबल ^{२५}जत्तं, सहसगमं,
बहु गोलानालं, वयरिसालं, एम नीहालं, अगरेमं. २ एम नीहालं.....
दरीयासा पीरं, निरखह धीरं, जीर्ण मंदीरं, सब देखं,
सेठ मगना बागं, पादप लागं, ताका ^{२६}थागं, कुण वेखं^{२७},
हठीसिंघह कीधं, भुवनपसिद्धं, निरखत लिधं, प्रभुदारं,
ध्वजसहित मंडाणं, उच्चेपमाणं, मेरुहराणं, जगसारं. ३ मेरु हराणं.....
तिहां बाग विसालं, सोहे रसालं, प्रत्यख ^{२९}भालं, नाम कहं,
कदली अरु अंबं, जंबु कदंबं, ताड विलंबं, देख रहं,
नारंगी दाखं, दाडम चाखं, बद्रिवि आखं, निंबु मीठं,
सीताफल सेवं, जांबल मेवं, लक्षां एवं, हम दिठं. ४ लक्षां एवं.....
मालति फुनि दमणं, चंपक ^{३१}पभणं, भमर जु भ्रमणं, अति गुंजं,
गुल मोगर वेलं, ^{३२}मरुव चंपेलं, गुलाब ^{३३}खुलेलं, ^{३४}नल-पुंजं,
कोकिल सुक मोरं, करत हे सोरं, कूपकी कोरं, वह चडसं,
बगला बहु चंगं, सोहे उमंगं, नरदिल-संगं, रंगरसं. ५ नरदिल....
कवी करि विचारं, ^{३६}नरोड धारं, पास जेकारं, प्रासादं,
मेरु सम जाणं, अछे मडाणं, स्त्री-नर आणं, पूय-पादं,
फुनि कार्तिक मासं, पक्ष उजासं, पुनिम दिवसं, ^{३७}पट्टबधं,
तिह दर्श निमत्तं, मेल भरत्तं, स्नात्र करत्तं, भाववधं. ६ स्नात्र.....
अव तटनी नीरं, वहते धीरं, जहां नर ^{३९}भीरं, स्नानकरं,
जल बहुत ^{४०}अथगं, निकलत मगं, नावकी सगं, पारपरं,

पणघट पणहारी, नगरकी सारी, घट सिरधारी, नीरभरं,
भदर दरवज्जं, देखन कज्जं, कविजन सज्जं, पावधरं. ७ कविजन.....
 निरखो इह कोटं, लगे न चोटं, नही कछु खोटं, लंक भलं,
 अति जबर भुरज्जं, उपरि सज्जं, दुष्टके कज्जं, नाल ^{११}अलं,
 कंगुष्टेकि रेखं, गिणत न लेखं, जुज रवि पेखं, तास परं,
 दरवज्जकपट्टं, लोहलपट्टं, बेठे सुभट्टं, महधरं. ८ बेठे.....
 टंटं टणकारं, चौविस वारं, शब्द हि सारं, घडीयालं,
भद्रकाली नामं, देवीधामं, समरि तामं, सुखमालं,
 तस पाखे ज्ञानं, तस्करठाणं, आगे जाणं, **अश्वनवं**,
त्रिपोलि पेसंतं, चहुट चलंतं, नल देखंतं, नेन ^{१२}मचं. ९ नल....
 मणिहार विशेषं, वोरा देखं, मोची लेखं, कुंभकरं,
 माली तंबोलं, बोडे ओलं, ^{१३}कुंजडटोलं, ^{१४}स्यागधरं,
 बेठे बहु लोकं, **माणकचोकं**, कंचन थोकं, ^{१५}ढिगधरं,
 बज्जाज पुंमानं, वेचे ^{१६}थानं, सरापि खानं, परखकरं. १० सरापि.....
 भेषज बहु धारं, गांधी सारं, गेणाकारं, सोनारं,
 कंदोइ कंदं, वेचे ^{१७}ऊमंदं, फुंदा फुंदं, पटुकारं,
 ध्रमशाल अनेकं, वीर विवेकं, रूपके टेकं, मतिकाजं,
अष्टपद नामं, **देवल** तामं, बहुविध कामं, जिनराजं. ११ बहु.....
हरकुंवर विसालं, रच्यो जिनालं, मन उजमालं, विमानं,
 गछपति सूरिंदं, विजय **देविंदं**, किये प्रतिष्ठित, सुभध्यानं,
रिषभ प्रासादं, अनुपम आदं, **सुमति** सुखादं, भय नरं,
 भल झिगमिग जोतं, झाड प्रद्योतं, तमस विलोतं, भानु हरं. १२ तम.....
जव्वेरि महोलं, मध्य अमोलं, घरकी ओलं, तस मध्यं,
 प्रभु **वीर** जीणंदं, कर्मनिकंदं, देवल सोहे, आनंदं,
 सिर ध्वज लहकंतं, कहे जु तंतं, वीर नमो जिनवर खासं,
 टरे गर्भावासं, कर्म ज्यु नासं, सेवत ^{१८}टारे, यमफासं. १३ सेवत....
 नर थई पवित्तं, भणे स्नात्रं, नेवद मात्रं, पूजकरं,
 जिनभुवन बहुलं, वचन ए थूलं, कहतां भुलं, ^{१९}भास ^{२०}भरं,

श्राविका उपाश्रं, वचते शाखं, अन्य सुखाखं, बहु जाणं,
 मठवासि मट्टं, कंठे कट्टं, देवल दिट्टं, नाराणं. १४ देवल.....
 शिवब्रह्म वखाणं, रघु पेखाणं, देवल ठाणं, ज्योतिजगं,
 बहु यवन मजीत्तं, कर तहां प्रीतं, **खुदासु** नीत्यं, भिस्तमंगं,
 इम पवन छत्तीसं, विश्वावीसं, स्व-स्व ईशं, जपे सबं,
नागोरी सरायं, इहां सवायं, चउमास ठरायं, पूज्य ^{२१}जंबं. १५ चउमास....
 प्रतोली वीसालं, मध्य रसालं, चोक सुहालं, वृक्ष लगं,
 वट नीब-प्रकासं, सीतल जासं, छाया तासं, सेन^{२२} गमं,
 वलि बगला जाणं, खास खजाणं, तिष्टह ठाणं, दलालं,
 प्रभुगेह अनुपं, पासह कुपं, अतहि सरूपं, रम बालं. १६ अतहि....
 वटवृक्षह सामं, उपाश्रह तामं, छे ध्रमधामं, पूज्यकहं,
श्रीविजयदेविंदं, मुणिगण इंदं, नाम लहिंदं, पापदहं,
 व्याख्याण वखाणं, तर्क प्रमाणं, जीवहि नाणं, वाक्यरसं,
 केइ मुनिवर वृंदं, रह आनंदं, पटे सुछंदं, काव्य जसं. १७ पटे.....
 सेठ **मगनसी** भल्लं, **वाडी लल्लं**, **जीवा दल्लं**, **ठाकुरसिं**,
 फुनि **माणकचंद**, **उमा उमंदं**, **पानाचंदं**, **गोकलसिं**,
 इम श्राद्ध अनंतं, भाव धरंतं, विनय करंतं, हुल्लासं,
 संघ वीनती किद्धं, सूरि प्रसिद्धं, बहु जस लिद्धं, चौमासं. १८ बहु.....
 श्रावी करे गानं, रूप-निधानं, गुहलि(ली) टाणं^{२३}, तांदूलं,
 इम बहु विसेषं, कहत न लेखं, कविपद पेखं, मन भूलं,
 संवत्सर **चंदं**, **गोभ्वानंदं**, फाल्गुन छंदं, वदि मासं,
 तेरस रवी अहं, प्रमोद प्रपन्नं, धरे **सुरत्तं**, तुम आसं. १९ धरे....

॥ इति राजनगर वर्णन ॥

अथ दूहा - गच्छपति गुणमणि दीपता, त्रण्य तत्व के जाण,
 भविजनकुं पडिबोहवा, करे सुयुक्ति वखाण. १
 वचनध्वनि मधुरें वदे, षट्भाषा जलधार,
 विद्युत देशना चमकती, भविक कर्म वहेगार. २

आठ कर्मसैं झुंझते, सूरवीर सूरिशा,
मोहरज्ज कु हठायकें, आप ५५ बने ध्रमईस. ३
ध्यान की लहरें रम रहे, चवद सहस मुनीमांह,
ज्युं गंधाढ्य नवमालिकुं, भ्रमर छांडते नांह. ४
एसे महा सूरिकुं, प्रणमे सह नर नार,
गुण षट्त्रीससुं ओपमा, वर्णव करुं विचार. ५

॥ अथ सकलगुणनिधान इति परिभातेनात्र सूरिगुण अधिकत्वं यदा अन्य
गुणप्रबंधेन वाच्यमाने सति अंत न ततः सूत्रोक्तगुणान् ब्रुवे फलं मम ॥

अथ सूरीणां षट्त्रिंशत्तिगुणानां सिद्धाय ॥

॥ ढाल- ढोला मारु घडी एक कर हो झुकाय हो ॥ अथवा सिंहलनृप
कहे चंदने रार्जिद मोरा जोवो विचारी पुंठ हो - ए देशी ॥

वर षट्तीस गुणे करी साहिब मोरा, जुगपरधान कहाय हो,
भविक हृदय पडिबोहवा साहिब मोरा, भास्कर जिम सूरिराय हो. १
रसनो भिनो मांरो, ज्ञाननो लीणो मांरो सूरिजी

साहिब मोरा भवभयभंजन तेह हो [आंकणी]

पंचेंद्री-विषय जीपता साहिब मोरा, तेवीस तणो समुदाय हो,
पढम करणना फरस ते साहिब मोरा, अठ कहुं ते गाय हो. २ रसनो....
गुरु लहु ५५ सुखमाल ६० खर्खरो साहिब मोरा, उष्ण स्निग्ध सितल लुख हो,
मन वच कायाई करी साहिब मोरा, पाले प्रथम गुण मुख हो. ३ रसनो.....
बीजे गुण रसइंद्रीने साहिब मोरा, रोधें पांचे भेद हो,
तीखो कटु कसायलो साहिब मोरा, खट मीठो नीखेद हो. ४ रसनो....
घ्राणेंद्रि तीजे गुणे साहिब मोरा, द्विभेदे अनुभाव हो,
सुगंध दुगंध सम गीणो साहिब मोरा, नवि राखो इणसुं ६१ चाव हो. ५ रसनो....
तुर्य गुणे चक्षुइंद्रीने साहिब मोरा, पंच भेदे तुमे जीती हो,
नील पीत स्याम रक्तता साहिब मोरा, स्वेत वरण ए भात हो. ६ रसनो.....
६२ सुतभूति गुण पांचमो साहिब मोरा, भेद त्रण्य करी जाण हो,
सुभ असुभ मिश्र वाक्य ए साहिब मोरा, तुमे त्याग्या हित आण हो. ७ रसनो....

नवविध ब्रह्म गुपति सदा साहिब मोरा, पालो तुमे निसदीस हो,
अर्किचन स्थाने नित रहो साहिब मोरा, वाड प्रथम षट इस [हो]. ८ रसनो....
विकथा नवि स्त्रीनी करो साहिब मोरा, वाड बीजी गुण सात हो,
स्त्रीबेसणे बेसो नही साहिब मोरा, गुण आंठमो ए भात हो. ९ रसनो.....
स्निग्ध द्रगे न विलोकता साहिब मोरा, स्त्री तणा अंग उपांग हो,
नवमो गुण ए जाणीई साहिब मोरा, दशमे गुण दंपतिसंग हो. १० रसनो.....
पडिअँछ अंतरे जे हुवे साहिब मोरा, नवि रहे तत्थ सूरिशा हो,
इयारमे गुण पूर्वली साहिब मोरा, नवि धरो विषयनी वास हो. ११ रसनो....
द्वादशमे गुण नवी लहो साहिब मोरा, विगयादिक आहार हो,
अतिमात्रा वरजी करी साहिब मोरा, त्रयोदशमो गुण सार हो. १२ रसनो.....
सांसारो-भुषण तजी साहिब मोरा, बंभाभुषणधारी हो,
मन वच काया एकता साहिब मोरा, चवदमो गुण जयकारी हो. १३ रसनो.....
पणदशमे गुण क्रोध ते साहिब मोरा, च्यार चोकडीई त्याग हो,
मान तज्या तुर्य चोकथी साहिब मोरा, षोडस गुणे गतराग हो. १४ रसनो.....
चउबंध माया वेलि जे साहिब मोरा, सत्तरमे गुण उनमुल हो,
गुण अठारमे लोभनी साहिब मोरा, पांखडी च्यारुं घोल हो. १५ रसनो....
एकोनविंसतिमे गुणे साहिब मोरा, छ कायपें दया मन्न हो,
त्रिकरण करी नवी हणो साहिब मोरा, प्रथम व्रत धर्यो तन्न हो. १६ रसनो.
व्रत दुजो गुण वीसमो साहिब मोरा, नवि बोले मृषा वाक हो,
दान अदत्त नवी ग्रहो साहिब मोरा, गुण इकविसमो दोष हो. १७ रसनो....
द्वाविसमे गुणे सर्वथा साहिब मोरा, मैथुननो कर्यो त्याग हो,
पर-रमणी मन नवि धरो साहिब मोरा, आप कसी वज्जलांग हो. १८ रसनो.....
त्रीविंशतिमे गुणे साहिब मोरा, परिग्रहने परिहार हो,
मूर्छा नवि धरो चित्त हो साहिब मोरा, जग जस भयो अपार हो. १९ रसनो....
भणो भणावो ज्ञानने साहिब मोरा, लिखि थापे भंडार हो,
गुण चोवीसमो दाखीयो साहिब मोरा, ग्यानरस दातार हो. २० रसनो.....
पडिबोहो मिथ्यादृष्टिकुं साहिब मोरा, समकीतमूल बताय हो,
संका कंख ते नवी रह्यो साहिब मोरा, पणवीसमो गुण थाय हो. २१ रसनो....

भवअंबूथी तारे जे साहिब मोरा, तेह चारित्र अमुल हो,
 ते सूरिअंगे सोभतो साहिब मोरा, गुण षटवीसमो अतूल हो. २२ रसनो....
 तपाचार भेद बारसुं साहिब मोरा, षट् बाह्य रस मध्य हो,
 सगवीसमो गुण ए ग्रहो साहिब मोरा, ध्यान-द्वय तुम लद्ध हो. २३ रसनो....
 रस अष्टावीसमे गुण वस्यो साहिब मोरा, महावीर्यनो पुंज हो,
 अनुष्ठाने बल फोरता साहिब मोरा, सूरि महा धर्मध्वज हो. २४ रसनो.....
 समदृष्टि भूमी दीइ साहिब मोरा, भाषा निरवद्य प्रकास हो,
 दोष रहित असन लीइ साहिब मोरा, अभिग्रह धरे सुविलास हो. २५ रसनो.....
 गुणतीसमे गुण सूरिजी साहिब मोरा, इर्यासुमती धार हो,
 धनुष एक दृष्टि दिइं साहिब मोरा, सदगतिना अधिकारी हो. २६ रसनो.....
 अग्नि गगन (३०) गुणे तज्यो साहिब मोरा, सावद्य वयण निवार हो,
 गुण इकतीसमे एषणा साहिब मोरा, बेतालीस दोष विचार हो. २७ रसनो.....
 आदाननिखेवर्णासुमि साहिब मोरा, बतीसमे पढिलेण हो,
 पारिठावणियासुमि साहिब मोरा, गुण तेत्तीस प्रवेण हो. २८ रसनो.....
 गुण चोतीसमे इत्थथी साहिब मोरा, आतमरामता गोप हो,
 गुण पणतीसमे गुण वाक्यने साहिब मोरा, गोप्यो विभेदे कोप हो. २९ रसनो.....
 चेष्टा निर्युक्ति रूपता साहिब मोरा, यथासूत्रनी चेष्ट हो,
 इम षटतीस गुणे करी साहिब मोरा, करता धरमे पुष्ट हो. ३० रसनो.....

॥ इति षट्त्रिंशतिगुणस्वाध्याय । ननु औदार्यादिगुणान् त्यक्त्वा चतुर्विंशतिगुणान्
 मुक्त्वा अन्यगुणा वर्णिता इति चार्वाकवचं, तस्योत्तरं अव्याप्ति-अतिव्याप्ति-
 अतिरेक-असंभवदूरिकरणार्थं षट्त्रिंशतिगुणा अन्यत्र न लभ्यते । अथेत्यादि
 रनेकोपमा इति विचिन्त्य ।

सूत्रोक्त गुण षट्त्रीससुं, वर्णव्या श्रीगणराय,
 पुनरपि गुण बहुला अछे, कहतां पार न थाय. १
 छत्रं सोभित महिपति, वंदे जस नित पाय,
 गुणस्तुति कुण जाकी कहे, अपनि बुद्ध उपाय. २
 पिण मे भक्तिवसे करी, गुण स्तव्या सूरिराज,
 बाल्यकल्पनानी परे, देखायो सरसाज. ३

त्वद्गुणस्तवनाथी लहे, मणुआ पाप विणास,
 जिम तपन उदयथी भजे, महातिमिर निर्नास. ४
 मनीषीकर प्राक्रम महा, दया तणा भंडार,
 ज्ञान उदेशे तत्परा, इण कलियुगमे सार. ५

॥ ढाल ॥ मोतीडानी - देशी ॥

तुमे जिनसासन सूर्य समान, तुम सोभा नवि रहि छान,

साहिबा सूरिश्वरराजा, मोहना सिरताजा,

तुम देशना अमीय समाणि, सुणि तरिया केइ भवि प्राणी साहिबा.....१

द्वादश अंग तणी नय जाणो, मूल टीका निर्युक्ति वखाणो साहिबा.... मोहना....,

चउ निखेपे प्रतिमा थापो, मिथ्यादृष्टिना पडल ते कापो साहिबा.... मोहना....२

खंत्यादिक दश गुण तुम धार्या, राग-द्वेष बे चोरने मार्या साहिबा.... मोहना....,

सत्तर प्रकारे संयमधारी, मुक्तीमारगना अधिकारी साहिबा.... मोहना....३

मूरख सिष्यने श्रुत-मति आपो, सारधार करी मारग थापो साहिबा....मोहना....,

यात्रा करो निरंतर जिननी, पारन हो नवि लहे तुझ गुणनी साहिबा....मोहना....४

अंबुनिधि भुजबल करी तरवा, को पुमान करे मति लर्घवा साहिबा....मोहना....,

किलोलमां जलचर छली जावे, बोत चितरे तुझ गुण किम गावे साहिबा....मोहना....५

तुझ काया दीपे कंचनवान, अंखडि अंबुजपंखडि मांन साहिबा....मोहना....,

ओष्ट रक्त शशी अर्ध सम भाल, कर चरणे रेखा विसाल साहिबा....मोहना....६

इण विधि करि स्तुति देविंद सूरिंदा, स्तोक पणे करि मन आणंदा,

दीन दीन सवाई होत कल्याण, विजयप्रमोद धरे तुम आंण साहिबा....मोहना....७

॥ इति इत्यादिगुणवर्णनं ॥ ढाल ॥ अथ अत्रतो लिखते इति परिभाषा ॥

दूहा : अष्टोपरि सत सहस्रश्री, सोहे तुम सन्मान,

इत श्रीसंघसुभटके, लिखे पत्र कमलान. १

अथ छंद - छप्पय ॥ कवित्त ॥

तपगछनायक पदयु[ग]ल, लिखे लेख उच्छव कर,

मधुकर चाहत जेम, फूल मालती-वास-चर,

तिम नर-नारी वृंद, देश मरुधरना रागी,

चाहत श्रीगुरुराज, दरशण अतिहें रढ लागी,
अति मोद धरि चरणारविंद, वंदन चाहत गछपति,
भल थाट जासु हियडे अधिक, ओच्छव करवा सुभमति. १

अथ मरुधरदेशवर्णन :

दूहा : सकल राष्ट्र सिर सो[भ]तो, मुगटे मणी समान,
मरुधर इसडो जांणीइ, उत्तम नरकी खाण. १
रूपें करी जिणे जीतीयो, अनंग तणो य रूप,
कला बहुत्तरथी भर्या, इहवा पुरस अनूप. २
मदगर्भित केइ मच्छरि, किते धर्मि धनवंत,
गुणि ग्यानी पंडित भला, सूरवीर अरिहंत. ३
गोधुम-खाण अरु कुंपजल, वप्र-नंद उत्तंग,
फागुण मासे इहां सही, वाजे अधिका चंग. ४

॥ कवित्त ॥

देश **मरुस्तल** अति उदार, जहां नर उत्तम खांणी,
अति विशाल ओपत विशेष, जास मुख मधुरि वांणी,
नारि रंभा जेम रतिहपति-रूप-वखांणी,
भल थाट खांन पांन सुथीर,
....., मोद धरंता सुखकरा,
दीपत दशा दिशो विजयकर, देश भलो छें **मरुधरा**.

॥ अथ छंद - पद्धडी ॥ जंगणांत ॥

सहु देशमांहि अतहि दिपंत, **मरुधरा** देख हरखत संत,
उलास धरत चउ वरण अंग, नही कदा जासु मनरंग भंग,
सहु देश-सिरोमणि अधिक सोभ, जहां रहे सिद्ध धर ध्यांन थोभ,^{६८}
रुजरहित निरमलो जस प्रकास, जहां नही वित्तर्चिता उदास,
जनपद लोक सुखीया वसंत, दुख-नाम न जांणे तहां रहंत,
जहां बहुल वृक्ष अति सघन वाग, वाडी उदार लहता न थाग,^{६९}
पर्वत पाहाड अतहि फबंत तेह, अति उंचा तारागण अडेह. १

दूहा : इम वर्णन मरु देशना, छे अति युक्त उदार,
राज करें इहां राजवी, **राष्ट्रवंस** मनुहार. १
इम कृत पूरव पाइ, इह भव राज्यपदभोग,
तखतसिंघ इहां राजवी, करत राज्य तजि सोग. २

॥ इति मरुधरवर्णनं ॥ अथ राजवर्णनं ॥ मल्लिका छंद ॥

राठोड की राखी टेक, तखते समान एक,
लोक सव्व माने आण, शत्रू राखे तस काण,
न्याये जाणे रामचंद, दुखीनको काटे फंद,
शोभाको पार न पाय, **रत्न** कहें जीवो राय. १

॥ अथ **जोधनगर**वर्णनमाह ॥

दूहा : सुंढाला तो समरतां, उपजे उकति अपार,
गजल कहु जोधाण की, सुणज्यो सर्व संसार. १
नगर देश केई निपट, जगमां केता जोय,
जोधाणो देख्यो जरे, होड न इण री होय. २
गजल कहु तीण री गुणी, अपनी मत्त अनुसार,
दिठो जिसडो दाखस्युं, परतिख गुणह अपार. ३

कवित्त : जगजालिम **जोधांण**, सहर साराइ सिहर,
तखतसिंघ महाराज, राज जिहां करे राजेश्वर,
वरण अढार वसंत, सुखी इंदलोक समानह,
अन्नधन्न धरां अपार, कदे दुखवात न मुख कह,
गज-अश्वथाट वाजी बहु गुनी, नगर देख सुख उपजत नित्त,
कीस्त गजल करीके कहूं, नरवर चित्त दे सुनहु नीत्त. १

॥ अथ जोधनगरवर्णनगजल ॥

जोध ही नयर हे एसाक्, मानु इंद्रपुर जेसाक्,
कहिये सिकल तिनकी केतीक्, अपनि बुद्ध हे जेतीक्,
कहता गुनह नावत पार, कहें अपनी मत्तके अनुसार,
नृपति **तखतसिंघ** जिहां राज, करते सदा धर्म हि काज,

तेज पुंज दिनकर तपंत, जिनकी श्लोका जगत जपंत,
 देत आसीस नित सहु नर नार, चिरंजीवो कोड अनुवदत जयकार,
 इणविध सहु देत हैं आसीस, वाणी वदत वीश्वावीस,
 जा के कुमर हे सुकमाल, जिनका सुजस हे अपार,
 गढ जिहां अनड अतहि उंचाक्, परगट गगणं लग पोंहचाक्,
 ओपमा कहा देत बुद्धीवान्, विश्वमे लंकगढ ही जान,
 कंगुरेकी बनी हे ओल, नभमे तारागण समतोल,
 भुरजां चंड वडी भारीक्, सबही अडग हे त्यांरीक्,
 नव नव हात तिण पर नाल, शत्रु देख मानत साल,
 तिणका नाम कीलातोड, वीजलि कटक दुस्मन मोड,
 चोकीला बान हे केकान, लाखां कोड हैं तहां जान,
 जंबु रेखला जुंजाल, वयरि देख होत विहॉल,
 परगट च्यार प्रौढि पोल, राव तहां करते रोल,
 महिल अटल मनमान्याक्, जगमे इंद्रलोक जान्याक्,
 मोति खापर ओर बहु मेल, नाजर तहां करते टेल,
 बहु तहां ... जाली गोख, जिहां नर बेट करते जोख,
 चोकी हे बडी सिणगार, आगे सभामंडप सार,
 दपतर बडा हैं भारीक्, जहां लिखते इक तरीक्,
 सुरजपोल सिरे मान, आगे अंतपुर ही जान,
 घडीयाल करत हैं टंकोर, नोबत घुरत हे घनघोर,
 खजाना खूब हैं भरीयाक्, देखत काज सब सरियाक्,
 आतमरामकी ^३समाद, सामा जलंधरका प्रसाद,
 चामुंडा वडी हे महकाय, देवी बेचरा हे साय^४,
 टांका खुब भरीया थाट, उपर वडका गहगाट,
 बडी सुघटा लोहापोल, बेट सुभट अतहि टोल,
 आगे पोल अमरतीक्, लखणापोल हे अडतीक्,
 झरणा झरत हे अपार, संभुनाथका दरबार,
 धुवपोलसुं चलीयाक्, पट्टा खुब ही बधीयाक्,
 भेरुनाथका हैं थान, जाकी नाम चोकेलाव,

सिद्ध हि पोल फेर गोपाल, आगे वडी हैं बहु साल,
 फतेपोल हे अनुप, वरण्या गढका सरूप,
 वली करं सहर का वखान, गुणिजन सुनन दे दे कांन,
 बहुत हैं चोवडा बाजार, ^५पंकत हाट पाव न पार,
 झुक रही हवेली झाझीक, माहें मनुख्य रहें माझीक्,
 कोरणी खुब हैं एसीक्, इलमे देख नही एसीक्,
 जिगमिग रहें जाली जोत, रवी प्रतीबिब होत उद्योत,
 जिनमे पदम सरवर जान, वलि राणिसर हि वखान,
 स्त्रीयों वहत हे जोडाक्, पणघट लागते कोजक्,
 गहरा सागर फब ही गुलाब, सागर फते अमृत आब,
 गंगेलाव फुलेलाव, चित्तमे देखने का चाव,
 तापिवाव जेता कूप, रूडा नगरका हैं रूप,
 चावि सिरे चांद हि वाव, जिस पर वडका फेलाव,
 सरवर मान उदधि समान, परगट नीर गंगा पान,
 गंग ही स्यामका देहराक्, मानु सहरका सेहराक्,
 कुंजविहारीका परसाद, वली आसमानसें करे वाद,
 वड महाराजकी सुन वत्त, मिंदर करे प्रभु अनुरत्त,
 भेते महावीर देहराक्, परगट पासका हे राक्,
 सुख करते शांतिनाथ, ध्यान धरुं सुमतिनाथ,
 रीखभदेव देहरा भारीक्, पाव पुजते नारीक्,
 पास हिवानका परगट, थपे देहरा जु थट,
 तलहटी महिल मान्याक्, जगमे इंद्रलोक जान्याक्,
 कोटवालि चबुतरा केसाक्, जोवो देवलोक जेसाक्,
 वन्यो तिहां अधुना कूप, जल भर्यो हे अनूप,
 सायर ^६एनका कोठार, भरीया बहु द्रव्यभंडार,
 तपगछ ओपासरा क्षेत्रपाल, वांहांकी करत हे रखवाल,
 वृद्ध लघु केई ^७भलभाक्, ज्योज्यो उपासरा जेताक्,
 परगटतां बहु पोसाल, बहु बहु तहां पढते बाल,
 अस्तल भगतका एताक्, दान हि संतकुं देताक्,

मोटी वड **वडी मजीद**, पढते यवन तहां कर प्रीत,
मोटा अडिग ^{१०}मनाराक्, सब ही देखके साराक्,
तकिया फकीरुं का फाब, उहां कहे ^{११}अरकि का जाब,
आसण मठ जहां अनेक, योगी संयोगी हैं केक्,
छिब वर्ण पवन छत्तीस, वदी हु नाम विस्वावीस,
खेत्रि विप्र वणिक ही खास, वसते आप आप आवास,
कायत्थ की ते देवीदाश, वसते सुद्ध घर की वास,
सोनि जाट ^{१२}छिबा सुद्ध, वलि गेहरिद्ध बहुबुद्ध,
^{१३}घानजा लुहार खाति बुद्ध, अपने काममे भरपूर,
कंसारा ^{१४}भरावा कुंभार, ^{१५}वणिगर ^{१६}सोरगर अणपार,
^{१७}खारोल घांची मोची खंत, वड वड नगरमे वसंत,
^{१८}खेरादि ^{१९}चुडीगर ^{२०}षटीक, ठाचा नगरमाहे ठीक,
भडभुंजा माली चारण भाट, खासे द्रव्य घरमे खाट,
लखारा सकला घर लाखां, भल भल रहे ते भाखां,
^{२१}डबगर ^{२२}सीसगर दरसाव, तेली तंबोली बहु चाव,
भाख ही ^{२३}कलाल ही का भेद, खाटे द्रव्य न करे खेद,
वली तिहां अन्य बहु वसतीक्, इहां तो कहीई एतीक्,
वणिया सेहर-कोटका वणाव, देखे होय ते न लगे डाव,
अतहि विस्तार हे जु उत्तंग, भल परबत करत तु भंग,
पाहाड अनड ^{२४}पवेद्यक्, भुजबल हणुमतकुं भेट्याक्,
ज्वालामुखी देवी जोत, अहोनिस् रहत हे उद्योत,
सहिर बाहिरकी सोभाक्, अब कहुं सुणो नर दिल-पाक,
सीतल नीर **सागर सूर**, **सागर वखत** बहु जलपूर,
वालहि समदरका वरणाव, पंडित तिहां देख घर पाव,
जलविच महिलायत मोटीक, लागे द्रव्य लख कोटीक,
वागां सिरमाहि च्छेल, जीसमे वडे अद्भूत मेल,
क्रिडत **तखतसिंघ** महाराज, करते सहल अतहि साज,
वणियां तिहां अद्भुत बाग, छोगा ^{२५}छयलके चित्त लाग,
तिणमे अंब दाडम दाख, सर्व व्रक्ष विस्तरे हैं साख,

जांबु नीबु ^{२६}किरणा केल, सीताफल बद्रिफल मेल,
^{२७}सुरुंज काकडी हे हजार, षट ऋतुफल हे तिण मझार,
^{२८}गुलदावद हे गुलाब, अंगपे धरत वधे आब,
मोगरा मरुआ चंपेल सार, जहां भमर [मधुर] गुंजार,
पीपल वड ही ^{२९}बोहो परचंड, जहां पंखिनका बेटे झंड,
मेला मंडत हे मोटाक्, द्रव्य न चलत हे खोटाक्,
इक हे ^{३०}राइका आराम, देखत सरत सबहि काम,
सेखावत सरवर सार, आप रहे भर अपार,
सरवर बहुजीका सुध, देख्या नीर जाके दुध,
अखय तलाव अखेराज, **संघवी** करायो सिरताज,
कायलाणा महल हे भारीक्, **सरवर तखत** हे वारीक्,
भझारक दीपका तलाव, नीचे वागका फेलाव,
मिंदर कीया थासी ताम, लागे तिहां अतहि दाम,
बहु सुघट्ट सिवका थान, अध बन्या अजा एड मुकान,
मेला भरत हे भारीक्, **अबरेखा**^{३१} वागकी त्यारिक्,
नाडा बडा सुखदायक, राजे सदा गणनायक,
कागा चागकीरत्त, सहु नर कहे सुणज्यो सत्त,
उसमे चीज हे चीतचाह, लायक नर लेत हे जु लाह,
तहां इक देवीका ठाम, **आसपुरी** जीस नाम,
भगति तहां करत भंडारीक्, देवी बहुत हैं प्यारीक्,
महामिंदरकी छब देख, सुर नर रहे नेना पेख,
मिंदर उदेहीकुं जाण, जीसमे **जलंदर** का थान,
सागरलाल ही भरीयाक्, दरषत सब हैं हरीयाक्,
मंडोवर सहर^{३२} अतहि मोटाक्, कायम गढ नव कोटाक्,
छजे पवन छत्तीसेक, दरसण षट तिहां दिसेक्,
वड वड वागका विस्तार, फेले फुल फल अपार,
पारसनाथका परसाद, झलर नगरुंका नाद,
छत्रिवनी **मानसिंजी** रीक्, दरसण भरत लोक भीरीक्,
मिंदर तहां दोय मोटाक्, पांच च्यार हैं छोटाक्,

कहीये देव तेतीस कोड, छावा लाधते इक छोड,
 देवल बहुत हि देख्याक्, परगट कोट गढ पेख्याक्,
 भेरुं जहां हे भारीक्, पूजत पाव नर नारीक्,
 ओर बहुआइ ठाण, कहा करुं तिनकी १०३छाण,
 वरणुं १०४मुसही का हुं भाव, सच हि सुनत लागे चाव,
 यवन करत हैं दिवाण, चगसि सिंघवीकुं जाण,
 कायम देख कीलादार, जाका सुजस हे अपार,
 व्यास हि प्रोहितकुं मान, हाकम कोटवाल ही जाण,
 श्रावक वडे हैं सुजाण, सदा धर्ममां पेचाण,
 सिंघवी इंद्रमल हे नाम, सदा बुध हि के ठाम,
 कुसलराज फोज ही राज, जिणके भुपका बहु काज,
 समरथराज ही वडभाग, नृपभक्तसुं अनुराग,
 उमेदराज उदेराज, करते राजहीका काज,
 प्रेमराज सीवराज ही नाम, जाके सदा ध्रमसुं काम,
 गीरधारीमल बुधके धाम, जिसके सदा प्रभुसुं काम,
 कुवरचंद भंडारीक्, जामे बुद्ध हे भारीक्,
 जसराज राजकाज स[ब] देख, जीवही राजका ध्रम लेख,
 सिरेमल समरथमल, जिनका सुजस हे अटल,
 गोवरचंद हे गुणवंत, जाकी साय हे भगवंत,
 मालमचंद ही सुजान, जिनकुं धरमकी पेचान,
 भागहीचंद का जस जहार, सवीरचंद हे गुणधार,
 देवीचंद गु[ग]णेशचंद, बहुत बुध ही के कंद, लुणावतभं
 चांदहीमल हे नरनाथ, जाके धरम ही की गाथ,
 अनहीराज सिरेमल, जामे बुद्ध हे अटल, दीपावत
 रतनचंद करणीयदान, जीतमल हे बुधवान, मनावत
 दीनानाथ हे वछराज, हंसराज ही आणंदताज,
 मुता मुकनचंद वडभाग, जा पर भुपका अनुराग,
 धरम ही ध्यानमें चित्त धार, करते संतकी बहु सार,

मुता बुधमल कोचर, सेवा करत हे बहु नर,
 परतापमल मुणोयत, जीनकी न्यावमे हि रत्त,
 विजेचंद वीजेकार, भूप राखते हे सार,
 सेठ केसरीचंद सुजान, जिनका नगरमे बहु मान,
 श्रीश्रीमाल गुलालचंद, नवलसाह हे सुखकंद,
 खीवसरा सांड गोलीया सराप, जपते देव अरिहंतजाप,
 मणीयार ललवाणी मुख, डार एगमन अलगा दुख,
 सब ही नगरका वणाव, गुणियन कया गुरुसुपसाय,
 मो बुध अल्प रे अनुसार, सुकवी भुल-चुक संमार^{१०६},
 देख्यो नाहि माहि ज दोस, रखे कोइ करो रीस रोस,
 संवत उगणीसहसोल १९१६ जाण, सुदि फागुण मास हि जाण,
 पंचमी सुक्लपक्ष हि पेख, रत्न कहे अलि^{१०७} लगन देख.

कलश : गजल कही ते गुणी सही रिंझें सदाई,
 श्रावण श्रवणां सुणे भलि विध तिणे मन भाई,
 योगी यंगम जती सती रतिवंत सुणत सत्त,
 सुणी योधाण वखाण वदे मुख साची मत्त,
 अवर नर रींझें अवस सरस वाक्य सुणने सदा,
 धन रत्न साची कहि, कुडी मत जाणो कदा. १
 ॥ इति योधनगरवर्णनं ॥ अथ इतश्च लिखित भाषा ॥

दूहा : श्रमणोपासिक तपगछना, श्रावि घणु सुविचा[र],
 धरम नियम नित सांचवे, जोधहि नगर मझार. १
 प्रभुपूजा नित सांचवे, त्रण्य टंक वलि तेह,
 परवादिक आव्या थकां, निवाणुभेद करेह. २
 गुरुभक्ति विधिसुं करे, भात-पान पडिलाव,
 भेषज वस्त्र पात्रादिके, मन धर अधिको भाव. ३
 ग्यानं धरम गुण दानना, ग्राहि व्रत धारंत,
 ज्ञाताधर्मकथा सुणे, जिनसासन उजमंत. ४

इहवा श्रीसंघ हर्षसुं, अहने त्रिणि टंक,
 श्रीगच्छराज देविंद्रने, वंदे सहस्र अठांक १००८. ५
 इहां धर्म नियमादिक हवे, श्रीजिनदेव प्रसाद,
 श्रीसूरिमहिमा करी, दिन दिन वधते वाद. ६
 श्रीगणनायकने बहु, प्रमुदानंद अपार,
 सकल संघ वांछे अधिक, जिम चातक जलधार. ७
 सकल संघोपरि, पूरव प्रीत धरंत,
 तेहथी अधिकी दिन दिन, राखज्यो मतिवंत. ८
 धर्मराग धरज्यो सदा, छे बहु श्रुतना जाण,
 तुम समा नही महीमंडले, अवर न हेतु वाखांण. ९
 धर्मनायक तुमे अच्छे, सुख-संपतिदातार,
 जिनसासननमे दीपता, इण कलीयुगमे सार. १०
 गुणवंत सूरिराजकुं, मरुस्थलना नर नार,
 वंदननी इच्छा करे, मन धर भाव अपार. ११
 आसापूरण मनुजां तणी, आणी दया विसेस,
 निरमल करवा जन भणी, मरुधर करो प्रवेश. १२
 जोधपुरवासी संघ सवी, लीखे वीनति सार,
 कृपा करी श्रीसूरिजी, विनति ए चित्त धार. १३

॥ अथ अप्रंच इति वाक्यात् ॥

ढाल ॥ वालिम वहिला हो आवज्यो - ए देशी ॥ श्रीपालरासमध्ये ॥
 मरुधर देश पधारज्यो, सारज्यो अम मनकाज रे,
 वंछना दिवस बहुनी अछे, वंदवा तुम महाराज रे. १
 स्वामि(मी) श्रीसूरिसर वीनती, चीत्त धरी मानज्यो स्वामी रे,
 जोधही नगर पावन करो, इण कारण लिखुं ताम रे. २ स्वामी.....
 तुम देशना सुणवा तणी, भवीक मन अधिक अच्छाह रे,
 तिण कारण स्वामी मया करी, पौधारो सूरि यांह रे. ३ स्वामी.....
 नेत्र चाहे सूरि निरखवा, मन चाहे मिलवा हेज रे,
 रसना स्तुति करवा भजे, जिम भावे निद्रालु सेज रे. ४ स्वामी.....

सिखंडीनी चाहत मेघने, कलिकासुं परि व्रत प्रेम रे, (?)
 मीन भजे फुनि सलिलकुं, इहां चांहे छे भवि तुम एम रे. ५ स्वामी....
 अवर महितल विचरता, यत्र मनुजभाव वीसेस रे,
 पिण किंचित अम मन तणा, भाव निरखो सूरेश रे. ६ स्वामी.....
 असन पान वली बहु वीध, भगति सगति अनुसार रे,
 राग धरी मन उचीतसुं, सेवस्यां चरण मनुहार रे. ७ स्वामी.....
 श्रावक इहां गुणवंत छे, जसु घरे रिद्धि विसाल रे,
 दांन बहुविध ते दिये, सुपात्र तणे उजमाल रे. ८ स्वामी.....
 श्राविका शुभ गुणे राजती, साजती धरमना काज रे,
 मधुर वचने करी जलपती, मानु कमला सिरताज रे. ९ स्वामी.....
 देव दरसण नीत साजती, गुरुभगति अधिके भावे रे,
 धरमकरणीनी आकरी, पतिव्रता सुद्ध ते १०८० स्यावे रे. १० स्वामी.....
 बारे व्रतधारि श्राविका, वलि नवतत्त्वनी जांण रे,
 खेत्रविचार संघयणना, अर्थ रहस्य सममांन रे. ११ स्वामी.....
 तसु हिये वांछा तुम तणी, फुनि वाणि सुणवा चाव रे,
 वांछना पूर्ण करवा भणी, स्वामि ततखिण इहां आव रे. १२ स्वामी.....
 एकेन्द्रियादिक आसरी, सूत्रोक्ते मिथ्यात्व रे,
 करमग्रंथोक्त सास्वादनि, निश्रेशुं इहां ध्यात्व रे. १३ स्वामी.....
 पर्व महोच्छव अति थाटस्युं, चेत्रपरवाडि विसेस रे,
 धर्मव्रधि बहुपर थस्ये, इहां आव्या सूरिस रे. १४ स्वामी.....
 धन्य ते दिवस अमे जाणस्यां, वांदस्यां सूरि महाराय रे,
 इम नर नारि तरस्ये सहु, गुरु आगमवल्लि ध्याय रे. १५ स्वामी.....
 कायभूअंकसशी (१९१६) अब्दमे, फागुण पंचमी सुध रे,
 विबुध कल्याण पट आदरु, प्रमोद वांछे तुम सुध रे. १६ स्वामी.....
 ॥ श्रीसूरिवर वीनती ॥ इति अप्रंच च ढाल ॥ श्रीरस्तु ॥
 ॥ अथ तत्र साधुमंडली प्रति वंदणा ॥
 दूहा : पूज्य चरनांबुजे जे रहे, अलि इव पंडितवृंद,
 अष्टादश साखा प्रवर, विजयादिक सुखकंद. १

रत्न परे मुनिगण विषे, **रत्नविजय** जयकार,
 सूत्र निर्युक्ति फकिका, जाणे कर्मप्रकार. २
 इणहि नामसुं जाणीइं, जाके ज्ञान अपार,
 श्रीसंघ वंदे उभयकुं, लेज्यो तेह सकार. ३
 दप्तरधर **अमृतविजय**, वाणी अमृत जास,
 बुद्धें अधिका जाणीइं, **मोतिविजय** प्रकास. ४
 असनविभाग करे सही, **दानविजय** ध्रमधार,
लक्ष्मीविजय लखण अधिक, **हेतविजय** सुखकार. ५
भगवानविजय जयकरु, इत्यादिक मुनि जेह,
 तिणकुं श्रीसंघसुभटको, वंदन भाव करेह. ६

॥ इति समस्तगीतार्थानां वंदना ॥

चोपड़ : सकल गुणे करी राजे तेह, मेरु ओपम जेहने देह,
 मल्ल शब्द अग्रिम जब थाय, परतिख तेहनुं नाम कहाय. १
 करे संघ तेहने परणाम, हवे दिक्षाये वंदन स्वाम,
रत्न करे नित ताकुं याद, अहनोदके हवे शब्द विदाय. २

॥ छंद - मोतीदाम ॥

रहे चोमास लही तुम आण, **कलाणविजे** तसु सत्क वखाण,
प्रमोदविजे पटधार कहाय, करा नीत वंदन सूरिय पाय. ३

॥ छंद - पद्धडी ॥

शिवधन हि मत्त, पुन हैं हमीर, विजय जोडी, करीयें सधीर,
 संज्ञा प्रतक्ष, ए च्यार थाय, कहे **रत्न**, नमे तुम्ह पाय. १

श्लोक : आग्रहात् सर्वसङ्घस्य, व्यलेखीत् पत्रमद्भुतम् ।

श्रीमद्देवेन्द्रसूरीणां, पादपद्मेषु ढौकनम्. २

बाल्यबुद्ध्या च रत्नेन, शुद्धाशुद्धं च यद्वचः ।

तस्य क्षमतु हे स्वामिन्!, ममैव चर्मचक्षुषा. ३

रसचन्द्राङ्गभूमाने-ऽब्दे (१९१६) तपस्येऽर्जुने दले ।

पञ्चम्यां कर्मवाट्यां हि, रवौ लेखो लिपीकृत[ः]. ४ ॥ इति ॥

॥ श्री पार्श्वनाथजी ॥

स्वस्ती श्री**अेमदावाद** सुभ सुथाने, सरबओपमाविराजमाने, अनेकओपमालायक
 ००० इतादीक सूरी छतीस गुणे करी विराजमान भटारकजी
 श्रीपुरंदरभट्टारकजीश्रीश्रीश्रीश्री १००८ श्रीश्रीवीजयदेवींदसूरीश्वरजी..... कर
 चरणकुमलायसु जोधपुरथी लिखत समसत सिंघ लिखावतु वंदणा १००८ वार
 अवधारसीजी । अठा रा समाचार श्रीजी रा तेज प्रतापसुकर भला हे । श्रीजी
 सायबा रा दीन-दीस घडी-घडी पल-पल रा आरोग्य चाहिजे । आप रा सरीर
 रा खान-पान रा जतन करावसीजी । जतन तो श्रीअदीष्टायकजी म्हाराज करसी
 परंतु श्रीसिंघने तो लिखीयो चाहिजेजी । अप्र च श्रीसिंघने आपने वांदवा री
 घणी अभिलाषा छे. सु जे दिन दरसणावेरणी वेदी जसे अंतरायपटलसे तीण
 दीन आपका दरसण.... सी । मनमे तो अभिलाषा बोहत वाग रही हे । जीण
 दीन चरणारवीद आप रा भैटसु सो दीन कोड दीवाकर उदे हवो जाणसी ।
 आपका गुणग्राम करता पार हवे न्ही सायर अथाग थाको थाग दिनकुं समरथा
 किनही आपतो सायर समान गुणां सुकरने संपूरण भर्या छै । आपके सोभागुण
 दीसोदीस व्यापी रही छे । तेजकी पासनासे भवी जीव मगन आनंद पाम रहे
 हैं । आपतो वडा उपगारी सोम मूरती, धीरजवंत, मेरु सम अचल, चंद्र सम
 सितल, गंगाजल सम निरमल, पय समान उजल, फिटीक रत्न सम क्रांत,
 अंधकारभंजन, अष्टकरमरिपुगंजन, कुमतीदलभजन, किजा-अनुष्ठान-ध्यान-ग्यान-
 मुद्रा-आसनरंजन भविकजीवकुं उपगार करण अभयपद देनकुं दजाल हो ।
 अग्यांनी अविवेकी जीवकु उनमत सुभावी जीवकुं माही वडे गोप..... । संसार
 माहे भवीक जीव मोह, अंधकार, क्रोध, मछर, उदवेगसे करके बुड रहै है
 तीनकुं उधरणेकुं आलबन आधार जीहाज समान हो । कुमती कुटल विसन
 सातरूप माहारज ताकुं दुर करनेकु वायु समान हो । ओर केते जीव संसारमे
 करम पूंढके रहे है तिनकु नवपल्लव करनेकु पुसंकरावत मेघ समान हो ।
 दया प्रणामसु सरव संसारी भवी जीवकुं हीत उपदेस देशना इमृत वांणी त्रिपू
 कर रहे हो । चवदे हजार मुनीश्वरमाहे वीराजके भुयमंडल पृथवीपे वीहार करते
 पावन पवित्र करता थका दिश नगरमांहे भवी जीवके कारणे समकित हेतु
 उद्योत कर रहा हो । धरममहि राजेश्वर सुरीराज वीचर रहा हो । इत्यादिक

आपकी सोभा गुणकिरती करनेकुं सुरगुरु वृसपत पार पानेकुं समरथ होय नही सो मनुस लोक कीरती करणेकुं समरथ होय ही । ओर श्रीसंगपर श्रीजी महाराज क्रिया धरम प्रीती रखीयोजी... दीन दीन अधीक अधीक ताव रखावसी । श्रीसंगतो आपनो घडी एक भुले न्ही । आपकुं वांदण री घणी इछा वरते छै । सो तो जोगांनजोग कारणे आपका दरसण हुसी । आप गुजरात्र देसमाहे भाव भगतीसु लोभाय रहा छे । कोइक दिन मरुधरामाहे जरूर पधारसी । ओर अटे चोमासी गुराजी परमोदविजयजीसुनि मीलाया सो अे बोहत गुणवांन है । आछा पंडत सुत्रांना जाण छै । भेन भिनकर सरवकांनै समझाय रहा छै । सु जागासु इसा ही ज पंडत सूत्र सिधंतरा जांण चोमासे मिलावसी । संग जोग्य कांम बंदगी लिखावसी समत् १९१६ रा मिति चेत्र सुदि ४ सोमवार

॥ अथ समस्त संघ वीनती ॥ ढाल ॥ वेशाख वदि पंचमी दिने - ए देशी ॥ पंचमीरी सिझायमे लक्ष्मीसूरि करेल मध्ये ॥

संघ सकल करे वीनती सुण सूरीजी रे,
अवधारो महाराज सहु सिरताज सुण ग्यानीजी रे. १
उच्छव करवा सुभमती सुण सूरीजी रे,
संघ तणे मन रंग, अति उमंग सुण ग्यानीजी रे. २
सोभागी जगमां तुमे सुण.....,
महिमानिधि गच्छराज, बहु गुणभाज सुण..... ३
भविक हृदय प्रतिबोधवा सुण.....,
चूडामणि सम सार, सुखदातार सुण..... ४
ए पुर तुम चरणा थयां सुण.....,
सुद्ध होस्ये विशेष, टलस्ये क्लेस सुण..... ५
धरम नीयम अधिका हुस्ये सुण.....
दाननी मंगल माल, झाकझमाल सुण..... ६
प्ना(स्ना)त्रादिक पूजाविधि सुण....
पोस उपधान विसेस, क्रिया उदेश सुण..... ७
देईने श्रीसंघनी सुण.....
पुरो मन अभिलास, ए अरदास सुण..... ८

प्राज्ञ कल्याणनो इम भणे सुण.....

प्रमोद कहे सुभ देश, द्यो आदेश सुण..... ९

॥ इति वीनती अवधार्य ॥ श्रीः ॥ अथ श्रीजीचरणारबिंद वधावो ॥
॥ ढाल ॥ वालाजीनी वाटडी अमे जोता रे - ए देशी ॥
श्रीदेर्विंदसूरि वधावो रे, मोत्यां थाल भरी भरी ल्यावो रे,
एतो जगबंधव जगनोवो, भविजन भावसुं सूरि वंदो रे. १ [ए आंकणी]
कुंकम चंदन गवलि पूरो रे, कंचन चं(तं)दुल स्वस्ति सनुरो रे,
गावो मंगल वाजित्र तुरो, भवि..... २
सुहागण वारणा करती रे, दान याचककु देती रे,
सूरी आगल घुमर लेती, भवि..... ३
अति हर्ष पमाडो गुरुने रे, टाली आसातना करो विंने रे,
एहनि आण धरो तुम तन्ने, भवि..... ४
इम प्रमोद तणी सुणी वाणी रे, सूरिशेवा करो भवि प्राणी रे,
जिम पामो शिवपटराणी, भवि..... ५
॥ इति वधावा ढाल ॥ अथ रहस्य ॥

दूहा : नर नारि जोधाणना, करे राजनी चाह,
कामकाज सवि छोडने, ^{११२}कुकरादृष्टि लगाह. १
पूज्य नाम हृदये थकी, भुलां नही ^{११३}लीगार,
घणी विधसुं करा वीनती, स्वामी वेग पधार. २
श्रीआचार्यगुण बोलतां, रसनाने नही दोस,
उगति जुगति देखी करी, म करो कोई रोस. ३
सूरिगुण चत्त लावतां, जिहवा थाइं शुद्ध,
रत्न भणे अति शिघ्रसुं, खमज्यो शुद्ध अशुद्ध. ४
॥ इति रहस्यं ॥

सं. १९१६ वर्षे फा० सुदि ५

* * *

(२१)

साणन्द् बिराजमान विजयमहेन्द्रसूरिजीने सीणोरथी हिम्मतविजयजीनो पत्र

प्रस्तुत पत्र साणन्द बिराजमान विजयमहेन्द्रसूरिजीने उद्देशीने सीणोरना सङ्घ द्वारा मोकलायो छे । पत्रनो आगळनो भाग खण्डित होइ मंगलाचरण, साणन्दनगरना वर्णननो, गुरुगुणवर्णननो अंश पत्रमां मळतो नथी । पत्रनी शरुआत 'गङ्गल'मां सीणोर शहेरनी वर्णनाथी कराइ छे । फारसी मिश्रित गुर्जरभाषामां अनुक्रमे वहीवटदारोनुं, व्यापारीओनुं, लोकव्यवस्थानुं, स्थानोल्लेख साथे जिनमन्दिरोंनुं, तथा उपाश्रयोनुं वर्णन पद्यबद्ध आलेखायुं छे । तयार पछीनी ढाळमां सीणोरक्षेत्रमां चातुर्मासार्थे पधारेल पं० न्यायविजयजीना चोमासामां थयेल सूत्रवाचनादि विगतोनो तेमज मुनिश्रीना गुणोनो सङ्क्षेपमां अहेवाल अपायो छे । गद्यपत्रनी शरुआत गृहस्थोना नामोल्लेख साथेनी वन्दना उल्लेखित करवा द्वारा कराइ छे । त्यान पछीनी विगतोमां फरी चातुर्मासिक आराधनानुं वर्णन जोवा मळे छे । पूज्यश्रीने वन्दन करवा माटेनी उत्कण्ठानुं वर्णन करी पूज्यश्रीनी निश्रामां रहेला मुनिवृन्दने वन्दना निवेदन कर्या बाद सीणोर सङ्घना अन्य श्रावकोनी वन्दना जणाववा पूर्वक कवि गद्यपत्रालेखन पूर्ण करे छे । 'कांना तु तो...' ए देशीमां सीणोरनगरनुं, त्याना राजा भाउ(?) तेमज अन्य पदाधिकारीओनुं, जैनैतरमन्दिरो विगेरेनुं सुन्दर वर्णन करे छे । हरनाथ चिकित्सकनी नोंधने आ पत्रनी विशेषता कही शकाय । तयार पछीनी देशीमां सूरिजीना गुणोनी वर्णना करी श्रीसङ्घमां तेमना पधारता थनारां अनुष्ठानोनी विगत जणावी चातुर्मासार्थे पधारवा विनन्ति करे छे । फरी सूरिगुणस्तवना पछीनी ढाळमां आलेखी सूरिदर्शन-वन्दननो उल्हास कविए पद्यबद्ध रजू कर्यो छे । साणन्दना कपटी राजा, मीठा बोला मन्त्री तेमज अन्य प्रतिष्ठित श्रावकोए गुरुजीने भोळवी त्यां राखी लीधा छे एवा भावो रजू करी सूरिजीना सहवर्ति मुनिओने कटाक्षपूर्वक ते नगरनो त्याग करवा अने सीणोर पधारवा विनन्ति करे छे । अहीं पधारता कावी, जम्बूसर विगेरे तीर्थोनी यात्राओ थशे, सङ्घमां घणां अनुष्ठानो थशे ए वात भारपूर्वक आलेखे छे । साणन्दना अवर्णवाद्दथी जो

कदाच साणन्दना सङ्घने रीस चढे तो तेमने य सीणोर मोकलशो एम जणावी कवि स्वनामोल्लेखपूर्वक पत्रान्ते खामणा आपवा द्वारा पत्र पूर्ण करे छे ।

पत्रनी रचना पं. न्यायविजयजीना शिष्य हिम्मतविजयजीए करी छे ।

शब्दकोश

- | | |
|--|---|
| १. बाडव = ब्राह्मण | २३. गिल्लांक = ? |
| २. बहोतर = घणी | २४. कनफटे = कानमां मोटुं कुंडळ |
| ३. खेवट = सुकानी | पहेरनार वैरागी |
| ४. गिल्लाक = शस्त्र मुकवानो | २५. शेख = मुसलमानोनी एक जात |
| ओरडो(?) | २६. कबिला = परिवार |
| ५. कमठान = सरसामान | २७. जेदे = ? |
| ६. बंकाक = बहादुर | २८. अडअलमस्त = मस्तान(?) |
| ७. प्याजीक् = फीक्का पडबुं (डुंगळीना रंग जेवा) | २९. देदे = आपी दे |
| ८. अदल = बराबर | ३०. तालाक् = ताळु |
| ९. नायव = राजकाजनो मददगार अधिकारी | ३१. तालमखानं = नृत्यशाळा |
| १०. कोरोडी = ? | ३२. ठाढीक = मोटी(?) |
| ११. पायगां = सैनिको | ३३. खलक = सर्वजातना |
| १२. जालम = निर्दय | ३४. हठवाडेक = दुकान |
| १३. हन्नोज = ? | ३५. ठाढेंक = मोटा |
| १४. कांहन = बूम | ३६. नीक = प्रवाह |
| १५. तोराक = रोफ | ३७. बरनीक = भरेली(?) |
| १६. मुखताक = मुख्य पदार्थो | ३८. किचोलीक = कचोका |
| १७. नईयतां = नीयत | ३९. पडदेक = अंगरखानो पडदो |
| १८. भिडतेक = लडे | ४०. खुडदेक = परचूरण, मोटा सिक्कानी किमतना नाना सिक्का |
| १९. बहोतेरेक = घणा | ४१. गज्जीक = गंजी (जथ्यो) |
| २०. ठोर = जग्या | ४२. हेरीक = विगत |
| २१. ओलाओल = लगोलग | ४३. बन = बनीने |
| २२. मुजब = धर्म (मजहब परथी) | ४४. रत = तल्लीन |
| | ४५. छीक = चकित |

४६. फलियाक् = फळियुं	५८. क्रमथी = ओळंगती
४७. मिजलस = सभा	५९. अगदंकार = रोगरहित (?)
४८. भूर = घणो	६०. नीक = प्रवाह
४९. सेहराक = मुगट समांन	६१. ओसंकीया = संकोच पाम्या
५०. आंनाक् = आववुं	६२. वलण = प्रत्युत्तर
५१. स्वातुक = स्वाती नक्षत्र	६३. थरमा = एक जातनुं वस्त्र
५२. हूजीइं = थाजो	६४. पामरिया = बारीक रंगबेरंगी(?) वस्त्र
५३. जीवोक् = जीवो	६५. ओडावे = वहोरावे
५४. मोसे = माराथी	६६. पडीरूवा = ?
५५. चांचर = ?	६७. सुखवेल = एक जातना चोखा
५६. गहेर = ?	
५७. हेर्ति(ती) ? = ?	

*

[पा]नि भरत हें पनिहार.....३

, मांनुं सफरि(री) सम फिरतीक्,
बाडवलोक वहां आवेंक्, तटनी देख सुख पावेक्. ४
संध्यास्नानकुं करतेंक्, तनकुं विभूति धरतेंक्,
फिरति नाव बहोतेरेंक्, बेठें लोक बहु घेरीक्. ५
खेवटलोक खेडे आप, पेले पारकुं पोचाय,
देखो नदिके तटपरक्, रचना बोहत हे दिलभरक्. ६
उंचा बहोत हें किल्लाक्, उनमें पूराना गिल्लाक्,
भारि बहोत हें कमठान, चांदनी पोहचति असमांन. ७
जीनका क्या करं अनुमांन, नावे इंद्रघट उपमांन,
महीपतराव हें बंकाक्, निसदिन बाजता डंकाक्. ८
खूबि बहोत हें ताजीक्, जीन पर लोक सब राजीक्,
एसा मर्द हें गाजिक्, रिपुदल सब किए प्याजीक्. ९
जीनकी 'अदल हें इनसाफ, काजी देखते हें किताब,
नायव^{१०} कोरोडी^{१०} कोतवाल, मिलत फोजदार भुजाल. १०

बेठक बहोत हे खासिक्, मिलते वहां महेवासीक्,
फीरति ^{११}पायगां चोपास, ^{१२}जालम तोडते महेवास. ११
लाखो माल वहां आवेक्, ^{१३}हनोज छापतां थावेक्,
कुलनर करत ^{१४}कांहन नेक, दानि दान ले वेगेंक्. १२
मिठारांम देसाईक्, सबमें आन मनवाईक्,
हुकमी करत हे जोराक्, रखते अमलका ^{१५}तोराक्. १३
सीवलालका बहु मांन, मानत लोक जिनकी आंन,
वडे वडे लोक व्यवहारिक्, खुबि बोलते भारिक्. १४
वसते लोक वड-वखताक्, लावें माल वहां ^{१६}मुखताक्,
पहेने नीत नई पोसाक्, जीनकि ^{१७}नईयतां हे पाक्. १५
ब्राह्मणलोककि बसतिक्, लछी नगरमें लसतिक्,
ज्ञानि ग्यांनसें रातेक्, अमली अमलसें मातेक्. १६
केतेक वेदकु पढतेक्, वादि(दी) वाद सो भिँडतेक्,
भाषा रचे केई ^{१८}ठाठीक्, केतेक छंदके पाठीक्. १७
जोतिष जोतषी जोतेक्, केतेक नीमितीए होतेक्,
सीव अरु **कृष्णाके** देहरेक्, **गनपतथान** ^{१९}बहोतेरेक्. १८
बाजत घंट झालरनाद, गुहिरे गुजते हें साद,
श्रावकलोक हे कुलशुद्ध, जीनकी बहोत हें बल-बुद्ध. १९
देसावाल [हे] **बणीयात**, वसति **बनीककी** सब नात,
हिंदुलोक वसते ओर, वसति बहोत हें सब ठोर^{२०}. २०
अपने धर्मका आचार, पाले बहोत करकें प्यार,
छीपे भावसारकि पोल, मंदिर बहोत ओलीओल. २१
वणते साडिया नवरंग, विधी विधी भातकी हे चंग,
हिंदुलोक बहोतेरेक्, सब व्यापारसें नेरेंक्. २२
सईद सेख अरु **पठांण**, वडी वडी जात **मुसलमांन**,
वहोरेलोक हें विख्यात, जीनकी दोय हे जमात. २३
पढतें **काजी** और **मुलाक्**, अपनें मुजबकि गिल्लांक,
रहेते ^{२४}कनफटे ओर ^{२५}शेख, **जोगीनाथ** नव नव भेख. २४

जिनके कबि^{२६}ला नहि खेस, वेसें फिरत हे दरवेस,
^{२७}जेदे केइ अडअल^{२८} मस्त, अपनें हालसें मदमस्त. २५
 नटुए करत केई चालाक, ^{२९}देदे हाथसो(से?) तालाक^{३०},
 करति कंचनी केई गान, मानुं होत ताल^{३१}मखानं. २६
 वसति बहोत हे गाढीक, मानुं सूरपुरी ठाढीक^{३२}
 एसे च्यार हे चोहटाक, पंक्ति बहोत हे हट्टाक. २७
 मिलति वस्त सब बाजार, करति ^{३३}खलक सब व्यापार,
 गांधी करत ^{३४}हठवाडेक, सोदा लेत हें ठाढेक^{३५}. २८
 केरी केल अखर ^{३६}नीक, अछें स्वादसें ^{३७}बरनीक,
 लेकर पान किचोलीक^{३८}, फीरते केइ तंबोलीक. २९
 दुजि बहोत बनराईक, फलदल फुल सो छाईक,
 झुले रसभरे सहकार, जेसै सुरतरु अवतार. ३०
 वाडि बाग वन आराम, सुंदर बने हें सुभ टाम,
 माली फिरत हें ले फुल, भोगी लेत हे दे मुल. ३१
 सोदा करत केइ ^{३२}पडदेक, केते बेचते ^{३३}खुडदेक,
 कपडखादियां गज्जीक^{३४}, नव नव भांतसे सज्जीक. ३२
 एह विध चोककि हेरीक^{३५}, ^{३६}बन ^{३७}रत जात हें मन छीक^{३८},
 श्रावकलोकका ^{३९}फलियाक, मिजलस लोकसें मलीयाक. ३३
 उनमें आदिजिनवर देव, जाकि करत सुरनर सेव,
 दिन दिन तेज दिये ^{४०}भूर, मानु नविन उदयो सूर. ३४
 उपर सूमतिजिन राजेक, जाकि सेव सूर साजेक,
 छीपेवाडमें देहराक, दीपे सबनमे ^{४१}सेहराक. ३५
 उनमें वासूपुज्य राध्यज्येक, सारत भव्यजनको काजेक,
 नीचे शांतिजिन स्वामिक, प्रणमें भविक सिर नांमिक. ३६
 देहरें सामि[हें] पोसाल, उनमें न्यानविजय मयाल,
 साधु साधते निज पंथ, पढते तत्त्वकें बहु ग्रंथ. ३७
 श्रीजिनदेसना बानीक, पीवे कर्णपुट पानीक,
 श्रावक श्राविका विधिजानं, नीस-दीन करत हें ध्रमध्यांन. ३८

एसे लोक सहु धरमीक, मिथ्यामत नही भरमीक,
 एसें जानकें आंनाक^{४०}, सिणोर सहेर सूभ स्थानाक. ३९
 गणपति श्रीमहेंद्रसूर, वीनति जानिए हजूर,
 जेसे गर्जते घन घोर, प्रमुदित होत हे ज्युं मोर. ४०
 जेसे चंदकुं चातुककें, छीपा चाहति स्वातुककें,
 जेसे विरहणी भरतार, असे चाहते गणधार. ४१
 अरजि कीजीए एक टूल, हमसें हूँजीइ अनुकुल,
 न्यानविजयजूको सीस, हिंमत देत हे आसीस. ४२
 दीपत जैनको दीवोक, यह गुरु कोडजूग ^{४३}जीवोक,
 रंगभर किजीइ चोमास, पुरण होइ संघकि आस. ४४
 इति श्रीसीणोरवर्णनं गजलसंपूर्णम् ॥

पुरण किध गज्जल्ल अवल्ल अढारसें त्रेंस(१८६३) चित्त उल्लासें,
 थावरवार चैत्रमास तीथी पडवे दिन पक्ष उजासें,
 उदयो भलें थाट देवेन्द्रसूरिपाटह महेंद्रसूरि जिम भानु आकासे,
 जीते न्यान समांन ए वर्णन सेवक हिंमतविजय इम भासे. १

दूहा : तुम आज्ञाथी आविया, न्यानविजयजी चोमास,
 सांति स्वभाविक बहु गुणी, धरता सदा उल्लास. १

॥ ढाल ॥ मारा घणु सवाइ ढोला - ए देशी ॥

श्री सीणोर क्षेत्र जोइए एहवा, मोकल्या आदेशी तेहवा हो पु(पू)ज्यजी तुम.....,
 उपाधि नहि लवलेश, विरज(जि)ननो सोहावे वेस हो पूज्य..... १
 बुद्धि बहु गुणना दरिया, वाख्यानें अम दिल ठरिआ हो पूज्य.....,
 वाख्यांनपध्यत नित थाए, बहु भासां मंगल गवाय हो पूज्य..... २
 उपदेसप्रासादनो ग्रंथ, सांभलतां होइं सीवपंथ हो पूज्य.....,
 तुम आज्ञाना अमे संगी, बीजा अमे जाणुं कुलंगी हो पूज्य..... ३
 आदेशी अम मन भाव्या, तिणें ज(जि)नमत घणुं सोहाव्या रे(हो) पूज्य.....
 गीतारथ जेहवा जोईइ, सीणोरक्षेत्रमां तेहवा सोहिए हो पूज्य..... ४
 सर्व साधुनें वंदना कहेवी, साहेब पण अवसरे लहेवी रे(हो) पूज्य.....
 दीपविजयनी अरज सुणेंज्यो, अवसरें स्मृति करेज्यो रे(हो) पूज्य.....५

॥ इति श्री ॥ श्रीयम् ॥ श्रीरस्तु ॥

शा० भाणादा सोमचंदना, शा० वरधमांन गांगादासना००० इतादीक परमुख सावकनी वंदणा वचाजी घणु सुख सा नाथ उपारवाका पधारजी, करपा राख छे तेथी वस[स] कर [र]खजो ।

एवं ए प्रकारे समस्त संघ बालगोपाल त्रीकालचंदना दीन प्रतें अवधारविजी । जतः श्रीपुज्यजीनें प्रसादे सूखस्याता छेजी संघनें । श्रीपुज्यजीना सूखस्याताना पत्र श्रीसंघ उपर प्रसाद करवाजी । बी० श्रीजीसाहेबे कृपा करिनें आदेशी **पं० न्यायविजयजी** मोकल्या तेणें संघ घणुं प्रसन्न छे जी, लायक छेजी । **श्रीसीणोरक्षेत्रजोग्य** गितार्थ छेजी । इम घणी जिनसासन तथा धर्मकरणीनी उन्नति थई छेजी । त० वाखांणे उपदेसप्रासाद स्वाध्याए **आचारांगसूत्र** वंचाए छे । पजुसणपर्व नीरविघ्नपणें गयां छेंजी । अठाई - २, पासखमण-१, पांच-२, अठम-छठादीके करी विसेस प्रकारे तपस्या थई छे जी । पारणां २ जमां छे । श्रीपुज्यजीना नामथी घणुं रूढुं छें । ए श्रीसर्वे पुज्यजीना प्रासादथी घणो चोथो आरो प्रवर्ते छे । श्रीजीसाहेब संघ उपर कृपा करीनें सीणोरना देव वांदवा पधारवुं । श्रीसंघनें श्रीजीनें वांद्यानी घणी उत्कंठा छें ते माटे श्रीपुज्यजी कृपा करीने सेनापुरना संघने वंदाववोजी । श्रीपुज्यजी सेनापुरना संघ उपर हेत राखो छे तेथी वीसेष राखजोजी । अपरंग तत्र ० **पं० प्रमोदविजयजी ग०, पं० अभयविजय, पं० खांतिविजय ग०, पं० गौतमविजय, पं० नयविजय ग०, पं० धर्मविजय ग०, पं० नीत्यविजय ग०, पं० लाभविजय ग०, पं० भक्तिविजय ग०, ऋ० मोतिविजय ग०** इत्यादिक श्रीजी पार्श्ववर्ति सपरिवारनें वंदणा वीनववीजी । बी० अत्रथी सेवक **पं० न्यायविजय ग०, पं० हीमत्तविजय, मु० रामविजय, मु० हेमविजय, लघूसीष्य लालाचंद, चतुरचंद** प्रमुख ठाणु ७नी वंदणा अवधारजोजी । अत्रेथी से० भांणा सोमचंद, दो० गांगादास कलु००० प्रमुख समस्त संघनी वंदना अवधारवीजी ।

अत्र श्राविका **जोतिबाई, श्रा० राजकोरबाई,०००** प्रमुख श्रावकश्राविकानी वंदना दीन प्रतें १०८ वार अवधारजोजी । संघ उपर कृपादृष्टि राखवीजी । श्रीसीणोरना संघनी वीनति अवधारिनें चोमासूं वेलूं पधारजोजी । घणुं सू(शुं) लखीइंजी । ए वीनति थोडे लखे घणु करी मांनजोजी ।

कागद थोडो हेत घणो मोसे^५ ०॥

दोय नारि अति सांमली० ॥

पं० धर्माजी भ्रात्रीस्नेहिने रांमनी वंद० दी० १००

॥ ६०॥ कांना तु तो कांमणगारो रे अतिसें आलीगारो रे - ए देशी ॥

सहेर सीणोर बिंदर भारी रे, जेहनी सोभा छें सारि रे,
हु जाउं तस बलीहारि रे, जिहां नीवसे बहु व्यापारी रे. १
केई गोख छजावट मेढी रे, केई दीपे सोदागर पेढी रे,
वली त्रीक “चांचरना सेर रे, किया सूत्रबंधइ गहेर^६ रे. २
वसता बहु नागर लोक रे, वली विप्रना थोके थोके रे,
तेह माहें वधुजन नीरखी रे, दक्ष मोद लहे चित्त परखी रे. ३
ते दानि मानि ग्यानी रे, धनवा(वं)ता ने अभिमानि रे,
व्यापार घणु दीपावें [रें], रहे छे साहुकारने दावें रे. ४
तिहां **भाउ** छें माहाराज रे, जेहना जन अधिक दिवाजा रे,
प्रज संततीनी परें पाले रे, सहुने समदृष्टि नीहाले रे. ५
भीम-कांतगुणे करी सोहे रे, सहु पुरजननूं मन मोहे रे,
षट दर्शननो अनुरागी रे, दान शील महा वडभागी रे. ६
ईति भीती नीवारें पुरनी रे, सेवा सारे सहु सूरनी रे,
ए सम नही राजा कोई रे, विधि थापें सहु गुण जोई रे. ७
वली **गुलाबराय देसाई** रे, **मजमुदार हिंमतभाई** रे,
पटेल ते **मिठादास** रे, **जीवणभाई** सूविलास रे. ८
ए आदे घणा अधिकारि रे, पुरजनना छें उपगारि रे,
सूभ मारगें धननें वावें रे, सोभा जस किरत पावे रे. ९
जिनमारगना बे देहरां रे, प्रभु वंदे उठी सवेरा रे,
करे धर्मकर्मना कृत्य रे, न करे कोई कृत्य अकृत्य रे. १०
पुरपरिसरे वाव हैं^७ति(ती) रे, जलकल्लोले गहे गहेती रे,
माहें नव-नव जातनी मछी रे, जेहनी सूरत छें अछी रे. ११
तस फरसबंध छे घाट रे, घडिआ बहु जतने सलाट रे,
पनिहारियोनो बहु थाट रे, पदथी “क्रमथी तेह वाट रे. १२

संध्यावंदन तिहां करता रे, द्वीज करणीनें अनूसरता रे,
 केई भोगी भमर छोगाला रे, सोभा नीरखे लटकाला रे. १३
भंडारेसर महादेव रे, **रोहेणोसर** बीजा देव रे,
अनुसीआ मात भवांनी रे, ते तो सहुना मनमां मांनी रे. १४
गणपति हनुमंत कहावे रे, **महालखमी** मात सोहावे रे,
 एहवि देरासरओल रे, वली दीपति सूदर पोल रे. १५
 केई **वेदीआ** वेद उचारे रे, भणें **वैयाकरणी** सवारे रे,
 केई **छंद** भणे मनमोजी रे, केई **जोतिषसास्त्रना** खोजी रे. १६
हरनाथ चिकित्सीक सार रे, करे लोकनें अगंदंकार रे,
 इम निवसे वरन अढार रे, सहु साचवे नीज आचार रे. १७
 इम **सेनापुर** अति राजे रे, तिहां आवो मुनिनें समाजे रे,
 अहो **श्रीमहेंद्र** गणधारि रे, तुमें मोटा महिमाधारि रे. १८
 इम **न्यानविजयनो** सीस रे, नीतु नीतु देवे आसीस रे,
दीपत जीनसासन दीवो रे, गुरु कोड वरस लगें जीवो रे. १९

॥ **सीणोरनगरवर्णनं** भास सम्पूर्णम् ॥ श्रीयम् ॥

दूहो : श्रीसीणोर क्षेत्रनो संघ इम, करे घणी अरदास,
 पउधारो जो गच्छपति, चतुर तुमो चोमास. १

॥८०॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ चंदलीयानी देशी ॥

चंदा तु वहेलेरो आजें, मारो रूठडो नाह मनाजें,
 मारा पुज्यजीने वाहिनें लाजे रे. १ चंदा.....
 गछपति मलवानो घणो छें उमाहों, अम हृदयमां अधीक उछाहो,
 पूज्य मलीने लेसूं लाहो रे. २ चंदा.....
 पुज्यनी वाटडी जाउ छुं नीहाली, जीम चातुक मेह संभाली,
 जेणे ज्ञाननि ^{६०}नीक ते वाली रे. ३ चंदा.....
 पुज्य ज्ञान दर्शन चारित्र करि भरियो, जाणु छुं क्षीरसमुद्रनो दरियो,
 जेणें क्रोध माया त्याग करियो रे. ४ चंदा.....
 गुरुइं ममता सर्वनी वारी, समतासूदरि चित्त धारी,
 जेणें कुमतिने दुर निवारी रे. ५ चंदा.....

पंच महाव्रतना छें धारी, पंच सूमति सदा छें प्यारि,
 गुप्ती त्रणे दीलडु ठारि रे. ६ चंदा.....
 पुज्य मोह मायाथि ओ^{६१}संकीया, गुरु अमृतरसथी भरिया,
 गुरु दिक्षासूखने वरीया रे. ७ चंदा.....
 एहवा गणाधीपति कहीइं, एतो नाव तणीपरें लहीइं,
 एहनी आंणा सदा चित्त धरीइं रे. ८ चंदा.....
 च्यार आंगलनी चीठ देजें, मुज संदेसो चित्तमा धरजें,
 गुरुने एकंते जईने सूणाजे रे. ९ चंदा.....
 चंदा तु गच्छराजने केहेंजे, अम मनडानो समाचार ग्रहेजे,
 पाछो वहेलो ते ^{६२}वलण करेजे रे. १० चंदा.....
 सूरिमुख देखी आतमा ठरसे, केई माल उपधांन वहेस्यें,
 वहीने स्वामिवछल करस्यें रे. ११ चंदा.....
 तुम मुखनी रे वांणी सांभलस्यें, केई धरमना कारज करस्यें,
 केई बार व्रत उच्चरस्यें रे. १२ चंदा.....
 केई संघविपद ते लहेस्यें, केई **वर्धमांनतप** करस्यें,
 केई **अढारिया** वहेस्यें रे. १३ चंदा.....
 केई जात्रा **नवाणुं** करस्यें, केई **चोमासीतप** आदरस्यें,
 इम बहु तप पुज्य आवें थासें रे. १४ चंदा.....
 केई **चउदपु(पू)रवतप** करस्यें, केई **ज्ञानदर्शनतप** आदरसे,
 इम बहु तप पुज्य आवे थासे रे. १५
 गुरु संघनी आस्या पुरो, अम मननी चिंता चुरो,
 लेख वांचिनें पधारो रे. १६ चंदा.....
 पुज्य साथे घणो छे स्नेहो, जीम मोरनें जलधर मेहो,
 ती(जि)म सीता रामनो स्नेहो रे. १७ चंदा.....
भालदेसमां स्यूं रह्या मोहि, इहां पधारो गछपति सोहि,
 लाहो लीजे अज्ञानी पडिबोही रे. १८ चंदा.....
 आछा थरमा^{६३} पामरिया^{६४} ओडावे^{६५}, मनगमता आहार वोरारवे,
 सहु इच्छाईं थई आवे रे. १९ चंदा.....

पुजा भक्ति नव अंगे साचवस्यें, आत्म गमतां जे जोई ते ते मीलस्यें,
 पुज्य देखीने चित्तडु ठरस्यें रे. २० चंदा.....
 सेर एकमा रेवुं न कल्पे, ऐम सहु आचार ते जल्पे,
 गुरु केम रह्या संकल्पे रे. २१ चंदा.....
 ऋषीजी गामो गाम वीचरता, स्वगछनी मरजादे रहेता,
 वरस एकथी बीजु न ग्रहेता रे. २२ चंदा.....
 एहवुं जांणीने **सीणोर** पधारो, संघ विनति मनमां धारो,
भालदेसथी वहेला पधारो रे. २३ चंदा.....
 इम घणुं सूं लखीइं स्वामि, थोडी वीनति करुं सिरनामी,
 तुमे माहरे छे अंतरजामि रे. २४ चंदा.....
 श्रीविजयमहेंद्रसूरिस, विनति धरजो मन ईस,
 गुरु प्रतपो कोड वरिस रे. २५ चंदा.....
 इम **न्यायविजय** अनुसारो, विनति **हीमत**[नी] चीत्त धारो,
 पुज्य **सीणोरसहेर** पधारो रे. २६ चंदा.....
 श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ गयो जोगी नाठो वनमांहे - ए देशी ॥
 प्रणमु प्रथम जिनेसरु, सूध मने सूखकार,
 पुज्य गुणें करि सोभता, आगमनें अनुसार. १
 ढाल
 सरसति मात मया करी रे, देज्ये वचनविलास रे,
 तुझ सूपसाइं माहरा रे, मननी पुरजे आस रे. २
 सूरिजन सीणोर सहेर पधारो रे. [आंकणी]
 गुरु छत्रिस गुणे करी भरीया, पडीरूवा[दि] चउद धारी रे,
 खंति प्रमुख दशधर्मना रे, बार आदे गुण छत्रिस रे. २ सूरिजन.....
 बारसे छनु गुणें सोहंता, सोहमसूरि महंता रे,
 आयरिया दीठे ते दीठा, स्वरूप समाधि लहंता रे. ३ सूरिजन.....
 पंच महाव्रत सूध पालता, नववाड सूध वहंता रे,
 त्रण गुप्तीइं दिलडुं वारि, क्रोध मांन मन हरता रे. ४ सूरिजन.....
 जेह मोह मायाथी रे डरिया, ज्ञानांमृत रस भरिया रे,
 जेहने कुमति दुर निवारि, दीक्षासू(सु)खने वरिया रे. ५ सूरिजन.....

नय नीक्षेपा अनुसारि(री), उपदेश छे सूरीपदधारि रे,
 श्रोताजनने उपदेश देईने, आतमना सारे काज रे. ६ सूरिजन.....
 एहवा गणपति तेहने कहीइं, प्रवहणनी परे लहिइं रे,
 आप तरिने परनें तारो, भवजल पार उता[रो] रे. ७ सूरिजन.....
सीणोरनो संघ वाट तुमारि, जोइं छे सदा दीन रात रे,
 पण तुमें चित्तमां कां नथी धरता, स्या माटे गणधार रे. ८ सूरिजन.....
 श्रावक तुमने वांदवा रे, धरे छे हर्ष अपार रे,
 पीण साहेब तो चित्त नथी धरता, एवडो स्यो अपराध रे. ९ सूरिजन.....
साणंद साणंद स्यू करो रे, साणंद छे कुलगाम रे,
 थोडा जिनमत रागीया रे, तिहां न रेवुं चोमास रे. १० सूरिजन.....
ठाकोर तिहांनो कपटि घणो रे, **कनकसंघ** राजन रे,
 तस पासे **अलूंभाई** छे रे, ते पीण मीठो **प्रधान** रे. ११ सूरिजन.....
 श्रावक तिहांना खल घणा रे, रखे पुज्यजी तिहां रहेता रे,
मेता कल्याण लखमीचंद ने रे, तीम **चंद्रभाण** छे मेता रे. १२ सूरिजन.....
तिलका मेता मेता नागजी रे, **मेता पुजा पानाचंद** रे,
मेता आणंदने नेमजी रे, **लालचंद जीवराज** रे. १३ सूरिजन.....
मेता नांनचंद महा भोलीयो रे, **सकलचंद** बहु कपटि रे,
मेता अमीचंदजी रे, **लाधा राघवजी सेठ** रे. १४ सूरिजन.....
नाथा जेठानें वीरजी रे, **अनोपचंदजी जेठ** रे,
 इत्यादिकने जोईने रे, तेणे तुमने घणु भरमाव्या रे. १५ सूरिजन.....
प्रमोदविजयजी अभयवीजयजी, तुमने पण स्याबास रे,
 कढी पांणी जेवी पातली रे, तेहमां स्यो भलीवार [रे]. १६ सूरिजन.....
गौतमविजय धर्मविजय पण, राता चोखा जोई मोह्या रे,
 सूखवेल्ना जोइइं रे, आवजो पुज्यजीनें साथे रे. १७ सूरिजन.....
 वीनति संघनी मांनो तो नही पण, तीरथ भेटवा काज रे,
 पउधारजो महि पावन करवा, इहां तिरथ बहु सार रे. १८ सूरिजन.....
 प्रथम तिर्थकर **आदेस्वरजी**, **बारमा** श्रीजिनदेव रे,
कावि सासू-वहुनां देहरा, ऋषभने धर्म मयाल रे. १९ सूरिजन.....

पद्मप्रभुजी जंबुसर वंदो, आमोद अजीत जीणंद रे,
 गंधारे गीरुओ जीन गाजे, सीधारथकुलचंद रे. २० सूरिजन.....
 धर्मनी करणी तुम पधारे, वधस्यें व्रत प[च्च]खांण रे,
 माल उपधांनादिक केई वहेस्यें, सांभली तुम मुखवांण रे. २१ सूरिजन.....
 चातुकनी परें वाट तुमारि, सीणोरसहेर वंदावो रे,
 साणंदमें स्युं मोही रह्या छे, धर्मलाभ न कहावो रे. २२ सूरिजन.....
 ठगारो देस छें साणंद केरो, मिठी कहे मुख वात रे,
 सांभली संघने रीस चढे तो, मेलज्यो पुज्य सीणोर रे. २३ सूरिजन.....
 ठामोठाम संघ तुमारा, अमने केम संभारो रे,
 पण गीरुआ गंभिर थईनें, मनमां केम न वीचारो रे. २४ सूरिजन....
 सीणोर क्षेत्रना संघनें उपर, कृपा करि एक मन रे,
 दील धरजो जीनयात्रासमई, सरीरना करजो जतन रे. २५ सूरिजन.....
 तुमे उपगारि आदेशी पेख्या, न्यांनविजय पंन्यास रे,
 तपस्या-लेहणी प्रभावथी रे, गहगट्ट हुओ चोमास रे. २६ सूरिजन.....
 श्रीगुरुन्यांनविजय सूप्रसादे, महेंद्रसूरिगुण गाया रे,
 हीमतविजयकहें तु चिरंजीवो, संघनी मांम वसाय(या) रे. २७ सूरिजन.....

॥ इति भासं सम्पूर्णम् ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पांचे खामणे करी [खामु.....]०००

इति लेखमङ्गल समाप्तः सम्पूर्णः ॥

॥संवत् १८६३ना वर्षे चैत्र सूद ५ रवौ दिने । श्रेयम् ॥ शुभं भवतुः ॥ लि०
 सेवक मु० रामविजयनी त्रीकाल वंदणा अवधारवि । अधिक नून्य(न्यून)
 माफ ॥ श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

* * *

(२ २)

राजनगरस्थ-श्रीदानरत्नसूरिने उद्देशीने सूरतथी कनकरत्नजीनो पत्र

राजनगर स्थित दानरत्नसूरिजीने उद्देशीने सूरतथी कनकरत्नजीए प्रस्तुत पत्र पाठव्यो छे. देशवर्णन, सिद्धाक्षरवर्णन अने पछी शान्तिजिनवर्णन एम कुल १० श्लोकोनुं मङ्गलाचरण कर्या बाद कविए पत्रनी शरुआत करी छे. सूरजपुरनी समृद्धि वर्णवता वकारना उल्लेखनो तेमज पुण्यथी प्राप्त थतां पांच रत्नोनी वर्णनानां पद्यो सुन्दर छे. त्यार पछीनां पद्योमां कवि सूरिजीना ३६ गुणोनुं वर्णन करे छे. पत्रमां गद्यविभागनी शरुआत करता दानरत्नसूरिजी तेमज तेमना परिवारने वन्दना-सुखशातादिपृच्छा करी फरी सूरिजीना गुणोनुं वर्णन करे छे. पत्र लेखक चातुर्मास सूरजपुरमां बिराजमान होइ त्यां कई कई आराधनाओ थई तेनो विस्तृत चितार पत्रमां आलेखे छे. साथे साथे चातुर्मासमां वर्षाथी शुं ताराजी सर्जाई, तेना निराकरणना प्रयत्नमां थयेली निष्फळतानी पण खास नोंध टपकावे छे. पं. हेमरत्नजीना शिष्यनी योग्यतानी विगत आपी लोकोनी वातो पूज्यश्रीने रजू करी पत्रलेखके गुरुभगवन्त माटेनो पोतानो समर्पणभाव प्रगट कर्यो छे. वळी पूज्यश्रीना प्रभावनी वात, सूरजपुरथी पधार्या ते अंगेनी टकोर करी त्यांना श्रावकोने नामोल्लेख साथे धर्मलाभ पाठवे छे. पत्रान्ते पोतानी साथे रहेला मुनिओ तरफथी वन्दना करी मीया, खेडादि क्षेत्रमां थयेल आराधनानुं वर्णन करे छे. विशेषमां अगासीना समारकाम माटे द्रव्यनी मांगणी तेमज शान्तिनाथनी देहरीनां १२ पगथीयानी नोंध महत्त्वपूर्ण छे. समग्र पत्र अत्यंत अशुद्ध छे. सुधारवो शक्य न होवाथी अत्रे यथावत् छाप्यो छे.

*

श्री चतुर्विंशतियुगश्रराणां प्रणम्य । आर्यकाव्यानि स्थितिः ।
 स्वस्तिश्रीमत्धर्मफलाद्भुविजये जम्बूद्वीपे राजतो,
 दाहिण्ये भरते वशसीपीता तास तदेहि स्थीतो ।
 [आ]त्मः स्थाने कनफलष्मनवभिः टण्का च सेकादिने,
 सा लच्छीवरभूमिपटले तस्याय तुभ्यं नमः ॥१॥
 ॥ इति देशवर्णनम् ॥

भो प्रात भुवि जन शुचिकृया हस्तं च युगं करेत्,
तन्मध्ये सह रेषरेव प्रगटिता सीद्धाक्षरं वर्णयेत् ।
माङ्गल्यं स च कोटिमेव मनुजां सीद्धाक्षरं साक्षरं,
एतल्लण सत्यमेव विबुधा सम्यक्त्व भिदं कृया ॥२॥

॥ इति सिद्धाक्षरवर्णनम् ॥ अथ शान्तिजिनं प्रणम्य-

धन्यो जात जगत्पत्यचीरमादेवीसुतोभ्यास्तुवं (?),
विश्वसेननराधीपो कुलजये मेरुगिरे भानवे ।
जन्माद् [यस्य च] रोगशोकडमरा सप्ताऽपि भेदा भया,
स्तत्कालविनाशिता सुखकरा सौख्यङ्करा नारकाः ॥३॥
जीयात् जज्जन्मकालविभवो दष्टादिशे भास्करो,
मेदिन्यामिव माननाय प्रमुदिता स्वां नाथ जातो श्रये ।
जन्माकृत्यक्षणे च समये षट्पञ्चदिगणारिका,
जे जे पूर्व विभेद सा सकलविधौ स्नानकृयामाचरेत् ॥४॥
सः तस्माच्चतुषष्टिरेन्द्र चेन्द्र सकलो वृन्दारको वेष्टीता,
यन्नाम्ना पालक सारयहानोरारर्चितौ हर्षयेत् ।
सक्रेन्द्रोऽपि स उठको भुवि कृया पञ्चेहि रूपान्वितो,
युगं पाणीतले जगत्पति सो हत्वा य मेरो गिरे ॥५॥
स्थातो स्नानविवेकसा कृपधरो मन्येऽप सौख्योच्छवो,
यत्सौख्यं जिन जन्मविभवोस्तावन्न सौख्यं कदा ।
शान्तिपुष्टिककार्यकरणे शान्तायाचीतोथवा,
स्तस्मात्कारयत प्रति खलु विरचिता स विश्वसेनया ॥६॥
नृतक्ये नटनाटिके सौख्यकृपा सपेति खेत्रे तथा,
सङ्ख्याये धन कोटि कोटित परमिदं ल_यु सङ्ख्या बुधैः ।
श्रीश्रीशान्तिजिनो युगेश्वरस्त्वया स्त्रीराज्यभोगीवरा,
जिनचक्रीपतिमण्डलो जनपदे सर्वेऽपि आज्ञामयी ॥७॥
अष्टाविंशति सतसहस्र शसिमुखी लक्षोपरि नार्ययाः,
सल्लक्षणवेदिता पटुक्रिया वीराङ्गना सेविता ।
श्रीश्रीशान्तिजिनो युगेश्वरमपि सूत्रोऽपि सङ्ख्या बुधै,
विंशत्पञ्चसलक्षतः ? निपुणेगायकोटिपरो ॥८॥

सन्मुख्यो सौक्ता श्रीयधरा वज्रायुधो मन्यते,
षट्खण्डे स्वय राजपालविभवो तस्माय शान्ति नमः ।
अष्टौ दुष्ट सकर्मनिलया शीघ्राद् वशीमाददे,
पञ्चानां विराजितो जिनपति सक्रादिसैवैकृताः ॥९॥
यः श्रीमान् भुक्ता वर्षलक्षपरिमिता सर्वे जनालम्बना,
सर्वेभ्यो सुखदा जयायुविजयते शान्ति जनो राजते ।
अद्यापि कलिकालसौख्यसमये सूर्यपुरे श्रीस्थीताः,
श्रेयःपुञ्ज षट्शतीजिनो तस्माय तुभ्यं नमः ॥१०॥

दोहरा : **वढीहार**देशको वरण, कवतां न पामुं पार,
जथाखि लघु ज्ञानसें, वर्णवता सुखसार. ११
देशमध्य दीपि सबल, **सूरजपूर** सुस्थान,
अनुभव जोवा योग्य छे, देवपुरि उपमानि. १२

पूर्वकाव्य : वापी वर्ण विहार वप्र वनिता वाग्मी वनं वाटिका,
वैधं ब्राह्मण वारि वादि विबुधा वेश्या वणिग् वाहना ।
विद्या वीर विवेक वीत्त विनया वाचंययमा वल्लिका,
वस्त्र वारिण वेशर वरै सूर्यपुरे राजतो. १३

दूहरा : इत्यादिक वर्ण वकारनो, वासि वस्यो विशेष,
देवभूमि दूखभंजणा, दीइ नृप दान अशेष. १४
पंच रत्न पूण्ये मल्यां, प्रथम **शांतिप्रासाद**,
पितृप्रशन उर जानीइ, **झीणाणंद** उल्लाद. १५
शबरसको ईष्ट ज कह्यो, **लवणागर** जिहां सार,
चोथो राजिस जानिइ, **मकुयाणा** महीधार. १६
पूण्ये पंचमा श्रीगुरु, **दान** भट्टारकदेव,
देशाधिप भवि राजवी, अहिनिश कृत छि सैव. १७
सकलवृंदशिरोमणी, उदयाचल जिम सूर,
अगणीत गुणमणी शशीपिता, पल पल चढत सनूर. १८
पूज्याराध्य परि प्रणमीइ, अरच आनि उपमानि,
सकलगुणगरीष्ट सही, विद्यनेश श्रीवान्. १९

सकलगच्छनायक नमुं, षड्त्रिंश गुणसरूप,
 पंचेंद्री गज जीतवा, सीह लिख्यो अनूप. २०
 शील सांकल जे त्रोटता, मोडि पून्यनां मूल,
 नवविध अभ्रमवांदरा, तेह कर्या अनुकूल. २१
 'भ्रमव्रत बंधन बांधिनिं, पून्यवाग प्रतिपाल,
 व्याघ्र चतु जे विष भर्या, क्रोधादिक महाकाल. २२
 वासुदेव परि वशि कर्या, धर्म जीव पालंत,
 प्राणातिपात पीडा तजी, दया त्रिया विलसंत. २३
 मिथ्यावादविलोपी नि, अदत्ता व्रत विशेष,
 भ्रमव्रतको स्वामी कह्यो, तो परिग्रह कहा लेष. २४
 पंचाचारविशुद्धता, राखण सोहम नूर,
 ज्ञानाचार अति उजलो, सरसति प्रेम पडूर. २५
 दर्शन समकीत सार ते, दायक सार वखाणि,
 आप प्रमाणि ओरति, करता कोटि कल्याण. २६
 त्रीजो तो द्रव्य भावथी, धरो चारित्राचार,
 तपाचार विशेषता, लखतां न लहुं पार. २७
 वीर्याचार वखाणीइं, सोहमपाटि सदैव,
 २नर्ग पडंता प्राणीनिं, प्रदेशी कुं केशीव. २८
 ईर्यादिक पंचि यथा, सुमतिधारक धीर,
 तिहुं गुप्ति राखीनि वड, अघ उथापक वीर. २९
 छत्रीस गुण विधितणां, नायक गछशिरछत्र,
 कला बहुतरि प्राज्ञपति, चौद विद्या वसी तत्र. ३०
 शशी सागर उर रवि, कंचनगिरि ओपमान,
 ए च्यारि सलंछनी, निकलंकी सूरि दांन. ३१

इत्यादि गुणे विराजमान, सर्वावसरसावधान, अनेकानेकोपमाविराजितोऽर्हतः
 श्रीमत्तपागच्छाधिराजचक्रचूडामणीभट्टारक श्रीपुरंदरप्रभो श्री १०८ श्रीदांनरत्नसूरीश्वरोभिः
 विजयते चिरंजीयो । नमः सकल पंडितशिरोमणी, सप्तविंशति-गुणोपित, प्रधानपूज्य
 श्री पं. श्रीजिनविजयजी गुणीवरान्, पंडित, पून्यपवित्र, प्रकांड पं० श्रीकल्याण-

1. ब्रह्मचर्य व्रत । 2. नरक ।

रत्नश्रेयः, पंडित पून्यपवित्र प्रकांड पं० श्रीअमरविजयश्रेयः, गुणीवरान् श्रीलक्ष्मीविजय
 मु० श्री मलुकरत्न शी० केशवजी छात्रपात्रयोग्य लघुशीष्यादि सपरिकरैः श्रीमिति
 राजद्रंगात् सुस्नेहाल्लिखीतं आज्ञाकारी पं० श्रीहस्तिरत्नजी, कनकरत्नेन सुबद्धीन्वितेन
 वंदना सताष्टगमे दिने घडी प्रति अवधावीजी । यतोऽत्र इष्टप्रतापात् सुख-श्रेय छईं ।
 तत्रता खेमा-कुशलीता सुखपत्र आव्या ते वांची मारिथि चढाव्यां । श्रीसाहिबजी उत्तम
 छो, अमारि आतमना आधार छे । जे दिवसि सुखपत्र आवें छि ते दीठि अभ्यंतरि
 बावनाचंदनसंयोगि शीतलता उपजि तेहथी अशेष सुख उपजि छिजी । अपरं
 श्रीसाहिबजी अष्टक छि ते अवधारपुंजी ।

चालि । श्लोकः ॥

सस्सूरिः दांनवमानववन्दितो, भजति नु किल य स -वि नृपा ।
 कुमुदिनी कजवन्नमुदिरहो सो० हमरेव गुणान्वितसम्भवः ॥१॥
 स[कल]वाङ्मयगर्जनगर्जितो, सजनसङ्गी-केकारवराजितो ।
 अघपखालनपाव --मृतो, प्रसरत्याङ्कुरपुण्यभूदानवः ॥२॥
 योगसमागम-उत्कटधारको, समदम..... खेमागरोधतो ।
 द्रव्यगुणेशप्रयायप्रलम्बितो, त्रिगुणनं त्रिजगत्सुरिदांनवः ॥३॥
 सकलदर्शनज्ञानशिरोमणी, प्रगटितो सकला सकलान्वीता ।
 सम्प्रति पुज्ज पराक्रमभास्करो, गणपते पति सन्त भवत्प्रभोः ॥४॥
 कोटिकलासिद्धिसवदनो छवे, हरति पाप पूराकृतजन्तूणाम् ।
 भाव सदा सूरि दांनव सेव्यते, लभति सार सदा फल तज्जनाम् ॥५॥
 सङ्ग समागमसौख्यसमुद्भवो, करतले वसति च दधीसुताः ।
 पारस किंनरो द्रसकुंपीका, स लभति भूवि दांनव सेवनां ॥६॥
 सिद्धिप्रदायक श्रेयङ्गरक्षको जास रतो मणीभद्र महाबली ।
 अख्यमाल गुणोमणी रोपीता, चीरं जीयात् किल कल्पतरु इतौ ॥७॥
 गुणसमधि अशेष कलौ धृताः, मम मतिरनुसल्य भवो छकम् ।
 रयणरेड यस्यद्यशशोभितो कनकपात्रस्थीतो बहुमूल्यताम् ॥८॥
 इति श्रीसकलभट्टारकश्रीदांनरत्नसूरीश्वराष्टकं सम्पूर्णं लिखीतम् ।

यतोऽत्र खबर-समाचार-समय माफक वर्ति छि । बीजूं पर्युषणा पर्व निर्विघ्न
 पणि थयां छि । आपणि गछि मासखमण १ श्रा० साकरबाइईं कर्युं छे । सोलभुक्ता
 श्रा० पूजीइं कर्युं छि । अठाई १ श्रावक गोडीइ करी हती । इणी रिति छभुक्त
 तप, पांच भुक्त तप, छठ, अठम तप थया हता । संवत्सरि खरच सा० वेला

गोडीने घरे लाभ लीधा छि । श्रीपाखी तो मेलावानी स्थिति करी छि । अठमीय ते श्रावक श्राविका सा० जीवा घीयानें लाभ थया छि । श्रीसंवछरीदान रूपीया ५ नुं भंडारि रतनसंघजीइं दीधुं छि । इणी पिरिं त्रण्य मासी तप एक साधुइं करी नीर्जयो छि । सहिरमध्ये ३२ मासखमण, सोलभक्त ५८ थयां छि । अठाई तो सत उपरि संख्या छि । बीजूं सा० जोईतानी वंदना जाणज्योजी । कहयुं छैं जे चक्षु लेई गया हता ते प्रभूनि बिसति थै छि तेह लखज्योजी । बीजू अत्र वर्षा आज लर्गि घणुं सूखकारि वर्सि छि । श्रावण सुदि आठम दिने तो उपाश्रय मध्ये कुंभिउ बूडी हती एहवूं पाणी च्यारे खूणे भराणुं हतुं ते पृछ्योजी । बीजूं अगासी घणु क्षीण थै छि तो उपरि पजूसणमध्ये घणुं कर्तुं पिण कोईमां द्रव्य खरच्यानो तागात नथी । ते तो बंध वात बिठी नही वली पणि कहीइ छि । बीजूं घर २ भाडुतना पणि पडी गया छि । तेनी पणि वलि नथी । आगी जणास्यि । बीजूं तुमे शीष्यार्थि लिख्युं हतुं ते वछ पं० कपूररत्ननि पणि लख्युं छि मातर इत्यादिक भणी अत्र पणि जोईइ छि पणि सुभक्षि करी कोई लाभतु नथी । सा० जोईता सा० सूरचंदनि कहयुं तो कहि जे आज तो सर्व उठी परदेश गया ते तो न जडि । तथा डमर समइं लाभें पणि कपूररत्नजी तथा समख्य श्रावक-श्राविका खेडाना तथा ऽत्रना हीत-स्नेही कहिजे । पं० हेमरत्नजी पासिं छे ते योग्य छि । ते कोई विधान करि मागी लेवो घटि छि । घणुं निपुण छि । तमारि योग्य छि । जिम तिम उत्तरभेद करीनि लेवो योग्य छि । पछि तो श्रीजीनि गमि तिं कर्यो । सहु स्नेही कहिजे पछि मोटो तई माया वलगि कोई खरि दुरलभि पणि नापि यथा कहि छि तिम लिख्युं छि इम करवूं योग्य छि । परनी वात कहिवी ते अयोग्यता पणि पूर्वे पं० हेमरत्नजीनि मुखावलि कह्युं हतुं वली समय माफकनि वली समयानुसारिं जोति आवी मलिस्सिय जिम पछि ते रित श्रीजी करस्यो ते प्रमाण छि । बीजूं खेडा मध्ये जनमुखिं तमारो पं० शांतिरत्नजीने पगले महिमा प्रशर्यो छि । रोगी-सोकी कै आवी नमि छि तेहनि व्याधि उपशांति थाइ छि ए समाचार विशेष छि । बीजूं तुम्यो अवसर सांभली तुरत सुर्यपुरथी अत्र विषम समय मध्ये आव्या पणि पं० नयरत्नजीनो कागल पणि चीठी कोई लखी नथी । पूर्वि पंन्यास छातां पणि पत्र लिख्यो नथी । एह अनूतानबंधीओ क्रोध विशेष एहवुं गळमां घणुं विरूउ दीसि छि । श्रीजीतो नायक छे, योग्य छे, उफदेश देवा समर्थ छे हृदइं विचारी जेंम गमि तिम करज्योजी । पत्र लिखि तथा न लिखि गया ते आवि नही पणि विवहारि घणुं ज भुडुं दीसि । वली सर्व हकीगति श्रीजीनि तो मालिम छि ते पृछ्यो । बीजूं दिन परिपालीनि श्रीजीने पासिं आव्यानुं दल छि । तथा पं० शांतिरत्नजीनि १ वर्ष पहिलां सेत्रुंजीनी

पणि यात्रा जरूर करवी छि पछि भाविनि हाथ छि । चींतव्या विचिं छल पडि, जिन करि सो होइ । बीजूं श्रीसाहिबजीनी महिरनिजर छि तेहथी अधिकी चाहिइजी । कृपा करी वलमानपत्र विशेषि पंडित हीन करी लखवोजी । श्रीपूज्यजी पासिं जे कोई अन्य गुरू-लघू तेहनि अमारि वंदना कहिवी । तत्रना ठाकुर श्रीदलाजी, ठा. श्रीरायभाणजी, ठा. श्रीजेठीजी, ठा. श्रीसुमाणसंघजी, ठा. श्रीपंडितसंघजी, ठा. गुमानसंघजी, ठा. श्रीरूपाजी, ठा. श्रीनारसंघजी, ठा. श्रीदानाजी, ठा. श्रीमेघाजी, श्रीसंघजी कु. श्रीयशाजी भा. दणगाजी, कु. श्रीभावाजी साथ समक्तनि प्रत्येकिं प्रत्येकिं मारा श्रीसहिदइं मदनि(?) दवा आसीस कहियोजी । बाई हीरबाई, बाई वलमबाई, आणंदबाई, नान-मोट, सर्वरूपबाई सर्वनि जै कोई उपाश्रय आवि संभारि धर्मलाभ कहियोजी.....

श्रावक पं० कल्याण समस्त श्रावक नान-मोट श्राविका ऋखमणी, श्राविका समस्त नान-मोटनि प्रत्येक प्रत्येकि धर्मलाभ कहियोजी । वी जीवा सपरिवार सजांणी सपरिकर पंड्या सुंदर सा. विश्राम समख्य जे कोई आपणने संभारि तेहनि धर्मलाभ कहिवो । अमारि वती श्रीसजाजीनि घणुं घणुं करी धर्मासीस कहियो । इहां सरिखू कांम-काज लखावज्यो । वरस प्रति १ वार पणि अमनि संभारज्यो । जरूर एवं वाचज्योजी । अत्रनी देवयात्रा समख्यनि संभारि संभारि करीइ छिजी । बी. श्रीजीनि पं० सुंदरविजयजीइं वंदना लखावी छि । पं० लालविजयें वंदना लखावी छि । पं० कपूररत्ननी वंदना वांचयोजी । अत्रना श्रावक श्राविकानी वंदना वांचयोजी । पं० तिलकरत्ननी वंदना वाचयोजी । तत्र भक्ति भाव घणुं श्रेय छि । मीषें पणि मासखयण ३ थया छि । खेडा मध्ये दशभनु श्रा. जेठीइं कर्तुं छि तथा सामदासनी बेटीइ ८ कर्या हता । केसर आदि पर्वनी यतनाइं उछव सारो थयो छि । बीजूं आज सुद्धी गनीस घोलका मध्ये छि । श्रीभंडारीजी बारसिं सांभली पोलि चड्या छेने साणंदथी गाउ पांच परा पड्या छि । बीजूं हजूरमध्ये नवा सुबानी म कर छि । पूर्वी सुबो इहां आर्वस्यि पणि वात नथी बणी । दख्यणमां दामा कंथानि भडाइयो छि पणि इंहा रतनसंघनी नजर छि जे सर्व देस गमिठाठ बांधस्यि रानीपस्युं अडी रह्या छि ए समाचार छि । बी. हर्षलो तो सर्वथा बगड्यो तिणि करी काढी मेल्यो छि ते पृछ्योजी । तत्रा देशना समाचार सर्व लिखयोजी । उ० जसरत्ननी, पं० सुमतिरत्नजीनि वंदना कहावयोजी । तपीया माणीक्यरत्ननि सुखसाता तैडाववा घडि तो कागल लिखी तेडावयोजी । अत्रना श्रावक सा० हीरा समस्त श्रा० बचूया साथ समस्तनी वंदना अवधारवीजी । संकरयानी वंदना जाणयोजी । बी. तत्र कांई रू. २२नी जोड जाडि करीनि मोकलावो । अत्र अंगासी

थाइ । बीजूं श्री शांतिनाथनि देहरि छे बध पगथारिया १२ कर्या छि । बीजूं इणी दिशि वर्षा नीपजी । राजासुख, प्रजासुखसमाचार सर्व लखयोजी । पं. जिनविजय पंन्यासनी वंदना जरूर कहिवरावज्योजी । बी. गोकलीयो पणि हवि पजूसर्ण पछी उमेटे तथा मीया भणी भाल्यो छि ते पृछयोजी । एहनि मांहादेवनि देहरि वृत करि छि, सुख छि । श्रीशांतिनाथप्रभु श्रीवासुपूज्यनि अमारिवती जुहारज्योजी । केसवजी मुलजीनि बोलवज्यो । अत्रथी सा. कमानी वंदना वांचयोजी । सा० जेठा हेमा जगासानो वंदना वांचयोजी । सा. रामचंद्रसानी वंदना वांचयोजी । यतः सा झविरनी जेठीबाईं कालकर्यो छि । आषाढ शुदि मध्ये ते पृछयोजी । श्रीमिति वलमानपत्र लिखज्योजी ।

ल० कनकरत्ननी वंदना वांचयोजी
संवत् १७९२ वर्षे भाद्रवा वदि र रवौ दिने
चिठी उतावली लखी छि ।

* * *

(२३)

श्रीदानरत्नसूरिजीने मीयागामथी उदयरत्नजीतो पत्र

प्रस्तुत पत्र मीयागामथी उदयरत्नजीअे दानरत्नसूरिजीने उद्देशीने पाठव्यो छे. कवि उदयरत्नजी ऊर्मिप्रधान कवि छे. काव्यनुं प्रत्येक पद्य कविनी उत्तम कवित्वशक्तिनुं उदाहरण छे. पत्रनी शरुआतमां सूरिजीना ३६ गुणोनी वर्णना कर्या बाद कविए पूज्यश्रीना पुण्यप्रभावनी नोंध सुन्दर शब्दोमां वर्णवी छे. त्यारबादना सवैया छन्दमां रचायेल पद्यो तेमज चित्रकाव्यमय पद्यो पण गुरुगुणस्तवनारूप ज छे. पूज्यश्रीने मीयागाम चातुर्मासमां थयेली आराधनानुं वर्णन करी अन्य शिष्यपरिवारादिना चातुर्मासनी महत्त्वपूर्ण नोंध आपेल छे. पत्रान्ते मीयागाम सङ्घना श्रावकोनी वन्दना कहेवापूर्वक त्यां पूज्यश्री साथे बिराजमान अन्य श्रमणवृन्दने वन्दनानुवन्दना कही पूज्यश्रीने मळवानी उत्कण्ठानी वर्णना करता पत्र पूर्ण करेल छे.

शब्दार्थ

- | | |
|---------------------------|---------------------|
| १. छारिकै = छोडीने | ४. सुगोत = सुगोत्र |
| २. कटाछ = कटाक्ष | ५. छिनु = क्षण |
| ३. उमगी = प्रगट थई छे (?) | ६. चाउ = उत्साह (?) |

*

.....[स]दा, य[ति](?).....,
....., सुंदर वदन सुचंद. [१]
प्रणमु पर[म].....,
पदपंकज प्रणति....., २
....., प्रणमी पदअरविद,
....., पत्र लिखु आनंद. ३
तत्र परमगुरु पुण्यनिधि, परमपूज्य आराध्य,
परमबंध उत्तम परम-अर्चनीय श्रीसाध्य. ४
सागर सकल सुभाग्यको, नागरनतपदपद्म,
आगर उत्तम नीतिको, रतनागर गुनसद्म. ५

श्रुतग्यान-परकाससै, जो सहसकर सूर,
 अखिल जगतमें झलहलै, महिमा जसु महिमूर. ६
 दिन दिन दिनकर तेजसो, जाको बढै प्रताप,
 कुमतअंधेरो मेटिकै, करै उदोत अपाप. ७
 जाके मुख [परि] सारदा, कीनो सदा निवास,
 करतलि कमला विमलमति, रिदयसिरोरुह खास. ८
 प्रतिरूपादिक चौद गुंन, दशविध साधुसुधर्म,
 भावन द्वादश भेद ए, गुंन छत्रीस सुभ शर्म. ९
 इनि विधि गुन अनुंचानकै, छत्तीसी छत्तीस,
 बसै ज्युं मानस हंस ज्यौं, ज्यौं घटमें सुजगीस. १०
 ग्यानादिक अनगारके, पंच आचार आराम,
 सिंचनकौं ज्याको बचन, अमृतघन उद्दाम. ११
 ज्याकी बचनसुधालहरि, सीतल सुखद अत्यंत,
 भवदवताप निवारिकै, करत शांत जगजंत. १२
 ज्याके तनुकौं छारिकै, दोष गए सब दूरि,
 गुणगुण ताथैं गहगहे, भए एकटे भूरि. १३
 दरसन ज्याको देखतैं, मिटैं सबै दुख दंद,
 ज्याके कृपाकटाछ तैं, उदय हुवैं ज्युं अमंद. १४
 पाउंधारैं जिहां परमगुरु, तहां तहां मंगलमाल,
 नांम सुनत ज्याको जगति, बिपद होत बिसराल. १५
 कृपादृष्टि जासौं करैं, परमगुरु पल एक,
 ताको दुख दारिद हरैं, लीला लहैं अनेक. १६
 सुरतरु सुरमणि सुरगवी, आए ताके गेहि,
 मुख देख्यो जिनि पूज्यको, नैन निसां धरि नेह. १७
 तपागछ पाथोधिकी, वेलावृद्धिको हेत,
 पूरण पूनिमचंदसो, दोलति दूनी देत. १८

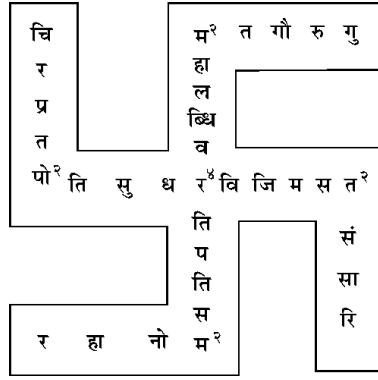
॥ अथ सवैया-तेईसा ॥

रूप अनूप नमैं निति भूप निरुपम भाग्यदशा उमगी^३ हैं ।
 देस बिदेसि बिसेसि घोघरि ज्याकी सुकीरति ख्याति जगी हैं ।
 दारिद दूरि सुमूरति देखत आपद सेवककी उभगी हैं ।
 दांनगुरु गुरुता भुअमंडल मंडिकैं अंबरि जाइ लगी हैं. १९

॥ अथ सवैया - इकतीसा ॥

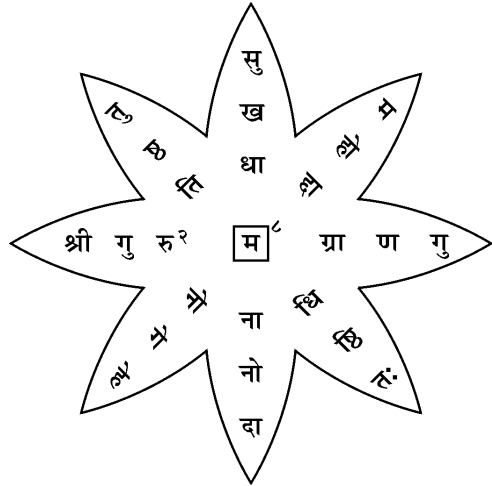
सकल बिद्याको सागर गुणमणिरतनागर विरागर ज्यौं विरागरसपूरि भर्यो हैं ।
 दूरि करैं दुरित पंक निसंक सकल कलंक मंजैं रंजैं भविक जयश्री वर्यो हैं ।
 जगतको उपगारी जोग युगतिधारी ब्रह्मविद्याधिकारी अविकारी अनुसर्यो हैं ।
 गछपति श्रीदांनरत्नसूरि परमप्रतापपूरि निति निति चढत नूरि उभर्यो हैं. २०
 जगको आनंदकंद मुखचंद सोहैं जाकौं देखत दुख दंद सब दूरि भाजतु हैं ।
 सुधातैं सरस जाको बांनीरस निरुपम गुहिर गभीर नीरभर्यो मेघ गाजतु हैं ।
 कंचनसुकोमल काय कांति भांति सुभगता देखि मकरध्वज आपु लाजतु हैं ।
 ऐसो गुरुराज आज भविक समाज के अताग भागि श्रीदांनरत्नसूरी राजतु हैं. २१
 गिरिवरमें मेरु गिरि सरिता में सुरनदी सर में मानससर श्रेष्ठ ज्यौं होत हैं ।
 सागरमें अति महंत सयंभूरमन रमनीमें रंभ तेजमें अदी त उदोत हैं ।
 ग्रहगनमें चंद चंदन सुगंधमें बनमें नंदन मनि में चिंतामनि सुज्योति हैं ।
 तेसैं सूरिमें सिरोमनि राजै छाजैं छत्र ज्यौं तपागछि दीदानरत्नसूरी सुगोत हैं । २२
 लब्धिको अब्धि अभिनव इंद्र भूति अवतार सार धीरतासौं मंदरगिरि भायो हैं ।
 श्रुतशीललीलसौं जु ऐंन वज्रस्वामी चामीकरसौं विशुद्ध बुद्धि गुनगान सवायो हैं ।
 गंगनीर निरमल निरालंब अंबर ज्यौं वंछित दातार जगि सुरतरु सुहायो हैं ।
 श्रीदानरत्नसूरि भूरिगुन भर्यो श्रीभावरत्नसूरीवंस अवतंस कहायो हैं । २३

अथ स्वस्तिकबन्ध दोहरो

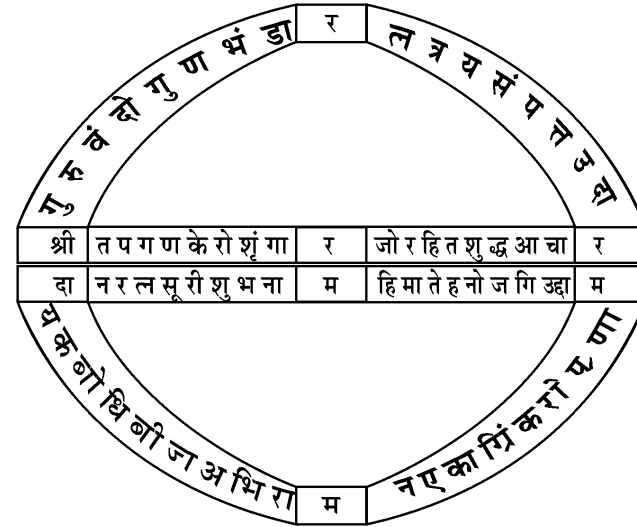
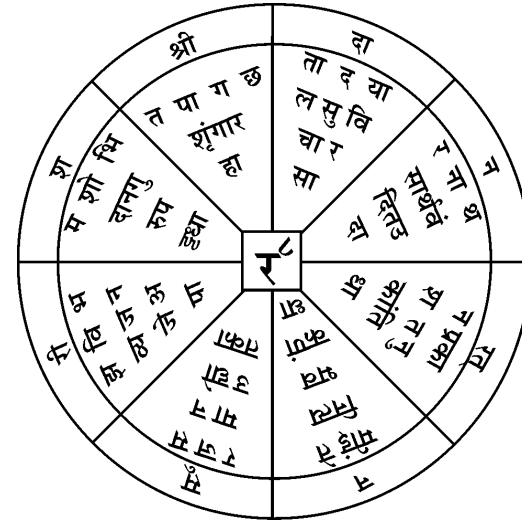


गुरु गौतम महालब्धिवर, रतिपति सम मनोहार ।
चिर प्रततो पोति सुधर, रवि जिम सतत संसारि ॥२४॥ स्वस्तिकबन्धः ॥

अथ कमलबन्धश्लोकः



सुखधाम-महोद्दाम-गुणग्राममधिष्ठितः ।
दानो नाम मनोगेहे, श्रीगुरु मम तिष्ठतु ॥२५॥ ॥ अष्टदलकमलम् ॥



श्रीतपागच्छशृंगारहार, दाता दयाल सुविचार सार,
नरनाथसार्थवंदित उदार, रत्नप्रकाशतनुकांतिधार;
नमीइं ते नित्य भवकर्णधार, सूरज समान उद्योतकार,
रीझवि भव्यजन जे अपार, रामशोभि दानगुरु पट्टधार. २६
अष्टारचक्रं पादाद्याक्षरैर्गुरुनामगर्भितम् ॥श्रीः॥

श्रीगुरु वंदो गुणभंडार, रत्नत्रयसंपत्त उदार,
श्रीतपगण केरो शृंगार, रजोरहित शुद्धआचार;
दांनरत्नसूरी शुभ नांम, महिमा तेहनो जगि उद्दाम,
दायक बोधिबीज अभिराम, मन एकाग्रिं करो प्रणाम. २७

सरावसंपूटबन्धः । चतुष्पदी छन्दः ।

अइसैं ही सर्वोपमा-योग्य परमगुंनधाम,
तपगन गगन उद्योत रवि, सुगृहीत निति नाम. २८
सकलभट्टारक-सीसमनि, परमपुनित सुपूज्य,
सोभित सप्त श्रीकारसौं, श्रीनिवास श्रीपूज्य. २९
दानरत्नसूरिवर जयो, जगि प्रतपो चिरकाल,
सोभें सकल सुशिष्यसौं, महिमसमुद्र दयाल. ३०

अथ संस्कृतं गद्यम् -

एवमनेक-छेक-सुविवेकीजन-विरचित-विविधगद्य-पद्यादि-रचना-
चित्रपवित्रस्तुतिस्तुतेषु तेषु सपरिकरेषु विज्ञप्तिपत्रं ममात्र प्रश्रयरसवशतो मीयाग्रामात्
द्वादशावर्तवन्दनपूर्वकमिलातलमिलन्मौलिः उ० उदयरत्नः, पं. हंसरत्न-जिनरत्न-
विवेकरत्न-शङ्करादियुतो, विधेयमथ निवेद्यते ।

दोहरा : अत्र कुशल संपद वधैं, श्रीगुरुकृपाप्रसादि,
तहां कुशलता चाहीयैं, छिनु^६ छिनु मन आह्लादि. ३१

अन्यच्च : पत्र तुमारो बांचिकैं, तनु उलस्यो सब ओर,
ज्यौं घनगरजारव सुनत, मनहु उंमगमैं मोर. ३२
और इहां चोमासमैं, बिधि बिधि धर्मध्यांन,
दान शील तप भावना, श्रीजिनेश गुणगांन. ३३
नाना सुकृत समूह निति, सकल संघ सुभ भाउ,
आराधति अहनिसि सुपरि, दिन दिन चडतैं चाउ^६. ३४
सुप्रभाति श्रीभगवती-सूत्र करत सञ्ज्ञाय,
श्रावक गुणसंग्रह सुधा, सुनत बखान सुभाउ. ३५
यह विधि बहु ओछरंगसौं, करत सुकृतगण सर्व,
सकलपर्वसिर मुगटमनि, आए पजूसणपर्व. ३६

अभयदान सब जंतूकौं, बाज्यो पडह अमारि,
तब महा मंगल नगरमैं, मच्यो सुहर्ष अपारि. ३७
नर नारी अति नेहसौं, सजे सकल सिणगार,
थोक थोक भवि लोक सवि, आवैं देउलद्वारि. ३८
स्नात्रपूजा आंगी रचैं, धूप दीप नैवेद,
होडाहोडी सब करैं, जिनपूजा बहुभेद. ३९
सोहासनि सिनगार सजि, करि विसाल धरि थाल,
गुरु आगैं करि गूंहली, गावैं मंगलमाल. ४०
बिधि बिधि वाजित्र वाजतैं, गंधर्व करतैं गांन,
परमप्रमोद बढावतैं, उछव अति असमांन. ४१
पोसह पडिकमणा प्रमुख, ध्यावत ही सुभ ध्यांन,
सदगुरु-साधर्मिकभगति, पात्रदान सनमांन. ४२
श्रीकल्पश्रुत वाचना, नवेयु सुखसमाधि,
संघसमक्ष सुभ परि भई, श्रीगुरुदेवप्रसादि. ४३
तप जप व्रत पचखाण बहु, संघपूजा गुरुभक्ति,
पूजा चैत्यप्रपाटिका, प्रभावनादिकयुक्ति. ४४
इह बिधि नाना भांतिके, सुकृतसमूह समेत,
पर्व आराध्यो प्रेमसौं, अहनिसि आदरि हेत. ४५

अपरं तुहमारी कृपादृष्टिथी समय माफक अत्र पर्यूषणापर्व सारां थयां
छैं । पारणां ४ सकुटंबि वृद्ध साजनि, पारणां ४ सकुटंबि लघु साजनि तथा
प्रभावना ५ मोदक लहिणी ३।४ थई छि । तप मासखमण ३, पासखमण २,
अठाही २, पंचोपवास ५, छठ-अठमादि घणा थया छैं । अपरं पं. उत्तमरत्न
ठाणुं २ पादरीए छि । तत्र पणि पारणा ४ थयां छि । पं. गंगरत्न ठाणुं २
पादशाहपुरि । तत्र मासखमण १ पासखमण १ पंचोपवास ३ पारणां ४ इत्यादि
सारं छि । अपरं पं. तिलकरत्न ठाणुं २ उमेटि छि । कुशल छि । पासखमण २
थयां सांभल्यां । वणिकनो राग सारो छि । सहूनैं शातासुख छि ।

अपरं अत्रत्य संघमुख्य दो० श्रीहंसराज, दो० श्रीत्रिकम, दो० श्रीरूप,

वो० अमरसी, वो० त्रीकम, वो. जेठा, वो. प्राग, वो. भगा, वो० नरसिंघ, वो० मूलजी प्रमुख श्री० वाहालबाई, श्री अगरबाई, सा० राधा प्रमुख तथा विंशतिमध्ये वो० श्रीदेवचंद, सेठ श्रीवीरा, सा० श्रीरूपा, सा० श्रीसकल, सा० श्रीलखडा, सा० श्रीकमल, श्री डाहा गांधी रहीया, सा० श्रीकल्याणजी भातीया, सा० भीमजी वछराज प्रमुख समस्त संघ नाहना-मोटानी वंदना अवधारज्योजी । अम्हारी वंदना दिनप्रति अवधारवी ।

अपरं पं० श्रीजिनविजय, पं० कल्याणरत्न, पं० अमरविजयादिनैँ अहमारी तथा परिवारनी यथायोग्य नत्यनुनति जाणवी । अपरं श्रीजीनैँ वांदवानो अभिलाष घणो रहि छि । वांदां दिन घणां थया छैँ पण हर्वि तो योग मिलवो भावी हस्ये तिवारैँ वंदास्यि ।

दोहरा : ज्यौँ घनबुंद बपीयरा, ज्यौँ कोकिला बसंत,
त्यौँ तुम देखन उंमहे, हम लोचन तरसंत. १
नैन हमारे अलजये, देखन तुम देदार,
ग्रीषम पंथी प्यास वसि, ज्यौँ चाहैँ जलधार. २
हम मन निसदिनि तुम चरनि, धरत सदा अभिलाष,
श्रीजी साचा मानीयो, चंदा सूरज साखि. ३
श्रवण सदा तुहम गुन सुनैँ, हिरदामैँ तुम बैँन,
जीहा गुन सुमिरन करैँ, देखन तलफैँ नैन. ४
भ-यके भीतरि निति रहैँ, ध-प बिचि जाको वास,
साईं साचा जानीयो, सोईं तुमारे पासि. ५ [मन]

अपरं - जेहवो कृपास्नेह राखो छे तेहथी विशेष राखवोजी । पत्रसमाचार वलता विशद करी लिखवाजी । तत्र हाजर मजलशिनैँ धर्मलाभ कहिज्यो । लेख उतावलो लिख्यो छि । सा० वस्तो मुखवचन कहि ते सही करी मांनज्योजी ।

संवत् सत्तरबांनवइ (१७९२), उज्जल भाद्रव मास,
दशमी दिनैँ वासर शनी, लिख्यो लेख उल्लासि. १

श्रीमंगलमालिका: ॥

* * *

(२४)

मेडताथी श्रीसङ्घतो श्रीदेवगुप्तसूरिजीने पत्र

प्रस्तुत विज्ञप्तिपत्र प्रायः 'कवला'गच्छनी परम्परामां लखायेल सचित्र विज्ञप्तिपत्र छे. सं.१९०७मां मेडता श्रीसङ्घना धनरूपमल वगेरे श्रावकोए श्रीदेवगुप्तसूरिजीने उद्देशीने आ पत्र लख्यो छे. पत्रमां लखाण ओछुं छे. आगळना अडधा पत्रमां गुरुभगवन्तनां विशेषणो मारुगुर्जर भाषामां रजू कराया छे. त्यारबादना लखाणमां गुरुभगवन्तनां नामो, तेमज गच्छना श्रावकोनां नामो विशेष उल्लेखनीय छे. साथे पूज्य गुरुभगवन्तने उद्देशीने लखायेला गुर्जर पद्यो भाषाकीय दृष्टिए रसाळ छे. छेले पत्रना अन्त्यभागमां पूज्यश्रीने नम्रतापूर्वक प्रत्युत्तर पाठववा विनन्ती करी छे. पत्र पूर्ण थतां नीचे श्रावकोनी सही छे.

*

॥८०॥ स्वस्ति श्रीपार्श्वजिनं प्रणम्य । श्री तत्र ग्राम-नगर-सुभ सुथाने सरबओपमाविराजमांन, अनेकओपमालायक, सरबगुणनिधानं, सत्क्रियासावधानं, पांचे सुमते सुमतां, तिनैँ गुपते गुपता, छकायरा पीहर, सात भय जीपक, आठ कर्मना टालक, नव वाड ब्रह्मचर्यना पालक, दशविध जतिधर्मना धारक, इग्यारै अंगना जाणनहार, बारै उपांगना प्ररूपणहार, तेरै काठियाना जीतणहार, चउदें विद्यानिधानं, पन्नरै भेद सिद्धना जाणनहार, सोलै कषायना जीतणहार, सतरै भेदै संजमना जाणनहार, अठार सहस्र सीलांगरथना धारक, उगणीस दोसना टालक, वीस असमाधिना टालक, इकवीस श्रावकना गुण जाण, बावीस परिसहना जीतणवाला, तेवीस विषयरासि जीपक, चोवीस भगवानंरी आज्ञारा आराधक, पंचवीस भावनारा जाणनवाला, क्रोध-मांन-माया-लोभ-मद-मच्छर-अहंकार इणारा जीतणहार, छतीस उत्तराध्ययनना वखांणना करणहार, नंदीसूत्र-दशवीकालिक-अनुयोगद्वार-सूगडांग-ठाणांग-जीवाभिगम ईयां सूत्रां प्ररूपणहार, नवतत्त्वना जाणणहार, जीवदयाप्रतिपालिक, षट्कायरक्षक, दुविध धर्मप्ररूपक, श्रीआचार्यप्रतिगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यसूर्यावितेजस्वीगुणसंयुक्त, युगप्रधानागम-गुणसंयुक्त, मधुरवाक्यगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी श्रीउपदेशगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी अपरश्रावीगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी सोम्यप्रकृतिगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी

संग्रहसीलगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी अभिग्रहगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी अविकत्थकगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी अचपलगुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी प्रसंतरिदय-गुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी क्षमागुणसंयुक्त, श्रीआचार्यजी आर्जवगुणसंपन्न, श्रीआचार्यजी मार्दवगुणसंपन्न, श्रीआचार्यजी सर्वसंगमुक्ति-गुणसंपन्न, श्रीआचार्यजी द्वादशविध तपोगुणसंपन्न, श्रीआचार्यजी सप्तदशविध संयमगुणसंपन्न, श्रीआचार्यजी सत्यगुणसंपन्न, श्रीआचार्यजी सौच्यगुणसंपन्न, श्रीआचार्यजी अनित्यभावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी असरणभावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी संसारस्वरूपभावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी एकत्वभावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी अन्यत्वभावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी अशुचिभावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी आश्रवभावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी संवरभावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी धर्मसाधन-अरिहंत-दुर्लभ-भावनाभावकाय, श्रीआचार्यजी कुखीसंबल मिथ्यात्वरूपीयो तिमिररा दूरकरणवाला इत्यादिक छतीसगुणों करी राजमानं, सोभित सकलभट्टारकशिरोमणि, श्रीककुदाचार्यसंतानिय, चतुरसितीगच्छाधिराज, यंगम-युगप्रधानं, भट्टारकोत्तम-भट्टारक, श्रीश्रीश्रीश्री १०८ श्रीश्रीश्रीदेवगुप्तसूरीश्वरजी, पंडितश्री २१ श्रीउपाध्यायजी श्रीआणंदसुंदरजी, पंडित श्रीनेमसुंदरजी, पं. विनयसुंदरजी चरणान् श्रीमेडतैसुलिखावतुं श्रीकवलैगछरा समस्त श्रीसिंघ, वैद, मुंहता, तातेड, चोरडीया, समदडीया, लुणावतांसुं आदिदेतै(?) समस्तारी वन्दना १०८ वार अवधारजेजी । मेडतेमें कवलगछरा श्रावक-श्राविकण्यारी विनती है अठे वेगा पधारसी नै कृपा-महिरवानगी करनै चोमासैरा भाव रखावसी । घणै मानसुं करनै आप गुरदेव..... घीणानै तारो छे । श्रीवीतरागधर्म भाखो छे । अशुभ रावो छे । श्रीजिनधर्मना दिपक छे ।

श्लोक :

स्वपर [समय जाणें] धर्मवांणी वखाणें,
परम गुरु कहांथी तत्त्व निसंकमाणे,
भविक-कज-विकासें भांनुना तेज भासे,
ईह ज गुरु भजो जे सुद्ध मार्ग प्रकासै १

जनम दइ पिता मात जगइ, तो किरावर आय,
चोपद तै द्विपद कीयो, तातै आप सवाय २

अबतो मोय अनाथकुं, तारिजै तत्काल,
मै दीनन तै दीन हुं, तुम हो दीनदयाल ३

गुरु पारस शिष्य लोह सम, स्वर्ण होत तिण संग,
दै प्रबोध निश-दिवस तो, करै कीट तै भृंग ४

पृथ्वी सहु कागद करूं, लेखण करूं सब वनराय,
सर्व समुद्रनी स्याही करूं, तो गुरुगुण लिख्या न जाय ५

अठारा समाचार श्रीजिनेश्वरदेवजीरी कृपा करनै भला छै । आप गुरुदेवांरा सदा आरोग्य चाहीजैजी । अपरं च समाचार एक वाचज्यो । आपरो कागद इणां दिनां मांहे आयो नहि सो दिवावसी । आप देवजात्रायै करतां मेडतैरा श्रीसिंघनै चितारसो । हमें पिण देवजात्रामै चितारां छां । कांमकाज हवै सु लिखावसी । वलता पत्र दिरावसी । घणो कांई लिखा । थोडै लिखीयै घणो जाणज्यो । आप मोटा गुरुदेव छे ।

संवत् १९०७ रा शाके १७७२ वर्षे प्रथम वैशाख सुदि २ द्वितीयां तिथौ रवीवारे श्रीशुभं भवतुः । श्रीरस्तुः ॥

व(वे)दमुता धनरूपमलरी वंदणां श्री १०८ अवधारसी गणमानसु करन । व(वे)दमुता..... वदणा श्री १०८ अवधारसी श्री गणमानसु कर ।

[आ पछी हस्ताक्षरो छे.]

* * *

(२५)

खम्भात सङ्घ वती खुस्यालमुनिअे श्रीअक्षयचन्द्रसूरिजी पत्र मोकलेल विनती-भास

भासरूपे रचायेल प्रस्तुत पत्र मालवदेशमां बिराजमान अक्षयचन्द्र-सूरिजीने उद्देशीने खम्भातना श्रीसङ्घ द्वारा मोकलायो छे. पत्रना रचयिता खुस्याल मुनि छे. पार्श्वचन्द्रसूरिजीनी परम्पराना विनयचन्द्रजीना पट्टधर अक्षयचन्द्रसूरिजीनी दर्शनोत्कण्ठानुं वर्णन कवि आलेखे छे. सूरिजीना पिता-माता-जन्मभूमि वगैरे नोंधे आप्या बाद 'सोल वरस.....' 'खप जो.....' विगैरे पद्योमां विरहवेदनानो चितार आप्यो छे. पछीनी ढाळमां अविनयनी क्षमायाचनापूर्वक सूरिगुणस्तवना करतां गुजरात पधारवा कवि विनती करे छे. सूरिजीना पधारतां थती आराधनानो पत्रान्ते उल्लेख करी स्वनामोल्लेख करी कवि पत्र पूर्ण करे छे.

*

॥ ढाल - बिंदलीनी ॥

स्वस्ति श्रीगुरुपय नमी, वीनतडी मनरंगइं रे,
करीयै कर जोडी करी, चित धरीनें सुखसंगे रे. १
सगुण सनेहा श्रीपूज्यजी, श्रीपासचंद गछराया रे,
पंचाचारी हितकर, भविकजनम सुखदाया रे. २ सगुण..... [आंकणी]
समर-राय-विमल-जया-विजै-विनैचंद पटोधारी रे,
श्रीअखयचंदसूरिसरु, धरम तणा दातारी रे. ३ सगुण.....
नयणां तरसैं दरसणै, श्रवणे सुणवा वाणी रे,
रसना तुम्ह गुण गायवा, सफल करो हित आणी रे. ४ सगुण.....
सोहमसामी समवडें, ओपम जेउनें कहीयै रे,
बोधरयण-उपदेसथी, साधु श्रावक चित लहीयै रे. ५ सगुण.....
साह सहसमल कुलनभें, दिनकर जिम परतापी रे,
मात संपूरदे मनहरुं, शुभ कीरति जस व्यापी रे. ६ सगुण.....

श्रीश्री खंभनयर तणो, संघ सकल सुखदाता रे,
त्रिकरण वंदण विधि करी, त्रिसमय तुम गुण गाता रे. ७ सगुण.....
जनमभूमि मोही रह्या, श्रीगुरु मालवदेशें रे,
साहजिहांपुर सहरमां, वलि उजेण विसेसें रे. ८ सगुण.....
तिहाथी इहां आववा भणी, वात न मनमां धरता रे,
मुनिजन साथें परिवर्या, गाम नगर पुर विहरता रे. ९ सगुण.....
सोल वरस तेहनें थया, वरसांतर कही चाल्या रे,
वली वंदावण तुम्ह भणी, कह्यां ते वयण न पाल्या रे. १० सगुण.....
श्रीमहावीरजिनेशना, वयण सुण्यानो विरहो रे,
ते दुख खिण खिण सांभरै, टालीजें ते परहो रे. ११ सगुण.....
खप जो तुम्हनें अम्ह तणो, तो हवैं वहिला आज्यो रे,
संघ तणी ए वीनती, साहिबजी चित लाज्यो रे. १२ सगुण.....

दूहो : लघु भारी असमंजसा, अविनयथी जे वयण,
ते खमज्यो श्रीसंघना, श्रीगुरु साचा सयण. १३

॥ ढाल ॥ राजाजी मिलैं - ए देशी ॥

श्रीश्रीश्रीअखयेंदुसूरिस, पदकज सिरनामैं मुनिईस, श्रीगुरु सांभलो,
मेरे धरम सनेही श्रीगुरु सांभलो, धरमोपदेसी [श्री]गुरु सांभलो,
साधु श्रावक मन टालो भांभलो [ए आंकणी]
मानस-सर जिम हंसे लीन, श्रीगुरु तिम श्रीसंघे पीन. १ श्रीगुरु.....
सुरगणमांहि जिम सुरराज, श्रीसंघमांहें सोहै गुरुराज, श्रीगुरु.....
नरवरगणमांहि चक्रीस, तिम सुगुरु सोभा निसदीस. २ श्रीगुरु.....
तारागणमां[हि] ससि सूर, सौम्य सबल तेजें भरपूर, श्रीगुरु.....
श्रीगुरुवर छै तिम उपमानी, गुण वरणवता वाधे वान. ३ श्रीगुरु.....
चतुर विचारी चित मझारि, गुज्जरदेस भणी पाउधार, श्रीगुरु.....
धरम तणो थास्यै इहां लाह, समकित देसविरतिनो चाह. ४ श्रीगुरु.....

अधिक उदय थास्यै श्रीसंघ, तुम आवैथी रंग उमंग, श्रीगुरु.....
 नमीय नमी इम वार हजार, श्रावक श्राविका सवि निरधार. ५ श्रीगुरु.....
 वीनती विनय करी सुजगीस, तुम्हें भाखें छै निसदीस, श्रीगुरु.....
 गुणरयणायर महिमा महंत, सुखकारी सज्जनमां संत. ६ श्रीगुरु.....
 परउपगारी परमकृपाल, अंगीकृत-कृतना प्रतिपाल, श्रीगुरु.....
 चिर प्रतपो ए श्रीगुरुराय, शिष्य खुस्यालमुनिना सिरताज. ७ श्रीगुरु.....

॥ इति विनतीभास समाप्तः ॥
 बाई मीठी तत्पुत्री सत्पुत्री बाई नाथी पठनार्थ ॥

* * *

(२६)

अजमेरना श्रीसङ्घतो विक्रमपुर लक्ष्मीचन्द्रसूरिजीने पत्र

नागोरी लुंकागच्छीय हर्षचन्द्रसूरिशिष्य लक्ष्मीचन्द्रसूरिजीने उद्देशीने अजमेरना श्रीसङ्घे विक्रमपुर प्रस्तुत पत्र पाठव्यो छे. शरुआतना प्रथम पद्यमां आदिजिननी स्तुति, बीजा पद्यमां लेखनी सामान्य विगत तेमज त्रीजा पद्यमां मुनिगुणवर्णना करी कृतितुं मङ्गलाचरण कर्युं छे. त्यार पछी पत्रमां अनुक्रमे कवित्त, सवैयो, दूहो, २ कुण्डलिया, तथा कवित्त द्वारा लक्ष्मीचन्द्रसूरिजीना गुणवैभवनुं वर्णन करायुं छे. 'नगर घणा' पद्यथी अजमेरनी महत्ता तेमज पछीनां २ पद्योथी सूरिदर्शनोत्कण्ठानुं आलेखन कविए रजू कर्युं छे. पत्रमां अन्य विज्ञप्तिपत्रोनी जेम मुनिश्रीना सामान्य गुणोनी नोंध पछी आलेखायेला साधु-समुदायनां नामो महत्त्वपूर्ण छे. ते सिवाय गुरुभगवन्त प्रत्ये श्रीसङ्घना आदरनी तथा पर्वाधिराजपर्वनी क्षमापना अंगेनी विगत पण वांचवा योग्य छे. पत्रान्ते पत्रलेखन संवत् तेमज मुडीया लिपीमां श्रीसङ्घना केटलाक श्रावकोनी सही छे.

कृतिनी रचना कोणे करी छे ते ख्याल नथी आवतो. परंतु आमांनां केटलांक पद्यो अन्य विज्ञप्तिपत्रमां थोडा घणा फेर साथे जोवा मळ्यां छे. बीजुं सवैयानी रचना कदाच जगरांम सुखा नामना श्रावकनी होय तो एमणे ज पत्र लखवामां मदद करी होय एम पण मानी शकाय. पत्र सचित्र छे.

*

शब्दार्थ

- | | |
|------------------------------|-------------------------|
| १. दुरस = दुरस्त(?), व्याजबी | ६. ठोर = स्थान |
| २. गाहीड = ? | ७. सराहै = प्रशंसे |
| ३. इधकै = अधिके | ८. लुलित = लळी लळी |
| ४. गहर = गम्भीर | ९. ईढ(डु) = ऋद्धि |
| ५. गुहिर = गम्भीर | १०. वरीसवर = वर्षो सुधी |

*

स्वस्तिश्रीसमुरीकृतोद्यतिसुता दी... मुंदा य[:] स्तुतः,
 सौवर्णाञ्चितगद्यपद्यरचनैः स्तोत्रैः प्रगीतो यकः ।

गाङ्गेयाभमशेषिक एव शिखरी व्याधाम साधारणं,
 श्रीशेत्रुञ्जयभूधरे तमधिकं वन्दे जिनं चाऽऽदिमम् ॥१॥
 येनाकारि निजौजसाऽऽदिगहनं स्याद् वार्षिकं वै तपः,
 सान्द्रा भिल्ल(?) निदां(दा)नकर्मनिचयाच्छिन्नेऽनिशं तत्परम् ।
 तं नत्वा जिननाथमेव शिरसा भक्त्या त्रिशुद्ध्या यथा,
 श्रीमत्पार्वणि एष एव मयका लेखोऽधुना लिख्यते ॥२॥
 श्रीमत् विक्रमपुरवरे सर्वेऽपि उत्कृष्ट श्रेष्ठोपमा बिराजमानानाम् ।
 जितेन्द्रिया ब्रह्मव्रतो(ते) सुरक्ताः, क्रोधादिमुक्ता यमपञ्चयुक्ताः ।
 आचारशुद्धा सुमतिप्रशस्ता-स्त्रिगुप्तिगुप्ता गणिनो भवन्ति ॥३॥

कवित्त :

पंडित प्रवीण सब आगमकुं साध लिये, करत बखांण बाण गौतम समान जू,
 भविजन भेटै पाय ताको दुख दूर करै, दीपत दीदार एसो जैसो तेजभान जू,
 लूंकैगछ नागोरी सोभत सुभ थाट लियां **हर्षचंद्र** हंदै पाट मानै राजान जू,
 पंच ब्रत पालै निज आत्म-काज सारै लक्ष्मीचंद्र गणराज गुणको निधान जू. १

सवियो : लक्ष्मीचंद्र मुनिंद तपै रवि, देख दीदार तैं आनंद थावै,
 भेटत पाय भविजन भावसुं, दुकृतं ही सब दूर ही जावै,
 सूत्रसिद्धांतसमुद्रज्युं गाजत, ग्यांनमहातम शुद्ध बतावै,
 सुरतरु सो जस छाय रह्यो, **जगरांम सुखो** मनवंछित पावै. १

दूहो : दीपै तेज रवि जिम दुरसं, जैसै ग्यांनकै सूर,
लक्ष्मीचंद्रजी पू[ज]जी, नायक चढतै नूर. १

कुंडलिया : बिद्या-वयर कुबेर ज्यूं, इल गोयमअवतार,
 लायकगुण लीलालहर, कलियुगमै करतार. १

कलियुगमै करतार धीर, संयम-व्रतधारी,
 गीहाड गात गयंद, इंद्रज्यूं इधकै दावै,
 साध्र महियडै साच, सकल श्रम[ण]गुण हितकारी,
 पंडित सुगुण बुधपात्र, जस कविजन गुण गावै,

वड त्याग भाग सोभाग वड, धरणी तरणी शशि धीर ज्यूं,
 प्रतपो लक्ष्मीचंद्रजी पाट, विद्या-वयर कुबेर ज्यूं. २
 गछपति गछपतिसिरतिलक, चलै चरण सुध राहं,
 मिथ्यामल दूरे हरै, परतिख-गंगप्रवाह. १
 परतिख गंगप्रवाह, गहरं वांणी घन गाजै,
 गर्जित महिमा 'गुहिर, भेटतां दालिद्र भाजै,
 गुणमणि-रयणभंडार, ज्ञान-दरशण-चारित्रनिधि,
 अमल अटल अणभंग, अखिल वंछितदायक रिधि,
 करुणानिधानं करुणाकरण, अति प्रताप उदियो अरक,
 कवि कहत एम गोयम सुगुण, [गछ]पति गछपतिसिरतिलक. २

कवित्त : 'ठोर ठोर थिर थानं, सकल जग जासु 'सराहै,
 महिमावंत महंत, चरण-परसिद्धसु चाहै,
 छत्रपतियां छो रिछपाल, 'लुलित करि पावां लागै,
 कीरत सुणी कहंत, राजवी बंदै रागै,
 तपतेजहेज विद्याअतुल, 'ईढ न को आवे अवर,
श्रीहर्षचंद्रपाटे रिधु, लक्ष्मीचंद्र वरीसवर. १

नगर घणाई देशमै, इक ईकथी सार,
 पिण **अजमेर** पेखतां, ओर न आवै दाय. १
 पूज्याराध्यतमोत्तमा, श्रीजीना सुखकार,
 समाचार श्रीसंघने, दीजे हित धर प्यार. २
 किहां कोयल किहां अंबवन, किहां ददुर किहां मेह,
 बीसर्या नवि बीसरां, पूजजी तणां सनेह. ३

इत्यादि अनेक सकलश्रेष्ठोपमा बिराजमान पूज्य, परमपूज्योत्तमोत्तम,
 कलिकालगौतमावतार, सरस्वतीकंठाभरण, वादविजयलक्ष्मीसरण, अबोधजीव-
 प्रतिबोधक, दयाधर्म दीपावक, हिंस्याधर्म उत्थापक, पांचे सुमते सुमता, त्रिहुं
 गुपते गुप्ता, छ कायना पीहर, यावत् षट्त्रिसदगुणे करी बिराजमानं, पूज्य श्री...
श्रीलक्ष्मीचंद्रजिच्चरणान्, महर्षि रांमधनजी, महर्षि उमेदमलजी, महर्षि

श्रीपरमानंदजी, महर्षि श्रीजुहारमलजी, म. श्रीहुकमचंदजी, म. श्रीशिवदासजी, म. श्रीसिरदारमलजी, म. श्रीभागचंदजी, म. श्रीलालचंदजी, म. श्रीलूणकरणजी, म. श्री रायभांणजी, म. श्री सुमेरमलजी, म. श्रीहिंदूमलजी, म. श्रीसंतोषचंदजी, म. धरमचंदजी, म. श्रीटीकमचंदजी, म. श्रीसुजांणमल्लजी, म. श्रीआईदांनजी, प्रमुख समस्त साधुमंडलीन् अत्र अजमेरथी लिखतं सदा सेवक, आग्याकारी, हुकमी, पायरजसमानं, ऋ. छोरू संभूरामकी द्वादशावर्त वंदनां दिन प्रतै १०८ वार त्रिकाल अवधारसीजी घणै-घणै मान । अत्र आपारी कृपा सेती सुखसाता है । तत्र आपनै सदैव आनंद चाहीजै । आप मोटा छे, गुरुदेव छे, तीर्थ समान छे । आप सवाय काइ वार्ता नही है । छोरू ऊपर कृपा सुदृष्ट पूर्वे रखावता छी तिण प्रमाणै ही ज रखावसीजी । तथा पर्जूसणां पर्व आपरा प्रसादथी निर्विघ्नपणै थया छै । संवत्सरी प्रतिक्रमणावसरे देवसी, राई, पक्षी, [चोमासी], संवत्सरी संबंधी खिमतरखामणां मन-प्राणां शुद्धै षमाया छै ते जांणसी । तथा अजमेरना बृहन्नागोरी लूंकैगच्छना समस्त श्रीसंघ बाल-गोपाल लघु वृद्ध श्रावकश्रावकिणियां बंदणा बीनवी छै घणै घणै मानं । समस्त श्रीसंघनै आपका दरसणकी घणी उत्कंठा लाग रही है सु कृपा करकै दरसण दिरावसी । सं० १८८७ म० सु० १५ ॥

श्रीश्री १०८ श्रीजीसाहबसु सुराणा जीवणमलह, जीरीमल, राजमल प्रमुख समसत'री वंदणा १०८ वार वंचावसी । कीरपा कर दरसण देरावसी ।

* * *

(२७)

अमदावाद् बिराजमान श्रीकल्याणसागरसूरिजीने नौरंगाबाद् श्रीसङ्गतो पत्र

प्रस्तुत पत्र नौरंगाबादथी श्रीसङ्घे अमदावादस्थ कल्याणसागरसूरिजीने उद्देशीने लख्यो छे. अन्त्य भागमां पत्र कईक अपूर्ण छे. शरुआतमां संस्कृत २ काव्यमां आदिजिन तथा शान्तिजिनने नमस्कार करी सौ प्रथम गुर्जर पद्योमां अन्य त्रण तीर्थङ्करो तेमज गौतमादि गुरुभगवन्तोनी स्तुति करी छे. प्रथम ढाळथी नौरंगाबादनुं, त्यार बाद अमदावादनुं अने त्यांना श्रावकोनुं अने गुरुना ३६ गुणोनुं वर्णन कविए कर्तुं छे. त्रीजी ढाळमां फरी गुरुगुणवर्णना छे. त्यार पछीनां पद्योमां सूरिजीनी पधरामणीनी राह जोता श्रावकवर्गना नामोल्लेख साथे गुरुपरिवारने वन्दना करवापूर्वक चातुर्मासनी विनन्ती करे छे. त्यार पछी महाराष्ट्री (मराठी) भाषामां पार्श्वनाथ प्रभुनी स्तवना करी पत्रान्ते पत्रलेखन अंगेनी नोंध आपी पत्रमां लेखनमां थयेल भूल-चूक माटे 'मिच्छामि दुक्कडं' याचे छे [अहीं हवे २ श्लोको पछी पत्र खण्डित छे.]

*

॥ ॐ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

काव्य : स्वस्ति श्रीआदिनाथं सकलसुखकरं सौख्यदं प्राणभाजां,
सौवर्णाभं जिनेशं परमजयकरं यः स्तुतो दानवेन्द्रैः ।
तं नत्वा देवदेवं परमपदगतं सर्वकार्यैकसिद्धं,
उद्यत्कल्याणमाला कलिमलहरणं श्रीगुरुं संस्तवे(वी)मि ॥१॥
स्वस्तिश्री(श्रि)यं वो विदधातु शम्भु-रष्टाननः षोडशनेत्रयुक्तः ।
श्रीअश्वसेनान्वयचित्रभानुः, पदारविन्दं प्रणतोऽस्मि भक्त्या ॥२॥

अथ देशीबद्ध-श्रीसचित्रलेखः लिख्यते ।

दूहा : स्वस्तिश्रीमद् वृषभजिन, प्रेमइं प्रणमी पाय,
लेख लखुं श्रीगुरु प्रतइं, कीजइं मुझ सुपसाय. १
स्वस्तिश्री श्रीशांतिजिन, प्रणमुं बिहुं कर जोडि,
लेखु लखुं श्रीसूरिनइं, पूरो मुझ मन कोडि. २

स्वस्तिश्री बावीसमां, प्रणमुं नेमिजिणंद,
समुद्रविजयराय कुलतिलो, मातशिवादेवीनंद. ३
स्वस्तिश्री प्रेमइं करी, प्रणमीजइं श्रीपास,
दास आस पूरो सदा, जिम लहीइं उल्लास. ४
स्वस्तिश्री चढती कला, नांम थकी वर्धमांन,
सिद्धि बुद्धि दिन दिन वधइं, नितु आदर नितु मांन. ५
श्रीगौतम आदिं करी, प्रणमी सहु गणधार,
लब्धिनिधानं नांमइं करी, जय लहीइं संसार. ६
श्रीसुधर्मगणधर प्रतइं, वांदी त्रिकरण शुद्धि,
गुरुगुण गातां कवि प्रति, दीजइं बहुली बुद्धि. ७
तंबू धर्मसुसार्थनो, कंबू दख्याणावत्त,
अंबू परि निरमल करइं, जंबूस्वामि पवित्त. ८
श्रीप्रभवप्रमुख पटधर घणां, ते प्रणमुं सहु सूरि,
सिज्जंभव यशोभद्र मुख, यावत् लक्ष्मीसागरसूरि. ९
वीर तणा सवि पटोधरु, प्रणमुं थई लयलीन,
नांममंत्र मुख राखतां, होवइं तन-मन पीन. १०
ए सरवें प्रणमन करी, समरी सरसतिदेव,
मुझ मनि नितु ए टेव छें, तिणें समरुं नितमेव. ११
गुणगिरुआ जे अह्म गुरु, ते गुरु प्रणमुं आज,
पत्थरनें पल्लव करें, ते गुरु गरीबनिवाज. १२
समर्या मुझ सानिधि करें, प्रेमपात्र गुरुगात्र,
भवजल तरणतारण भणी, सफरी यांनह पात्र. १३
ए सहुकोनइं चित्त करी, सिर धरी एहनी आंण,
वर्तमानगुरु गछधणी, कीजइं तास वखांण. १४
सकलदेशकल्यांणकर, सकलनगरकल्यांण,
कल्यांणसागरगुरु गछधणी, नांमइं सदा कल्याण. १५

॥ ढाल ॥ चतुर सनेही मोहना - ए देशी ॥

जंबूद्वीपना भरथमां, दक्षिणदेश छें वारु रे,
अवर देश जोतां थकां, एह देश दीदारु रे. १ जंबूद्वीपना.....
एह देशनुं बेसणुं, नगर नौरंगाबाद रे,
नित्योच्छवमय नगर ए, दीठें मनि आह्लाद रे. २ जंबूद्वीपना.....
गढ मढ मंदिर विपणनी, सोभा बहुली दीपइं रे,
चोरासी चहुटइं करी, स्वर्गपुरीनइं जीपइं रे. ३ जंबूद्वीपना.....
जैनभुवन अति दीपतां, जैन देव तिहां बइठा रे,
त्रिकरण शुद्धि सेवतां, मुझ मनि लागइं मीठा रे. ४ जंबूद्वीपना.....
पूजा त्रिविध प्रकारनी, नित्य करइं भवि प्रांणी रे,
भवजलतरणतारण भणी, प्रभु सेवइं उलट आंणी रे. ५ जंबूद्वीपना.....
इंम घणी धर्मउन्नति करइं, जैनधर्मना आसी रे,
वर्ण अढार वसइं सुखी, एह नगरना वासी रे. ६ जंबूद्वीपना.....
सकलदेश शिरोमणी, सकलनगर सिणगार रे,
नगर नौरंगाबादथी, संघ लिखितं सुखकार रे. ७ जंबूद्वीपना.....

दूहा : लिखितं नौरंगाबादथी, योग्यं अमदावाद,
श्रीपूज्यजी विचरें जिहां, तिहां कुशल-खेम आबाद. १

॥ ढाल ॥ बिं मुनिवर विहरण पांगर्याजी - ए देशी छइं ॥

गौर्जरदेशइं नगरसिरोमणी जी, राजइं विराजइं राजहद्रंग रे,
तेह नगरनी सोभा सी कहुं जी, कहतां निरवहतां उपजइं रंग रे. १
गौर्जरदेश.....

सज्जनलोक वसें जेहमां घणा जी, पोहचाडइं निज मनडानी मोज रे,
दीन दुखीआ दीसइं को नही जी, दांनइं निज वांनइं दीपइं हरोज रे. २
सुधा व्रतधारी गुणकारी सदा जी, नितु नितु पूजइं श्रीजिनदेव रे,
भावभगतिनी अधिकी अधिकता जी, सहगुरुमुख जोवइं नितमेव रे. ३
धन्य ते नगर सहर पुर पट्टण भलां जी, धन धन्य पावन पुढवी तेह रे,
जेह नगरीइं सहगुरु विचरता जी, वरसता निज वांणी अमृतमेह रे. ४

धन्य ते श्रावकने वली श्राविका जी, नितु नितु सहगुरुमुख वखाण रे,
सांभलतां सदहतां साचें मर्नि जी, नवकारसिही पोरसिही प्रमुख पचखांण रे. ५
करस्यें ते वरस्यें सुजय सुसंपदा जी, आपदा नवि पामइं भवह मझारि रे,
पत्र लिखुं छुं तेह नगर भणी जी, सहगुरु श्रीसंघनें मनि अधीर रे. ६
कुशल-खेम वली सुखनी संपदा जी, तुम नामइं करी सहगुरु वरतिं अत्र रे,
तिहानां कुशल-खेम-सुखनी वातनां जी, पत्र प्रेखुं छुं सहगुरुजी छें यत्र रे. ७

दूहा : पूज्याराध्य ध्येयतम, परमपूज्य अर्चनीक,
कुमतांधकारनभोमणी, गछनवपल्लव-नीक. १
सकलसूरिसिरोमणी, विबुधजनमुकुटमाणिक्य,
सरस्वतीकंठाभरण सम, उत्तम रत्नमाणिक्य. २
सकलकलापूरणशशि-वदन विराजइं जास,
गुरुमुख अगणित गुण भर्यो, गुरुमुख लीलविलास. ३
एकशत-एक जस औपमा, वर्णवीइं गुरु तुहम,
समरथ श्रीगुरु समरतां, आस्यां पहेंचइं अहम. ४

॥ ढाल ॥ देशी - झूंबखडानी छे ॥

एकविध जिनआज्ञाकरा, द्विविध धर्म बतलाय, सुगण गुरु माहरा,
तीन तत्व आराधका, गतिदुख दूर पलाय. सुगण..... १
पंचमगतिना साधक, षट्कायरक्षक एह, सुगण.....
सात महाभय वारता, अष्टमदचूरक जेह. सुगण..... २
नववाडिं ब्रह्मव्रत धरइं, दशविध धर्म अणगार, सुगण.....
इग्यार अंग वखाणतां, जाणइं उपांग गुरु बार. सुगण..... ३
तेरह काठीआ जीपता, चौदविद्यागुणजांण, सुगण.....
पन्नर भेद जाणे सिद्धनां, सोल कषाय-अजांण. सुगण..... ४
सतरभेद पूजाविधि, सीलांग सहस अढार, सुगण.....
ओगणीस दोष जे काउसग्गना, वीसथानकतप आधार. सुगण..... ५
एकवीस गुण श्रावक तणा, बावीस परीसह जीति, सुगण.....
त्रेवीस अध्ययन सूगडांगना, जांणता गुरु सुविनीत्ति. सुगण..... ६

चोवीस तीर्थकर तणी, आणा धारक एह, सुगण...
पंचवीस भावना भावित, छव्वीस दशा-कल्प आराधक जेह. सुगण... ७
सत्तावीस गुण साधना, जांणइं गुरु गछराज, सुगण.....
अठावीस लब्धिभर्या, ओगणत्रीस पापश्रुत निवारो राजि. सुगण..... ८
त्रीस दोष महामोहना, सिद्धगुण कह्या एकत्रीस, सुगण.....
बत्रीस लक्षणें अलंकर्या, श्रीगुरु विश्वावीस. सुगण..... ९
तेत्रीस महा आशातना-वर्जित श्रीगुरुअंग, सुगण.....
चोत्रीस अतिशयसहित जे, तीर्थकरस्युं रंग. सुगण..... १०
पांत्रीस वांणी गुण भर्या, जिनजीनी आज्ञापाल, सुगण.....
छत्रीस सूरिगुणें करी, सकलजंतुप्रतिपाल. सुगण..... ११
इत्यादिक आदिं करी, एकशत उपमा एक, सुगण.....
विराजमानं मुझ गुरु अछें, अभिनव जास विवेक. सुगण..... १२
इंम प्रथम तीर्थकर ऋषभजी, चरम तीर्थकर वीर, सुगण.....
कोडाकोडि सागरतणुं, अंतर जांणे धीर. सुगण..... १३
एक मुखे एक जीभथी, गुण वर्ण्या किम जाय, सुगण.....
शुभ उपमा जे जे अछइं, ते ते गुरु अंगइं थाय. सुगण..... १४

दूहा : श्रीपूज्यजी जातिसंपूर्ण छे, कुल बल संपन्न रूप,
विनय नांण दंसणधरा, चारित्त तपना भूप. १
ओजस्वी तेजस्वी छे, वर्चस्वी जसवंत,
जित क्रोध मानं माया मदा, समरथ साहसवंत. २
परिसहफोज जीती जिणें, क्रोधादिक दहवट्ट,
कल्याणसागरगुरु गछधणी, नांमइं सदा गहगट्ट. ३
॥ ढाल ३ ॥ इणि पुर कंबल कोई न लेसी - ए देशी ॥
श्रीगुरुगुण कहो केता कहीइं, कहतां कहतां पार न लहीइं,
तपमां प्रधानं विद्यामां प्रधानं, चरणकमल(करण)मां गुरु सावधानं. १
श्रीगुरुजी ज्ञातसर्वपुराण, वादीविजयलक्ष्मीना शरण,
वादीगजशार्दूलिकसीह, सकल पंडितमां श्रीगुरु लीह. २
वादीकदलीतरुइं कृपांण, निर्जितसकल-अनेकभूभांण,
वादीगोधूमदलनधरट्ट, निर्जित गुरुजीइं वादीमरट्ट. ३

वादीवदनतरु केरो भंजन, सकलभूपतिनो श्रीगुरु रंजन,
 वादीकाष्ठभंजनकुदाल, सरणागतजंतुप्रतिपाल. ४
 वादीरावणनिग्रहरांम, वादीविषशंकर अभिरांम,
 वादीनभतारामां चंद्र, वादीपर्वतशिक्षांद्र. ५
 कुमतिमति जडना छो पाडक, पाखंडमतना छो निर्धाटक,
 कलिकालें गोयमअवतार, शुद्धपंथ देखाडणहार. ६
 भविक जननें आनंददाता, श्रीगुरु भवसंकटना त्राता,
 भविकने रत्नत्रयदायक, श्रीगुरु गुरुआणाआराधक. ७
 मिथ्यामतिना खंडणहार, जैनी सकलक्रिया कोठार,
 छ लाख छत्रीस सहस सूत्रपारगामी, भवभवभ्रमणाना पारयांमी. ८
 व्याकर्ण रघुवंशकाव्य कुमार, नैषध तर्क पाणिनीय अलंकार,
 काव्य छंद ज्योतिषनइं न्याय, अभ्यासी छो श्रीगुरुराय. ९
 स्वसमय परसमय तणां अभ्यासी, निश्चय व्यवहारइ सुविलासी,
 षड्भंगीना श्रीगुरु जाण, सप्तभंगीमां गुरुजी प्रमांण. १०
 सकल जगजंतु हितधारी, भविकजन मन आनंदकारी,
 ईश्वर मांडंबिक कौटंबिक, सेवा सारइं भविजन भाविक. ११
 धन्य तेह श्रावक ने श्राविका, पूज्यदेशना सांभलें भाविका,
 पोसह पडिकमणां नितु करस्यें, अमृतमय वांणी सांभलस्यें. १२
 श्रीपूज्य समस्तजीवहितकारी, परमगुरु वली परउपगारी,
 भविकजन मन आनंदआगर, सकलजीवना करुणासागर. १३
 परमसनेही जंगमतीर्थ, सहगुरुजी छो परमगीतार्थ,
 पंडितजन ललाटचूडामणि, तपतेजइं कायम जिम दिनमणि. १४
 किं बहुना गुण केता कहीइं, कहतां कहतां पार न लहीइं,
 वाचा सत्य युधिष्ठिरनी परि, चातुर्यविज्ञानें करी विदुर. १५

काव्यम् : असितगिरिसम(मं) स्यात्०॥ ॥१॥

दूहा : गयणंगण कागल करूं०॥ २
 हइडा ते किम वीसरे०॥ ३

गाहा : चित्तं तुह पासत्थं०॥ ॥४॥

श्लोक : यथा स्मरन्ति(ति) गा(गौः) वत्सं०॥ ॥५॥

काव्यम् : नित्यं ब्रह्म यथा स्मरन्ति मुनयो०॥ ॥६॥

दूहा : वीसार्या नवि वीसरें, समर्या चित्त न माय,
 ते श्रीपूज्य किम वीसरें, जे विण घडी न जाय ॥७॥
 किहां चंदा किहां कुमुदवन०॥ ॥८॥

श्लोक : केकी स्मरेत् यथा मेघं०॥ ॥९॥

धन्योऽयं गौर्जरो देशो, धन्यास्ते गौ(गु)र्जरोद्भवाः ।

ये नित्यं पूज्यपादाब्ज-भृङ्गवल्लीनमानसाः ॥१०॥

सूरयो भूरयः सन्ति०॥ ॥११॥

त्वन्नामनागमन्त्रोऽयं, यदि स्यात् कर्णगोचरः ।

क्रोधादिविषसङ्कीर्ण, किं स्यादेतज्जगत्त्रयम् ॥१२॥

दूहा : इत्यादिक षट्त्रिंशद्, गुण विराजमानं गुरुनांम,
 तपगच्छरूप ज मेदिनी, कल्पवृक्ष उपमांन. १३
 गच्छधार गच्छमेढि सम, देवमांहिं जिम इंद्र,
 पर्वमांहि पर्यूषणा, जिम तारामां चंद्र. १४
 तिम सकलगच्छसिरोमणी, सागरगच्छप्रसीद्ध,
 लक्ष्मीसागरसूरिपटधणी, नांम थकी नवनिधि. १५
 परउपगारी परमगुरु, श्रीश्री एकशत एक,
 कल्याणसागरसूरिचरणकज, प्रणमीजइ सुविवेक. १६

॥ अथ अत्रत्यश्रीसंघनाम ॥ ढाल ॥ देशी - विच्छिआनी छें ॥

हां रे लाला लिखितं नोरंगाबादथी, चरणसेवक दासानुदास रे लाला,
 तुम पायकमल नितु प्रणमतां, श्रीसंघनी पोहचइं आस रे लाला लिखितं...१
 हां रे लाला सा० खीमचंद मानसिंघ तणो, गुरु प्रणमें बिहुं करजोडी रे लाला,
 प्रेमु सा० तस पुत्र वली, हीराचंद ताराचंद जोडी रे लाला लिखितं....२
 हारे साह सौभाग्यचंद जेठातणो, गुरुने वांदइं विनयथी तेम रे लाला,
 नितु शास्त्र सुणइं सुभ चित्तथी, खीमचंद बंधव तस प्रेम रे लाला लिखितं....३
 हां रे लाला विजयसिंघ विमलदासनो, कांई धरमना कार्यमांहिं धोरी रे लाला,
 गुरुनइ वांदइं अधिक विवेकथी, पुत्र मलूक माणिक्यचंद जोडी रे लाला...४

हां रे लाला धामी वीरचंद जांणीइं, गुरुनइं वांदइं विनयथी सार रे लाला,
लखमीचंद जीवणदासनो, श्रीसंघनो करय कारभार रे लाला लिखितं..... ५
हां रे लाला साह अमीचंद नेमीदासनो, सदा दीसइं रंगरंगीलो रे लाला,
दोसी जेसिंगजी सामीदास ते, पालइ नितु धर्मनो चीलो रे लाला लिखितं.....६
हां रे लाला साह नाहना वली जांणीइं, वासी छे शेषपुरानो रे लाला
अमाईदास भूला तिम वली, वासी जेह छें सोझितरानो रे लाला लिखितं.....७
श्लोक : सा० श्रीनिहालचन्द्राहवाः(वा), जयन्तु व्यवहारी राट् ।

त्रिकालप्रणतिस्तस्य, र(अ)वधार्या गुरुत्तम! ॥१॥

सा०श्रीखुशालचन्द्रस्य, देवचन्द्रस्य चाऽऽत्मजः ।

भावभक्तिभरान्नूनं, प्रणौमि गुरुसत्तमम् ॥२॥

सा०श्रीमाणिकचन्द्रस्य, तनूजो मल्लूनामतः ।

त्रिकरणशुद्धभावे[न], वन्देऽहं भावपूर्वकम् ॥३॥

साहश्रीगोडीदासोऽपि, कृताञ्जलिपुटः स्फुटः ।

धर्मकार्यधुरीणोऽसौ, गुरुं वन्दति सादरम् ॥४॥

पूर्व ढाल :

हां रे लाला **नीमाज्ञातिमां** जांणीइं, सा० अमरसी नें रायचंद रे लाला,
शांतिदास वली इंद्रजी, गुरुनें प्रणमिं सा०अमीचंद रे लाला लिखितं...८
हां रे लाला इत्यादिक सकल श्रीसंघनी, त्रिकाल प्रणति अवधारो रे लाला,
श्रीसंघ जुए तुहम वाटडी, परमपूज्यजी इहां पधारो रे लाला लिखितं.....९
हां रे लाला जिनयात्रा इहां रूअडी, श्री**ऋषभदेव** दयाल रे लाला,
शांतिकरण **श्रीशांतिजी**, **नेमि पासमूरति** विशाल रे लाला लिखितं.... १०
हां रे लाला यात्रा कारण उद्दिशी, पाउंधारो गुरु गछराज रे लाला,
संघमनोरथ जिम फलइं, तिम मलइ मनइच्छित काज रे लाला लिखितं.... ११
हां रे लाला श्रीजीइं मांनीइ वीनती, श्रीसंघमनोरथ फलीया रे लाला,
बे कर जोडी कवि कहइं, गुरु भाग्यतणा बहु बलीया रे लाला लिखितं... १२
॥ दूहा ॥ सोरठी ॥

श्रीसंघ वीनती एह, मानो तुहमो गुरु गछधणी,
कर जोडीने नेह, वंदइं छइं सह को गुणी. १

यद्यपि तिहांनां क्षेत्र, साचववा तुमनें हस्यइं,
तथापि पुन्यपवित्र, दीठाथी सहुको हस्यइं. २

॥ ढाल ॥ देशी - बिंदलीनी छइं ॥

अपरं समाचार एक, तुहमो प्रीछ्यो गुरु सुविवेक हो श्रीगुरु जयवंता,
जयवंता गुरु ज्ञानी, कांइं दांनी ध्यांनी मांनी हो श्रीगुरु जयवंता. १
गुरुआदेशथी आव्या, कांइं श्रीसंघनें मनि भाव्या हो श्रीगुरु जयवंता,
गीतारथ गुणवंता, कांइं खंता दंता मतिमंता हो श्रीगुरु..... २
गीतारथ गुण तेहवा, श्रीपूज्य छो श्रीगुरु जेहवा हो श्रीगुरु.....
गीतारथ गुणभारी, जाउं श्रीगुरुनी बलिहारी हो श्रीगुरु..... ३
उपाध्याय श्रीसुजयसौभाग्य, वंदीजे पूरणभाग्य हो श्रीगुरु....
जयसागर गणि संगइं, आव्या छें मनि रंगइ हो श्रीगुरु.... ४
लघुशिष्य **रणछेड** साथइं, गुरुनें प्रणमिं जोडी बे हाथइ हो श्रीगुरु.....
तथा **हस्तिसागर मुनिसागर** तेहु, तत्रथी प्रणमिं गुणआगर हो श्रीगुरु.... ५
पूज्य आदेशथी अत्र, आव्या श्रीगुरुजी पवित्र हो श्रीगुरु....
धर्मकार्यना लाहा, संघें कीधा अधिक उछाहा हो श्रीगुरु..... ६
विवरीनइं कहूं तेह, गुरु जाणवी अरजी एह हो श्रीगुरु.....
प्रथम आसाढनी पाखी, संघभक्ति सा० खीमचंद गृहे दाखी हो श्रीगुरु... ७
वदि आसाढी पर्व, सा० निहालचंद गृहे सर्व हो श्रीगुरु.....
श्रावण शुदि पाखीना पारणां, मलूकचंद-माणिक गृहे जमणां हो श्रीगुरु.... ८
हवे पर्व पजूसण भगति, विवरी कहूं छुं ते युगति हो श्रीगुरु....
प्रथम अठाई आदि, नीमा इंद्रजी गृहे सुस्वाद हो श्रीगुरु..... ९
वीरजनम संघसेवा, वीरचंद धामी गृहे मीठाई मेवा हो श्रीगुरु....
त्रीजु तेलाधरपर्व, खीमचंदगृहे भगति सर्व हो श्रीगुरु..... १०
श्रीपर्वनी संघभगति, सा० निहालचंद-खुसालचंद गृहे युगति हो श्रीगुरु....
गुरुसातिम पारणा दिवस, गोडीदास बर्हानपुरीगृहे संघ सह जीमस्यें हो
श्रीगुरु.... ११

पूजा प्रभावना सारी, घणा तप जप करे नर नारी हो श्रीगुरु....

मास पास दशम अठाई, छठ अठम करे बहु भाई हो श्रीगुरु.... १२

घणां उपधानं वहे नर नारी, श्रीजिनशासननी बलिहारी हो श्रीगुरु....
 इति श्रीपर्वअधिकार, गुरुनामइं नितु जयकार हो श्रीगुरु.... १३
 हवें भाद्रपद शुदि पाखीपारणां, सौभाग्यचंदं गृहे संघनोहतरणां हो श्रीगुरु....
 वदि पाखी एह मास, सा० निहालचंदं गृहे उल्लास हो श्रीगुरु.... १४
 आसो शुदिनी पाखी, विजयसिंघ गृहे संघसाखी हो श्रीगुरु....
 हवें दीपोत्सव पाखीना सामी, पुनरपि करै वीरचंद धामी हो श्रीगुरु.... १५
 हवें कार्तिक शुदि चोमासी, संघभगति करें निहालचंद विलासी हो श्रीगुरु....
 इत्यादिक संघसेवा, घणां पकवांन मीठांइ मेवा हो श्रीगुरु..... १६
 इति धर्मकार्य वर्णवना, हवें कहस्युं प्रस्तुत एकमना श्रीगुरु.....
 तत्र श्रीपूज्यपरिवार, तेहनें वंदना कहो निरधार हो श्रीगुरु..... १७
 दूहा : पंडितमाहिं सिरोमणी, पूज्यजी तणा प्रधानं,
 रविसागर पंडितप्रवर, कहवो संघ प्रणांम. १
 क्षीरसागर गणिवर सखर, कुशलसागर इति नांम,
 जीतसागर जीवसागर, विमल वणारसी तांम. २
 विशेषसागर तिम वली, रूपसागर प्रत्यक्ष,
 इत्यादिक परिवारनें, वंदना कहो समक्ष. ३

॥ ढाल ॥ दक्षिण दोहेलो हो राजि, अवर सोहेलो हो राजि,
 दक्षिण दोहेलो रे हेजा पांणी लागणो - ए देशी ॥
 सुगुरु सुधारो हो राजि, अरज अवधारो हो राजि,
 पूज्यजी पधारो रे दक्षिणदेशमां. १
 श्रीसंघ वीनवें हो राजि, गुरुगुण संथवें हो राजि,
 कहीइं रे निरवहीइं अरजी अम तणी. २
 धर्मनी करणी हो राजि, थास्यइं बिमणी हो राजि,
 पूज्यजी पाउंधारो मनोरथ सवि फलें. ३
 कर्णपुरामां हो राजि, पास तेवीसमा हो राजि,
 सेवइं रे प्रभु देवइं मनइछित सवें. ४
 नितु नितु अंगीआ हो राजि, नवनवी बनीयां हो राजि,
 सोहइं रे मन मोहइं भविजन भावथी. ५

संघ सहु आवें हो राजि, आनंद पावे हो राजि,
 वधावें प्रभुजीने मुगताफलें. ६
 मनु भव लाधा हो राजि, फल ए साधो हो राजि,
 वाधो रे गुणठाणें टाणें एहवें. ७
 पार्श्व दयाल हो राजि, मूरति विशाल हो राजि,
 प्रणमुं रे कर जोडी गोडीपासनें. ८
 प्रभुजी मीठा हो राजि, आज में दीठा हो राजि,
 नीठां रे भवभवनां पातिक आजथी. ९

अथात्रत्य संघकृत महाराष्ट्रदेश्यभाषायां पार्श्वप्रभुगीतम्, तद्यथा ॥ राग - सारिंग ॥

माझा जीउ पासूसी लागला, लागला लागला लागला, माझा जी.....
 दासांची आसू पासू पूरीता, त्यांचे पायां मी लागला. १ माझा जी.....
 स्वामीची आता सुनजरि झाली, भाग्य अमीचा जागला, माझा जी.....
 अमची गोष्टि बरें आता झाली, दुसमन दूरि पलायला. २ माझा जी.....
 वामापौर्या जय जग मौर्या, चंदन ज्यु जिन सीयला, माझा जी.....
 तुमचे पाया पद प्रणमीता, सुजयसौभाग्य निरमल कला. ३ माझा जी.....

॥ राग - धन्यासी ॥

संभार्या में श्रीगुरु गुरुगुण गायवा रे,
 आपद अटवी संकट निकट न आवही रे, भय थाइं चकचूर,
 मंगलमाला लछि विसाला पांमीइं रे, दिन दिन चढतइं नूर. १ संभार्या में....
 ऋद्धि सिद्धि समृद्धि बहु पामीइं रे, मनइछित सुखभोग,
 कीरतिकमला विमला तेहनी विस्तरिं रे, आयति मुगतिनो योग. २ संभार्या में....
 लेख लख्यो में श्रीगुरु तुम भणी रे, वांचज्यो मननइं कोडि,
 श्रीसंघवीनती दिलमां धारवी रे, कहीइं बिहुं करजोडि. ३ संभार्या में....
 वलतो उत्तर पाछो पाठवी रे, संघनइं करवो आनंद,
 किं बहुना वली घणुं घणुं स्युं लखुं रे, गुरुमुख शिवसुखकंद. ४ संभार्या में....
 संवत सत्तरसें नेऊ (१७९०) जांणीइं रे, पोस वदि पाखी प्रमाण,
 बे कर जोडी श्रीसंघ वीनवइं रे, गुरुमुख दीठइं कल्याण. ५ संभार्या में....

कांइ अधिक न्यूनता लिखतां में लिख्युं रे, श्रीसंघसाखि जेह,
कांनो मातर अधिको जो थयो रे, मिच्छा दुक्कड तेह. ६ संभार्या में....
इंद्र चंद्र रवि प्रतपें जिहां लगें रे, द्रूने तारे तेज,
सहगुरु प्रतपो तिहां लार्गि गछधणी रे, कहीइं आंणी हेज. ७ संभार्या में....

काव्यम् : सङ्घोऽयं गुणरत्नरोहणगिरिः सङ्घस्स _ _ _ _ ,
सङ्घोऽयं प्रबलप्रतापतरणिः सङ्घो महामङ्गलम् ।
सङ्घोऽभीप्सितदानकल्पविटपी सङ्घो गुरुभ्यो गुरुः,
सङ्घः सर्वजिनाधिराजमहितः सङ्घश्चिरं नन्दतात् ॥१॥
एला यत्र दया क्षमा च लवली सत्यं लविङ्गं परं,
कारुण्यं क्रमुकीफलानि विदितशूर्णं सतत्त्वोदयः ।
कर्पूरं मुनिदानं _ _ मगुणं शीलं सुपत्रोच्चयः,
गृह्णीध्वं गुणकृज्जनैर्निगदितं ताम्बूलमेतज्जय ॥

* * *

(२८)

सुरतना श्रीसंघतो राजपुर - श्रीलक्ष्मीसागरसूरिजीने उद्देशीने विज्ञप्तिपत्र

प्रस्तुत पत्र राजपुरमां बिराजमान लक्ष्मीसागरसूरिजीने उद्देशीने सुरतना श्रीसङ्घ द्वारा मोकलायो छे । पत्रनी शरुआतनां ५३ पद्यो संस्कृत भाषामां छे. पछीनो बाकीनो थोडो भाग गुर्जरभाषामां. शरुआतना संस्कृतनां २८ पद्योमां अनुक्रमे आदीश्वर, सम्भव, सुमति, शान्ति, पार्श्व तथा वीर एम छ जिनेने नमस्कार करवापूर्वक तेमनां लांछन अंगेनी केटलीक कल्पनाओ आलेखाई छे । बाकीनां पद्योमां यथाक्रम जिनालय, उपाश्रय, साधु, श्रावक-श्राविका, सङ्घ, राज्यप्रासाद, नदी, नगरना तोरण, नागरिक लोक, नगरसमृद्धि विगेरे वर्णनो रज्जु करायां छे । त्यार पछीना पत्रांशमां जाणे गुर्जरपत्रालेखन शरु करवा मंगलाचरणरूपे संस्कृत ३ पद्यो अपाया छे । पछी पांच जिनेश्वरोने वंदन करी राजपुरनी वर्णना, त्यार पछी सूरिगुणवर्णनानुं गद्य आलेखेल जोवा मळे छे । सूरिदर्शनोत्कण्ठाना अन्य विज्ञप्तिपत्र जेवां ज पद्यो पछी मळतो सूरिजीना माता, पिता, ज्ञाती, गच्छाधिपपददाता विगेरे ऐतिहासिक माहितीओनो उल्लेख विशेष महत्त्वपूर्ण छे । श्रीसङ्घनी सुरत पधारवा अंगेनी विनन्ति आलेखता पत्रमां उल्लेखित नामो सुरतना इतिहासनी कडीरूप कही शकाय । श्रीसङ्घमां थयेल चातुर्मासिक आराधनाना वर्णननी, व्याख्यान-पारणा-प्रभावनादिनी झीणामां झीणी नोंध श्रीसङ्घे पत्रमां आलेखी छे जे सूरिजी प्रत्येनो सङ्घनो आदरभाव सूचवे छे । 'राजसागरसूरिजीनी सातिमना पारणा' आ पङ्क्ति ते वखतना कोई सूरिजीना प्रभाव अंगेनो उल्लेख कही शकाय । पत्रान्ते फरी पूज्यश्रीने वधारवा विनन्ति करी सुरत बिराजमान मुनिवृन्दना गुणोनी अनुमोदना पूर्वक पूज्यश्रीना सहवर्ति मुनिवृन्दने वन्दना जणावे छे ।

*

स्वस्तिश्रीः श्रयति स्म यं जिनपतिं त्रैलोक्यलोकाधिपं,
 कृष्णं कृष्णतनुद्युतिं जलनिधौ स(श)य्येकसंस्थायिनम् ।
 गोपस्त्रि(स्त्री)षु रतिं पुराणपुरुषं सत्यं यशः श्रेयसे,
 भूयान् नाभिनरेशवंशगगनप्रद्योतनाभः प्रभुः ॥१॥
 सत्सौरभेयः सुतरां सिषेवे, यमङ्कदम्भात् कमनीयमूर्तिम् ।
 किमीश्वरं रौद्रमेवक्षे(क्ष्य) दक्षो, भीत्या प्रपेदेऽभयदं शरण्यम् ॥२॥
 अयं त्रिलोकीशरयं(णं) गिरीशः(ः), स्थानु(णु)स्वरूपोऽयमतीयरूपः(ः) ?
 त्यक्त्वा विमृश्येति वृषः(ः) किमीशं, निषेवतेऽयं किल लक्ष्मलक्ष्मात् ॥३॥
 निरन्तरं यच्चरणारविन्दः(न्द)-सेवाविधानात् पशुरप्यनड्वान् ।
 जातः स्वजातिष्वखिलेषु मुख्यो, धुरीणतां प्राप च विश्वविश्वे ॥४॥
 निरापरा प्तं, नरस्य यानत्वमितीव वक्तुम् ।
 तुरङ्गमो यच्चरणारविन्दं लक्ष्मच्छला ति स्म भक्त्या ॥५॥
 वदन्ति मे दुष्टजिनः स्वसाम्यं, कथं प्रबुद्धया(द्धा ?) इति[तीव] वक्तुम् ।
 शिश्राय यत्पादयुगाम्बुजन्मः(न्म), लक्ष्मच्छलाद् भक्तिवशेन तार्क्ष्यः ॥६॥
 समग्रकल्याणमुखे प्रभाते, कथं न मां वर्णवयन्ति(?) विज्ञाः ? ।
 इतीव वक्तुं तुरगं सिषेवे, यदंहिलक्ष्मच्छलतः प्रमोदात् ॥७॥
 युगत्रये सौख्यविधापनत्वात्, श्रीशन्तयः सतती(?) शान्तिनाथम् ।
 सान्वर्थनामा नमिमः(ः) स्वबुद्धया, जानाम्यहं निर्मितदेवसेवम् ॥८॥
 सिंहादयो च्छन्ति(?) कथं मदीय-जात्याः(?) स्वया(जा)तीयमृगानितीव ।
 वक्तुं यदियांहियुग(गं) प्रपेदे, मृगः पदाङ्कच्छलतः पुराणः ॥९॥
 कुरङ्गसञ्ज्ञां प्रथमप्रसिद्धां, स्वकामपाकर्तुमिव प्रपेदे ।
 श्रीविश्वसेनावनिनाथय(ज)स्य, यस्य प्रभोः(ः) पादयुगं मृगोऽयम् ॥१०॥
 औपम्यतो द्वे नयने मदीये, कथं ह्रीं(हृ)ते (?) भीरुनितम्बिनीभिः ।
 इतीव वक्तुं किमु यत्पदाब्जं, वातायुरङ्कस्य मिषात् सिषेवे ॥११॥
 यस्यांही(हि)सेवातिशयाः(ः) कुरङ्गाभिधां प्रतीतां प्रथमां विहाय ।
 सारङ्गताप्राप्त -----, वातायुरिच्छन्निजजाती(ति)कीति[म्] ॥१२॥
 देवाधिदेवं --- निकामं, श्रीपार्श्वनाथं फलवर्द्धिनाथम् ।
 गायन्ति रम्यो गुरुणा ---, -----भव्यत(न) शः(ः) सदैव ॥१३॥

पुर(रे)पुरा श्रीफलवर्द्धिनाम्नि, श्रीपा[र्श्वनाथं] प्रगटीचकार ।
 यथा हि शङ्खेश्वरपार्श्वनाथ(थं)?, [शङ्खेश्वरः पार्श्वजिनाश्च(धि) राजः(जम्) ॥१४॥
 देशेऽखिलेऽस्मिन् मरुमण्डलेऽस्मिन्, जागर्ति ज(य)स्योऽनुपमः प्रतापः ।
 काले कलौ जङ्गमकामकुम्भः, भव्यो(व्ये)च्छितार्थप्रविधानदक्षः ॥१५॥
 यद्दृष्टिपि(पी)पूषरसातिसङ्गा-न्नागोऽपि नागाधिपती(ति)त्वमापः(प) ।
 स्पशे(शें)ऽपि लप्स(?)रसानुभावात्(द्), लोहोत्तमत्वं पि यथाऽऽशु लोहः(ः) ॥१६॥
 द्विजिह्वताह्व(ह्वा) वचनीयता मे, सहस्रजिह्वस्य कथं कथायाम् ।
 इति(ती)व विज्ञप्ती(प्ति)कृते कृतज्ञो-ऽयमेष शेषोऽङ्कमिषात् सिषेवे ॥१७॥
 कर्पूर-कालागु(ग)रु-यक्षकर्दम-श्रीखण्ड-काश्मि(श्मी)रजगन्धधूलीभी(भिः) ।
 सदाद्रितागस्य तु यस्य सेवया, भोगीन्द्रतां प्राप फणि(णी) यथास्थिताम् ॥१८॥
 गाम्भीर्य-धैर्यादिगुणेन धीशः, विनिर्जितैः सप्तमहासमुद्रैः ।
 स्फुरत्प्रभाः किं मणयः फणानां, मिषेण सेवा विधिनेव ढौकित्ता ॥१९॥
 जिनेन जे(ये)न प्रभुणा स्वमूर्ध्नि, धृता फणा भक्तजनस्य दातुम् ।
 स्फुट [स्फटानां] कपटेन लोकः(क), साम्राज्यलक्ष्मीः किमु सप्तसङ्ख्या ॥२०॥
 यत्र ----- वचः सुधाभिः, भृतस्य माधुर्यगुणं ग्रहीतुम् ।
 पातालकुण्डानि कि-नि, नव स्फुरत्स्कारफटामिषेण ॥२१॥
 संवि(वी)क्ष्य यस्य स्त्रि(त्रि)जगत्प्रसिद्धं, जिनस्य दक्षोऽङ्कमिषेण नागः ।
 शुश्रूयते--प्रयोग(ज)युग्मं, नागाधिपत्य(त्यं) किमवाप्तुमेव ॥२२॥
 स्मरन्सदा पूर्वभवोपकारं, नागाभिधो लक्ष्ममिषेण यस्य ।
 निषेवते पादयुगं कृतज्ञो, छत्रायमाणः(ः) स्वफणावलीभिः ॥२३॥
 छायापदार्थः किल भावरूपः, प्ररूपितो जैनमते हि युक्तः ।
 यच्छाय(या)च्छादितमानुषाणां, न दुष्य (दुःख)दौर्गत्यरुजः स्पृशन्ति ॥२४॥
 कैवल्यलक्ष्मीकरपीडनाय, यवाङ्कुरः(र) श्रेणिरियं विधात्रा ।
 फणामी(मि)षेणेव समुल्लसन्ति(न्ती), संस्थापिता मूर्ध्नि ज(जि)नस्य शस्या ॥२५॥
 श्रीअश्वसेननरनायकवंशचूडा-रत्नोपमं सकलकामितपारिजातम् ।
 श्री----मभिवन्द्यसुरेन्द्रवन्द्यं, गाम्भीर्यधैर्यवरवीर्यगुणेन--- ॥२६॥
 श्रीमन्महावीर इति प्रतीतं, नामाऽपि सान्वर्थमवैमिय- ।
 पद्मा(दा)म्बुजे लाञ्छनसंस्थितो यत्, यवा(पञ्चाननो)ननो नो भवतीह भीत्यै ॥२७॥

--क्षराणां श्रवणं विना वने, मया हता प्राणिगणा अ(ह्य)नेके ।
शि[श्राय] तत्पातकवारणाय, सिंहो यदि(दं)ही किल लाञ्छनच्छलात् ॥२८॥

पद्माकरं यन्नगरं निरिक्षः (रीक्ष्य), प्रासादपङ्क्तिप्रविराजमानम् ।
पद्माकरे(र) प्रोद्गतपुण्डरीकः(क)-पङ्क्ति(ः) किमेषेती(ति) वदन्ति विज्ञाः ॥३२॥
विचक्षणानां यत्र जिनेश्वराणां, गृहाणि दृष्टे(ष्ट्वे)ति वितर्कयन्ति ।
नृणां प्रतीराप्तिकृते भवाब्धौ, क्रि(क्री)तानि नूनं वहनानि धात्र्या ॥३३॥
यत्यालये यत्र पुरे निरिक्ष(रीक्ष्य), स्तम्भान् स्वचित्ते कवयो विचारम् ।
कुर्वन्ति किं निर्वृतिमा....., निश्रेणि..... विहिता विधात्रा ॥३४॥

॥ इति ति(ती)र्थङ्करस्तू(स्तु)तिः ॥

सुसाधवो यत्र तपस्क्रिया[भि]-ध[र्ध]ना(त्रा)नगरं स्मृतिमानयन्ति ।
लब्धाश्च बुद्धवरवज्रसूरि, --हानगारं गुरुभक्तियुक्ता(ः) ॥३५॥
श्रुता चतुःषष्टिमिता जिनोक्ता-विन्द्रा पुरे यत्र सहस्रसः(शः) किम् ? ।
श्रद्धालुलोकान् प्रविलोक्य दक्षा, विलोक(तर्क)यन्तीति हृदि स्वबुद्धाः(द्धा) ॥३६॥
राजिमति(ती)-चन्दनबालिका वा, ब्राह्मी-कलावत्यति(पि) जानकी किम् ? ।
साध्वीवच्चा(चा)रित्रपवित्रगात्रं, समि(मी)क्ष्य यत्र ---प्रवि(वी)णाः ॥३७॥
दानादिपुण्यार्थकृते सुराङ्गना(ः), दिवं विरत्या रहितं विहाय च ।
किमस्तिकायां(णां) मिषतः समागता(ः), यस्मिन्पुरे धर्मनिबद्धचित्ता(ः) ॥३८॥
यत्राङ्गनानां मिषतः सुपर्व-गृहात् सुमेयुः सुरयोषितः किम् ? ।
त्रिकालविन्मन्दिरधोरणि(णी)नां, नमस्क्रियार्थं सुमनुष्यलोके ॥३९॥
एकातपत्रं किल यत्र राज्यं, विधि(धी)यमाने प्रगटप्रतापे ।
श्रीजैनधर्मे प्रशमप्रधान(ने), [न मोह]चौरो लभते प्रवेशम् ॥४०॥
श्रेयांससाम्यं ददतेऽतिदानात्, [सच्छील]साम्यं च सुदर्शनेन ।
दृढव्रतत्वेन च कामदेव-साम्यं जना यत्र पुरे [वहन्ति] ॥४१॥
शून्यत्वसञ्ज्ञो गगनस्य दोषो, निराकृतो यन्नगरे प्रतीते ।
ती (?) भूमीशधनेश्वराणां, नभः स्पृशद्भी(द्भि)व(र्व)रमन्दिरौघैः ॥४२॥
पयोधिपुत्रि(त्री) च विरञ्जिता, जन्मप्रभूतां रिपुतां विहाय ।
परस्परं यत्र पुरे सदैव, विद्वेषभावे वशतस्तु चित्रम् ॥४३॥

प्रतोलिका दुर्गवरे निरि(री)क्ष(क्ष्य), करोति मेधाविगणो विचार(रम्) ।
द्वाराणि यत्राऽऽगमनस्य लक्ष्म्या, दिग्भ्यश्चतुर्भ्यः किमु पत्तनेद्रे(न्द्रे) ॥४४॥
समुद्रकानाव्यपदेशतः किं, जि(ज)नौघपावित्र(त्र्य)कृते समागात् ।
गङ्गेव यस्मिन्नगरे सतोया, विशुद्धतत्त्वत्रितयी लोके ॥४५॥
बुद्ध्या गुरून् श्री -----, निरामयान् वि(वी)क्ष्य जनान् नी(नि)राशाः ।
सीदन्ति विद्यागमतत्त्वदक्षा, यस्मिन्पुरे वैद्यगणा नितान्तम् ॥४६॥
भू--- योषित्गुणभूषणेषु, गृहे गृहे यत्र सुवर्णराशिः ।
वितर्कयन्तीति विलोक्य दक्षाः, पुरी सुराद्रे(ः) किमुपत्ति... ? ॥४७॥
जिनार्चना-सद्गुरुसेवनादि, यत्राऽस्तिकियं किल क----- ।
दशा तदीय स्पृहए(यै)व मन्ये(?), स्वर्गस्थिताः स्वर्गगणा विनिद्राः ॥४८॥
करग्रहः शुद्धविवाहलग्ने, गलग्रह(ः) कूपतटस्थकुम्भे ।
हठग्रहः स्वीकृतधर्मकृत्ये, नाऽन्यत्र यत्रोदयिपुण्यलोके ॥४९॥
दनानि धर्मं किल निष्कलङ्कं, समाचर(न्) यत्र य(ज)नो नितान्तम् ।
नित्यं चतुर्थारकवर्णिकां किं, प्रकाशयत्यन्यथरागतानाम् (?) ॥५०॥
-ता सहस्रांसुकरे विवाहे, करग्रहो लक्ष्मविभावरिसं (?) ।
श्यामद्युतिः(ति)ध्वा(ध्वा)न्तचये जडत्वं, वृक्षे पुरे यत्र च नाऽस्ति लोके ॥५१॥
तस्मिन् गुरूणां चरणाम्बुजन्मः(न्म)-युग्मेनपूति(ती)कृतभूमि(मि)देशे ।
श्रीगुर्जराहवस्फुटनान्मिरम्ये, रमान्विति दुष्टजनः(न)प्रवेशे ॥५२॥
स्पु(फु)रन् मनोहारविहारसारन्(रात्), विशिष्टवंशियजनैरुदारान्(त्) ।
गुर्जरदेशैकशिरोवतंसा(सात्), श्रीमेदिनीराजपुरावतं[सात्] ॥५३॥
स्वस्तिश्रीभू(भु)वनं मनोजवचनं त्रैलोक्यलोकावनं,
विद्यावल्लीवनं प्रहृष्टभू(भु)वनं सौभाग्यभूभावनम् ।
क्लिप्ते लोलवनं शिवाध्वजवनं श्रेयोवनीजीवनं,
पापाब्धेः पवनं भृशा निधुवनं पार्श्वं स्तुवे पावनम् ॥
स्वस्तिश्री(क्षे?)मकरं सरोरुहकरं गाम्भीर्यरत्नाकरं,
शा(श्या)माशा(श्या)मकरं जगद्दिनकरं कीर्त्याज्जि(जि)तोषाकरम् ।
ध्वस्तारातिकरं चिदास्तु(स्त)मकरं श्रीपद्मपद्माकरं,
सू(बु?)द्धाङ्गिप्रकटं समाब्धिमकरं पार्श्व(श्वं) भजे शङ्करम् ॥

श्रीमत्पार्श्वजिनस्य मूर्ध्नी(र्घ्नि) फणज्योतिर्गणो राजते,
मन्दारद्रुमपल्लवः सुरसितः शृङ्गे स्तिवङ्गे स्तितिः ।
सन्ध्याराग-वरिधि(?)—कुङ्कुमविभा-सिन्धूरपूरोपमा,
तेतार्कसिणरश्मिराशिविशदस्कारैकविद्युत्प्रभः ॥३॥

श्रीमतं श्रीमतं श्रीआदिजिनं प्रणम्य, श्रीशांतिजिनं प्रणम्य, श्रीनेमिजिनं प्रणम्य, श्रीपार्श्वजिनं प्रणम्य, श्रीमहावीरजिनं प्रणम्य । श्रीसकलदेशनगर सिरोमणि, नर-समुद्र-वापि-कुप-तडागादि-वाडि-वनखंड-आरामसुशोभिते, उपाश्रय-सार्धर्मिकजिनस्थानके, नित्योच्छ्वसंयुत न्यायप्रविणनरपतिनगरउत्तम श्रीपूज्यचरण-कमलपरागन्यासरेणुपवित्रिते श्रीमत् राजपुरे सुभस्थाने पूज्याराध्येयतमोत्तम परमपूज्यार्चनीआनि, पर[म]पूज्य, चारित्र[पात्र]चूडामणि, कुमतांधकारनभोमणि, विद्वज्जनमुकुटामणि, सरस्वतिकंठाभरण, सकलकलासंपूर्ण००० यतिधर्मना वाहरू, शुद्ध पंथना देखाडणहार, कुमतिना उत्थापक, न्यायमार्गना प्रवर्तावणहार, भविक जीवनई रत्नत्रयना दायक, श्रीगुरुआज्ञाआराधक, मिथ्यामतनिकंदक, सकलक्रियाकोठार, छलाख छत्रीससहस्र सूत्रना पारगामी, स्व-समय परसमयनां जाण, अनेक सास्त्र प्रमाण न्याय काव्य नैषध पदमान(?) कुमारसंभव-प्रमुखना जाण, तर्क शिरोरुह द्वादश चिंतामणि प्रमुख, सारस्वतादि व्याकरणना जाण, साहित्य नाटिक छंदालंकार पुराण अनेक स्व-समय पर-समयशास्त्रनें विधि निपुण छे । षट् दर्शनना ज्ञायक, श्रीमज्जिनसासनोद्योतकारक, उत्सर्गापवाद निश्चय व्यवहार कारणना जाण, अनेक देश पुरनि विषईं विहारना करणहार छे । धन्नां जे राजा राणा युवराजा इश्वर मांडवी कोडंबीक श्रेष्ठि(ष्ठि) सेनापति इश्य व्यवहारिया ज्येह श्रीपूज्यजीना चरणकमल वांछा अनईं वांदस्ये ते धिन्य । ते श्रावक धन्य ते श्राविका धन्य [जे] श्रीपूज्यजीनी नीत अमृतमय देशना शांभले, पोसह पडीक्कमणा करें, व्रत पच्चक्खाण करे, देशविरति उच्चरे, पर्युपास्ति करें । श्रीपूज्यजी समस्त जिवना हीतकारक, भविजिनि(जन) मन-आल्हादकारक, करुणासागर, महिमामेरुसमानं, धर्मभारधुरंधर समुद्रनि परें गंभीर, क्षमाभंडार, तपतेजदिवाकर, चंद्रमानी परे सौम्यवदनाकार मेरूनी परे अचल, वायुनी परे अप्रमत्त, वृषभनी परे धोरी, कुंजरनी परे सौंडीर, सींहनी परे दुर्धर, जिम कर्मने लेपें करी रहीत, तप-तेज-पूज्य तपसी, जीय कोहे जीय माणें,

विद्वज्जनसभाशृंगार, परमानंददायक, परमबांधव, परमवडभीष्ट, परमसहोदर, परमस्नेहि, पर-उपगारी, जंगमतीर्थ, पंडितजि(ज)नललाट-चूडामणी, गण-गच्छाधिपती, गच्छनायक, आसेवनाशिख्या ग्रहणाशिख्या देणहार, ज्ञानविज्ञानआगर, चतुरचातुर्यविज्ञानविदुर, वाचासत्यपणि यूधिष्ठिर, माहात्यागी, साहसीक, अनेक तप छेठे अठमादि करणहार छें । पंच महाव्रत निर्वाह धोरी, महादिदि(देदी)प्यमानं, तेजपुंज, तपसी, धर्मभार धुरंधर, वाचा अविचल, किं बहूना ।

दूहा : गयणंगण कागल करूं ॥
अम्ह हइडूं दाढिम कूली ॥
हइडा ते किम वीसरे, जेहसु घणो विचार,
घडि घडि नित सांभरे, जिम कोइल सहकार. ४
यथा स्मरन्ति गौः वत्सं० ॥
नित्यं ब्रह्म यथा स्मरन्ति मुनयो० ॥
विसार्या न वि वीसरे० ॥
केका स्मरति मेहो० ॥
गिरुआ सहेजे गुण करें, कंथ तु कारण जाण,
श्रीलक्ष्मीसागरसूरी वंदता, दिनदिन वाधें वांन. ९

कलीकालगौतमावतार, षट्त्रिंशत् गुरुगुणविराजमानं, तपगच्छमांहि दिनकरसमान, जिम देवमांहि इंद्र, तारामांहि चंद्र, गिरिमांहि मेरु, वाजित्रमां भेरी, सूत्रमांहि श्रीकल्पसूत्र, मंत्रमांहि श्रीनवकार, सुखमांहि संतोष, पर्वमांहि श्रीपज्जूसणापर्व, हस्तीमांहि ऐरावण, रत्नमांहि चिंतामणि तिम गच्छमांहि श्रीतपागच्छ तेह मांहि सूरीगुणे करी शोभित छे. पठाविता अनेक छात्र, अनाथना नाथ, धन्न ते गामागर नगर खेड कुब्बड मंडब पट्टण दोणमुह आराम सन्निवेस संबाह जि श्रीपूज्यजी सारीखा रत्न हवा । धन्न ते ओसवाल ज्ञातीय सा० हेमराज कुलदीपक, धन्न ते माता राजाबाइ कुखें श्रीपूज्यजी सरीखा रत्न हवा । धन्न श्रीवृद्धिसागरसूरी जेणे गच्छनायक पदवी आपी । सकल शास्त्रपारगामी धन्य ते राजपुर नगर जिहां पूज्यजी चौमासुं रह्या । धन्न ते श्रावक धन्न ते श्राविका जे पुज्यजीनी अमृतश्रवणी वाणी सांभलें । तथा श्रीपूज्यजीना गुण अणंत मे मुखे एक जीभे किम वर्णवाय । जो सरस्वती प्रसन्न थाय तो पणि वर्णया

न जाए । न्यायशंग्रहजाण, रागद्वेषनिवारक, सत्रुमित्रसमचित्तधारक, परउपगारी शिरोमणि, भव्य जीवनें सम्यक्त्वना दातार, परमपूज्य, परमबांधव श्रीतपागच्छाधीराज सकलभट्टारकसभाभामनिभालस्थलतिलकायमान भट्टारक श्री १०८ श्रीश्रीलक्ष्मीसागरसूरीश्वरसपरीवारान् चरणान् चरणकमलान् सदा आदेस आज्ञाकारी चरणसेवक पायरजरेणु[स]मांन, आज्ञाकारी श्रीसुरति बंदिरथि(थी) लिखितं वो० धर्मदास नेमीदास, सा० लखमीचंद अमीचंद, सा० वर्धमांन अभेराज, सा० नाहना माणिकजी, प० मानसिंघ केशव, प० झवेर लालजी, सा० गणेश वीरजी, सो० लखमीचंद रवजी, सा० कपूरचंद हीरजी, प० विजयकरण तलसी, सा० तिलकसी प्रतापसी लखमयी जोधा, सा० जयसिंघ मानसिंघ, सा० जीवण मंगल, सा० कुंअर कांहनजी सा० झवेर पनजी, सा० सोमकरण विजयकरण, प० केसव वेलजी, सा० घोला हेमचंद, सा० हेमचंद रायसिंघ, सा० हेमचंद मोहन, सा० सभाचंद कचरा, सा० लखमीचंद देवराज, सा० गलाल रूपा, सा० हीरा केशवजी, सा० चंद्रभाण विजयकरण, सा० मोहन मालजी, सा० भाणजी लवजी, सा० ताराचंद प्रेमचंद, सा० मानसिंघ भीमजी, सा० त्रिकम गामा, सा० अमरचंद रूपा, सा० सूरु सुंदर, सा० वेलजी रूपजी, सा० नाहना रूपजी, सा० नाहना सांति, सा० नाहना जयकरण, सा० वीर रतना, सा० रूपा इंद्र, सा० माणिकचंद लवजी, सा० सोभागी मोहन, सा० मंगल पासवीर, सा० सोमचंद दीपचंद, सा० हेमचंद मांका, सा० हेमा सिंघजी, सा० गोपालजी वीरजी, सा० वीर चंदमल, सा० धर्मसी तेजसी, सा० कल्याणचंद वेलजी, सा० माणकचंद दीपचंद सूरु, सा० धर्मदास मसोत, सा० लखमसी सुंदर, सा० जीवण रूपजी, सा० भवानि रामजी, सा० नथू पासवीर, सा० अमीचंद सिंघजी, सा० माणिकचंद गणेश, सा० केसवजी रहिया, सा० नाहना सामला, सा० हेमा गांगजी, सा० कीका घाना, सा० सुंद विसरांम, सा० वेणिदास लवजी, सा० गलाल कडूया, सा० मकन माणिकजी, सा० विमलरतन, सा० जीवन धर्मदास, सा० जीवण जसुं, सा० मुलजी मांगजी, सा० वीठल रहिया, सा० मंगल कल्याण, सा० प्रसोतम कीका, सा० धर्मदास रवजी, सा० भीमजी रायचंद, सा० केसव सूरुजी, सा० अभयचंद हीरचंद, सा० गांगजी नाहना, सा० कल्याणजी कडूआ, सा० हेमचंद सोमकरण, सा० गांगजी सिवगण, सा० मेघराज जयराज, सा० गलाल संतोषी, सा० त्रीकम सेवराज, सा० कडूया लखमीदाश, सा०

महिदास नागजी, सा० गोकल मेघजी, सा० ताराचंद प्रेमजी, सा० गणजी नाथा, सा० भीखा रतनजी, सा० माघव मंगल, भावसार लाला, भा० विठल, प० नरसिंघजीप्रमुख संघ समस्तनी त्रिकाल वंदना अवधारज्योजी । श्रीपूज्यजीना नांमस्मरणथी सुखशाता छें । श्रीपूज्यजीना शरीर निराबाधपणाना धर्मध्यांन समाचार लिखि सिंघनइ हर्ष करवाजी । तथा श्रीपूज्यजीना पुण्यप्रभावथी पज्जूसणपर्व महा आडंबरपूर्वक निर्विघ्नपणें थयो छे । श्रीतप छठ अठम दश दुवालस अठार प्रमुख बहू तप थयो छें । तथा सज्जाइ आचारांग सूत्र वंचाए छे । वखाणें उत्तराध्ययनसूत्र वंचाई छइं । तथा असाढ चो[मा]सानां पारणा सा० कपूरचंद हीराचंदे कराव्या छें । तथा आसाढ वदि १४ ना पोसातीनां पारणा सोनी लखमीचंद रवजीइं कराव्या छइं । तथा श्रावण सुद १४ना पोसातीनां पारणां सा० जेसंघ मानसिंघे कराव्यां छें । तथा अठाईधरनां पारणां सा० तलकसी प्रतापसीइं कराव्या छइं । तथा कल्पधरनां पारणां सा० गणेश वीरजीयें कराव्यां छइं । तथा श्रीमहावीरनुं पालणुं पटणी सा० सभाचंद कचरा साडंबर पणें लीधुं छइं । लहुडा कल्पधरनां पारणां देवराज धर्मदाश गृहे कराव्या छें । संवत्सरीनां पारणां परीख मानसिंघ केशव गृहे कराव्यां छइं । तथा अठमीया तपनां पारणां सा० मनोर मोहन, सं० दानें गृहे कराव्या छइं । श्रीराजसागरसूरीश्वरनी सातिमनां पारणां सा० रूपा सा० गोकलें कराव्या छें । तथा आसाढ चोमासाथी मांडी भाद्रवा शुदि ३ सुधि नित्ये प्रभावना थई छें । तथा संवत्सरी दिनें प्रभावना ८ थइ छइं । सातिम दिनें प्रभावना २ थइ छें । तथा बीजाइ धर्मध्यांन प्रवर्ते छइं । तथा अत्रना सिंघनें श्रीपूज्यजीना मुख दर्शन कर्यानी, श्रीपूज्यजीना चरण भेटवानी घणी ज उत्कंठा छेजी । पणि कोइक अतुली भाग्यनो उदय थासें ति वारे श्रीपूज्यजीना चरणकमल भेट्यानी इच्छा पूरी थासें । तथा श्रीपूज्यजीइ अत्रना संघ उपर कृपा करी एक वार वंदाववा पधारवुंजी । जिम संघना मनना मनोरथ सकल थाइ । अत्र पं० श्रीललितविजयजी, पं० कस्तूरविजयजी गणि, मुनि धर्मविजयजी, मुनि डुंगरविजयजी प्रमुख ठाणुं ४ अत्र श्रीपूज्यनी आज्ञां ए पधार्या संघने घणी ज साता उपनी । पन्यासजी घणुं ज पंडित छे; घणुंज वेरागी छइं, घणुं ज संवेगी छे, श्रीपूज्यजीना शिष्य जोईइ तेहवा छे । नित्ये श्रीपूज्यजीनुं नांम(मो)च्चरण करे छें । तथा महोपाध्याय श्री५श्रीप्रमोदसागर गणि, पं० रविसागर गणि, गणि कीर्त्तिसागर, गणि क्षीरसागर,

गणि कुशलसागर, मुनि जितसागरजी, मुनि जयसागर, गुणऋद्धि प्रमुख सपरी(रि)वारनें अत्रना सिंघनी वंदना अवधारवीजी। अत्रथी पुन्यासजीनी वंदना अवधारयोजी। अत्रनें चोमासें वली एहवा ज गीतार्थने आदेस आपयोजी। तत्रना देवजात्रा अवसरइ अ[त्र]ना संगने संभारयो। अत्रना देव जुहारवा पधारवुंजी। तत्र संघने जुहार कहियो।

संवत् १७७९ कार्तिक सुदि १० गुरौ।

* * *

(२९)

धनपुरथी पं. रामविजयजीने पेसकपुर विजयराजेद्धसूरिजीने पत्र

प्रस्तुत पत्र पेसकपुरनगरमां बिराजमान विजयराजेन्द्रसूरिजीने उद्देशीने कुबेरधनहेतपुर (बीकानेर?)थी पं. रामविजयजीए लख्यो छे। पत्रनी शरुआत 'स्वस्तिश्रीभवनं' श्लोक द्वारा कराई छे। त्यार पछी गद्य-पद्यबद्ध रचना द्वारा प्रेषकपुर महानगरनुं वर्णन कविए कर्युं छे। जोके काव्यनी दृष्टिए कृतिमां रसाळता ओछी छे छतां वर्णनमां मळती वस्त्र-पहेरवेशनी भिन्न-भिन्न जातिनी नोंधो, प्रभुना देदीप्यमान देदारनी विगतो, स्त्रीना शणगार अंगेनी सामग्री व. अन्य पत्रो करता अहीं विशेष आलेखाई छे। गद्यपत्रनी शरुआत सूरिजीना ३६ गुणनी वर्णना द्वारा कराई छे। त्यार पछी अन्य सामान्यगुणवर्णना कर्या बाद सूरिजीनी साथे बिराजमान पं. माणिकविजयजीने वंदना, भावचारित्रीया खूबचंद तथा कृष्णचंदने सुखशाता तेमज त्यांना तथा शिवपुरना श्रीसङ्घना श्रावकोने नामोल्लेखपूर्वक धर्मलाभ जणाववा कवि जणावे छे। त्यारबादनी पद्यविनतीमां सूरिगुणनी ऊंधा क्रमे (३६, २७, २५, २४, ९...) स्तुति कराई छे। सूरिजीना गुरु हर्षरत्नसूरिजी (तपागच्छीय)ना नामना सामान्य उल्लेख सिवाय पत्रमां अन्य कोई उल्लेख प्राप्त थतो नथी। पत्रान्ते सूरिजीना पधारतां थता उह्लासनुं वर्णन करी पोताने त्यांनी (धनपुरनी) श्राविकानी वन्दना निवेदित कराई छे.

पत्रलखाण अशुद्ध छे. यथाशक्य शुद्धीकरणनो प्रयास कर्यो छे.

शब्दार्थ

- | | |
|----------------------------------|---|
| १. वस्ताक् = वसती | ६. लेरीयां = स्त्रीओनुं गळनुं एक घरेणुं |
| २. मसरु = एक प्रकारनुं कापड | ७. पाग = पाघडी |
| ३. हेमरु = एक प्रकारनुं कापड (?) | ८. बालद = बळद |
| ४. चोल = चोकी | ९. जोडेक = जोडवुं |
| ५. चटकालीक् = चळकती | १०. करडीक = ? |

११. बरडीक् = मोटी ?
 १२. तनकीक = ?
 १३. कुरब = ?
 १४. वींछूआ = स्त्रीओनुं पगनुं घरेणुं
१५. शेलीया = कसबी वणाटनुं वस्त्र
 = शेलुं [तेना छेडे रहेली घुघरी]
 १६. काजर = काजळ
 १७. दांत = हांथीदातना आभूषणमां
 १८. अजु = ?

*

॥ ६० ॥ श्रीपरमात्माय नमः ॥

स्वस्तिश्रीभवनं मनोज्ञभवनं त्रैलोक्यलोकावनं,
 विद्यावल्लिवनं प्रहृष्टभुवनं सौभाग्यभूभावनम् ।
 क्लृप्ते(?)नौलवनं शिवाध्वजवनं श्रेयोवनिजीवनं,
 पापाब्धेः पवनं भृशा निधुवनं पार्श्वं स्तुवे पावनम् ॥१॥

स्वस्तिश्रीजिनं प्रणम्य सकलदेशश्रीशीरोमणी, वापी-कुप-तडाग-गढ-मढ-
 मिंदर-पोल-प्रकार-वाग-वाडी-वनखंड-आरामसुशोभित, प्रौढा श्रीजिनप्रासाद-
 सखरध्वजाकलसमनोहर बावनजिनाला जिनप्रासाद [सुशोभिते] ॥ श्रीजिनाय-
 धर्मेकः(?) ॥

स्वस्तिश्रीपेसूकपुर माहा सुभ सुथाने श्रीजिनधर्माय[तन] सुसोभित[ते]
 उपाश्रय-साधर्मी(मि)क-श्रीपोषघ[ध]साला सुसोभित[ते], प्रौढा आवास पर
 मंडित तत्र गिरपर्वत विराज्यमान् इभ्य श्रेष्ठी सार्थवाह वस्ती जिहां

दुहा : सरसत मात सुपसायके(से), प्रणमी सदगुरु पाय,
 गुण गावे(वुं) गिरुआ तणां, लखुं लेख चित्त लाय. १

॥ चाल - गजल ॥ पुरवर्णनम् ॥

सरसत मातकी कीजीए सेवाक्, लीजीए नांम निस-दिन गुरुदेवाक्,
पेसकपुर हि पोढाक्, दुनीयांन मांहि ज्याका जस दोढाक्. २
 गेंर-टुंक सिखर [हे] गि(गे)हराक्, जे(जि)हां **वालेसरी** देहराक्,
 वर्ण अढार जिहां वस्ताक्, राह चलत अपने कुल-रस्ताक्. ३

पोरवाडवंस [तिहां] दीपेक्, जस जगडुं भांमसा जीपेक्,
 वेपार करत वेपारीक्, अपने वस्तु अनुसारीक्. ४
 मसरुं मुखमल मस्ताक्, हेमरू^३ अतलसका तखताक्,
 चुनडी चोल^४ चटकालीक्, लेरीयां^६ पाग^७ लटकालीक्. ५
 'बालद पोठ ही ओ(जो)डेक्', भल भल ल्यावते भाडेक्,
 खजूर खारिक कोपराक्, म(मि)श्री साकर टोपराक्. ६
 आछै घतकी कुंडीक्, आवत मुख सिबीडीक्,
 आछी अमलकी ^{१०}करडीक्, बहोत ल्यावत(ते) ^{११}बरडीक्. ७

दुहा :

पेसकपुरके चोकमें, दुंदाला घण साह,
 वि(वे)पारी विवहारी वडम, वडबरूद वडवाह. ८
 पेसकपुरके चोकमां, सोनो घडे सोनार,
 घडीया घाट नोखा घडे, हद कंचनमय हार. ९
 छोगाला नर छयल, भोगी वडा नर भल,
 पेसकपुरके चोकमां, घुमत कीयां अमल. १०
 पेसकपुरके चोकमां, मलत लोक ही मस्त,
 जिनवर कुंथु जुहारवा, हलि(ली) मलि(ली) आवत मुख हस्त. ११

चाल -

दीपे जैनका देहराक्, स्वर्ग लग ज्याका छेहुराक्(शिखराक्),
 उपम प्रभू(भु) मुखकी [नी]क्, कहत नावत(ते) तनकी^{११}. १२
 प्रभू(भु) सुरतकी बलिहारीक्, उआरणा लेत हैं नर नारीक्,
 भांमंडल प्रभू(भु)को भलकेक्, सु(सू)रज ज्युं तेज[से] चलकेक्. १३
 शिरछत्र मू(मु)गट [ही] सोहेक्, बाजूबंध बेरखा मोहेक्,
 कुंडलकी छब न्यारीक्, ज्याके घूघरीयां घमकारीक्. १४
 झगमग जोत ही झलकेक्, दीपक अखंड ही बलतेक्,
 अंगीयां खु(खू)ब [ही] अरचेक्, सरस पुष्प(ष्फ) ही स(च)रचेक्. १५
 आगि अपासरा तपगछकाक्, ज्यां सूर(रि)पदकमलकलसकाक्(भेट्याक्),
 तिहां रहि(ह)त धर्मेक ध्यांनीक्, गिरुआ गुनि(णि)जि(ज)न ग्यांनीक्. १६

कुंडलीयो : पू(पु)ण्यवंत साहवे पेसू(सु)ए, रुडे चित्त वड रीत,
 दाता वड दांनि(ने)सरी, परम धरम परतीत. १
 परम धरम परतीत, कृत सुकृत आप कर देखे,
 समाइक पोसह सुद्ध, गुरुदेव ध्रम गवेषे,
 करीयावर वड कुरब^{१३} उरब जगडु भांम एसा,
 वधस्यु सुंणे वाखांण तप भाव दांनि तिसा,
 पोरवाड वंस दीपे प्रथी जेन रीत अद्यापी(पि) जूए,
 रूहाइ धुर राजे सदा पू(पु)न्यवंत साह पेसुए. १७

चाल : पेसुकपुरके चोकमां, मिलत लोक ही थोक,
 चांद्रणी चोका सुंदरी, गातां निरखे गोख. १८

गजल : चोक पेसुकपुरकाक्, ईसिं जाने इंद्रपुरकाक्,
 आगि वस्ती [हे] एतीक्, कहं [जीहे] केती केतीक्. १९
 आगि वेरावावका रस्ताक्, म(मी)लत सुंदरी जिहां मस्ताक्,
 मटली सिर पर मांडीक्, अजब उढणी साडीक्. २०
 झं(झां)झर पगमां झमकेक्, ठमक ठमक वींछू^{१४}आ ठमकेक्,
 घूघरी शैलीया घमकेक्, सुंदरी दामनीसी चमकेक्. २१
 चलकत दंतकी चूडीक्, राखडी बंधन रूडीक्,
 कांजरकी रेख [हे] कारीक्, सोनेकी रेख दंतमां भारीक्. २२
 कोट पट घुंघट कीयाक्, लटकत नथ नक उठ लीयाक्,
 हस्ती द्युमत यु हुलराक्, सती सात सातका झुलराक्. २३
 उढणी कसुंबल सारीक्, पाटली उपरां पारीक्,
 एसी सुंदर मतवारीक्, मस्तांन वावकी पनिहारीक्. २४
 अजु जीमणे कांनिक्, खु(खू)ब उंडे [हे] खाने(नी)क्,
 सिला जेसिं दरीयाक्, भुरजा चिहु दिशि भरीयाक्. २५

दुहा : पेसकपुरका (के) तालकी, सोभा कही न जाय,
 तेसी मांनसर तालकी, सोभा लही छिनमाय. २६

चाल : आगि विश्रामं ठांम वारीक्, जाइ जूई [फूल]की झारीक्,
 मरुआ मालती महकेक्, कोकिल अंब ही क(कु)हकेक्. २७

दाडिम गुल अंबीरीक्, जांबू फणस जंबीरीक्,
 करणी अरणी केतकीक्, चंबेली चंपा सेवंतीक्. २८

दु(दू)हा : पेसकपुरकी उपमा, सोभा कही न जाय,
 एसिं इंद्रलोककी उपमा, सोभा लही छिन माय. २९
 पेसुआ पावन खेत हे, तीरथमें जैम गंग,
 आढा वराजि इंद्रज्युं, दिन दिन चढते रंग. ३०

स्वस्तिश्रीकुंथुजिनं प्रणम्य । श्रीमति तत्र श्रीपेसुकपुर माहा सुभ सुथाने
 पूज्य[ज्या]राधे(ध्य)तमोत्तम, परमपूज्य अरचनीआंन्, परमगुरु, पू(पु)न्यपवित्र,
 चारित्रपात्र चूडामणी(णि), सकलभट्टारकपुरंदर, कुमताधि(तांध)कारनभोमणी(णि),
 विदुरजि(ज)नमुगटामि(म)णी(णि), सरस्वतीकंठाभरण, सकलकलासंपूर्ण
 चौदविद्यागुणजांण इत्यादिगुणगणालंकृत, विराज्यमानं००० इत्यादिक गुणें करी
 श्रीजीपूज्यजी सोभित, सरस्वतीकंठाभरण, सूरी(रि)श्री सी(शि)रोमणी(णि) धन
 ते गाम, धन ते नगर जिहां पूज्यजी विहार करें, विचरे, मासकल्प करें, चोमासु
 करें, धन्य जेहां श्रावक श्राविका श्रीपूज्यजीने वांदे, पोसह पडिकमणु करे, व्रत
 पचखांण देशव(वि)रती सर्ववर्ती उचरे । श्रीपूज्यजीनी वांणी सांभले । श्रीतपगछना
 नायक धन्य ते श्रावक श्राविका जे अमोघ अमृतमय वांणी सांभले ।
 श्रीदेवाधिदेवनी सतरभेदी पूजा करे, अष्टप्रकारी पूजा करे । श्रीपूज्यजी गुणे
 करी वे(वि)राज्यमानं, साधुमंडली सुशोभित, रागद्वेषने (नि)वारका यतः

पृथवी पट कागल करं, लेखण करं वनराय,
 सघला सायर मसी करं, तो तुम गुण लख्यो न जाय. १

दृष्टेऽद्य श्रुतकेवली गु(ग)णभृतामाद्यो गुरुगौतमः,

तीर्थस्थाधिपतिर्महागणपती(तिः) स्वामी सुधर्मा तथा ।

श्रीजम्बूप्रभवादयो मुनिवरा अन्येऽपि ये जज्ञिरे,

ते सर्वे त्वयि गच्छनायक ! विभो ! दृष्टे च दृष्टा मया ॥

कलिकालगौतमावतार, लब्धना भंडार, श्रीपूज्यजी पूज्याराधे(ध्ये)त्त-
 मोत्तम परमपूज्य, सकलभट्टारकचक्रवर्तीसभाभांम(मि)नी भालस्थलतिलकायमानं
 भट्टारक श्री००० १००८ श्रीश्रीविजयराजिंद्रसूरि(री)श्वरजी चिरंजीवी चरणकमलान्

कोडान् जुगान् श्रीगोयम श्रीसुधर्मज्युं तेज प्रताप लब्धि दिन-दिन सवाई वधोजी । स..... परिवारान् चिरंजीयात् । अत्र श्रीकुबेरधनहेतपुरांस्युं आग्याकारी सेवग, पायरजरेणु हुकमी आदेशकारी **पं. रामविजय** ल(लि)-ख(खी)तं वंदणा १००८ वार दिन प्रति अवधारवीजी । श्रीजी साहिबजीना प्रतापस्युं कुशल-खेम छे । श्रीजी साहिबजीना सेवगने कृपा करी कागद तथा वंदाववानी वीनती अवधारवीजी । श्रीजी साहिब मोटा छे, गछना छत्र, गछना मुगट, गछना तिलक, गछना दिणीयर, गछना धांम, श्रीजीसाहिबजी माहरे तो आप श्रीगुरु गोयम श्रीसुधर्मा, श्रीजंबूस्वामी समान छोजी । श्रीजी साहिबजी रा चर्णावंद रो आसरो छे । माहरे तो श्रीसूर्य समान छोजी । श्रीगछना नाइक छोजी । गछना दीपक छोजी । तत्र **पं. माण(णि)कविजयजी** वंदणा वंचाववीजी । **भावचारित्रीया** स(सि)ष्य **खुबचंद, कृष्णचंद** प्रमुख सुख-साता वंचाववीजी । श्रीजी साहिबजी श्रीदेवजात्राई संभारज्योजी । तत्र श्रावक कोठारी व्रधमान पदमसी, सुजांन राजसी, सा. केशर, सा. हीराचंद, सा. मनजी, सा. हर्षचंद, सा. नाथा, सा. जीसा, अमरसिंघ, गांधी पदमसी, सा. धनरूप, सा. भीखा, सा.हरजी, को. प्रेमा, गां.मेघजी गां. रणछोड, सा. खीमसी, सा. मानंजी, सा. रूपसी, सा. जेठानी, सा. रामंजी, समस्त बाल-गोपालनें धर्मलाभ वंचावसीजी ।

तत्र श्रीसेवपुरी संघ साहजी धनजी, सा. हेठाजी, सा. क(कि)सन-दास सदाजी, सा. विणी रामंजी, सं. गुलालचंदजी, सा. हठाजी, सा. क(कि)सनदासजी, सा. जगजी, सा. जोगीदासनि समस्त ग्रि[ह]स्तनि सू(सु)ख-स्याता धर्मलाभ वंचावसीजी । अत्रना समस्त संघ श्रावक श्राविकानी वंदणा १००८ वंचावसीजी ।

[हवे पछीनो मुडिया लिपीमां लखायेल पत्र वंचातो नथी.]

.....

अत्र समस्त श्राविकानी वंदणा वंचावसीजी ।

सदगुरु पाय प्रणमी करी, हुं तो गाऊं गछपतिराय,
मनोहर वीनती अवधारीए,
धनपुरी संघ इम वीनवे, गछपति गिरुआ गुरूराय,

चित्त धरी साहिब अवधारीए, चोमासे पधारीए,
सहगुरु चोमासे पधारीए. १

पि(पे)तीस वांणी परवडी, भाषित श्रीभगवंत मनोहर.....,
देसन स्वांमी तुम मुखै, सुणवा सहु मन खंत चित्त धरी..... २
छत्तीस गुणि सूरी(रि) शोभता, गुण सत्तावीसे महंत मनोहर.....,
भावि(व)क पंचवीस भावना, चित्त धरे चोवीस अरिहंत चित्त धरी..... ३
छत्र दशविध श्रमणना, नव वाडना धीर्य धीर मनोहर.....,
अरी स्वांमी अष्ट मदना, भय सात वड भीर चित्त धरी..... ४
छ काय रक्षक सहिगुरु, पंच माहाव्रत निरवाय मनोहर.....,
टालिक च्यार कषायना, तीन तत्व गुरुराय चित्त धरी..... ५
दीपक दोयविध धर्मना, एक श्रीजिनआणप्रतिपालक मनोहर.....,
अम पुर चोमासे पधारीए, अधिक धरी अ(उ)जमाल चित्त धरी..... ६
तपागछनायक गुणनि(नी)लो, श्रीविजयराजसूरिद मनोहर.....
पू(पु)न्यवंता सहिगुरु पूज्यजी, अविचल तपगछ(छे) ज्युं दिणंद चित्त धरी.....७
संघ सकल इम विनवि (वीनति) मांजीजे मनुहार मनोहर.....
लेख लखयो हुंसि(सी) करी, पूज्य चोमासे पधारो अविचल..... ८
दु(दू)हा : संवत अढार एकसठे (१८६१), मास असाढ मझार,
चितर लखायो चुंपस्युं, महियल धनपुर मझार. १
श्रीहर्षरत्नसूरीसरुं, तस पाट तखत राजे,
विजयराज्य(जे)दसूरीश्वरू, सहिगुरु सूरीश्वर गाजे. २

॥ अथ वीनती सज्झाय ॥

सहु मले सखी इम वि(वी)नवे ललनां, लाल हो सांभलो माहरी वांण
सहगुरु वारुं रे ललनां,
सहिगुरुमुख सुणवा देशना ललनां, लाल हो गिरुआ गुणमणिखांण सह.... १
कनकनी आपू(पु) कोटडी ललनां, लाल हो लखावो तुम लेख सह.....,
मोरनी आपू(पु) मुद्रडी ललनां, लाल हो लइ जावण तुम लेख सह..... २

भव्यजीव प्रतिबोधवा ललनां, लाल हो ए छे सहगुरु रीत सह.....,
 सुणवा सही गुरुदेशनां ललनां, लाल हो ए छे सार्धमिक रीत सह..... ३
 वेग(गे) आवे वधामणि(णी) ललनां, लाल हो आणंद होवे अपार सह.....,
 हरखनो आपू(पु) हारलो ललनां, लाल हो मू(मु)क्ताफल मनुहार सह.... ४
 सहिगुरु आवंता मि(मे) सुण्यां ललनां, लाल हो आज हूआ अ(उ)जमाल सह....
 चालो सहि(हे)ल्यां सहू मली ललनां, लाल हो लीजे मोती सोवन फूलां(ल)थाल
 सह.... ५
 चोक मंगली(लि)क साथीयो ललनां, लाल हो वधावे बहू नर-नार सह.....,
 संघ सहू इम वीनवे ललनां, लाल हो ए छे सयल संघ मनुहार सह..... ६
 जेसैं चातुक चंद चकोरसैं ललनां, लाल हो लागो पूरण नेह सह.....,
 तिसो श्रावके सहिगुरु ललनां, लाल हो जांणे मयुरा मनमां मेह सह..... ७
 वीनतडी अवधारीए ललनां, लाल हो **विजयराजिंद्रसूरीश्वर** राय सह.....,
 पूज्य चोमासे पधारीए ललनां, लाल हो गुणवंता गुरुराय सह..... ८

॥ इति सञ्ज्ञाय ॥

समस्त श्राविकानी वंदणा वंचावसीजी । बा. श्रा. अजवादे, श्रा.
 राजकुदे, श्रा. गांगलीदे, श्रा. दीपादे, श्रा. प्रेमकुअर, श्रा. जांमादे, श्रा. रुपकुमार,
 श्रा. जीवादे, श्रा. बिनकुअर, श्रा. लखमादे, श्रा. हरादे, श्रा. चर्मदृष्टि, श्रा.
 अजबादे, [श्रा.] अमरकुअर, श्रा. राजलदे, श्रा. जीफादे, श्रा. कल्याणदे, श्रा.
 हरखादे, श्रा. वजादे, [श्रा.]प(पा)नकुअर, श्रा. लखमादे, श्रा. अणदादे, श्रा.
 दिलकुअर, श्रा. जतनादे, श्रा. गलादे, श्रा. अमरादे, श्रा. कल्याणदे, श्रा. शदादे,
 श्रा. सजाणदे, श्रा. सूजादे, श्रा. देवकुअर, श्रा. जीवादे, श्रा. गांगलदे, श्रा.
 लाधादे, श्रा. जोयतादे, श्रा. स्तादे, श्रा. गलादे, श्रा. प्रेमकुअर, गाम मांडवारावाला
 सा. भीमा भार्या श्रा. रामादे, श्रा. जलादे, श्रा. पदमादे, श्रा. धनादे, श्रा. वखतादे
 समस्त श्राविकानी वं. १०८ अवधारवीजी । श्रीजी साहिबजी चोमासे पधारीज्योजी ।
 १८५९ असाठ वद ११.

* * *

(३०)

मालवणथी अणहिल्लपुर पं. रत्नविजयजीने पत्र

मालवणथी अणहिल्लपुर(पाटण)मां बिराजमान पं. रत्नविजयजी गणीने
 उद्देशीने सं. १८४९मां प्रस्तुतपत्र लखायो छे. कर्ता अज्ञात छे. छातां पत्रनी शैली
 उपरथी पं. रत्नविजयजी गणि पत्रलेखकना गुरुभाई के परममित्र हशे, एवं
 अनुमान थाय छे. कृति नानी छे. एमांय वळी 'गोरख कुलमें वासना, नयणा
 आडा डुंगरा' जेवां अन्य कविनी रचनानां पद्यो अहीं उद्धरायां होइ मूळ कृतिना
 भारमां घटाडो करे छे. कृति एकंदरे सरळ छे, परन्तु कविने 'दांणा-पाणी को
 जोर है' आ पदथी शृं अभिप्रेत छे ते अमने समजातुं नथी.

*

॥ ॐ ॥ स्वस्तिश्री अणह(हि)ल्लपुरे, महा शुभ स्थानं पवित्त,
 परम पूज्य परमेष्ट तुं, नमो [उ]त्तम शुचरित्त. १
 परम हितदायक सदा, लायक नायक खास,
 हीतकर प्रितिपात्र तुं, सब गुण-कलानिवास. २
 मनमोहन आनंद तुं, मनवल्लभ विश्राम,
 मुझ मनमंदिर तुं वस्यो, तुं मुझ आतमरांम. ३
 सकलसयणशिरोमणी, सकल गुणलंकृतगात,
 कुमतांधकारनभौमणी, अखिलोपमा रही ख्यात. ४
 गौरखकुलमें वासना, अणघड रहयो सुजात,
 संभुप्याला पेखतां, प्रगटे साते धात. ५
 चिरंजीवी रहो तुं सदा, जब लग मेरूगीरींद,
 ससी-रवी-धृतारी लगें, लीला करियो मुनंद. ६
 तातश्री शुभ योग्य जे, **मालवणमें** मनोहार,
 परउपगारी गुणनीलो, **चंद्रप्रभु** सुखकार. ७
 जास प्रताप गुणआगलो, सुंदर अद्भुत वान,
 तास कृपाथी हूं लखूं, प्रेमपत्र सुखखान. ८

दरीसण कीजे देवनुं, याद करीजे मीत, वीनय करीनें वंदता, जे-जेकारी नीत.	९
आद अक्षरथी जाणज्यो, ए हमचो सुख-चेंन, इष्टकृपाथी नितु रहें, आनंदित जिउ नेंन.	१०
तुम सुखपत्र आव्ये थकें, उपनो मन अल्हाद, पूनः पत्र देवा भणी, लखज्यो करीनें याद.	११
लखवा कारण एह छें, प्रीछज्यो सुगुणं निधान, समाचार अधीके सदा, केहज्यो वधते वांन.	१२
नित्यानंद होस्यें घणो, फत्ते सदा जयसिंह , वंदना कहीओ प्रेमसुं, सतअठे निसदीह.	१३
इष्टदेवस्मरण सदा, पूजा-भक्ति विशेष, दीप-धूप-फल-फूलनी, सावधांनी हंमेस.	१४
चतुर सनेही गुंणभर्यो, रांम नांम सुखवास, आदे कहीओ प्रेमसुं, कुसल-खेम उल्लास.	१५
नयणा आडा डुंगरा, मन आडुं नही कोय, सजन तणो मेलावडो, पुंन्य विना नवि होय.	१६
सजन यूं मत जांनीयो, विछुरे प्रीत घटाय, बीमणो वाधे सजनो, ओछो होय पलाय.	१७
कागद को लिखवो किसो, कागद लोकाचार, जे(ते) दीन सफलो जानसुं, मीलसुं बांहि पसार.	१८
सुगुंण सनेही मीत्त छे, गुंणसायर गुंणजांण, प्रांण सदा तुममें रहें, केते करुं वखांण.	१९
अपरं लख्या कारण ए छे जे भाइजीथी अंतरभाव थयो छे.	

दांणा-पांणीको जोर हें, मुखसें कहयो न जाय, दैवगती के भावसुं, जोरें मीलेसुं आय.	२०
पत्र तुमारा तीन जे, आय पहोच्या हम पास, पूनः पत्र लखी भेजज्यो, बहूलों प्रेम नीवास.	२१
ग्रहे(ह)वै(द)सी(सि)द्धीचंद्र(थी), भाद्रव सुकलेआस, तेरे(रसें) मंगलवास(र)में, करज्यो लीलविलास.	२२
श्रेयोस्तुः ॥श्रीः ॥	

॥ पूज्याः ॥ सकलसजनोत्तमशिरोरत्नायमान । पोलीइं उपाश्रे । आराध्य
पं० रत्नविजयगणि । पत्र १ श्रीपट्ट(त्त)न्(न) नयरे ठावो (?) पोहचे ॥

* * *

(३१)

त्रिकुटनगरमां बिराजमान गणितयनसुखजीने पत्र

पार्श्वनाथ प्रभुने पत्रनी आदिमां नमस्कार करी गणिवर्य नयनसुखजीने प्रस्तुत पत्र त्रिकुटनगरमां लखायो छे । पत्र अपूर्ण होवाथी ते क्यांथी लखायो छे ते जाणी शकातुं नथी । पत्रनी भाषा हिन्दी छे । रचनानी दृष्टिए पत्र खूब रसाळ छे । कविनी प्रवाहित शैली पत्रमां स्पष्ट जणाय आवे छे । त्रिकुटनगरनी वर्णना पछी त्यांनी प्रजाना स्वभावने कविए सुन्दर रीते आलेख्यो छे । नगरनुं वर्णन तयार पछीना ३ चोपाइ छन्दमां रजु करी गणपतिना गुणवैभवेने कविए चौपाइ अने सोरठ छन्दमां प्ररूप्यो छे । सूर्य अने चन्द्र करतांय गणिवर गुणथी चढियाता छे तेवी कल्पनाने १७ थी ३२ नां पद्योमां वर्णवी अन्य पण उपमा घटावता हशे, पण त्यां ज ३७मा पद्यथी ज पत्र खण्डित थयो छे ।

पत्रनी रचना कोणे करी छे ते अंगे काव्यमां कशी ज नोंध मळती नथी. पण कर्ता गणिवर्यश्रीना शिष्य होय एवं वधु सम्भवित छे.

*

श्रीजिन-विद्यमाननयणसुखगुरुभ्यो नमः ॥

श्रीसेतुंजाय नमः ॥

दोहा : स्वस्ति श्री श्रीपासजिण, पय प्रणमउ सुखकंद,
लिखउ पत्र गनिराजकउं, जिम पामउं आनंद. १
इस ही जंबूदीपमइ, भरतखेत सुप्रसिद्ध,
नगर त्रिकुट तिह सही, वसइ लोक सुसमृद्ध. २

चौपई : तिह पुरि वसै सवै सुरग्याता, लहि विवेक वै सुभमतिराता,
तजि कुसंग सुभसंगति करही, पापपंथ छिनु पग न धरही. ३
सुनहि सदा सुभ वेद पुराना, या ते परमार्थ परजाना,
पर-उपकार करनकउं सूरा, बुद्धिनिधानउ बहुगुनपूरा. ४
देश देशने मगन आवहि, जो चिंतवइ सोई फल पावइ,
जिह पीछइ भए जगहत्थदानी, अवस वदीसै परम विनानी. ५

दोहा : जिहि पुरि अैसे जन वसै, दान-मांसु विख्यात,
धर्मरूप भगवंतको, भजन करइं दिन राति. ६

चौपई : हिव पुरकी छवि पिखियत एसी, ज(ध)नकुबेरकी अलका तइसी,
जाकर भवन अतहि उजीयारे, गचकलित ललित चउवारे. ७
जिह महि वसहि रसहि वर कामनि, घनघन मोकौं धहि जनु दामिनी,
भरत संगीत नृत्य विधे भारे, पिखियत सुंदर कहू अखारे. ८
जाकै निकटि गंगकी वहनी, नदी सतलुद्ध कोटि अघदहनी,
नर नारी तह मज्जन करही, केलिकलाप ताप सब हरही. ९

सोरठो : ऐसो नगर अनूप, जाकी उपम न ऊर कुइ,
वसै जहां जनभूप, कहलउ तसु छवि वर्णीइये. १०

चौपई : ऐसो नगर जानि सुखरासा, तह कीना गणपति चउमासा,
आसा सब जीवनकी पूरन, नाम लेइ अघ हुइ हइ चूरन. ११
कर्मफंध जिनि सकल विदारे, जिन ते जीव लहत दुख भारे,
ज्ञानवंतऊ महंत मुनीसर, कामदहनकों दूजो जनु ईसर. १२
विषयविकार टारि सुख पायो, जाको नाम जगति बहु गायो,
मोहसैन जिनि सकल निवारी, दुखभंजन रंजन उपगारी. १३

सोरठो : चितु लायो सुभ ध्यानि, ज्ञानवंत सुमहंत,
अति मोकौ दीजइ दान, कृपा आपनी देवजी. १४

चौपई : कृपानिधान नाम हइ तेरो, जाक रहै सब जग यह चरो,
दयाधर्म बहु प्रतिपालै, जिनवरको मार्ग सदा निहालै. १५
लब्धिवंतरु हइ बडभागी, गनधर गोतम सम वैरागी,
बालवैस जिनि संयम लीनो, याते मनु जिनमग-रंगभीनो. १६

दोहा : धर्मध्यानि मनु लायकै, अघ कीने सब मंद,
ताते उपमा देत है, कोविद कवि जिस चंद. १७

चौपई : दोखाकर उह नाम भणीजइ, ओर कलंकी सदा गणीजइ,
मित्रपति जउ उदइ धरेइ, अरु कुवलैवनकउं दुख देई. १८

खीरसमुद्रनंदन उह कहीयइ, याते विरहनकौ तनु दहीयइ,
हालाहलको बंधव सोई, ताते मरत वियोगी जोई. १९
दिनि पिखियत पात पलासा, रयनि अमावसि रहत न मासा,
राहु ग्रसत नितु प्रति छवि वाकी, ताते उपमा न लहइ हु याकी. २०

दोहा : इते अवगुन जासु तनि, सो कहियत कविचंद,
ताकी उपमा किउं न लहइ, इहु मुनिवर कवि मंद. २१

चौपाई : इहु मुनिवर सब दोष निवारै, निःकलंक अघ अंक उतारै,
निज मित्रनकउं हइ सुखदाता, देइ कुवलैवनको सुखसाता. २२
ब्रह्मवंस उत्तम जगि भणीयइ, यांकी उतपति तामै गणीयै,
विषै विषम विष नाश करेइ, याते निज सेवक सुख देई. २३
जाकी जोति रयनि दिनि सूची, याते हइ पदवी इस ऊची,
कुमति राहु नहि आवइ नेरइ . ----- २४

दोहा : जिहि सरीरि ए गुन रहै, तिह सरक उकति चंद,
ताते उपमा भानुकी, कहत जासु कविंद. २५

चौपाई : सूर्य दाघ तापकौ करता, अरु कुमदिनिके सब सुखकों हर्ता,
कश्यपपिता जास कर कहीयइ, जाक उपंग सारथी सहीयइ. २६
सूर्यजोति घटइ सब तनकी, जव ही आइ फिरै छवि घनकी,
रयनि आइ जव जगमइ प्रगटइ, तव रविजोति न कह्यै मटकइ. २७
जगमै सीतमास जव आवै, तव वह तेज रहन नहि पावै,
जगत प्रगास करनकउ सूर, तउ पणि उपम लहै नहि सूर. २८

दोहा : सूरज उपमा न पावई, इते अवगुण जाणि,
कहु कविजन किउं दीजीयइ, इहु मुनिवर गुणखाणि. २९

चौपाई : पहु भव-तपति-हरन हइ स्वामी, तृष्णादाघहरन सिवकामी,
कुमदिनिखिमा-उदयकौ कारन, कल्याणमल्लवंस उद्धारण. ३०
धर्मसारथी जाकर जाणउ, करत विहार सदा मनि भाणउ,
वादीमेघ जिम मिलि गरजइ, तउ पणि याकी जोति न लइजइ. ३१
रयनि दिवसि प्रभु एकहि सरीखा, ज्ञानप्रकास सदा यह परिखा,

कुमतिसीततेजें नर कांपइ, तिनको अचल अमरपद थापइ. ३२

सोरठो : एसो है मुनिसूर सूर, जासं सम सरि नही,
ताकी उपमा कूर, कवियण देत मुनिंदको. ३३

चौपाई : इक चिंतामणिअ कइ कुबेरा, कइ कल्पद्रुम कइ घनघेरा,
कामधेन पय रतनागर, इन हूंतइ तइ आगर है वैराग. ३४
रामदास-कुलि कलस विराजइ, जाकी उपम उर नहि छाजै,
मांथै हाथ दीयो हंसराजस्वामि, नवनिध लहीयइ जाकै नामि. ३५
मुख देखते आनंद लहीयइ, ताते श्रीनयनसुखजी कहियइ,
चिंतामणि मुख जे उपगारी, याकी सरानि देखु निहारी. ३६

दोहा : मन की तृष्णा सब हरइ, दुख दारिद्र हुइ चूर,
कहलउ ताकों वणीयइ, हइव.....

[अहींथी स्क्रोलमानो १ टुकडो घटे छे । पछी पाछळनी बाजुनो लेख-]

...रीव्र० ८ कउला व्र० ८ खिमो व्र०८ धर्मका उद्योत बहुत भया तव
प्रसा[दा]त् । प्रभुजी हम्हारी त्रिकाल वंदना, खिमावणा पखी, अष्टमी राइ-
दिवसाकी, चउमासीकी, छमछरीकी वाचणी १०००००००००८ घडी २ पल २,
भुजो २ हम्हि तुम्हारे चरणकमलोकै प्रसादि बहुत सुखी है सही । भगवंत तुम्हारी
चिरजीव करो कोटिपर्यंत तुम्हि हम्हारे छत्रपति हहु । तुम्ह हम्हारे जिनदेव सम
तुल्लि हहु । हम्हकों आशा इन्ह चरणकमलोकै ही है । सही अत्रकी
समिग्रहाकी वंदना वाचणी, बाल गोपालाकी वंदना वाचणी । तत्र समिग्रहा
योग्य धर्मध्यान कहणा नाम लेई लेई सही

मिती भाद्रो शुदि १०

२४ पत्री श्रीश्रीश्रीश्रीपूज्यआचार्ययोग्यदेवणी सही

* * *

(३२)

सा. श्रीपुण्यश्रीजीने पालीताणाथी श्राविकानो पत्र

प्रस्तुत विज्ञप्तिपत्र सा० श्रीपुण्यश्रीने उद्देशीने पालीताणाथी श्राविकाए सांवत्सरिक खामणारूपे लख्यो छे. प्राप्त थता अन्य पत्रोमां साध्वीजी पर लखाएल आ प्रथम पत्र छे. साध्वीजी पर पत्र लखायो होइ साधुपदना २७ गुण अनुसार २७ गुणोनी वर्णना करी कविए गुरुपदेशनी नोंध करता नवतत्त्वनी विचारणा पछीनां पद्योमां करी छे. पत्रान्ते फरी गुरुगुणवर्णनना भावो गुंथी सा. पुण्यश्री तेमज तेमना परिवारने वन्दनापूर्वक खामणां लखी पत्र पूर्ण करेल छे.

शब्दार्थ

- | | |
|------------------------------------|-------------------|
| १. सो = सउ - सहु | ५. थान = स्थान |
| २. परिसा = परिसह | ६. धुनी = ध्वनि |
| ३. तोय = तमने | ७. रुचावे = गमाडे |
| ४. तज समान = स्वमान - गर्व त्यजी ? | |

*

..... सुहाय,
श्रीचिंतामण पासको, चेत नमुं चित्त लाय. १
आदिजिनेसर आदिदेव, चरन नमुं जिन वीर,
चवदसे बावन भला, प्रणमुं पा(ता)स वजीर. २
स्वस्ति श्रीसोभित सदा, सकल देस-सीरदार,
शुभ सुथान सर्व उपमा, वर्णन सहित विचार. ३
नगर अतहि रत्न, जतन करत कूटवाल,
सुखेज राज करे तिहां, सिरदारसिंह भूपाल. ४
चेतनवंत सो^१ जीव हे, जाने एक प्रकार,
दुविध धर्म उपदेशता, तिन तत्त्व कही सार. ५

जिता चार कषा[यने],,
छ कायनी [अ]भय दीया, सात..... ६
मद जीत्या आंठें अधम, ब्रह्मगुप्त नव धार,
दसविध धर्म जतीतणों, तेहना पालनहार. ७
इग्यारे प्रतिमा कहो, बारे व्रतविस्तार,
विघ्न काठिया तेरमा, ते पिण भाखो सार. ८
चउदह गुणठांणा तणा, भाव कहो अणपार,
सिद्धभेद पनरे कहो, आगमनें अनुसार. ९
सोल कला ससि(सी)लिंगना, जानो अरथ विचार,
..... १०

.....,
उगणवीस काउसग्गना, दोसण टालणहार. ११
जीव छकाय तणी दया, पालो वीसवावीस,
जाणो छो श्रावक तणां, उत्तम गुण एकवीस. १२
बावीस परिसा^२ जीतवा, तजी राग अरु रीस,
इंद्री पांच तणां विसय, वस कीधा तेवीस. १३
आणा जीन चोवीसनी, सिर धारो निसदीस,
भावो पंचवीस भावना, तोय^३ नमाऊं सीस. १४
छवीस भेद वि[व]हारना, जेहना जाणणहार,
गुण सत्तावीस साधुतणा, तेह धरो निरधार. १५

सकलगुणगरिष्ठान्, बुधजनवरिष्ठान्, चारुचारित्रपात्र, निरमलगात्र,
सरस्वतीकंठआभरण, पंडितमंडलीशृंगारहार, औदार्य-धी(धै)र्य-माधा(धु)र्यादि
गुणालंकृत, सर्वावसरसावधानं, बहुबुद्धिनिधानं, चारित्रपात्रचूडामणी, कुमतां-
धकारनभोमणी, सांत-दांत-महांत-औदार्य-धैर्य-माधुर्यादिगुणालंकृता, कलीकाल-
गौतमावतार, परम-विवेकी, खीमावंत, दयावंत, सीलवंत, संतोषवंत, इंद्रीदमवंत,
जीयकोपे, जीयमाणे, जीयमाये, [जीयलोभे]

पारस प्रभु नमी प्रेमसुं, धरम तास मन धार,
 विन्य(ज्ञ) सुगुरुकुं वीनति, आवस्यक तु(उ)र धार. १
 स्वस्तिश्री सुभ थान जै, जिहां वसै अनगार,
 वसे धन्य जे लोक, सुणे सिद्धांतविचार. २
 तज समान^० विसेष लही, ए जिनआगमसार,
 कुल अरु संगत केड हुइ, निरपख लय नय च्यार. ३
 श्रावक जन सत धर्मको, उद्यम करे अपार,
 तत्त्वभेद लहे नवनको, दुह पख शदय विचार. ४
 स्व-पर व्यवसायात्मिक, सम्यक ज्ञान प्रमाण,
 इक ध्ये(द्वे) चउ षट् अष्ट सत, नवततभेदे सुहेजांण. ५
 निज गुणा भुलो परहि-गुण राच रयो हुकाल,
 ता साधनकी चाह तिह, पावे गुरु परभाव. ६
 चेतनता प्रतिपक्ष पुन, जोडी अनादि स्वभाव,
 पुन्य पाप सुभ यसुभफल, दोहु करतलखाद. ७
 आश्रव कारन ताहिको, जान करै जो रोक,
 निज साधन कारन ग्रहै, संवरतत्त्वविलोक. ८
 पुरब कतहु री करन, तत्त्व निरजरा कन,
 सत अठ बंधै ते सम्यक्, बंध कर्यो परवीन. ९
 पूरण निरजरणे करी, तत्त्वमोक्ष कहै तेह,
 पुण्य पाप फल बंधे, कैता ते सप्त कहेव. १०
 ए नव तत्त्व गुरु पासे ग्रही, अरु साधै इकतान,
 भेदग्यान साधन भलौ, साधौ ते सिवथांन^०. ११
 ए सब गुन गुरुयोगतै, पावै पुन्यपवित्र,
 ता ते भविजन नित करे, गुरुसेवा इक चित्त. १२
 सवावीस गुण शोभता, कहां सोवरण करे[य],
 हंस नाग मुख सहेसथी, करत न आवे छेय. १३

सोभे गुणसिंहासने, समतारसभंडार,
 पर-परणीत परीहरणकुं, धरे रमण चित्त धाइ(र). १४
 मधुर धुंनी दै देसना, करवा पर उपगार,
 संजम निरवान समय, लही निरदोस आहार. १५
 पाले पंचाचार पुन्य, टाले च्यार कसाय,
 सत्य पक्ष झाले सही, वारे विषय विचार. १६
 संजम दुसण एकविध, दोय राग कहु दूर,
 तीन तत्त्व ग्रही केहस्यो, चो कसाय जल पूर. १७
 पाले महाव्रत पंचकु, षट काया रिछपाल,
 तजी सत भय अठ मद हरण, पृहल गुप्ती नव जाल. १८
 जतीधर्म [द]सवीध धर्यो, अंग इग्यार प्रवीण,
 द्वादशविध तप साध करी, तेर काठीया पीण. १९
 गुणठाणा चउदै तणौ, अरथ सवे मन लाय,
 पनरवे सुध सिर धात, उपसम सोल कषाय. २०
 संजम सतरे भेदे ग्रही, सीलंग सहस्रअठार,
 धोरी छे तिण रथ तणा, धर्म चलावणहार. २१
 उगणीस ज्ञाताअंगमांन, धर्मकथा कहनार,
 वीस गुण असमाधिना, ते सब टालणहार. २२
 श्रावक इकवीस गुण, हिवे(दे) रुचावै^० तेह,
 बावीसह परिसह करण, तेवीस विषय तजेह. २३
 रे तीरथपती चोवीसकी, आणा पालणहार,
 भावे पंचवीस भावना, समर समरण विचार. २४
 भेद छवीसे कलपना, जाणे सब व्यापार,
 आतमतत्त्व सगवीस गुण, अरथ करै विचार. २५

इत्यादिक गुण करी अतीही सोभीत नीजगुणसाज जे श्रीश्रीश्रीश्रीश्री
 १००८ श्रीश्रीश्री पूनमश्रीजी महाराज, श्रीरतनश्रीजी, श्रीकनकश्रीजी, श्रीफथेश्रीजी,

श्रीहुलासश्रीजी, श्रीहरकश्रीजी, ठाणा १७ सुविराजमान छै । जोग्य पालीताणासु लिखतु हेमचंदारा दादीजी नथमलजीरा भुजीका खमत-खामणा प्रतीकमणो छमछडी कर मास तेर, पक्ष छावीस, दी(दि)न ३९० जो कोई मास तेर, पक्ष छावीस तीन देवसी प्रतीक्रम करके चोरासी लाख जीवाजुणने खमाया है । आपने खमाया है ।

और सोमराज गुलेछारी वंदणा तथा खमतखामणा घणे घणे मानसु करके वंचानाजी ।

* * *

(३३)

वालोचरपुरी-श्रीसङ्गतो

भगवतीजी-सूत्रवांचनती अनुमोदना करवा माटेनो पत्र

प्रस्तुत पत्र सं.१९७९मां वालोचर (बालुचर, बंगाल)पुरीना श्रीसङ्गमां चातुर्मास दरम्यान रतनविजयजी द्वारा व्याख्यानमां भगवतीजी सूत्र वंचायानी जाण माटेनो छे. श्रावक प्रतापसिंहजीनी पुत्रवधूनी भगवतीजी सूत्रनुं श्रवण करवानी इच्छथी गुरुभगवन्त पासे सांभळवा (व्याख्यानमां वांचवा) ते आगमसूत्र केवा बहुमानभाव साथे लई जवायुं तेनो सुन्दर चितार प्रस्तुत पत्रमां जोवा मळे छे. वळी गर्जारव करता मेघ जेवी (गम्भीर) वाणी द्वारा गुरुभगवन्तना मुखे ज्यारे सूत्र वंचायुं त्यारे शुं थयुं ? ते कल्पनानी एक कडी पण अद्भुत छे. 'रजत हेमना' पद्य द्वारा आगमसूत्रनी द्रव्यपूजा अंगे करेली नोंध श्रुतभक्तिनुं सुन्दर उदाहरण छे.

*

॥ ॐ नत्वा : स्वस्तिश्री गुणयुत सदा, जगपति जिनवरदेव,
चरणकमलयुग तेहना, प्रणमी तज अहमेव. १
पत्री शुचिअवदातकी, वांचत मिलत आमोद,
विधिपूर्वक आगे हिवे, लिखसुं अधिक विनोद.२
पावनदिशि पूरवधरा, देशसकलशिरताज,
बंगदेश रलीयामणो, जिहा विचरें जिनराज. ३
ता विच सहरशिरोमणी, श्रीमकसूदावाद,
तेहमा वालोचरपुरी, उत्तम अधिक आबाद. ४
जिनधर्मी दृढसमकिती, श्रावककुलशिरदार,
सुखी निरंतर जिहां वसै, विनय-विवेकी सार. ५
डूंगरसिंह प्रतापयुत, लछमीपति सुखकार,
धनपति अरु छत्रसिंहकी, वारंवार जुहार. ६

तत्र श्री..... नगरे, सबही श्रीसंघजोग, वांचज्यो आदर करी, साधर्मी सहु लोग.	७
अप्रं च इक समंचार हें, परम पुनीत श्रीकार, वांचत ही अनुमोदना, करज्यो साहूकार.	८
परउपगारी परमगुरू, परतख परमदयाल, परमेशरकी भगतिमें, अहनिशि रहत खुस्याल.	९
नही तवक्का कोइका, नही किसीमें राग, नही कोईसें द्वेष हे, नही किणहीसें लाग.	१०
अैसे गुणगणधर मुनि, रतनविजय महाराज, विचरत भूमंडल विषें, आये इहां विराज.	११
तव श्रीसंघ सरव मिली, कीध महोच्छव सार, अति आडंबर हर्षसें, ल्याये नगर मझार.	१२
धनपतिदत्त भवन विषें, वर्तमान चोउमास, मुनिवर ठायों हर्षसें, जाने सकल जहांन.	१३
प्रतापसिंहजीकी वधू, परम सुशीला जेह, आण्यो मनमें भाव अति, रोमांचित करि देह.	१४
सुपुं शास्त्र में भगवती, जिम होय पावन गात्र, भविकजीव निसतारवा, मुनि आये गुणपात्र.	१५
शुभदिन शुभमहरत-घडी, गजपर छत्र धरंत, धवल-मंगल गावे सधव, उज्जल चमर ढलंत.	१६
गाजा-वाजा वाजते, खलकलोककी साख, दसूं दिशा प्रगटी छटा, जनमुख जय-जय भाख.	१७
इणविधि विधिपूर्वक करी, पंचमांगजी सूत्र, ल्याये मुनिवर पासमें, धर्मवंतके पुत्र.	१८
संवत् नारदमेदनी-ग्रंहगोत्रां जयकार, श्रावण वदि तृतीया शशी, सरू भयो अधिकार.	१९

वांणी प्रगटी गुरुमुखें, जिम जलधर गाजंत, भविकमोर सुणि उलसते, पापतिमिर भाजंत.	२०
रजत-हेमना देवकुसुम, मुक्ताफल बहुमोल, नित प्रति चढत हे सूत्र पर, जैसें जलधिकल्लोल.	२१
विवाहपन्नती सूत्रनी इणविध वचत हे अत्र, तुम श्रीसंघ इह वांचिनें, अनुमोदज्यो थे तत्र.	२२

॥ इति पत्रम् ॥

* * *

(३४)

कंकोतरीस्वरूप विज्ञप्तिपत्र - १

श्री । प्रस्तुत पत्र पत्र रूपे नहीं परंतु आमन्त्रण रूपे लखायेल कंकुपत्री छे । तारंगागढथी श्रावकोए पालीताणा पू० मुनिराज कीर्त्तिविजयजीने उद्देशीने पाठवी छे । पत्रीनी शरुआतनो थोडो अंश अन्य विज्ञप्तिपत्रोनी जेम विशेषणो द्वारा मुनिगुण-निरूपणमां रोकायो छे । त्यार पछीना लेखमां तारंगाना श्रावकोनी साथे अन्य जे जे महाजनोए पूज्यश्रीने प्रतिष्ठा प्रसङ्गे पधारवा विनती करी छे तेमनां नामो अने प्रतिष्ठा दिन, वारनी विगत लखायेल छे, ऐतिहासिक दृष्टिए तारंगा अंगेनी आ नोंध घणी महत्त्वनी छे । जो के नन्दीश्वरजी द्वीपना चोमुख पर क्यां अने कोनी प्रतिष्ठा कराई ? तेनी अहीं कशी माहिती नथी । छता संवत् १८८० ना मागसर महिने पत्री लखाई छे ते परथी ते ज वर्षना महा महिने प्रतिष्ठा करवानी हशे एटलुं तो चोक्कस कही शकाय ।

*

स्वस्त श्रीपालीतणा श्रीआदीजीन प्रणमः । श्रीपारश्वजीन प्रणमः ।

श्रीपालीताणा महा शुभ शथाने पुजाराधे सर्व ऊपमा लायक, अेक वीध अंशजीमना टालणहार, दोअ वीध [धरम]ना परूपणहार, त्रेण ततवना जाण, चार कषाअना जीपक, पंच महावरतना पालणहार, पंच सुमतें सुमता, त्रेण गुपतें गुपता, साधुना सतावीश गुणे करी शोभीत श्रीजीनशासन ऊदोत करणहार, रतनत्रईना उपदेशक, अेम अनेक गुणे करी लाअक मुनीजी श्रीश्रीश्री५कीरतीवीजेजी तथा शाधुशमस्त परीवार चरण(णां)न चरणकमलांण श्रीतारंगाजी घडथकी सा० दोस्त वसीधर वांछा तथा दोसी रूपचंद वसीधर तथा देवो आतमरांमलानी तथा मेता जेठा मुंना तथा श्रीवडनगरनुं महाजीन तथा श्रीघडवाडानुं महाजीन तथा गांम सीपोरनु माहाजीननी वंदणा वार १०८ करी अवधारजोजी । जत श्रीनंदीश्वरधीपना चोमख परनी परतीसटानु मुहरत महा शुद ५, वार सुकर नरधारुं छे । ते उपर श्रीसंघ शमस्त सर्वने तेडीने वहला पधारजोजी । तमो आवे श्रीजीनशासननी शोभा घणी वधसे ।

सवत् १८८० मागसर वद ११ ल० शेवक आगनाकारी, पाअरजीरेणु-शंमान जेचंदनी वंदणा वार १०८ अवधारजोजी ॥

* * *

(३५)

कंकोतरीस्वरूप विज्ञप्तिपत्र - २

आ पत्रने पण आपणे कंकुपत्री ज कहीशुं । अमदावादथी शेट वखतचंद खुशालचंदे सा० श्रीमाणेकश्रीजी गणिनीने उद्देशीने पाटणनगरे आ पत्री मोकली छे । पत्रीनी शरुआतना लेखमां संघ यात्रा-प्रयाण अंगेना मुहूर्त अंगेनी जाण करी शेट साध्वीजी भगवन्तने सङ्गमां पधारवा जणावे छे । त्यार पछी 'संघनुं कारणारु हु बनसे' आ पडिक्त द्वारा पोताना काढेला सङ्गमां साध्वीजी भगवन्त पधारे ज एम जणाववा द्वारा साध्वीजी माटेनो पोतानो आदर भाव व्यक्त कर्यो छे । बीजुं ते वखते तीर्थयात्रा माटे लेवाता मुंडका वेराथी थता जात्राना अन्तरायने दूर करवा पोते १ वर्षनी दुस्तुरी भरी लोको परनो वेरो माफ वराव्यो छे, आ वात जणाववा द्वारा शेट मुंडका सम्बन्धी प्रश्ननुं जाणे साध्वीजी भगवन्तने निराकरण जणावता होय एम लागे छे । वळी सिद्धाचलजी पर पोते करावेला देरासरनी प्रतिष्ठा वखते पण साध्वीजी हाजर रहे तेवी भावना तेमणे पत्रान्ते जणावी छे । एकंदरे पत्रालेखन परथी साध्वीजी भगवन्त शेटना परिवारना अत्यन्त उपकारी हशे के कोई स्वजन हशे एवं अनुमान थाय छे ।

शब्दकोश

१. अंतरे = अत्रे
२. सधावानु = निकळवानुं
३. कारनारु = काढनार
४. मुंडकु = माथा दीठ लेवातो कर
५. दुस्तुरी = एक प्रकारनी करनी रकम (दस्तुर एटले कानुन - तेना काम बदल अपाती मजूरी?)
६. वेनेव्युं = विनव्युं
७. खांमुखां = खास करीने
८. प्रतिसटा = प्रतिष्ठा

*

स्व[स]त श्रीपाटणा महाशुभ सथाने सरेवे सुभोपमालाअेक श्री ७ गरणीजी मांगकसरीजी चरांगा श्रीअंमदावादथी ला० सेठ० वखतचंद खुसलचंदना प्रणांम वांचजो । जत लखवा कारण अे छे जे अंमारे श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री सीधाचलजीनो संग लेईने जतरा जवानु महुरत पोस वद ९, वरा(वार) रवेऊनुं नीरधारू छे । ने माहा शुद २ सोमवारने दीवसे अंतरेथी संघनु कुच करीने सधावानु, ते उपर तंमारे वहेलु पाधारवु । संघनुं कारणारू हु बनसे । बी[जु] संवत १८८३ना कारतग सुद २थी सवत १८८४ना कारतग शुद २ सुधीनुं मूडकु श्रीपालीतांगा तथा श्रीभावनगर तथा श्रीघोघा तथा तलजनी जे लागत दुस्तुरी हसे ते सरेवे अंमो आपीने वरसा १ सुधीनु माफ करावु छे । माटे तमोने वेनेव्यु छुं जे जत करवा खांमुखां पधारवु । वली श्रीसीधाचलजीना उपर अंमो नवु दहेरू करावु छे ते देहरानी प्रतिसटानु महुरत फागण शुद ४ गरऊनु छे ते उपर पण तंमारे जरूर पधारवु । तंमो आवे रूडु दीसे ।

लीख० १८८३ना मगसर वद १

ला० मोतीभईनी वंदणा वचजो ।

जतर करव वहल पधरजी ।

* * *

श्रद्धांजलि

हमारे ख्यातनाम विद्वान् श्रीविनयसागर महोदय गत ३० नवम्बर (२०१४)को जयपुर स्थित अपने निवासस्थान में दिवंगत हुए । उनकी आयु ८६ सालकी थी ।

उन्होंने भारतीय साहित्य, विशेषतः जैन साहित्यकी खूब सेवा की । कई ग्रन्थोंका सम्पादन, लिप्यन्तरण, प्रकाशन उन्होंने किया । उनके द्वारा लिखित शोधपत्र एवं सम्पादित कृतियां विविध सामयिकोंमें प्रकाशित होती रही हैं ।

‘अनुसन्धान’ के साथ कई वर्षों से वे जुड़े थे । उनके अनेक सम्पादित लेख इसमें निरन्तर प्रकट होते रहे हैं ।

उनकी विदाय से जैन विद्याजगत्को एक अपूरणीय क्षति हुई है । वे महोपाध्याय के पदसे अलङ्कृत थे ।

उनकी आत्माको शान्ति मिले !